दस साल बाद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

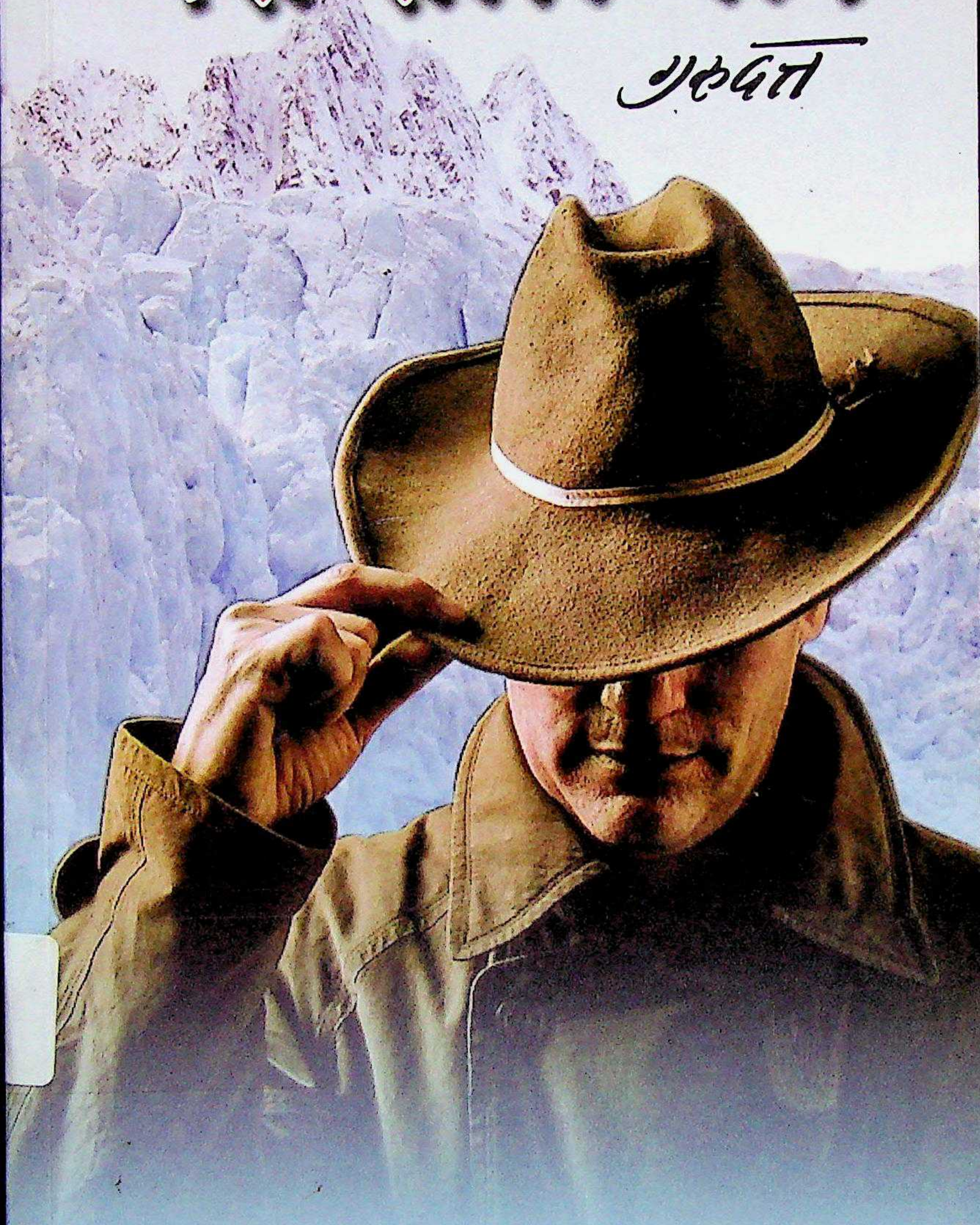

रूस की अघोषित कैद में 10 वर्ष से फँसे एक भारतीय व उसका परिवार अचानक निकल भागे, क्यों व कैसे ? एक रोमांचक गाथा ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167913

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस साल बाद

Central Library
167913
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

गुरुदत्त

081
167913

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
081.9143
GUR-D

दस साल बाद

© ईशान दत्त

मूल्य	:	रु. 300/–
संस्करण	:	प्रस्तुत रूप में प्रथम बार 2020
प्रकाशक	:	हिन्दी साहित्य सदन, 2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग (पुलिस स्टेशन के समीप) नई दिल्ली–110005
ई–मेल	:	indiabooks@rediffmail.com hindisahityasadan@gmail.com
वैबसाइट	:	www.hindisahityasadan.com
दूरभाष	:	9213527666, 07065618655, 011–23553624
ऑफिशियल व्हाट्सऐप	:	9213527666
पृष्ठ संयोजन	:	विकास सैनी (09971840182)
मुद्रक	:	संजीव आफसेट, दिल्ली

DUS SAAL BAAD

By Guru Dutt

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

"निकोविस्की ने आपकी बहुत प्रशंसा की थी। इस कारण आपके विषय में स्वयं कुछ जानने की इच्छा मेरे मन में उत्पन्न हो गयी है। मैं जानना चाहता हूँ कि गाँधी के देश में भी क्या बुद्धिमान् और ज्ञानवान लोग उत्पन्न हो सकते हैं?"

क्रैमलिन के एक विशाल बैठक-घर में, एक सोफा पर नीचे को लटकी हुई मूछों और घनी भवों वाला व्यक्ति बैठा अपने सामने एक अन्य सोफा पर बैठे एक गोरे वर्ण के 'क्लीन शेव्ड, श्वेत कमल-नाभ के रंग की मोटी-मोटी आँखों वाले व्यक्ति से पूछ रहा था।

मूँछों वाला व्यक्ति रूस का प्रथम मन्त्री, मुख्य शासक, अभिप्राय यह कि सर्वेसर्वा कामरेड स्टालिन था। उसके सामने बैठा व्यक्ति एक हिन्दुस्तानी इतिहासज्ञ पद्मदेव था।

पद्मदेव मुस्कराता हुआ रूस के शासक के मुख पर देख रहा था। स्टालिन विस्मित था कि प्रायः लोग उसके सामने बैठे भय से काँपा करते हैं और पीत-मुख काँपते स्वर में ही बोल सकते हैं और यह एक दुर्बल सा व्यक्ति, मुस्कराता हुआ उसकी आँखों में देख रहा है।

जब स्टालिन कह चुका तो पद्मदेव ने रूसी भाषा में ही उत्तर दिया, "श्रीमान्! मैं स्वयं में किसी प्रकार की विशेषता अनुभव नहीं करता। हिन्दुस्तान के विद्वानों में मैं अपने को अभी बालक मात्र मानता हूँ। यदि मेरा जीवन लम्बा हुआ तो उन विद्वानों के चरणों में बैठ मैं अभी बहुत कुछ सीखने की आशा रखता हूँ।"

"तो निकोविस्की ने आपकी भूरि-भूरि प्रशंसा क्यों की है?"

"यह तो वही बता सकता है कि उसने मुझमें क्या गुण देखा है?

"मैं तो अपने को एक विद्यार्थी मात्र मानता हूँ।"

"आपने महात्मा गांधी को देखा है?"

"जी, दूर से।"

"दूर से क्या मतलब?"

'एक बहुत बड़ी सभा में भाषण देते हुए। मैं भीड़ के किनारे खड़ा उनको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख और सुनता रहा था।

"यह कब की बात है?"

"जब मैं हिन्दुस्तान में था। सन् 1929 की बात है कि महात्मा गाँधी को देखने और सुनने के लिए पूर्ण नगर उमड़ा हुआ था। मैं भी उस मानव बाढ़ में बहता हुआ सभा-स्थल पर जा पहुँचा था।"

"और वहाँ क्या देखा था?"

"एक दुबले-पत्तले शरीर वाला, पिचकी-सी गालों और छोटी-छोटी आँखों वाला, गहरे गन्दमी रंग का व्यक्ति, कमर पर श्वेत कपड़ा लपेटे, कमर से ऊपर और घुटनों से नीचे नंगा, टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी में बोल रहा था और पाँच लाख लोग उसके कथन को मन्त्रमुग्ध हो सुन रहे थे।"

"और वह क्या कह रहा था?"

"वह कह रहा था कि लोगों को अहिंसात्मक रहना चाहिये। मन, वचन और कर्म से 'नॉन वॉयलैंट'। ऐसा रहने से वे स्वराज्य पा जायेंगे।"

"कैसे पा जायेंगे?"

"जैसे बच्चा अपनी माँ से रूठ कर अपना अभीष्ट फल पा जाता है।"

स्टालिन हँस पड़ा। हँसते हुए कहने लगा, "तो ब्रिटिश साम्राज्य माँ है और हिन्दुस्तान उसका बच्चा?"

"गाँधीजी ऐसा मानते हैं। वह परमात्मा में विश्वास रखते हैं और पूर्ण मानव-समाज को उसकी सन्तान समझते हैं। वह कहते हैं कि सब मनुष्यों में परमात्मा एक साझा तत्त्व है। इस कारण सबके हृदय एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। कभी दो हृदय किसी बाहरी कारण से एक-दूसरे से बेसुर हो जाते हैं। तब वे एक-दूसरे की बात को सुन तथा समझ नहीं सकते। जैसे किसी वाद्य-यन्त्र की दो तारें बेसुर हो जायें तो उन्हें एक-स्वर करने के लिये नरम स्वर वाली तार को खींचकर दूसरे से स्वर कर लिया जाता है। जब दोनों तार एक-स्वर हो जाते हैं तो फिर एक की कही बात दूसरा भी कहने लगता है। मनुष्यों के हृदय एक-स्वर करने के लिये गाँधीजी ने एक उपाय बताया है। वह उपाय है सत्याग्रह का।"

"पर क्या आप भी यही मानते हैं?"

"मैं इतिहास का विद्यार्थी हूँ। इतिहास जैसा मैंने समझा है, इसका समर्थन नहीं करता।"

"किस इतिहास के विद्यार्थी हैं आप?"

"इतिहास तो एक ही है। ये दो अथवा दो से अधिक नहीं है। कभी इतिहास में कल्पना का मिश्रण हो जाता है तो वह गलत भी हो जाता है। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गलती प्रमाणों को देखने से ठीक की जा सकती है। सच्चाई एक है। अतः इतिहास भी एक है।''

''यदि एक है तो मार्क्सवादी और बुर्जुआ लोग एक-मत क्यों नहीं है?''

''श्रीमान्! इतिहास तो एक ही है। दो मनुष्यों को, जिन्होंने भिन्न-भिन्न रंग के चश्मे चढ़ाये हों, एक ही वस्तु दो विभिन्न रंगों में दिखायी देती है। वैसे ही बुर्जुआ और मार्क्सवादी एक ही इतिहास को दो भिन्न-भिन्न रंगों में देखते हैं। इसे मैं इतिहास की विवेचना कहता हूँ।''

''तो कौन-सी विवेचना ठीक है?''

''मैंने इतिहास को एक सर्वथा भिन्न रंग की ऐनक से देखा है। मेरी विवेचना बुर्जुआ और मार्क्सवादी दोनों से भिन्न है।''

''ओह! तो इतिहास की कोई तीसरी विवेचना भी है?''

''जी!''

''मैं उसको सुनना चाहूँगा।''

''मैं इसी विषय पर एक पुस्तक लिख रहा हूँ।''

''परन्तु पुस्तक तो हमारी 'पॉलिटी-ब्यूरो' की स्वीकृति से ही छप सकेगी।''

''छपने अथवा न छपने से मेरा सम्बन्ध नहीं है। मैं तो अन्वेषणकर्ता हूँ। यह यहाँ के राज्य का काम है कि देखे कि यहाँ के लोग क्या पढ़ें और क्या न पढ़ें?''

''तो उससे लाभ क्या होगा?''

''मान लीजिये, आज का 'पॉलिटी-ब्यूरो' उसको छापना स्वीकार नहीं करता। मेरा लेख छपता नहीं। यह सम्भव है कि कल का 'पॉलिटी-ब्यूरो' उसको छापना स्वीकार कर ले। तब मेरा परिश्रम सफल हो जायेगा।''

इस पर स्टालिन गम्भीर हो विचार करने लगा। एकाएक उसे कुछ स्मरण हो आया और उसने कलाई पर बँधी घड़ी में समय देखा। समय देख वह उठ खड़ा हुआ।

पद्मदेव भी उठ खड़ा हुआ और प्रश्न-भरी दृष्टि में सामने खड़े मुख्य अधिकारी का मुख देखने लगा। स्टालिन ने कहा, ''इस समय एक अत्यावश्यक 'कॉन्फ्रेंस' हो रही है। मैं उसमें जा रहा हूँ। हम अपनी बात फिर आगे चलायेंगे। मैं आपसे समय निश्चय कर आपको बुला लूँगा।''

दोनों ने हाथ मिलाये और स्टालिन बैठक-घर से बाहर निकल गया। उसके जाते ही एक सैनिक पद्मदेव के पास आ खड़ा हुआ और बोला, ''चलिये।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मदेव उस सैनिक के पीछे-पीछे चलता हुआ क्रैमलिन के महल से बाहर निकल आया। द्वार पर भाड़े की बस खड़ी थी। उस सैनिक ने उसे बस में बैठाते हुए कहा, "यह आपको यूनिवर्सिटी एरिया में ले जायेगी।"

भाड़ा पाँच सैण्ट बस के द्वार के साथ लगे डिब्बे में डालकर पद्मदेव खाली स्थान पर जा बैठा।

बस में प्रत्येक पंक्ति में चार-चार यात्रियों के बैठने को स्थान था। दो यात्री एक ओर और दो यात्री दूसरी ओर। बीच में चलने का मार्ग था।

पद्मदेव के साथ की सीट पर एक व्यक्ति बहुत ही ढीले-ढाले और भद्दे रंग का सूट पहने आ बैठा। पद्मदेव के कपड़े उससे बहुत ही बढ़िया और साफ-सुथरे थे। उस व्यक्ति ने बैठते ही रूसी भाषा में पूछ लिया, "कामरेड स्टालिन कैसे हैं?"

पद्मदेव ने मुस्कराकर उसकी ओर देखा और कह दिया, "उतने ही ठीक हैं जितने कल थे।"

इस पर वह व्यक्ति भी मुस्कराया और पूछने लगा, "और कल वह कैसे थे?"

पद्मदेव ने उससे पूछ लिया, "आपने उन्हें कब देखा था?"

"आज से बीस वर्ष पूर्व। तब वह अपने गाँव मे एक बे-लगाम युवक के रूप में था।"

"खैर, अब वह वैसे नहीं हैं। न तो वह युवक हैं और न ही वह बे-लगाम हैं।"

बस चल पड़ी थी। कई अन्य यात्री बस में आ गये थे और पद्मदेव की अपने साथी से बात आगे न चल सकी। विश्वविद्यालय के क्षेत्र में पहुँच वह उतर गया। उसको यह देख विस्मय हुआ कि उसका साथी भी उसके साथ ही उतरा है और उसके साथ-साथ चलने लगा है।

पद्मदेव विश्वविद्यालय के पुस्तकालय की ओर जा रहा था। वह ढीले-ढाले वस्त्रधारी व्यक्ति उसके साथ था। इस पर पद्मदेव ने विस्मय में उसके मुख पर देखा। वह व्यक्ति पचास-इकावन वर्ष की आयु का प्रौढ़ प्रतीत होता था। इस पर भी उसके पगों में दृढ़ता और आँखों में चमक एक युवक-जैसी ही थी। पद्मदेव ने साथ चलने वाले व्यक्ति का परिचय प्राप्त करने के लिये कह दिया, "मैं पद्मदेव हूँ। विश्वविद्यालय में इतिहास पर अन्वेषण-कार्य कर रहा हूँ।"

"मैं आपको जानता हूँ। मैं आपसे ही एक कार्य-विशेष से मिलने आया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकोविस्की ने पद्मदेव को रूस में रहने के दो गुर बताये थे। एक यह कि रूस में प्रत्येक अपरिचित व्यक्ति को सरकारी जासूस और महागुण्डा (स्काउण्ड्रल) समझो। जब तक वह प्रमाणित न कर दे कि वह वैसा नहीं है। दूसरी बात जो उसे स्मरण रखने के लिए बतायी गयी थी, वह यह थी कि पति-पत्नी में ही वह भी 'बेड-रूम' में, राजनीति, बातों का विषय हो सकता है। अन्य कहीं और किसी के साथ नहीं।

साथ चल रहे व्यक्ति ने जब कहा कि मैं आपसे कार्य-विशेष से मिलने आया हूँ तो पद्मदेव ने खड़े होकर प्रश्न-भरी दृष्टि में उसके मुख पर देखा। वह व्यक्ति मुस्कराते हुए पद्मदेव के मुख पर देख रहा था। पद्मदेव ने देखा कि दूर खड़े दो विद्यार्थी उसकी ओर आ रहे हैं। इससे कुछ आश्वस्त हो वह साथी से बोला, "जब तक मैं आपका पूर्ण परिचय नहीं पा जाता, मैं किसी विशेष कार्य को न तो सुनना चाहूँगा और न ही उस पर कुछ कहना पसन्द करूँगा।"

"यह तो ठीक ही है। परन्तु यहाँ सड़क पर चलते और उन दो आने वालों की उपस्थिति में परिचय दे नहीं सकूँगा। इतना संकेत मात्र बता सकता हूँ कि मेरे पास ऐमालीना के लिये कैटालीना का एक पत्र है।"

इस पर तो पद्मदेव के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा। जब से वह विश्वविद्यालय क्षेत्र में आया था, उसने कैटालीना का नाम पहली बार सुना था। उसे रूस में रहते हुए सात वर्ष हो चुके थे। साढ़े छः वर्ष से वह मास्को विश्वविद्यालय के अन्वेषण-विभाग में कार्य कर रहा था। विश्वविद्यालय के चान्सलर निकोविस्की से पद्मदेव की बहुत घनिष्ठता थी। उसी के कारण निकोविस्की उसके अन्वेषण के कार्य में सहायक हो रहा था।

ऐमालीना उसकी पत्नी का नाम था। कैटालीना, ऐमालीना की माँ थी। कैटालीना का पति अर्थात् ऐमालीना का पिता जेरियर अपने पुत्र शरौडर के साथ बन्दी बना लिया गया था। वह स्वयं अपनी पत्नी ऐमालीना के साथ विश्वविद्यालय में काम कर रहा था।

जब पद्मदेव रूस में पहुँचा था वह अंग्रेजी और कुछ-कुछ जर्मन भाषा ही जानता था, परन्तु अब रूसी भाषा समझ और बोल सकता था, वह विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को सप्ताह में एक बार पढ़ाने भी जाता था।

अपनी पत्नी की माँ का नाम सुनकर पद्मदेव ने पुनः अपने सामने खड़े व्यक्ति की आँखों में देखा। वह अभी भी मुस्कराता हुआ उसके मुख पर देख रहा था। आखिर पद्मदेव ने कहा, "मैं आपको ऐमालीना से मिला दूँगा।"

इस समय वे विद्यार्थी जो उससे मिलने के लिए उसकी ओर चले आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे थे, वहाँ आ पहुँचे।

एक विद्यार्थी ने कहा, "कामरेड प्रोफेसर! हम प्रातःकाल से आप को ढूँढ़ रहे हैं।"

"क्या काम है?" पद्‌मदेव ने पूछा।

"हम जर्मनी और रूस के परस्पर सहयोग के परिणामों पर विचार-गोष्ठी कर रहे हैं। सरकार के सूचना-विभाग के मुख्य प्रवक्ता कामरेड चिकोव उस गोष्ठी में आने वाले हैं।"

"यह बहुत अच्छा विचार है।"

"हम चाहते हैं कि आप उस गोष्ठी में सम्मिलित हों और अपने विचार उपस्थित करें।"

"मैं चान्सलर साहब से राय कर और स्वीकृति लेकर ही उस गोष्ठी में जा और बोल सकता हूँ।"

"पर कामरेड निकोविस्की उस गोष्ठी के अध्यक्ष होंगे।"

"तब तो वह मुझको उस गोष्ठी में सम्मिलित होने की स्वीकृति दे देंगे। इस पर भी मुझे पूछना तो होगा।"

"कब तक पता कर सकेंगे?"

"मैं सायंकाल चाय के समय उनसे मिलूँगा और उनसे बात कर लूँगा।"

"हम सब विद्यार्थी आपके विचार सुनने के लिये उत्सुक हैं।"

"मैं आपकी उत्सुकता को समझ नहीं सका। परन्तु मैं यह समझने की बात छोड़ भी दूँ तब भी तो विश्वविद्यालय के चीफ की स्वीकृति माँगनी ही पड़ेगी।"

"हमें पूर्ण आशा है कि वह आपको स्वीकृति ही नहीं देंगे वरंच आपको वहाँ आने का निमंत्रण भी देंगे।"

"मैं भी यही आशा करता हूँ।"

विद्यार्थी जिधर से आये थे, लौट गये। पद्‌मदेव और उसका साथी उस समय पुस्तकालय-भवन के बाहर खड़े थे। पद्‌मदेव ने कहा, "तो मुझे आपको ऐमालीना के पास ले चलना चाहिये।"

"मेरी यही इच्छा है।"

"वह इस समय जर्मनी की क्लास ले रही होगी।" पद्‌मदेव ने विश्वविद्यालय के पुस्तकालय की छत पर लगी घड़ी में समय देख कर कहा, "आपको आधा घंटा प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।"

"मैं इसी प्रयोजन के लिए मास्को में आया हूँ।"

"तो आइये।" पद्‌मदेव लौट पड़ा। वह अपने रहने के क्वार्टर की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल पड़ा। क्वार्टर दो फर्लांग के अन्तर पर था। पद्मदेव साथी के साथ स्वयं कुछ भी बात करना नहीं चाहता था, परन्तु उसका साथी बातों में पद्मदेव को खींचना चाहता था और वह उसमें अपने लिये रुचि उत्पन्न करना चाहता था। इस कारण उसने पूछ लिया, "आपको प्रोफेसर सुदर्शन का समाचार मिला है क्या?"

प्रोफेसर सुदर्शन का नाम सुन पद्मदेव चलता-चलता एकाएक खड़ा हो गया। उसे अपना साथी विशेष व्यक्ति प्रतीत हुआ। आखिर उसने पूछा, "आप सुदर्शन के विषय में क्या जानते हैं?"

"वह यहाँ आया था।"

"कहाँ?" पद्मदेव के अचम्भे का पारावार नहीं रहा।

"रूस में। उसे लेनिनग्राद, स्टालिनग्राद और अन्य नगर दिखाये गए थे। उसे दो दिन मास्को में भी रखा गया था, परन्तु उसके यहाँ के 'इनफरमेशन ब्यूरो' से आपके विषय में पूछने पर बताया गया कि आपके नाम का यहाँ कोई व्यक्ति नहीं है। इस पर सुदर्शन ने आपका जर्मनी से भागने का इतिहास बताया। उसे यह कह दिया गया कि सीमा पर आपकी मृत्यु हो गयी होगी, परन्तु अब आपका कोई रिकार्ड यहाँ नहीं है।"

पद्मदेव हँस पड़ा और फिर चल पड़ा। वह व्यक्ति भी साथ-साथ था।

: 2 :

पद्मदेव हिन्दुस्तान के एक कॉलेज में इतिहास का प्रोफेसर था। वहाँ एक बार उसने अपना यह मत व्यक्त किया था कि शासक-वर्ग इतिहास से अनभिज्ञ है। इसी कारण वह देश को मिथ्या मार्ग पर ले जा रहा है। उसके इस प्रकार कहने का परिणाम यह हुआ था कि उसको सरकारी नौकरी से पृथक् कर दिया गया।

वह अपने इतिहास की खोज में लीन था उसकी पत्नी सरस्वती उसके कार्य में रुचि न रखने के कारण अपने रुचि के कार्यों में लीन हो गयी और उसे छोड़ भटकने लगी।

वह अपने खोज के कार्य में जर्मन पहुँचा। वहाँ वह एक ऐसे परिवार के सम्पर्क में आ गया जो एक से अधिक नौकाओं में एकसाथ यात्रा कर रहा था। नौकायें तो अपने-अपने मार्ग पर चल पड़ीं और परिवार के लोग मँझधार में गोते खाने लगे।

पद्मदेव भी, इस परिवार के साथ सम्पर्क के कारण, उनके साथ बहता-बहता रूस की मँझधार में पड़ मास्को में पहुँच गया। यहाँ पहुँच वह परिवार तो बिखर गया, परन्तु पद्मदेव अपने अन्वेषणकार्य के आश्रय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वविद्यालय में स्थान पा गया। मास्को विश्वविद्यालय की भूमि फिसलनी थी। इस फिसलनी भूमि पर खड़ा रह सकने में इतिहास का एक विद्वान् मिस्टर निकोविस्की उसका आश्रय बन गये।

जर्मन-परिवार जिसके सम्पर्क में पद्मदेव आया था, यहूदी था। उस परिवार के चार सदस्य थे। पिता, माता, पुत्र और लड़की। लड़की सबसे छोटी थी और पद्मदेव की विद्वत्ता पर मुग्ध हो उससे विवाह कर बैठी थी। अत: जब परिवार मास्को में पहुँच छिन्न-भिन्न हुआ तो लड़की ऐमालीना को भी पद्मदेव से पृथक् करने का यत्न किया गया। पद्मदेव ने रूसी सरकार से यह प्रार्थना की थी कि वह एक हिन्दुस्तानी नागरिक है। परिस्थितियों के चक्कर में फँसा हुआ वह मास्को आ पहुँचा है। उसे वापस हिन्दुस्तान जाने की स्वीकृति दी जाए।

उसे स्वीकृति एक शर्त पर मिल रही थी। वह यह कि बिना पत्नी के वह चला जाए। रूसी सरकार का कहना था कि ऐमालीना कम्युनिस्ट विचारधारा की लड़की है। इस कारण उसे हिन्दुस्तान नहीं भेजा जा सकता। हिन्दुस्तान साम्राज्यवादियों की दासता में फँसा हुआ देश है।

पद्मदेव ने अपनी पत्नी को छोड़कर जाने से इन्कार किया तो उसे भी रूस में ही रहने का आदेश हो गया। इसके उपरान्त उसे विश्वविद्यालय में अनुसंधान की अनुमति मिल गई। उसकी पत्नी ऐमालीना उसके साथ रह रही थी।

दोनों ने रूसी भाषा सीखी और दोनों को विश्वविद्यालय में शिक्षा का कार्य भी मिल गया। ऐमालीना जर्मन भाषा पढ़ाने पर लग गयी और पद्मदेव सप्ताह में एक बार इतिहास की सर्वोच्च श्रेणी को संसार के इतिहास पर पाठ पढ़ाने के लिये नियुक्त कर दिया गया। निकोविस्की विश्वविद्यालय का चान्सलर बन गया था और पद्मदेव तथा ऐमालीना का एक प्रकार से, वह संरक्षक था।

इस प्रकार पद्मदेव को मास्को विश्वविद्यालय में कार्य करते हुए सात वर्ष हो चुके थे।

इन सात वर्षों में ऐमालीना के दो पुत्र हुए थे। एक इस समय चार वर्ष का था और दूसरा एक वर्ष का था। दोनों के रूसी और हिन्दुस्तानी दोहरे नाम रखे गये थे। हिन्दुस्तानी नाम से वे घर पर बुलाये जाते थे, परन्तु बाहर के लोगों में वे रूसी नाम से विख्यात थे। बड़े का नाम था निकीटैस्की तथा नाकेश। छोटे का नाम था अफानासीव तथा अपशोक।

निकोविस्की का अपना विवाह नहीं हुआ था और वह चालीस वर्ष की
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयु में भी अविवाहित जीवन व्यतीत कर रहा था।

ऐमालीना के दूसरे पुत्र होने के समय पद्मदेव के मन में यह संशय उत्पन्न हुआ कि यह लड़का कोई भी हिन्दुस्तानी लक्षण नहीं रखता। नाकेश का वर्ण, बालों का रंग और आँखों का रंग पद्मदेव से मिलता था। वैसे भी बहुत कुछ रूप-रेखा पद्मदेव की थी। परन्तु दूसरा लड़का नीली आँखों और भूरे बालों वाला था। उसके नाक का नीचे का भाग कुछ ऊपर उठा हुआ था। न तो पद्मदेव की रूपरेखा इस प्रकार की थी, न ही ऐमालीना अथवा उसके भाई की इस प्रकार की आकृति थी। इन सब बातों से पद्मदेव के मन में ऐमालीना के निष्ठावान् पत्नी होने में सन्देह उत्पन्न हुआ, परन्तु उसने अपने मन के संशय को प्रकट नहीं किया।

इसका एक स्वाभाविक परिणाम हुआ। पति की पत्नी से सहवास के लिये अरुचि उत्पन्न हो गई।

अपशोक को हुए एक वर्ष से भी ऊपर समय व्यतीत हो गया था और पद्मदेव ने पत्नी को अपने पलंग पर आने का निमन्त्रण नहीं दिया था। इस सब काल में ऐमालीना ने भी पति की संगत के लिये इच्छा प्रकट नहीं की थी। इस पर भी वह अपने पति को संगति के लिये उदासीन देखती थी। छोटे लड़के की ओर देख उसे सदा मुस्कराते पा ऐमालीना को भी सन्देह होने लगा था कि उसका पति उस पर अनिष्ठा का सन्देह करने लगा है। एक दिन उसने इस विषय में पति के मन की बात जानने का यत्न किया।

दोनों विश्वविद्यालय की एक मीटिंग के उपरान्त घर लौटे थे। विश्वविद्यालय की नर्सरी से अपने बच्चों को लेकर घर पहुँचे तो ऐमालीना उनको खिला-पिला कर सुलाने में लग गयी। पद्मदेव घर पहुँचते ही अपने 'स्टडी रूम' में चला गया। पति-पत्नी दोनों खाना कैन्टीन में खाकर आये थे।

जब बच्चे सो गये तो ऐमालीना पति के बिस्तर में लेट पति की प्रतीक्षा करने लगी। पद्मदेव अभी भी भारतीय संस्कृति के इतिहास पर काम कर रहा था। मास्को विश्वविद्यालय में पुस्तकालय बहुत अच्छा नहीं था और इस विषय पर वहाँ कुछ अधिक पुस्तकें भी नहीं थीं। इस कारण पद्मदेव पुस्तकें फ्रांस और इंग्लैण्ड से मँगवाता रहता था। अभी-अभी लन्दन से आयी एक पुस्तक को पढ़ने में लीन वह भूल ही गया कि उसे सोना भी है।

'स्टडी रूम' में बैठे-बैठे रात बहुत बीत गयी। अकस्मात् उसका ध्यान घड़ी की ओर गया तो वह चौंककर उठ खड़ा हुआ। रात के दो बज रहे थे। उसने तुरन्त कपड़े बदले और सोने के लिये 'बैड रूम' में गया तो उसने देखा कि उसके बिस्तर में ऐमालीना सो रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह एक क्षण तक उसे देखता रह गया। कुछ विचार कर वह ऐमालीना के बिस्तर में घुस सो गया।

प्रातःकाल वह ऐमालीना से पहले उठा। उठकर वह शौचादि में संलग्न हो गया। उसने पानी गर्म किया और स्नान कर अपनी पूजा-पाठ में लग गया। यह उसने हिन्दुस्तान से बाहर जाने पर भी नहीं छोड़ी थी।

जब वह पूजा समाप्त कर बिजली के हीटर पर कॉफी बनाने के लिये जल गर्म करने लगा तो ऐनालीना रसोई-घर में खटाक सुन जाग पड़ी। वह अपने को पति के बिस्तर में देख रात की बात स्मरण कर चिन्ता करने लगी। वह समझ गयी कि उसका पति उसके साथ सोने के स्थान पृथक् सोया है। वह आज पूर्ण बात पति से करने के लिये बिस्तर में ही बैठी रही।

पद्मदेव दो प्यालों में कॉफी तैयार कर 'बैड रूम' में ले आया। जब उसने ऐमालीना के सामने एक प्याला किया तो ऐमालीना ने प्याला पकड़ा नहीं और बोली, "मैं कॉफी के प्याले की नहीं, किसी अन्य बात की प्रतीक्षा कर रही हूँ।"

"कब से, ऐमालीना?"

"रात से।"

"पर मैं तो उसी बात की प्रतीक्षा पिछले पौने दो वर्ष से कर रहा था। मुझे यह समझ आया था कि वह वस्तु अब यहाँ पर प्राप्य नहीं है।"

"क्या प्राप्य नहीं है?"

"अपनी प्रिय पत्नी।"

"पर मैं तो यहाँ आयी थी। आप ही नहीं मिले।"

"सत्य? मैं समझता हूँ कि मैं था और तुम नहीं थीं।"

"परन्तु देखने से तो आप गलत और मैं ठीक सिद्ध हो रही हूँ।"

"देखो ऐमालीना! रात तो तुम यहाँ थीं, परन्तु किसलिये? यह ज्ञात नहीं था।"

"आपने जब कभी निमन्त्रण नहीं दिया तो बिना निमन्त्रण और सूचना के चली आयी परन्तु आप तो मिले नहीं।"

"निमन्त्रण तो इसलिये नहीं दिया था कि मकान में कोई अन्य निवास पा रहा प्रतीत होता था।"

"कौन था?"

"अपशोक का पिता।"

"तो वह आप नहीं है?"

"यह तुम बता सकती हो। वह तो यह घोषणा करता प्रतीत होता है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसका पिता मैं नहीं हूँ।''

''वह तो अभी बात भी नहीं करता। घोषणा कैसे करने लगा है?''

''ज़बान नहीं बोल रही, परन्तु उसकी आँखें, सिर के बाल, नाक और मस्तक यही कह रहे हैं जो मैं समझा हूँ।''

''आप तो शरीर की बात कर रहे हैं। वह अवश्य किसी अन्य का बनाया हुआ है, परन्तु उसकी आत्मा आपकी आत्मा का भाग होगा। मुझे विश्वास है।''

ऐमालीना और पद्मदेव में सदा दो बुद्धिशील व्यक्तियों की भाँति बात हुआ करती थी। वैसा ही वार्त्तालाप उस दिन चल पड़ा था। ऐमालीना का अपने संशय की पुष्टि करते देख वह पलंग के किनारे पर बैठ गया और बोला, ''मैं समझता हूँ कि कॉफी पीते हुए बात करेंगे तो भली-भाँति समझ-समझा सकेंगे।''

''ओह! मैं भूल गयी थी कि यह भी आपके प्रेम की भाँति ठण्डी हो सकती है।''

''पर मेरा प्रेम ठण्डा है क्या?''

''आपके रात के व्यवहार से तो यही समझ में आया है।''

''नहीं प्रिय! मैं तुम्हारे साथ वैसा ही प्रेम करता हूँ जैसा कि बर्लिन के होटल मे रहते हुए करता था। उसी प्रेम के नाते मैं बिटिश राजदूत की सहायता की अवहेलना कर अनिश्चित भविष्य की ओर चल पड़ा था। उसी प्रेम के अधीन मैंने तुम्हारे साथ अपने देश के स्वतन्त्र वातावरण का बलिदान कर इस पशुओं के बाड़े में रहना स्वीकार किया था और अति सन्तोष और धैर्य से अभी भी रह रहा हूँ।''

ऐमालीना बोली, ''पर जो कुछ आपने रात किया है, वह क्या आपके विचारों में परिवर्तन का सूचक नहीं है?''

''ऐमालीना! निश्चय जानो कि नहीं है। मैं तुमको कई बार समझा चुका हूँ कि पत्नी से सहवास शारीरिक आवश्यकताओं का परिणाम है। प्रेम उससे पृथक् बात है। वह संगत की इच्छा के साथ भी रह सकता है और नहीं भी रह सकता।''

''आप तो आज मार्क्सिस्ट मीमांसा का एक पृष्ठ पढ़कर सुनाते हुए प्रतीत होते हैं।''

''पर मैंने यह मीमांसा मार्क्स की पुस्तक से नहीं सीखी। इसको मैंने भारतीय दार्शनिकों के कथनों में पढ़ा है।

''तो दोनों एकसमान हैं?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं दोनों में आकाश-पाताल का अन्तर देखता हूँ। समाजवादी पुरुष-स्त्री के सम्बन्ध को केवल मात्र एक भूख का निवारण मानते हैं। प्रेम उनके शब्द-कोश में मुझे कहीं मिला नहीं। हमारे दार्शनिक पुरुष-स्त्री के संयोग को, जब वह पति-पत्नी में होता है, एक सामाजिक कृत्य मानते हैं। इसे यज्ञ (समाज-कल्याण) का कार्य समझते हैं। इससे सन्तान उत्पन्न होती है जो भावी समाज का अंग होती है। उसके श्रेष्ठ और बुद्धिशील होने की आवश्यकता है। इस कारण पति-पत्नी को भली सन्तान उत्पन्न करने के प्रयत्न में ही सहवास की आवश्यकता मानी है।"

"तो क्या अपशोक एक सुन्दर, सबल और मेधावी सन्तान प्रतीत नहीं हुई?"

"वह है तो सुन्दर, स्वस्थ और कदाचित् बुद्धिशील भी होगा, परन्तु इस कल्याण का श्रेय मुझे नहीं है। इस पर भी मैं उसे प्रेम करता हूँ। यह वैसा ही है जैसे कि मैं अपने बहुत-से विद्यार्थियों को प्रेम करता हूँ। अपने छात्रों में एक छात्र निकोलाई तो मुझे बहुत ही प्रिय है।"

"पर आपके शरीर को पत्नी की माँग नहीं है क्या?"

"ऐमालीना! पत्नी की माँग शरीर को नहीं, मन और आत्मा को होती है। मन और आत्मा को पत्नी मिली हुई है। वह मेरे साथ गृहस्थ-जीवन का अधिकांश कार्य निभा रही है। सन्तानोत्पत्ति का कार्य वह किसी अन्य के संयोग से चला रही है। मैंने इस स्थिति को स्वीकार कर लिया है।"

ऐमालीना जानती थी कि युक्ति में वह पति से पार नहीं पा सकेगी। वह कॉफी पी, खाली प्याला दीवार के साथ लगे एक शैल्फ पर रख, अपने पति पर शारीरिक वासनामय आक्रमण करने का विचार करने लगी थी। पद्मदेव उसके मन के भावों को समझ गया। अतः वह पलंग से उठते हुए बोला, "अब शीघ्र नित्य-कर्म से निवृत्त हो जाओ, हमें ठीक नौ बजे रेवोल्यूशन की जयन्ती का उत्सव देखने जाना है। वहाँ हमारे लिए स्थान नियत हैं। हम नहीं गये तो स्थान खाली रह जायेगा और यह ठीक नहीं होगा।"

ऐमालीना को जब यह स्मरण हुआ तो वह लपककर बिस्तर से निकली और कसकर पद्मदेव की छाती से लगा उसका मुख चूम स्नानागार में भाग गयी।

यह इतना एकाएक था कि पद्मदेव अपने को बचा नहीं सका। वह स्नानागार में गयी तो छोटा बच्चा हिलने-डुलने लगा।

जब अपशोक हिलने लगा तो पद्मदेव समझ गया कि वह पेशाब और टट्टी करेगा। कहीं वह बिस्तर ही खराब न कर दे, इस विचार से उसने बच्चे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को उठाया। उसका जाँघिया उतार, उसे दूसरे 'वाथ रूम' में ले जाकर पेशाब इत्यादि कराने लगा। ऐसा पहले भी कभी-कभी उसे कराना पड़ जाता था।

वह बच्चे को टट्टी-पेशाब करा, धो-पोंछकर कपड़े पहना ही रहा था कि ऐमालीना चलने के लिए तैयार होकर आ गयी। अपशोक को कपड़े पहनाते देखा तो वह खिलखिलाकर हँस पड़ी।

इस समय अपशोक माँ को देख बाहें फैलाकर उसकी गोद में जाने की इच्छा प्रकट करने लगा। पद्मदेव ने उसे ऐमालीना को देते हुए कहा, "बहुत प्यारा बच्चा है। वैसे अपनी आयु से अधिक समझदार है।"

"और इसी के निर्माण से मैं अनादरयुक्त हो गयी हूँ।"

"इस विषय पर फिर बात करेंगे। हमें चलकर जुलूस देखने के लिये अपने स्थान पर बैठ जाना चाहिए।"

ऐमालीना इस समय क्रान्ति की जयन्ती का जलूस देखने से अधिक पति की संगत की लालसा कर रही थी, परन्तु मन मसोस कर रह गयी और कपड़े बदलने के लिये अपने कमरे में चली गयी।

: 3 :

ऐमालीना के स्वीकार करने पर कि अपशोक को उसने किसी अन्य से प्राप्त किया है, पद्मदेव एक महान् विडम्बना में फँस गया था। ऐमालीना को वह छोड़ना नहीं चाहता था। साथ ही वह उसे अपनी पत्नी का अधिकार देने में संकोच करता था। ऐमालीना दृढ़ निश्चय से पद्मदेव से सहवास प्राप्त करने में लगी थी। वह उसमें सफल हो गई। पद्मदेव, उसके साथ एक ही सोने के कमरे का प्रयोग करते हुए उसके प्रयास का विरोध नहीं कर सका। इस पर भी ऐमालीना अनुभव कर रही थी कि वह उससे वैसा प्यार प्राप्त नहीं कर सकी जो बर्लिन में विवाह के उपरान्त कुछ प्रथम दिनों में प्राप्त कर सकी थी। परिणामस्वरूप उस शीतलता पर बातचीत हो गयी, जो उसने पति ने अनुभव की थी। उसने पूछ लिया, "आपका व्यवहार मेरे प्रति ठण्डा क्यों है?"

"मैं ऐसा अनुभव नहीं करता।"

"परन्तु मैं तो अनुभव कर रही हूँ।"

"मैं समझता हूँ कि वह तुम्हारे अपने ही व्यवहार की अनुभूति है। तुम अब दो बच्चों की माँ हो चुकी हो और तुम्हारे में वह संवेदिता नहीं रही जो विवाह के तुरन्त उपरान्त थी।"

"आप खूब हैं। अपने दोष को मेरे ही गले मढ़ रहे हैं। मैं तो अपने को अब भी उतना ही सजीव मानती हूँ जितना कि कभी भी थी।"

"यह मन का भ्रम भी तो हो सकता है। तुम मन में एक विचार बना बैठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमाना बदल गया

अब नए रूप में उपलब्ध

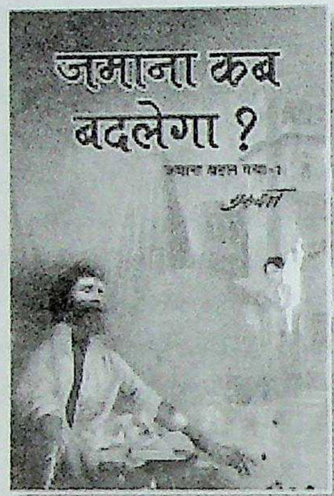

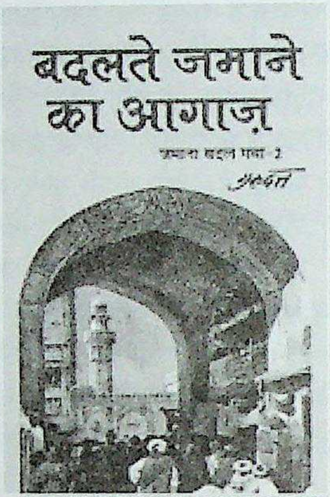

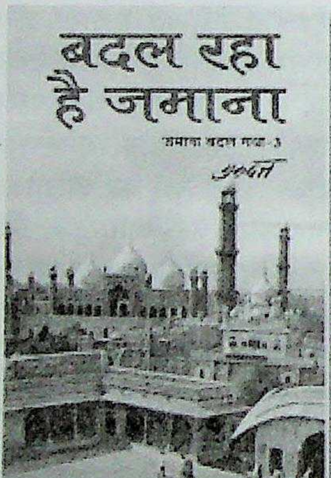

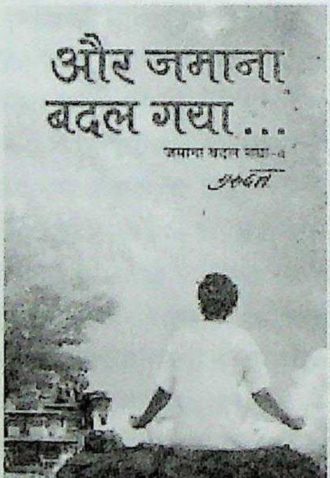

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग (पुलिस स्टेशन के समीप), नई दिल्ली–110005
फोन– 23553624, 23551344, चलभाष– 9213527666, 7065618655

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो और उसकी प्रतिक्रिया मुझमें देखने की अभिलाषा करती हो। जिस बात की जैसी अभिलाषा हो, वह वैसी ही दिखाई भी देने लगती है।''

''देखिये जी, मैं आपसे सन्तुष्ट नहीं हूँ।''

''पर मैं तो तुमसे सर्वथा सन्तुष्ट हूँ।''

ऐमालीना ने युक्ति में पति को परास्त न कर सकने पर कह दिया, ''मैं समझती हूँ कि मुझे अपना 'बेड रूम' पृथक् बना लेना चाहिये।''

''परन्तु इस बँगले में तो एक ही 'बेड रूम' है। पृथक् कैसे बनाआगी?''

''यही तो मुसीबत है।''

''इस मुसीबत से निकलने का उपाय तुम अपनी इच्छानुसार कर सकती हो। मैं तो तब भी तुम्हारा निष्ठावान् पति ही बना रहूँगा।''

''जैसे अब हैं?''

''हाँ। जहाँ तक निष्ठा का सम्बन्ध है, वह वैसे ही बनी रहेगी जैसे कि कभी भी रही है।''

''यदि मैं अपशोक के पिता के पास रहने चली जाऊँ तब भी?''

''तुम पत्नी तो मेरी ही रहोगी, भले ही तुम पथच्युत हो कहीं भी जाओ, मैं तो कभी विचार भी नहीं कर सकता कि जो एक बार पत्नी बन गयी, वह कभी कुछ अन्य भी होगी।''

ऐमालीना पद्मदेव के इन उद्गारों को समझती थी, यद्यपि वह इन उद्गारों में किसी प्रकार का तथ्य नहीं मानती थी। उसने पति को चिढ़ाने के लिये कह दिया, ''यदि मैं आपको तलाक देकर अपशोक के पिता के साथ विवाह रजिस्टर करा लूँ तो आप क्या करेंगे?''

''कुछ नहीं। करना क्या है? मैं समझ लूँगा कि पद्मदेव की पत्नी किसी अन्य पुरुष के पास जाकर रहने लगी है। अभी तक तो यह समझता हूँ कि ऐमालीना किसी घटनावश पत्नी के पथ से च्युत हो एक पुत्र ले आयी है। तब यह कहूँगा कि पद्मदेव की पत्नी पथच्युत हो किसी अन्य के पास चली गयी है।''

''और आप पुनः विवाह नहीं करेंगे?''

''यह मैं अभी बता नहीं सकता, परन्तु मेरा विवाह करना अथवा न करना तुमको पत्नी समझने और बनाकर रखने में बाधक नहीं है।''

''परन्तु आप यहाँ दो पत्नियाँ नहीं रख सकते। यह हिन्दुस्तान नहीं है।''

''यह मैं जानता हूँ और जब दूसरी पत्नी को घर लाने की इच्छा होगी तो विचार कर लूँगा।''

''तो मैं क्या करूँ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जो मन मे आये करो। मेरा प्रेम तुमसे बना रहेगा।"

"मैं तो आपसे अभी सहवास चाहती हूँ।"

"मैंने कभी इन्कार नहीं किया।"

ऐमालीना निरुत्तर हो चुप कर गयी। वह अपने-आपको अपने पति की बन्दी अनुभव करती थी। वह उसके अतिरिक्त किसी अन्य से सम्बन्ध बना बैठी थी। पीछे उसे इसका पश्चाताप लगा था। वह उस सम्बन्ध को छिपाकर रखना चाहती थी, परन्तु लड़के की रूपरेखा ने छिपा नहीं रहने दिया।

जिस दिन उसने अपने मुख से अपने अनिष्ठावान् होने की बात बताई थी, वह समझती थी कि उसका पति उसे तलाक दे देगा और उसको विवश कर देगा कि अपना घर कहीं अन्यत्र बना ले। ऐसा कुछ नहीं हुआ। साथ ही उसने अब उस पर व्यवहार की शिथिलता का लांछन लगा उसे पृथक् हो जाने के लिये उकसाया था। यह भी वह नहीं माना। इस पर उसने सम्बन्धों को वैसे ही चलने दिया, जैसे चल रहे थे।

जब उसकी माँ का गुप्त सन्देश उसके लिये आया तब भी उसके पद्मदेव के साथ सम्बन्ध यथापूर्व थे।

पद्मदेव उस व्यक्ति को जो उसे क्रैमलिन से बस में आते समय मिला था, लेकर अपने निवास-स्थान पर पहुँचा। ऐमालीना अभी नहीं आयी थी। उसने बिजली का हीटर जलाया और उस पर कॉफी के लिए जल गर्म करने रख दिया।

आगन्तुक व्यक्ति ने पूछा, "क्या कर रहे हैं?"

"आपके लिये कॉफी बना रहा हूँ।"

"मैं तो गर्म-गर्म 'वोडका' पीना पसन्द करूँगा।"

"आपके लिये पत्नी की चोरी करनी पड़ेगी। उसने अपने लिये लॉकर में रखी हुई है। मैं तो पीता नहीं।"

"तो इतनी सर्दी में आप निर्वाह कैसे करते हैं?"

"मुझे मास्को में रहते हुए सात वर्ष होने जा रहे हैं। मैंने किसी भी मद्य का एक बूँद कभी सेवन नहीं किया।"

"मैं हैरान हूँ कि आप जीवित कैसे हैं?"

"कैसे की बात छोड़िये। मैं जीवित हूँ, आप देख तो रहे हैं?"

"पर मैं तो आज सर्दी अनुभव कर रहा हूँ।"

"ठीक है। आपके लिये पत्नी के 'कप बोर्ड' में से निकाल दूँगा।"

पद्मदेव ने ऐमालीना के 'कप बोर्ड' में से 'वोडका' की बोतल निकाली। एक जग में गर्म जल डाल उसमें बोतल रख उसे पीने योग्य उष्ण किया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर मेहमान के सामने लाकर रख दी। साथ ही बिस्कुट रख दिये। अपने लिए वह कॉफी बनाकर ले आया। दोनों पीने लगे तो मेहमान ने पूछा, ''प्रोफेसर! आपने मेरा नाम-धाम नहीं पूछा?''

''मैं जानने के लिये उत्सुक था। वह तब था जब आपने कहा था कि आप एक कार्य-विशेष से मुझे मिलने आये हैं। परन्तु जब आपने कहा कि आप ऐमालीना के नाम एक पत्र लाये हैं तो मैंने परिचय प्राप्त करने का भार ऐमालीना पर छोड़ दिया है। जब मुझसे कुछ काम नहीं तो मैं परिचय प्राप्त करने का कोई कारण नहीं समझता।''

''तो यह आपकी रुचि का विषय नहीं कि आपकी पत्नी से कौन मिलने आ रहा है?''

''मैं पत्नी के निजी कामों में झाँकता नहीं।''

आगन्तुक अभी भी मुस्करा रहा था। उसने कहा, 'मैं हिन्दुस्तान मे रह चुका हूँ और जानता हूँ कि वहाँ के पति अपनी पत्नियों से दासी का-सा व्यवहार करते हैं। वे पत्नी पर सदा सन्देह करते रहते हैं कि वह किसी बाहरी आदमी के मोह-जाल में न फँस जाये।''

''मालूम होता है,'' अब पद्मदेव ने मुस्कराते हुए कहा, ''आप किसी मुसलमाान के घर में रहे हैं अथवा किसी ऐसे परिवार की बात जानते हैं जो मुसलमानी काल के रीति-रिवाज को पकड़े हुए है?

''मैं तो यह मानता हूँ कि हिन्दू-वर्ग ने अपनी स्त्री-वर्ग को बहुत स्वतन्त्रता दे रखी है। इस पर भी हिन्दुओं का स्त्री-वर्ग अपनी स्वतन्त्रता का यूरोपियन स्त्रियों से बहुत कम दुरुपयोग करता है।''

''सत्य?''

''हाँ। जितना यौन-सम्बन्धों में ढीलापन यूरोप में देखा है, ऐसा तो हिन्दू-समाज का स्त्री-वर्ग चाहता ही नहीं।''

''आप उन्हें क्या स्वतन्त्रता दिये हुए हैं? आप रात के समय में स्त्रियों को घूमने की स्वीकृति नहीं देते। वे बिना पुरुष के संरक्षण के कहीं जा नहीं सकती।''

''यह सब ठीक है, परन्तु कामरेड! ऐसा हमारे यहाँ की स्त्रियाँ स्वेच्छा से चाहती हैं। यह संरक्षण वे अपने पर नियन्त्रण के लिए नहीं प्रत्युत दुष्टों से अपनी रक्षा के लिए चाहती हैं। यह वे आवश्यक समझती हैं।''

''अभिप्राय यह कि वहाँ के पुरुष बहुत अधम हैं?''

''वे कदाचित् उतने ही अधम हैं जितने किसी भी अन्य देश के हैं। अन्तर यह है कि यूरोप के पुरुषों को बलात्कार करने की आवश्यकता नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पड़ती। यहाँ स्त्रियाँ बिना बलात्कार के ही अपने को बलि के लिए प्रस्तुत करती रहती हैं। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि यूरोप में प्राय: स्त्रियाँ पुरुषों के साथ सम्बन्ध एक पैग शराब से अधिक मूल्यवान् नहीं समझतीं। हिन्दुस्तान में यह एक अति मूल्यवान् वस्तु समझी जाती है और इसे स्त्रियाँ स्वेच्छा से और वह भी अपने पति के साथ ही प्रयोग करना चाहती हैं। उनकी इस स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए वे पुरुषों का संरक्षण चाहती हैं।''

''और रूस में आप कैसा अनुभव करते हैं?''

''यहाँ तो स्त्री-वर्ग यूरोप के दूसरे देशों से अधिक स्वतन्त्र है। उनकी इस स्वतन्त्रता में यहाँ का शासन सहायक हो रहा है।''

''तो आप ऐसा नहीं चाहते?''

''मैंने यह नहीं कहा। मैं तो केवल यूरोप और हिन्दुस्तान की स्त्रियों की मनोभावनाओं में तुलना कर रहा हूँ। जहाँ हिन्दुस्तान की सरकार स्त्रियों की स्वतन्त्रता की रक्षा का भार अपने पर नहीं लेती, इसका भार स्त्रियों के सम्बन्धी पुरुषों पर रहता है, वहीं इस देश में स्त्रियों की स्वतन्त्रता की रक्षा का भार सरकार ले रही है।''

''तो आप क्या पसन्द करते हैं? आप व्यक्तिगत संरक्षण को पसन्द करते हैं अथवा सामाजिक संरक्षण को?''

पद्मदेव सरकार के कामों की आलोचना नहीं किया करता था। वह समझता था कि कोई भी अपरिचित और साधारण परिचित भी सरकार का भेदिया हो सकता है और उसके सामने मन की बात कहकर वह मुसीबत में फँस सकता है। वह अपने को एक बन्दी मात्र समझता था। जैसे कारागार में एक बन्दी को अपनी जबान और व्यवहार पर नियन्त्रण की आवश्यकता रहती है वैसे ही वह मास्को में प्रोफेसरी करता हुआ अनुभव करता था।

वह ऐसे प्रश्नों का उत्तर सदा गोल-मोल दिया करता था। उसने कह दिया, ''आपके प्रश्न का उत्तर तो कोई स्त्री ही दे सकती है। वह स्त्री जो दोनों प्रकार के संरक्षणों का अनुभव रखती हो। भला, एक पुरुष इसमें क्या सम्मति दे सकता है?

''मैं एक बात समझता हूँ कि शासन को यह भार अपने पर ले लेने से मैं सुखी हूँ। मैं अब अपनी पत्नी के विषय में कभी चिन्ता नहीं करता। वह दिन-रात स्वेच्छा से विचरती है। मैं शान्ति से अपने अध्ययन के कार्य में लीन रह सकता हूँ।''

''तो इस प्रबन्ध से आप प्रसन्न हैं?''

''यह तो है ही। भला सरकार की ओर से यहाँ के प्रत्येक नागरिक के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाने-पहनने का प्रबन्ध कर देने से कैसे अप्रसन्नता का कारण हो सकता है?''

''आपने अपनी पत्नी से कभी पूछा नहीं कि वह कैसा अनुभव करती है?''

इस समय ऐमालीना आ गयी थी। उसने गृह में प्रवेश किया तो द्वार खुलने का शब्द पद्‌मदेव के कान में पड़ गया था। उसने सामने बैठे मेहमान को कह दिया, ''वह आ गई है। यह बात उससे ही पूछ लें तो अच्छा रहेगा।''

: 4 :

ऐमालीना ने मकान की बैठक में प्रवेश किया तो पद्‌मदेव के सामने बैठे व्यक्ति को देख प्रसन्नता से उबलते हुए आगे बढ़ उससे हाथ मिला पूछने लगी, ''कामरेड मार्टोव! कब आये?''

मार्टोव ऐमालीना के आने पर उठ खड़ा हुआ था। ऐमालीना ने हाथ मिलाकर उसे बैठने को कह दिया। मार्टोव ने बैठते हुए कहा, ''मैं आज प्रातः ही मास्को पहुँचा था। रेल के स्टेशन से सीधा विश्वविद्यालय से तुम्हारे घर का पता पूछता हुआ यहाँ आ पहुँचा। मकान में कोई नहीं था। मैंने आपके पड़ोसी से पता किया तो उसने बताया कि तुम्हारे पति 'चीफ सेक्रेटरी' से मिलने 'क्रैमलिन' गये हैं। मैं इनको देखना चाहता था। इस कारण 'क्रैमलिन' के द्वार के बाहर से चलने वाली बस के समीप खड़ा हो इनकी प्रतीक्षा करता रहा। यह आये तो इनके साथ-साथ यहाँ पहुँच गया हूँ।

''मैं आशा करता था कि तुम घर आ गयी होगी, परन्तु तुम नहीं थीं। इसका परिणाम यह हुआ कि इनसे आधा घंटा-भर रोचक वार्तालाप करने का अवसर मिल गया।''

''और कैसे लगे हैं मेरे यह कामरेड पति?''

''जैसा तुमने बताया था, उससे कुछ अधिक ही समझदार और भद्र प्रतीत हुए हैं।''

''तो क्या यह एक इच्छा करने योग्य पति नहीं?''

''मैं तो यह कह सकता हूँ कि यह इच्छा करने योग्य साथी हैं।''

''तो मेरा काम कर लाये है?''

''हाँ, मिस्टर जेरियर और कैटालीना से भेंट हुई थी। वे लेनिनग्राड के सुधार-गृह में बन्दी हैं। आपका भाई लेनिनग्राड की कार्पोरेशन में क्लर्क है। उसे आपके माता-पिता को सप्ताह में एक बार 'वार्डन' के सामने मिलने की स्वीकृति है। इससे वह अपने माता-पिता को सुख पहुँचाने का यत्न करता रहता है। तुम्हारी माँ ने एक पत्र दिया है।''

ऐमालीना ने हाथ बढ़ा कर पत्र माँग लिया। मार्टोव ने अपनी जेब में से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R0 89.9143
GUR-D
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
Gurukula Kangri (Deemed University) Haridwar
167913

एक पत्र निकाल, ऐमालीना के हाथ पर रख दिया। ऐमालीना ने वह पत्र पढ़ा नहीं। उसे अपने 'ब्लाउज' के अन्दर रख लिया। ऐसा कर ऐमालीना ने वार्तालाप का विषय बदल दिया। उसने अपने पति को सम्बोधित कर कहा, "यह मिस्टर मार्टोव सोवियत सरकार की ओर से जर्मन में उपद्रव उत्पन्न करने के लिये गये हुए थे। जब हिटलर ने वहाँ पकड़-धकड़ आरम्भ की तो इन्होंने हमारे झूठे 'पास-पोर्ट' बनवाने में सहायता की थी।

"कुछ महीने हुए, यह मुझे यहाँ मिल गये थे। मुझे पता चला कि यह अभी भी सोवियत सरकार के गुप्त विभाग में कार्य करते हैं। अतः मैंने इनसे अपने पुराने सम्बन्धों के नाते अपने माता-पिता का समाचार लेने का यत्न किया था और आज यह वहाँ का समाचार लाये हैं।"

पद्मदेव ने अपने मन में खटक रही बात पूछ ली। वह कहने लगा, "अब तो मैं सब समझ गया हूँ। मैं विस्मय कर रहा था कि यह अपरिचित होते हुए कैसे मेरे, मेरी प्रिय पत्नी और मेरे सास-श्वसुर के विषय में जानते हैं? जिस विभाग में यह हैं, उसमें होते हुए तो इनका मेरे हिन्दुस्तान के मित्र प्रोफेसर सुदर्शन की बात जानना भी समझ में आने लगी है।"

"परन्तु कॉमरेड! क्या मैं यह जान सकता हूँ कि मेरा कौन पड़ौसी है जिसने आपको बताया था कि मैं यहाँ के चीफ से मिलने गया हूँ?"

"यह जानकर क्या करेंगे?"

"कुछ नहीं। मैं ज्ञान प्राप्त करने में विश्वास रखता हूँ। ज्ञान ज्ञान के लिये ही प्राप्त किया जाता है। उसका क्या उपयोग हो सकेगा, यह तत्कालीन जानने की बात नहीं। कोई भी ज्ञान की बात किसी भी समय किसी भी काम आ सकती है।"

"तो इतना समझ लीजिये कि यहाँ प्रत्येक व्यक्ति के पीछे हमारे विभाग का कोई न कोई कर्मचारी लगा रहता है। उसको अपने आदमी की गतिविधियों का ज्ञान रखना पड़ता है। इस कारण आप पर नियुक्त व्यक्ति ने यह जान लेना अपना कर्त्तव्य समझा होगा कि आप आज किस समय किधर गये हैं?"

"मेरे वहाँ जाने के विषय में केवल एक व्यक्ति जानता था। वह विश्वविद्यालय का चान्सलर विस्टर डब्ल्यू निकोविस्की हैं। मुझे सन्देह हो रहा है कि वह मुझ पर नियुक्त गुप्त विभाग का कर्मचारी है।"

"आपका अनुमान ठीक भी हो सकता है और गलत भी। कदाचित् वह व्यक्ति जिसने मुझे सूचना दी है, वह उस और आप दोनों पर देख-रेख के लिये नियुक्त हो।"

"पद्मदेव मन में विचार कर रहा था कि यह व्यक्ति निकोविस्की नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकता। उसके साथ तो वह बहुत खुली-खुली बातें कर चुका था। यदि उसने फँसाना होता तो अब से बहुत पहले वह फँसा चुका होता।

इस पर मार्तोव ने कह दिया, "अभी तक आपके विरुद्ध किसी प्रकार की शिकायत नहीं है। ऐमालीना से भेंट होने और उसके आपके साथ सम्बन्ध की बात जान लेने के उपरान्त मैंने यत्न किया था कि आपकी पूर्ण कथा जानूँ। इस जानकारी में ही आपके मित्र सुदर्शन का ज्ञान हो गया और उसकी गतिविधियों का ज्ञान भी हुआ।"

पद्‌मदेव इतने बड़े राज्य को अपने विषय में झूठी सूचना देने की बात सुन अति विस्मित हुआ। उसके मन में इस राज्य के प्रति भारी कटुता उत्पन्न होने लगी थी। एक बार पहले भी यह कटुता अनुभव हुई थी। यह तब था, जब ऐमालीना को उसकी पत्नी स्वीकार कर भी उसके साथ भारत जाने की स्वीकृति नहीं दी गयी थी। वह ऐमालीना को इस प्रकार के मानवता-विहीन राज्य में अकेले छोड़कर जाने के लिये मन को तैयार नहीं कर सका था और भीतर ही भीतर उस कटुता को पीकर मास्को में ही रहने का निश्चय कर बैठा था।

आज अपने एक प्रिय मित्र के इस देश में आने पर उससे अनृत भाषण करने की बात सुन पहले से अधिक उसको दुःख हुआ था। इस पर भी वह अपने भावों को भीतर ही भीतर छिपाकर मुस्कराता हुआ मार्तोव की ओर देखता रहा।

मार्तोव ने अपनी सफाई देते हुए कहा, "अपने विभाग के किसी भी कार्य पर मैं टीका-टिप्पणी नहीं कर सकता। यह मेरे अधिकार से बाहर की बात है।"

"ठीक है।" पद्‌मदेव ने उसकी सफाई को स्वीकार करते हुए कह दिया, "मुझे अपने मित्र से मिलकर कुछ अधिक प्रसन्नता न होती।"

"क्यों?"

"इस देश के संविधान और हिन्दुस्तान की राजनीतिक स्थिति में आकाश-पाताल का अन्तर है। वहाँ के लोगों से सम्पर्क किसी प्रकार भी प्रसन्न्ता का सूचक नहीं हो सकता। मुझे अपने मित्रों को अभी भी अन्धकार में टटोलते देख हर्ष नहीं हो सकता था।"

पद्‌मदेव का विचार था कि कदाचित् यह व्यक्ति एक-एक शब्द और उसके मुख पर प्रकट होने वाले एक-एक भाव की रिपोर्ट अपने अधिकारियों को देगा। इसे वह अपने भावों पर यत्न से नियन्त्रण रखते हुए मुस्कराते हुए बैठा रहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्तोव ने ऐमालीना के 'कप बोर्ड' से निकाली 'बोडका' पी तथा पति-पत्नी ने कॉफी और बिस्कुट लिये।

जब मार्तोव जाने लगा तो पति-पत्नी नर्सरी से बच्चों को लाने के लिये चल पड़े। मार्तोव भी उनके साथ-साथ नर्सरी तक गया। वहाँ उसने ऐमालीना के छोटे लड़के को देखा तो पद्मदेव और उस बच्चे की आकृति में तुलना कर मुस्कराया।

वहाँ से वे 'कैन्टीन' में गये और बच्चों को भोजनालय में साथ ले गये। बड़ा लड़का नाकेश इस समय चार वर्ष का था। वह 'नर्सरी' के साथ संलग्न स्कूल में पढ़ता था। छोटा अभी एक वर्ष का था। वह तो अभी बात भी नहीं कर सकता था। मार्तोव उनके साथ था। उसने भी प्रोफेसर साहब के खर्चे पर वहाँ भोजन किया और फिर उनसे हाथ मिला वह विदा हो गया।

विदा होने से पूर्व उसने ऐमालीना से पूछा, ''इस पत्र का उत्तर भी देना होगा क्या?''

''यह तो मैं पत्र पढ़ने के उपरान्त ही बता सकूँगी।''

''तो मैं कब तक मिलूँ?''

''आप पुनः लेनिनग्राड कब तक जायेंगे?''

''वहाँ तो जाना बनता रहता है। किसी भी दिन एकाएक वहाँ के लिये काम निकल सकता है।''

''अच्छी बात है। आप परसों मिलियेगा। या तो पत्रोत्तर आपको दे सकूँगी, अन्यथा किसी उत्तर के न होने की बात बता दूँगी।''

मार्तोव गया तो पति-पत्नी दोनों अपने निवास-गृह की ओर लौट पड़े। नाकेश ने पिता की अंगुली पकड़ी हुई थी और वह साथ-साथ पैदल चल रहा था। अपशोक ऐमालीना की गोद में था।

चलते हुए पति-पत्नी किसी प्रकार की बातचीत नहीं कर रहे थे। वे राजनीति और उसमें अपनी स्थिति पर कभी चलते-फिरते रूप में बात नहीं किया करते थे। आज इस मार्तोव के विषय में पद्मदेव के मन में बहुत-सी बातें उठ रही थीं। उसे कुछ ऐसा अनुभव हुआ था कि यह मार्तोव मास्को में पहली ही बार उसे मिला है, परन्तु ऐमालीना से वह भली-भाँति परिचित है। रूस की राजनीतिक स्थिति में वह किसी भी अपरिचित व्यक्ति से अथवा जिस व्यक्ति के विषय में कम ज्ञान हो, इतनी सहिष्णुता से मिलना न तो वह सम्भव समझता था और न ही उचित। अतः ऐमालीना को मार्तोव से घनिष्ठता से बातें करते देख वह इसी परिणाम पर पहुँचा था कि दोनों एक-दूसरे को बहुत भली-भाँति जानते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐमालीना ने उसके विषय में कभी बताया नहीं था। इस कारण वह उससे कुछ पूछना भी नहीं चाहता था। घर पर पहुँच कर भी इधर-उधर की बातें होने लगीं। पद्मदेव ने बताया, ''विश्वविद्यालय की सोवियत के दो विद्यार्थी सदस्य आज मिले थे। वे कह रहे थे कि वे आगामी सप्ताह विश्वविद्यालय की सोवियत के तत्त्वावधान में एक सभा कर रहे हैं। उसमें कामरेड चिकोव भी आ रहे हैं। मुझे उसमें सम्मिलित होने का निमन्त्रण मिला है।''

''तो आप वहाँ जा रहे हैं?''

''इनकार कैसे कर सकता हूँ? वहाँ जाना ही होगा और कुछ कहना भी होगा।''

''किस दिन है?''

''आगामी रविवार को मध्याह्नोत्तर के समय मुख्य भवन में।''

''मैं सुनना चाहूँगी।''

''ठीक है। मैं बहुत सतर्कता से व्याख्यान तैयार करूँगा।''

बच्चे सो रहे थे। ऐमालीना उनको उनके कमरे में विस्तरों में सुला और स्वयं उनके साथ लेट उनको गर्म करने लगी।

पद्मदेव अपने 'स्टडी रूम' में चला गया। न तो ऐमालीना ने पत्र के विषय में कुछ बताया और न ही अपने माता-पिता के विषय में। अगले दिन नियमित जीवन चलने लगा। पद्मदेव ऐमालीना के स्वयं पत्र के तथा मार्टोव के विषय में बात करने की प्रतीक्षा कर रहा था। ऐमालीना चुप थी। दोनों अपने-अपने कामों में लीन थे। ऐमालीना का यह नियम था कि वह अपना स्वाध्याय विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में करती थी। पद्मदेव अपना स्वाध्याय घर पर करना पसन्द करता था। वह पुस्तकालय से पुस्तकें घर ले आता था। और साथ ही अपना निजी पुस्तकालय तैयार कर रहा था।

प्रातः का अल्पाहार वे घर पर ही तैयार कर लेते थे। इससे समय बच जाता था और वे उस बचत का उपयोग अपने अध्ययन में करते थे।

पद्मदेव अगले दिन प्रातः 'स्टडी रूम' में जाकर पढ़ने लगा और ऐमालीना अपना बैग जिसमें उसके लिखने-पढ़ने की सामग्री थी, लेकर पुस्तकालय को चली गयी। जाते-जाते वह बच्चों को नर्सरी में छोड़ती गयी।

पद्मदेव भी 'स्टडी रूम' में आकर अभी बैठा ही था कि निकोविस्की आ गया। उसने द्वार पर हाथ लगाया तो वह खुल गया। ऐमालीना अभी-अभी गयी थी और द्वार बन्द नहीं किया गया था।

निकोविस्की पद्मदेव के समीप रखी कुर्सी पर बैठते हुए पूछने लगा, ''द्वार खुला था, क्यों?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

“ऐमालीना अभी-अभी पुस्तकालय गयी है। मैं द्वार बन्द करने के लिये उठने ही वाला था।”

“भाई! आजकल आपकी विशेष देखभाल हो रही है। इस कारण आपको सावधान रहना चाहिये।”

“सावधान तो हूँ, परन्तु इस विशेष देखभाल का कारण क्या हो सकता है?”

“मुझे दो बातें ही समझ में आती हैं। एक तो यह कि ‘चीफ सेक्रेटरी’ ने आपसे भेंट की है और उनका सन्देश मिला है कि वह आपसे पुनः मिलना चाहते हैं। दूसरी बात यह भी हो सकती है कि हिन्दुस्तान से आपके विषय में पूछताछ हो रही है।”

“प्रिय कामरेड! आखिर मेरे मित्र और सम्बन्धी जो हिन्दुस्तान में है, मेरे विषय में यदि चिन्ता करते हैं तो इसलिये कि उनको मेरी ठीक-ठीक सूचना नहीं दी जा रही। मुझे यह पता चला है कि मेरे एक मित्र किसी कार्यवश यहाँ आ गये थे। उन्होंने मेरे विषय में यहाँ के गुप्तचर विभाग से पता करना चाहा था कि मेरे विषय में जो कुछ भी सूचना यहाँ है, उसे नहीं दी। गुप्तचर विभाग ने गलत सूचना दी कि मेरी हत्या रूस से बाहर ही फासिस्टों ने मिस्टर जैरियर के परिवार के साथ कर दी थी। यह असत्य बात थी। मेरा पूर्ण इतिहास यहाँ के गुप्तचर विभाग के पास है।”

“और आपको यह सूचना किसने दी है?”

“एक गुप्तचर विभाग का आदमी कल मिला था। उसने यह बात बतायी है।”

“और आपने क्या कहा है?”

“कुछ नहीं। मैं मुस्कराकर चुप रहा।”

“आपको कुछ उत्तर देना चाहिए था। ऐसा जिससे यह प्रकट होता कि आप उन मित्रों के लिये चिन्तित नहीं हैं।”

“मेरा मुस्कराना और हँसना क्या यह प्रकट नहीं करता था?”

“मुस्कराहट एक मूक भाषा है। इसके अर्थ गलत, मेरा अभिप्राय है कि वे जो आप नहीं समझते, भी लिये जा सकते हैं। आपको शब्दों में बात करनी चाहिये थी। मूक भाषा में नहीं। शब्द मूक भाषा से अधिक स्पष्ट और मूर्खों के समझने योग्य होते हैं।”

“पर मैं समझता हूँ कि मुझे उक्त सूचना देने वाला मूर्ख नहीं था। उसके कुछ भी न समझने में सहायक होने के लिये ही मैं मुस्कराया था।”

“मैं आपके पास एक विशेष प्रयोजन से आया हूँ।” निकोविस्की ने बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदल दी, ''मेरे पास कुछ विद्यार्थी आये हैं और वे चाहते हैं कि मैं आगामी रविवार को होने वाली उनकी सोवियत में सभापति बनूँ। मिस्टर चिकोव वक्ता होंगे और आपको चिकोव के भाषण पर अपनी प्रतिक्रिया बतानी है।''

''मुझे तो कुछ दूसरी बात बतायी गयी है। मुझे यह कहा गया मिस्टर चिकोव गोष्ठी का उद्घाटन करेंगे और मैं मुख्य वक्ता हूँगा। आप मेरे व्याख्यान पर और चिकोव के उद्घाटन भाषण पर टीका-टिप्पणी करेंगे।''

''बात एक ही है। आप जब भाषण करेंगे तो मिस्टर चिकोव के भाषण के उपरान्त ही तो करेंगे। स्वाभाविक रूप में आप उस पर अपनी सम्मति देंगे।''

''यह आवश्यक है क्या?''

''तो फिर और क्या कहेंगे?''

''मैं तो स्वतन्त्र रूप से बात करूँगा। एक इतिहासज्ञ होते हुए जो कुछ कहूँगा, इतिहास की दृष्टि से ही कहूँगा।''

''मैं समझता हूँ कि चिकोव इतिहास से अनभिज्ञ होने के कारण अपना वक्तव्य मार्क्स की फिलॉसोफी के अनुरूप ही कहेगा।

''दोनों में आकाश-पाताल का अन्तर हो सकता है।''

निकोविस्की मुस्कराकर चुप कर रहा। पद्मदेव ने स्पष्ट कह दिया, ''मैं केवल मात्र इतिहास के पृष्ठों पर लिखी बातें ही कहूँगा। उसकी विवेचना मैं नहीं करूँगा।''

''चीफ सेक्रेटरी से कल क्या बातचीत हुई थी?''

''एक घंटा प्रतीक्षा करने के उपरान्त केवल पाँच मिनट तक बात हुई थी। उसमें गाँधीजी का वर्णन आया था। मुझसे उनके विषय में पूछा गया तो मैंने उनके शारीरिक सौन्दर्य का वर्णन कर दिया। उनके भाषण के विषय में पूछा तो मैंने गाँधीजी की अहिंसा की नीति का वर्णन कर दिया। उस पर मेरी सम्मति माँगी गयी तो मैंने इतिहास से गाँधीजी की बात को असिद्ध बता दिया। इस पर इतिहास के विषय में बात हुई तो मैंने इतिहास की बुर्जुआ और मार्क्सवादी विवेचनाओं के अतिरिक्त तीसरी विवेचना का कथन कर दिया। इस पर बात नहीं हो सकी। उनको कोई काम स्मरण हो आया था और वह यह कह उठ गये कि इस वार्तालाप को आगे चलाने के लिए फिर मिलेंगे। बस मैं चला आया।''

''आपकी इतिहास की तीसरी विवेचना पर मतभेद हो सकता है। मैं चाहता हूँ कि वह मतभेद प्रकट न हो।''

''मैं तो सब बात निष्पक्ष भाव में सामने रखने का यत्न करूँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आप उनसे मिलने के लिए कब जा सकेंगे?"

"मैं तो सर्वथा उनके अधीन हूँ। जब भी वह कहेंगे मैं वहाँ अथवा जहाँ वह कहें, उपस्थित हो जाऊँगा।"

"तो मैं रविवार के दिन विद्यार्थियों की गोष्ठी के उपरान्त समय नियत कर दूँ?"

"कर सकते हैं। मैं नियत समय पर पहुँच जाऊँगा"

"इस बार आपको निमन्त्रण सपत्नीक होगा।"

"मुझे इमसें क्या आपत्ति हो सकती है?"

"बस यही बात जानने आया था। अच्छी बात है। अब मैं चलता हूँ।"

: 5 :

पद्मदेव निकोविस्की के जाने के उपरान्त अभी अपने काम में लगा ही था कि मार्टोव आ पहुँचा। पद्मदेव उसे देख विस्मय में उसको देखता हुआ उसका स्वागत करने लगा। उसने कहा, "हैलो, कामरेड! आपके दर्शन की आशा तो मैं कल करता था।"

"मैंने आपसे ऐसी कोई बात नहीं कही थी। कल तो मैंने ऐमालीना से मिलने का समय निश्चय किया था। आपसे तो कोई समय निश्चय नहीं किया था। अतः आपका परिचय प्राप्त करने तो मैं आज आया हूँ।"

"मुझे इससे बहुत प्रसन्नता हुई है।"

"आपने मेरे विषय में तो सब जानकारी प्राप्त कर ली होगी?"

"किससे?"

"अपनी पत्नी से।"

"मुझे कुछ यह समझ आया था कि वह भी आपके विषय में कुछ अधिक नहीं जानती। इस कारण उसकी अधूरी जानकारी से अपना ज्ञान निर्माण करना मैंने ठीक नहीं समझा। आधे सत्य का ज्ञान तो कुछ भी न जानने से अधिक भयंकर होता है।"

"क्या भयंकरता होती है?"

"अज्ञानी सदा भटकता रहता है। आधी सच्चाई का ज्ञान ही अज्ञान कहलाता है। सर्वथा न जानना तो अज्ञान नहीं। वह एक प्रकार की खाली स्लेट होती है। उस पर कुछ भी लिखा जाना सम्भव है। जब अधूरा ज्ञान लिखा जाये तो वह मिथ्या ज्ञान के तुल्य ही होता है।"

मार्टोव इस युक्ति को सुन चकित रह गया। उसने पद्मदेव के कान के समीप अपना मुख कर कहा, "आप तो अति भयंकर जीव हैं।"

"क्या भयंकरता देखी है कामरेड ने मुझमें?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही कि आप संसार के रहस्य को जान गये हैं। मन खाली नहीं रह सकता। गलत बात का झूठापन शीघ्र ही पता चल जाता है। इस कारण चतुर लोग आधा सत्य और आधा झूठ अथवा सत्य के साथ कुछ बात कल्पना कर दूसरों के मस्तिष्क में डाल देते हैं। इससे आधे सत्य के साथ शेष को भी सत्य मान लिया जाता है अथवा आधे सत्य के साथ कल्पना को भी सत्य मान लिया जाता है और यह सब अति भयंकर हो जाता है।

"परन्तु मिस्टर देव! आपको यह कैसे पता चला कि ऐमालीना मेरे विषय में अधूरा ज्ञान रखती है?"

"आपके विषय में अधूरी बात बताने से। वह आपके सामने ही कह रही थी कि आप खुफिया पुलिस के व्यक्ति हैं। इस पर भी उसने आपसे अपने माता-पिता की बात कर दी। यह क्यों? किस बात ने उसके मन में आपके प्रति इतना विश्वास उत्पन्न कर दिया कि उसने अपने मूल रहस्य को बता दिया? इसमें कारण उसने नहीं बताया।

"मैं समझ गया कि वह आपके विषय में कुछ नहीं जानती। इससे मेरा विस्मय बहुत बढ़ गया। उसने बताया नहीं। कदाचित् वह स्वयं जानती नहीं। अत: आपके विषय में उसकी कल्पित बात मैंने सुननी नहीं चाही।"

"तो आपने उससे पूछा नहीं?"

"नहीं। पूछता तो वह कल्पित बात बताने लगती।"

मार्टोव हँस पड़ा। हँसते हुए उसने बताया, "तो मैं आपको बताऊँ?"

"इसमें मैं इन्कार कैसे कर सकता हूँ? आप आये हैं तो मैं आपको मना नहीं कर सका। मना करने में भला क्या लाभ होगा?"

"तो सुनिये। मैं भी यहूदी हूँ और ऐमालीना के माता-पिता भी यहूदी हैं। यह कारण है कि वह मेरे विषय में कुछ अधिक न जानती हुई भी मेरा विश्वास करती है।"

"मैंने सुना है कि यहूदी एक व्यापारी जाति होने से सदा दूसरों को धोखा देने के लिये तेयार रहते हैं।"

"यह बात हमारी जाति के शत्रुओं ने फैला रखी है। न तो हम सब-के-सब व्यापारी हैं और न ही हम विश्वासघाती हैं। हम अपने विचार के व्यक्तियों से कभी दगा नहीं करते। दूसरों से भी हम सदा युक्तियुक्त व्यवहार करते हैं, परन्तु ईसाई तो 'ऐथीस्ट' (अविश्वासी) हैं। वे किसी ऐसे परमात्मा को मानते नहीं जो सबकी बात को पहले हो जानता है। इस कारण वे अपने मन की बात छिपा कर रखने में अपने को समर्थ मानते हैं।

"हम विश्वास रखने वालों के साथ विश्वास का पालन करते हैं और मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में कुछ छिपाकर रखने वालों के साथ अपनी बात मन में छिपा कर रखते हैं। इसी कारण ईसाइयों को हम कभी-कभी धोखा भी दे देते हैं।

''जो प्रभु जहोवा पर विश्वास रखता है, हम उसे कभी धोखा नहीं दे सकते।''

''मुझे विस्मय हो रहा है कि इस मनःस्थिति में आप खुफिया पुलिस में कैसे काम कर सकते हैं?''

''यह तो बहुत ही सरल बात है। जब भी मुझे किसी गैर-यहूदी पर जासूसी के लिये लगाया जाता है तो मैं वफादारी से काम करता हूँ। अपने मत वालों की मैं रक्षा ही करता हूँ।''

''और आप मुझे क्या समझते हैं? मैं यहूदी हूँ अथवा गैर-यहूदी?''

''यही जानने के लिये मैं यहाँ आज आया हूँ।''

''मैं यहूदी मज़हब के विषय में कुछ नहीं जानता। हाँ, मेरा विवाह एक यहूदी लड़की से हुआ है। इससे मैं यहूदी हो गया हूँ अथवा नहीं, कह नहीं सकता।''

''मैंने आपके विषय में ऐमालीना से कुछ जानने का यत्न किया है।''

''सत्य?'' पद्मदेव का सन्देह ठीक प्रतीत हो रहा था कि वह व्यक्ति ऐमालीना से बहुत मिलता रहा है। उसे विस्मय था कि ऐमालीना ने उसे इसके विषय में कभी नहीं बताया। वह विस्मित मार्टोव का मुख देखने लगा था।

उत्तर मार्टोव ने दिया। उसने कहा, ''हाँ, उसने मुझे बताया है कि आपके सम्मुख उसे यहाँ छोड़कर भारत जाने का प्रस्ताव रखा गया था। आपकी वहाँ एक पत्नी भी है। आपके कथनानुसार वह ऐमालीना से सुन्दर भी है, परन्तु आपने ऐमालीना को यहाँ के खूँखार पशुओं के अधिकार में छोड़ हिन्दुस्तान जाने से इनकार कर दिया है। यह बात प्रकट करती है कि आपके मस्तिष्क की बनावट यहूदी ढंग की है।''

पद्मदेव हँस पड़ा। हँसते हुए कहने लगा, ''मैं इस मस्तिष्क को हिन्दू मस्तिष्क समझता हूँ।''

''परन्तु मैं हिन्दुस्तान में रह आया हूँ और वहाँ पर हिन्दुओं को ऐसा नहीं देखा। अपने पत्नी के प्रति वचन के इतने पाबन्द मैंने वहाँ कम देखे हैं।''

''मिस्टर मार्टोव! मैंने कल भी बताया था कि आप हिन्दुस्तान में किसी हिन्दू-समाज से अनभिज्ञ व्यक्ति से हिन्दुओं के विषय में पूछताछ करते रहे हैं।''

''देखिये, मैं बताता हूँ। हम विवाह को अटूट सम्बन्ध मानते हैं। विवाह-विच्छेद हमारे यहाँ नहीं होता। पृथक्ता (सैपरेशन) तो होती है, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्बन्ध-विच्छेद नहीं होता। मैंने इसी बात का पालन किया है। ऐमालीना मेरी पत्नी है। इस कारण मैं उसकी जी-जान से रक्षा करना चाहता था और कर रहा हूँ।''

''परन्तु यह जानकर भी कि आपकी पत्नी का एक लड़का किसी अन्य पुरुष से है, आपने 'सैपरेशन' स्वीकार नहीं किया?''

''मैंने अपने को उससे पृथक् कर रखा था। एक वर्ष से अधिक तक हम एक बिस्तर पर नहीं सोये और जब मुझे विश्वास हो गया कि उसका वह दोष अस्थाई था तो मैंने पुन: उसे पत्नी का अधिकार दे दिया है।

''मैं पति-पत्नी के व्यवहार को अपनी निजी बात मानता हूँ। इस कारण तलाक की आवश्यकता अनुभव नहीं हुई और पृथक्ता के उपरान्त पुन: विवाह की भी आवश्यकता अनुभव नहीं की।''

''इस सब व्यवहार में वचन का पालन और उसके लिये पूर्ण जीवन की बाज़ी लगा देना जहोवा के मानने वालों का-सा व्यवहार है।''

''इसका अभिप्राय यह हुआ कि आप मुझ पर उतना ही विश्वास करते हैं जितना कि एक यहूदी पर?''

''हाँ; मैं इसी आशा से आपके विषय में और अधिक ज़ानने आया हूँ। ऐमालीना ने मुझे बताया है कि आप शत-प्रतिशत विश्वास के योग्य है और इस बात का उसने एक प्रमाण दिया है।''

''क्या?''

''वह यह कि आप निकोविस्की के विश्वासपात्र हैं।''

''आप चान्सलर साहब के विषय में क्या जानते हैं?''

''वह एक चरित्रवान् और जहोवा का अनन्य भक्त है।''

''यह मैं नहीं जानता। इस विषय में मेरी उससे कभी बातचीत नहीं हुई हैं।''

''वह यहूदी है। मैं जानता हूँ। उसका विश्वास है कि प्रभु जहोवा सब कुछ जानता है और देखता है। यह हमारे विश्वास का प्रथम चरण है। दूसरी बात वह यह मानता है कि हमारे भीतर एक आत्मा है और उसे किये का फल मिलता है। यदि कोई भूल से अपने मत के साथ दगा कर देता है तो जब तक वह पश्चाताप न कर ले, तब तक वह पाप से मुक्त नहीं होता।''

''और प्रायश्चित्त कैसे किया जाता है?''

''सिनागौग में जाकर तब तक क्षमा माँगने रहना जब तक 'रब्बी' को उस पश्चाताप पर विश्वास न हो जाये।''

''पर मैं तो यह मानता हूँ और जहाँ तक मुझे समझ आया है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकोविस्की भी यही मानता है कि यह हमारा अन्तरात्मा है जो बताता है कि हम पाप से मुक्त हुए हैं अथवा नहीं। कोई पीर-पादरी नहीं जो ऐसा फतवा दे सकता है।''

''यह ठीक है। रब्बी हमारे यहाँ वही होता है जो अन्तरात्मा की आवाज़ को सुन सकता है।''

''परन्तु कामरेड मार्टोव! यहाँ आप अपनी अन्तरात्मा की बात सुनते हुए कैसे जासूस का काम कर सकते हो?''

''मैं यह मानता हूँ कि यहाँ राज्य करने वाले ईसाई हैं और प्रजा भी ईसाई है। ईसाई पर जुल्म करते हैं तो मुझे न राज्य से सहानुभूति है और न प्रजा से। हमें अपने वेतन तथा नौकरी से मतलब है। परन्तु जब बात राज्य और यहूदी की होती है तो उसकी भलाई करना मेरा मज़हब है। मैं वेतन और नौकरी को भी छोड़ सकता हूँ।''

''परन्तु यहाँ नौकरी तक ही तो नौबत नहीं रहती। यहाँ तो जीवन का अन्त भी हो सकता है।''

''एक यहूदी का जीवन समाप्त नहीं होता। अपने धर्म वालों की हिमायत में मौत होने से स्वर्ग मिलता है।''

इस वार्तालाप में पद्मदेव बहुत सावधानी प्रयोग कर रहा था। वह राजनीतिक विषय में एक शब्द भी मुख से नहीं निकाल रहा था। वह तो मकान की दीवारों का भी विश्वास नहीं करता था। इस कारण जब-जब भी बात रूसी राज्य और प्रजा पर आती तो वह उसको बदलकर व्यक्तिगत व्यवहार, मत और विश्वासों पर ले आता था। परन्तु मार्टोव पद्मदेव के मन पर विश्वास बैठाने का यत्न कर रहा था। उसने अब बात स्टालिन के विषय में आरम्भ कर दी। मार्टोव ने कहा, ''कल आप चीफ सैक्रेटरी से मिलने गये थे। आप पर जासूसी करने वालों का विचार था कि आप लौटकर नहीं आयेंगे। आपको किसी सुधार कैम्प में भेज दिया जायेगा।''

''सन्देह तो मेरे मन में भी हुआ था, परन्तु जब मैंने कामरेड स्टालिन को देखा तो मुझे वह एक निरीह बालक ही प्रतीत हुआ था।''

''परन्तु वह अति ज़ालिम व्यक्ति है।''

''ऐसे वे सब बालक होते हैं जिनको उल्टी शिक्षा दी गयी होती है।''

''तो यह कम्युनिज़्म को आप उल्टी शिक्षा मानते हैं?''

''कम्युनिज़्म क्या है और क्या नहीं है, मैं नहीं जानता। राजनीति मेरा विषय नहीं है। मैं एक बात जानता हूँ कि यह बचपन है कि किसी के कुछ समझने अथवा न समझने पर उसे दोषी मान दण्डनीय माना जाये। एक विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तक कार्य में न लाया जाये, तब तक उसे दण्ड अथवा पुरस्कार का अधिकारी नहीं मानना चाहिये। जो ऐसा मान लेता है, वह बालक ही है।''

मार्टोव हँस पड़ा और बोला, ''उसके मुख पर मत कहियेगा। वह क्रुद्ध हो जायेगा और फिर क्रोधवश क्या कर बैठे, कोई नहीं जानता।

''मैं आपको एक बात बताता हूँ। पिछले वर्ष क्रान्ति की जयन्ती पर किसी ने कह दिया कि कामरेड स्टालिन अब बूढ़ा हो रहा है। समीप खड़े किसी जासूस ने सुन लिया और वह पकड़ा गया और फिर किसी को पता नहीं चला कि वह कहाँ गया है।''

''इसे ही तो मैं बालकपन की बात मानता हूँ। वृद्ध होने से पुरुष सम्मान योग्य हो जाता है। यह प्रशंसा की बात है। इसे निन्दा की बात मान लेना बालकपन ही तो है।

''जैसे कोई बालक अपराधी नहीं माना जाता सकता; इसी प्रकार बचपन का-सा व्यवहार करने वाला अपराधी नहीं होना चाहिये।''

''मिस्टर देव! उस व्यक्ति से युक्ति नहीं करियेगा। कारण यह कि इस प्रकार का खुदपरस्त व्यक्ति युक्ति समझने की योग्यता नहीं रखता।''

''आपकी इस सम्मति के लिये धन्यवाद। वैसे तो मैं युक्ति किसी से नहीं करता। आपसे भी बात ऐसे चल पड़ी है जो दो बुद्धिजीवियों में चल सकती है। यह मैं इसलिये बता रहा हूँ, क्योंकि आप मेरे विषय में जानने आये हैं। मैं एक बुद्धि रखने वाला प्राणी हूँ। इससे मैं जो कुछ भी करता हूँ उसको अपनी बुद्धि से विचार कर ही करता हूँ। मुझे यह समझ में आया कि एक विदेशी राज्य में रहते हुए वहाँ की राजनीति में हस्तक्षेप करना न तो मेरे अधिकार की बात है और न ही सामर्थ्य की। मैं राज्य का विरोध नहीं कर सकता।

मेरी बुद्धि ने यह भी बताया है कि यदि राजनीति से पृथक् रहते हुए और अपना इतिहास-सम्बन्धी कार्य ईमानदारी से करते हुए किसी बालबुद्धि के कोप का भाजन बन जाता हूँ तो मुझे भयभीत होने में कारण नहीं। मैं शरीर छोड़ दूँगा।''

''इससे राज्य को क्या हानि होगी,''

''राज्य की हानि-लाभ देखना यहाँ के लोगों का कार्य है। यदि उन्होंने अपने देश का भाग्य एक बालबुद्धि को दे रखा है तो यह उनके विचार करने की बात है। मेरा इससे कोई सम्बन्ध नहीं।''

मार्टोव ने बात बदल दी। वह भी समझ गया था कि वे राजनीतिक क्षेत्र की सीमा को छूने लगे हैं। उसने पूछ लिया, ''ऐमालीना ने कैटालीना का पत्र आपको दिखाया होगा?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, अभी तक नहीं बताया कि उसकी माँ ने क्या लिखा है।"

"आपने पूछा भी नहीं?"

"यह मेरे स्वभाव में नहीं है। मैं किसी ऐसे विषय में कभी नहीं पूछता जिसका मुझसे सम्बन्ध नहीं। यह तो उसे स्वयं बताना चाहिये था।"

"आपकी इच्छा जानने की नहीं होती कि कोई आपके विषय में क्या लिख रहा है?"

"यह जानने की इच्छा तो है कि वे किस प्रकार है! उनके रहने और खाने-पीने का प्रबन्ध कैसा है? परन्तु जब यह ज्ञान ही नहीं कि उन्होंने मेरे विषय में कुछ लिखा है अथवा नहीं, तो इच्छा कैसे हो सकती है?"

"मैंने कैटालीना का पत्र पढ़ा है। परन्तु मैं बताऊँगा नहीं कि उसमें आपके विषय में क्या लिखा है? यह ऐमालीना का रहस्य है। मैं नहीं बताऊँगा।"

"आप इतना बताकर तो मेरे मन में संशय उत्पन्न कर दिया है। इस अवस्था में मैं जानने का यत्न करूँगा कि कैटालीना ने मेरे विषय में क्या लिखा है?"

"और यदि उसने न बताया अथवा कुछ झूठ बोल दिया तो?"

"मेरे पूछने पर यदि बतायेगी तो सत्य बतायेगी। अन्यथा कह देगी कि वह बताना नहीं चाहती।"

"आपको विश्वास है?"

"हाँ।"

"और यदि उसने कह दिया कि वह बताना नहीं चाहती तो कैसा अनुभव करेंगे?"

"मैं समझूँगा कि कुछ ऐसी बात है जिसको मुझे बताना वह ठीक नहीं सकझती। जब तक मुझे उसकी सहानुभूति का विश्वास है तब तक मैं यही समझूँगा कि मेरा हित इस बात में ही है कि मैं उस बात को न जानूँ। इससे मुझे सुख ही होगा।"

इस पर मार्टोव ने कंधों को झटका दे अपना असन्तोष प्रकट किया और बात बदल कर बोला, "पर मेरा आपके यहाँ आने का आशय आपके विषय में जानना है, आपकी पत्नी के विषय मे कुछ कहना नहीं। मैं जानना चाहता हूँ कि आप लाहौर में क्या थे?"

पद्देव ने हँसते हुए कहा, "यह प्रश्न आप अपने कार्यालय की ओर से पूछ रहे हैं अथवा अपने निजी ज्ञान-वर्धन के लिये?"

"अपने ज्ञान-वर्धन के लिये। मैं पुनः भारत भ्रमण के लिये जाना चाहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ।''

पद्‌मदेव को विश्वास नहीं आया। वास्तव में वह किसी भी रूस के रहने वाले का विश्वास नहीं करता था। इस कारण अपने स्वतन्त्र विचारों को रखता हुआ भी वह रूस में निरापद जीवन व्यतीत कर रहा था। इस पर भी निकोविस्की की बात उसे स्मरण हो आयी। उसने कहा था कि उसे बात का उत्तर देना चाहिये था। शब्दों के आश्रय ही अपने मन की बात को बताया अथवा छिपाया जा सकता है।

अत: उसने यह प्रकट करते हुए कि वह मार्टोव के कथन का विश्वास करता है, अपना पूर्व इतिहास बता दिया।

: 6 :

उसने बताया, ''मैं एक हिन्दुस्तानी पिता से बर्मी माँ की सन्तान हूँ। लाहौर में एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की है और इतिहास का प्राध्यापक रहा हूँ।

''मेरी इतिहास की विवेचना यह है कि संसार में युद्ध, विप्लव, हत्यायें, बलबे, चोरियाँ, डाके इत्यादि सब बुद्धि के फेर से होते हैं। बुद्धि मिलती है पूर्व-जन्म के कर्मों के फल से। जैसे शरीर पूर्व-जन्म के कर्मों के फल से मिलता है वैसे बुद्धि अच्छी अथवा बुरी भाग्याधीन होती है। इस पर भी एक सीमा तक इसकी उन्नति अथवा अवनति हो सकती है। शिक्षा से और एक प्रकार के अभ्यास से जिले योगाभ्यास कहते हैं, इसको उन्नत किया जा सकता है।''

इस विवेचना के साथ वह अपने तत्कालीन नेताओं की आलोचना करने लगा। उसने कहा, ''मेरे देश अर्थात् हिन्दुस्तान में नेता हैं महात्मा गाँधी। कुछ एक अन्य भी थे। मुसलमानों में सर आग़ा खाँ और हिन्दुओं में पंडित मदनमोहन मालवीय, लाला लाजपतराय। एक इन सबसे विलक्षण एकाकी आवाज़ भी थी। वह थी विनायक दामोदर सावरकर तथा भाई परमानन्द की। कुछ और भी थे, परन्तु उनकी गणना करना इस कारण आवश्यक नहीं कि उनका प्रभाव हिन्दुस्तान में नगण्य था।

''तब की बात बता रहा हूँ जब कि महात्मा गाँधी सबसे बड़े नेता थे। एक बार तो उन्होंने पूर्ण देश को ऐसा आन्दोलित कर दिया था कि ब्रिटिश साम्राज्य भी भयभीत हो घुटने के बल आ गया प्रतीत होता था। यह सन् 1922 की बात है। गांधीजी असहयोग आन्दोलन चलाने वाले थे। ऐसा अनुमान किया जाता था कि दो-तीन लाख लोग गोली मार समाप्त कर दिये जायेंगे। इस सबकी सम्भावना जनता को भी प्रतीत हो रही थी, परन्तु लोग निर्भीक थे और महात्माजी के आन्दोलन की तैयारी में लगे थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उन दिनों 'प्रिन्स आफ वेल्ज़' हिन्दुस्तान का भ्रमण कर रहे थे। यही पीछे किंग जॉर्ज पंचम बने। लोग उनको काले झण्डे दिखा रहे थे और उनके जलसे-जलूसों का बहिष्कार कर रहे थे। ब्रिटिश सरकार यह नहीं चाहती थी और गाँधीजी से किसी प्रकार का समझौता करना चाहती थी। गाँधीजी ने बातचीत के लिए शर्त यह लगा दी कि उनके साथी छोड़ दिये जायें। सरकार छोड़ने पर तैयार हो गयी, परन्तु सरकार मौलाना मुहम्मदअली को गाँधीजी का साथी नहीं मानती थी और गाँधीजी बिना उसके बात करने को तैयार नहीं हुए। इस पर सरकार की ओर से दमन तीव्र हो गया। एक गाँव में जनता की निशस्त्र भीड़ पर पुलिस ने गोली चला दी। भीड़ को क्रोध चढ़ आया। उसने पुलिस के सिपाहियों को थाने की इमारत में घेर कर थाने को आग लगा दी। लगभग पच्चीस पुलिस 'कान्स्टेबल' जल मरे और भीड़ में कितने ही पुलिस की गोली से मरे उनकी गिनती नहीं।

"ऐसे ही काण्ड पूर्ण देश में होने की सम्भावना थी, परन्तु गाँधीजी अहिंसात्मक व्यवहार चाहते थे। इस कारण उन्होंने आन्दोलन वापस ले लिया। तुरन्त देश-भर में शान्ति हो गयी। आन्दोलन दब गया और जनता में निराशा फैल गयी।

"ऐसे थे हमारे नेता। इतिहास इनको अनुभव-विहीन, बिना पंख के हवा में उड़ने की इच्छा वाला मानता है।

"इसके विपरीत मुसलमानों के नेता थे। वे अंग्रेज़ सरकार को सहयोग देते हुए देश में बहुसंख्यक जाति को कुचल देने की योजना बना रहे थे। वे पूर्ण जाति जिसके घटकों की संख्या तीस करोड़ के लगभग थी, निःशेष करने के स्वप्न देखने लगे थे।

"इनको मैं मूर्ख और अपने ही पाँव पर कुल्हाड़ा मारने वाला समझता था। ये लोग ब्रिटिश सरकार की सहायता से राज्य-शक्ति पा गये और मुझे कॉलेज से, जहाँ मैं विद्यार्थियों को पढ़ाता था, निकालने में सफल हो गये। इनको भी मैं इतिहास से अनभिज्ञ मानता था।

"देश में कुछ क्रांतिकारी और आतंकवादी भी थे। यह एक छोटा-सा नवयुवकों का समूह था, सदैव मरने-मारने पर तैयार थे। इनका आतंक तो अति प्रबल था। देश-भर की पुलिस इनका पीछा करती थी, परन्तु इनमें से किसी को अपने सामने खड़ा देख थर-थर काँपने लगती थी।

"एक दिन एक क्रान्तिकारी सर्वथा निःशस्त्र एक भीड़-भाड़ वाली सड़क पर जा रहा था। उसे एक गुप्तचर ने पहचान लिया और उसका मार्ग रोक कर खड़ा हो गया। क्रान्तिकारी ने अपने कोट की जेब में हाथ डाल जेब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के भीतर से ही एक पैंसिल को सामने खड़े पुलिस वाले की ओर कर दिया। पुलिस वाले ने समझा कि पिस्तौल है और चलने ही वाला है। वह भाग खड़ा हुआ और क्रांतिकारी बच कर निकल गया।

"किसी क्रांतिकारी ने वायसराय की ट्रेन को बम्ब से उड़ा देने का यत्न किया। इसके उपरान्त जिधर से भी किसी बड़े अधिकारी ने जाना होता, उधर पुलिस का पहरा लग जाता। सैकड़ों मीलों की यात्रा पर भी पूर्ण मार्ग पर आधे-आधे फर्लांग पर पुलिस के गुप्तचर नियुक्त कर दिये जाते थे और पूर्ण रेल की पटरी का निरीक्षण होता था। ऐसा था इनका प्रभाव।

"परन्तु जनता में इनके प्रभाव को सबसे अधिक विलीन करने वाले महात्मा गाँधी सिद्ध हो रहे थे। इनको महात्माजी ने अपने निरन्तर प्रचार से निस्तेज कर दिया।

"यह क्रान्तिकारी भी बुद्धिविहीन और इतिहास से अनभिज्ञ युवक थे। इनका जन-सम्पर्क का मोर्चा ढीला था। और इसी कारण यह जनता पर स्थाई प्रभाव नहीं डाल सके। इनका विरोध सरकार तो करती थी, गाँधीजी भी विरोध करते थे और परिणाम यह हुआ कि इनका कार्य धनाभाव के कारण और सार्वजनिक समर्थन के अभाव में चल नहीं सका।

"अत: मैं पूर्ण देश को इतिहास के वास्तविक अर्थ से भटका हुआ समझ इतिहास की विवेचना लिखने बैठ गया। अपने कार्य में इतना लीन हुआ कि अपनी पत्नी को भूल गया। वह शरीर से अति सुन्दर, बुद्धि में प्रखर, संगीत, नृत्य-कला में प्रवीण और अति सभ्य थी। परन्तु वह इन्द्रियों के दबाव को सहन नहीं कर सकी और मुझे छोड़ भाग गयी।

"उसे पत्नी के पद से गिर गया समझ, उसकी चिन्ता छोड़ अपने लेखन और अन्वेषण-कार्य में लगा रहा। मैंने हिन्दुस्तान से इंग्लैंड के लिये प्रस्थान करते हुए अपनी पथ-भ्रष्टा पत्नी को कहलवा भेजा कि वह जब चाहे लौट सकती है। उसे आश्रय मिल सकेगा।

"मेरे वहाँ रहने तक वह लौटी नहीं थी। जब मैं बर्लिन में था तो उसका एक पत्र मिला था कि वह मेरे आश्वासन के भरोसे लौट आयी है और अपने किये पर पश्चाताप करती है। वह मेरी सेवा कर प्रायश्चित करना चाहती है। मैंने उसके नाम एक पत्र लिखा था, परन्तु वह पत्र भेज नहीं सका। भेजने से पूर्व ही मुझे बर्लिन से भागना पड़ा। वह पत्र मेरे अटेची-केस में था जो रूस की सीमा पर मुझसे ले लिया गया था। उस अटेची-केस के कागजों में से केवल मेरी पुस्तक की पाण्डुलिपि ही वापस हुई है।

"बस यह है संक्षेप में मेरा इतिहास।"
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्टोव इस कथा को सुन गम्भीर विचार में मग्न रहा। कुछ काल तक मौन रह उसने पूछ लिया, "और जर्मनी के 'फ्युरर' को आप कैसा समझे हैं?"

"मुझे वही बात हिटलर में समझ आयी है जो गाँधीजी में है। मिथ्या इतिहास का ज्ञान, मन्द मति और कार्य करने के लिये व्यग्रता। मेरी बुद्धि ने उसके कार्य को गाँधीजी के कार्य से कम मिथ्या नहीं समझा। दोनों की दृष्टि मिथ्या थी।"

"मिथ्या दृष्टि से क्या अभिप्राय है आपका?"

"गलत अर्थात् मिथ्या दृष्टियाँ तो अनेक हैं। ठीक दिशा और ठीक दृष्टि एक ही होती है। अर्थात् मन्द मति लोग भी परस्पर लड़ते-झगड़ते हैं। गाँधीजी और हिटलर परस्पर सर्वथा विपरीत दिशा में जा रहे हैं। मन्द-मति होने से दोनों की दिशा गलत है। एक हिंसा को साधारण बात मान इसे सिद्धि का साधन मान बैठा है। दूसरा अहिंसा को एक मात्र साधन मान शत्रुओं और घोर विरोधियों के लिये भी केवल सहानुभूति ही नहीं, वरंच सहचारिता बनाने में भी लीन है। हिटलर अपने साथी को भी गोली मार अपना मार्ग साफ करने पर उद्यत हो गया है और गाँधीजी विरोधी को विरोध में खड़ा देख उसका विरोध स्वीकार करने की अपेक्षा स्वयं मार्ग से एक ओर हट जाना ठीक मानते हैं।

"इस पर भी दोनों का अभिप्राय एक है। वे अपने-अपने विचार से जनता की सेवा करने का यत्न कर रहे हैं दोनों की अवस्था में जनता की सेवा का अर्थ गलत है और उस सेवा का ढंग गलत है। कारण यह है कि दोनों के ज्ञान में त्रुटि है।"

मार्टोव हिटलर के चरित्र की व्याख्या तो ठीक मानता था, परन्तु वह गाँधी को कुछ और ही समझा था। उसने गाँधीजी के विषय में अपना अनुभव बता दिया। उसने कहा, "मैं सन् 1924 में गाँधी जी के विषय में ठीक-ठीक अनुमान लगाने के लिये हिन्दुस्तान भेजा गया था। उस समय रूस और ब्रिटिश सरकार में दौत्य-सम्बन्ध नहीं थे। इस कारण मैं यहाँ से इरान चला गया। वहाँ एक इरानी बन पासपोर्ट ले हिन्दुस्तान जा पहुँचा। इरानी होने के नाते मैं बम्बई के एक खोजा का मेहमान बन गया।

"मैं जन्म से एक यहूदी हूँ। इस कारण मेरे माता-पिता ने मेरी सुन्नत करायी हुई थी और मैं मुसलमान बन हिन्दुस्तान में विचरता रहा। वहाँ मैंने गाँधीजी के आन्दोलन का अध्ययन किया। मैं यह समझा था कि गाँधीजी अहिंसा की बात केवल अंग्रेजों को धोखा देने के लिये कहते थे। वे अहिंसा चलने नहीं देते थे तो इस कारण कि वे हिन्दुस्तानियों को अभी इसके लिये समर्थ नहीं समझते थे। मेरा विचार है कि जब सेना उनके राष्ट्रीय विचारों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भर जायेगी तब वे अंग्रेज़ों पर हिंसा करना चाहेंगे तो फिर गाँधीजी उसे आशीर्वाद दे देंगे।''

''और मिस्टर मार्टोव! यह रिपोर्ट आपने अपनी सरकार को दी है?''

''हाँ, और मुझे फिर हिन्दुस्तान में गाँधीजी की वर्तमान स्थिति का ज्ञान प्राप्त करने क लिये भेजा जा रहा है। यही कारण है कि मैं वहाँ की बातें आपसे जानने के लिये उत्सुक था।''

''मेरा दृष्टिकोण तो यह है कि मन की स्थिति तो वातावरण और आस-पास होने वाली घटनाओं से बनती है, परन्तु उन घटनाओं और मन की स्थिति से लाभ बुद्धि के ही आश्रय लिया जा सकता है। मन:स्थिति के बनने में इतिहास का ठीक अथवा गलत ज्ञान बहुत बड़ा कार्य करता है।''

''यह सब मैं वहाँ देखूँगा। परन्तु एक बात और जाननी शेष है। आप रूस के विषय में क्या समझे हैं?''

''मैं यह समझा हूँ कि रूस एक बहुत बड़ा देश है। इसमें भिन्न-भिन्न जलवायु में रहने वाले, भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक परस्पराओं में पले और भिन्न-भिन्न स्वभाव के लोगों का एक विशाल जन-समूह है। इनको एक राज्य में रखने के लिए अर्थात् रूस की शान-शौकत को स्थिर तथा जीवित, जागृत रखने के लिए इसे एक कठोर नियन्त्रण में रखना आवश्यक है।''

''पर क्या यह एक ठीक बात होगी?''

''ठीक और गलत बात का निश्चय तो इस राज्य में रहने वालों की मन:स्थिति पर निर्भर करता है। राज्य वर्तमान घटनाओं से और प्रशिक्षण से इनकी मन:स्थिति को एक करने का यत्न कर रहा है।''

''यह सफल होगा क्या? इतिहास इसमें क्या सम्मति देता है?''

''इतिहास की मेरी विवेचना इसे सम्भव नहीं बताती है। परन्तु इतिहास मनुष्यों का लिखा गया है। इसके लिए लोगों का मनुष्य होना आवश्यक है।''

''और यहाँ मनुष्य नहीं रहते क्या?''

''यह इतिहास का विषय नहीं है। यह मनुष्य और पशु में भेद देखने का विषय, मनोवैज्ञानिकों का है। मैं उस विषय का ज्ञाता नहीं हूँ।''

इस प्रकार पद्मदेव ने रूस को पशुओं का बाड़ा कहते-कहते अपने को बचा लिया।

मार्टोव यह सब सुन गम्भीर विचार में मग्न हो गया। आज पद्मदेव अपना कार्य कर नहीं सका और मध्याह्न के भोजन का समय हो गया। ऐमालीना भोजन के लिए पद्मदेव को ले जाने आयी तो वहाँ मार्टोव को बैठे देख विस्मित रह गई। मार्टोव ने उसे देखा तो कह दिया, ''कामरेड ऐमालीना! मैं तुम्हारे पति का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक परिचय प्राप्त करने के लिए यहाँ आया तो इनकी रुचिकर बातें सुनता हुआ भूल ही गया था कि खाने का समय हो गया है। तो अब मैं चलता हूँ।''

पद्‌मदेव ने कहा, ''खाना हमारे साथ ही ले लीजिए।''

''कल रात भी आपके साथ भोजन लिया था। मैं समझता हूँ कि आपका हाथ तंग हो जायेगा। आपका 'ऐलाउन्स' तो सीमित ही है।''

''आप चिन्ता न करिए। मैं सिगरेट, शराब और अन्य कई प्रकार के व्यर्थ के व्यय नहीं करता। इससे मेरे पास खा-पहन कर बहुत कुछ बच जाता है।''

''तो आपने बहुत कुछ एकत्रित कर लिया होगा?''

''हाँ, परन्तु वह 'स्टेट बैंक' में ही रखा है।''

''तब तो ठीक है। मैं आपके साथ चल सकता हूँ।''

तीनों उठ खड़े हुए। वहाँ से वे नर्सरी में गए और बच्चों को साथ लेकर वे 'कैन्टीन' में चले गए।

भोजनोपरान्त मार्टोव ने उनसे विदा ली और वापस नगर की ओर चला गया। पद्‌मदेव प्रतीक्षा में था कि ऐमालीना अपनी माँ के पत्र के विषय में बतायेगी, परन्तु उसने उसे कुछ नहीं कहा। उसके मन में उस पत्र के विषय में सब बातें जानने की इच्छा नहीं थी। वह यह भी समझता था कि कैटालीना ने उस बन्दी-गृह के विषय में कुछ भी नहीं लिखा होगा जिसमें वह कैद थी। इस कारण माँ-बेटी की परस्पर सुख-दुख की बातों में झाँकने की उसकी इच्छा भी नहीं थी। मार्टोव ने बताया था कि पत्र में कुछ उसके विषय में भी लिखा है। इससे उसके मन में उत्सुकता उत्पन्न हुई थी, परन्तु ऐमालीना के मौन रहने पर भी उसने पूछना उचित नहीं समझा और धीरे-धीरे उसकी इस विषय में जानने की रुचि भी समाप्त हो गई।

: 7 :

कामरेड चिकोव का रूस और जर्मनी की स्थिति पर भाषण हुआ। विश्वविद्यालय में तीन सहस्र विद्यार्थी पढ़ते थे और सब-के-सब विश्वविद्यालय के केन्द्रीय भवन में एकत्रित हो गए। यह नियम था कि जब कभी कोई बड़ा सरकारी अधिकारी विश्वविद्यालय में व्याख्यान देने आये तो सब वहाँ एकत्रित होकर सुनें। व्याख्यान के विषय में रुचि हो अथवा न हो, सबके लिए आना आवश्यक होता था। यही कारण था कि कोई भी विद्यार्थी यह साहस नहीं कर सकता था कि वह अनुपस्थित हो। एक बार स्टालिन का व्याख्यान हुआ था और उस समय हस्पताल में पड़े अति रुग्ण विद्यार्थी भी 'स्ट्रेचर' पर उठाकर लाये गये थे जिससे वे उसका भाषण सुन सकें और समय-समय पर तालियाँ बजाते रहें। एक का तो उस भाषण के उपरान्त हस्पताल में जाते ही देहावसान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया था। वह अपनी रुग्णावस्था में लगभग दो घंटे का श्रम सहन नहीं कर सका था।

इस सभा में पद्मदेव भी बोलने के लिये बुलाया गया था। विश्वविद्यालय का चान्सलर सभा का अध्यक्ष था।

चान्सलर निकोविस्की ने, अध्यक्षीय प्रवचन पहले ही कर दिया। इसमें उसने कामरेड चिकोव का अपने व्यस्त काल में से विद्यार्थियों को रूस की वर्तमान नीति पर बताने के लिए आने का कष्ट करने के लिये धन्यवाद किया और साथ ही वर्तमान स्थिति का विश्लेषण भी कर दिया। निकोविस्की का कहना था—रूस और जर्मनी बहुत पुराने काल से शत्रु माने जाते हैं। दोनों के हित यूरोप में एक-दूसरे के विपरीत समझे जाते हैं। विचारधारा से भी ये दोनों देश एक-दूसरे के विपरीत हैं। अत: कामरेड चिकोव का इस विषय पर भाषण अति शिक्षाप्रद होगा।

निकोविस्की ने अन्त में कहा—इसके साथ ही हमारे विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कामरेड पद्मदेव इस घटना का भावी स्वरूप इतिहास की दृष्टि से बतायेंगे और सब विद्यार्थियों से आग्रह है कि वे ध्यान तथा शान्ति से आज की इस विशेष परिस्थिति पर विचार सुनेंगे।

चिकोव ने रूसी राज्य की जर्मनी के साथ संधि की सफाई प्रस्तुत की। उसने यूरोप की सैनिक-शक्ति का दिग्दर्शन कराया था और उसे समाजवाद के एवं रूस के हित-साधन का प्रयास बताया। भाषण तालियों की गड़गड़ाहट के साथ समाप्त हुआ। पहले ऐसे भाषणों के उपरान्त विश्वविद्यालय के किसी प्राध्यापक के व्याख्यान को सुनने के लिये न तो सरकारी प्रवक्ता वहाँ बैठने का कष्ट किया करते थे और न ही श्रोतागण उसके वक्तव्य को सुनने के लिये बैठने का कष्ट करना आवश्यक समझते थे। परन्तु पद्मदेव के व्याख्यान की बात दूसरी हुई। छात्र और सरकारी अधिकारी भी इस भाषण को सुनने को उत्सुक थे। यह पद्मदेव की योग्यता की धाक के कारण था। चिकोव को यह ज्ञात था कि इस प्रोफेसर से स्टालिन एक भेंट कर चुका है और दूसरी भेंट पुन: उसी दिन करने वाला है। इस कारण वह पद्मदेव के विचार सुनने के लिए उत्सुक था।

विद्यार्थियों में कुछ इस प्रकार किंवदन्ति भी कानों-कान फैल रही थी कि इस व्याख्यान के उपरान्त पद्मदेव पकड़कर किसी 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' में भेज दिया जायेगा। उनका विचार था कि स्टालिन से प्रोफेसर की भेंट पकड़े जाने का पूर्व क्रम ही है। इस कारण बहुत-से विद्यार्थी यह समझ रहे थे कि यह व्याख्यान पद्मदेव का अन्तिम भाषण होगा और कैद से उसके लौट सकने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्भावना बहुत कम है।

अतः जब पद्‌मदेव प्रवचन करने के लिये खड़ा हुआ तो भवन में श्रोतागण दत्तचित्त हो और अपने साँसों को भी रोककर सुनने के लिए तैयार हो गये।

पद्‌मदेव ने औपचारिक पूर्व कथन के उपरान्त कहा, ''मैं रूस सोवियत संघ की जर्मनी, कही जाने वाली 'आर्यन किंगडम' से संधि के अच्छे और बुरेपन के विषय में कुछ नहीं कहना चाहता। प्रत्येक कार्य अपने गुण और दोष रखता है। उस कार्य के गुण-दोषों में से हमको क्या मिलेगा? यह सोवियत संघ के अधिकारियों की योग्यता पर निर्भर करता है। संधियों से लाभ अथवा हानि उठायी जा सकती है। सन्धि करने वाले की योग्यता के कारण हम अपने राज्य को सर्वथा, योग्य, चतुर और सिद्धान्तों के ज्ञाता नेताओं के हाथ में देखते हैं। अतः इसमें किंचिन्मात्र भी सन्देह नहीं कि इस सन्धि से हमने लाभ उठाया है और आगे अपार लाभ उठाने वाले हैं।

''हमने पोलैण्ड के मुख्य भाग पर अधिकार कर लिया है। इसके अतिरिक्त भी रोमानियाँ, बलगारिया के कुछ जिलों में हमारा अधिकार हो गया है। यह कम लाभ की बात नहीं है, परन्तु युद्ध की समाप्ति पर हमें और भी लाभ होने वाला है। ऐसा कहना अतिशयोक्ति नहीं हो सकती कि जर्मनी जीते अथवा हारे, भविष्य में पूर्वी यूरोप पर रूस का राज्य होने वाला है।

''यह अधिकार कैसे होगा? इसको अभी बताना सुगम नहीं। इस पर भी भविष्य में कुछ दूर तक झाँका जा सकता है। इस झाँकने की खिड़की है इतिहास। उस खिड़की में से झाँकते हुए मैं बता सकता हूँ कि यह सन्धि युद्ध समाप्त होने से पूर्व टूटेगी। इसे तोड़ने का प्रयास जर्मनी ही करेगा। वह जीतेगा, अथवा नहीं, यह इसके सेनाओं को उचित और विद्युत की भाँति गतिविधि दे सकने अथवा न दे सकने पर निर्भर होगा। यह वह दे सकेगा अथवा नहीं, कहना कठिन है। इस सेनाओं की तेजी में अभी भी शिथिलता दिखायी देने लगी है। अफ्रीका में इटली की पराजय हुई है और जर्मनी वहाँ समय पर सहायता नहीं पहुँचा सका। अतः क्या रूस से सन्धि तोड़ने के पहले वह विजयी होगा अथवा पराजित, यह उसके भविष्य पर बहुत प्रभाव जमाने वाला सिद्ध होगा। जहाँ तक सोवियत संघ का सम्बन्ध है, यह सन्धि नहीं रहेगी।

''सन्धि युद्ध समाप्त होने के पहले टूटती है अथवा पीछे, इस बात पर निर्भर करती है कि हम इस सन्धि से कितना लाभ उठाते हैं? युद्ध समाप्ति से पहले सन्धि टूटेगी तो हमारा जर्मनी से युद्ध होगा और जर्मनी शत्रुओं से घिर कर बरबाद हो जायेगा। यदि सन्धि युद्ध की विजय-पराजय के उपरान्त टूटती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है तो हमारा जर्मनी से युद्ध होगा और जर्मनी के अति दुर्बल हो जाने के कारण हम अतुल लाभ में होंगे।

''दोनों अवस्थाओं में दो-दो स्थितियाँ हो सकती हैं। यदि युद्ध की समाप्ति के पूर्व सन्धि टूटी तो हम अंग्रेज़ और अमेरिका के मित्र बनेंगे अथवा नहीं? मेरा इतिहास मुझे यह बताता है कि हमें इंग्लैंड का मित्र बन जाना चाहिए और उनसे लाभ उठाना चाहिये। यदि इंग्लैंड हमको अपना मित्र न माने तो भी हम जर्मनी को पूर्ण पूर्वी यूरोप पर से हटा सकेंगे और उस पर अपना अधिकार जमा सकेंगे। इस अधिकार की विशालता एवं सुदृढ़ता हमारे नेताओं की नीतिज्ञता एवं सुदृढ़ता पर निर्भर है।

''यदि युद्ध समाप्त होने के उपरान्त सन्धि टूटी तब भी दो अवस्थायें हो सकती हैं। अंग्रेज़ जीतेगा अथवा जर्मनी जीतेगा। दोनों अवस्थाओं में हमारा अधिकार पूर्वी यूरोप पर होगा और हम बहुत अधिक सुदृढ़ होंगे।''

व्याख्यान लगभग डेढ़ घंटा तक होता रहा और उसके उपरान्त निकोविस्की ने श्रोतागणों को निमन्त्रण दे दिया कि वे कामरेड पद्मदेव से शंका निवारण कर सकते हैं।

सबसे पहले चिकोव ने ही पूछा, ''क्या जर्मनी और सोवियत संघ में सन्धि टूटेगी ही?''

''निस्सन्देह टूटेगी। यह इतिहास का अटल पाठ है।''

''इसमें प्रमाण क्या है?''

''एक कहानी सुनाता हूँ। प्राचीन काल में हिन्दुस्तान के दो महाबली भाइयों ने देश-भर में ऊधम मचा रखा था। वे किसी से भी पराजित नहीं होते थे और वे लोगों का धन-दौलत लूट-लूटकर इकट्ठे भोग करते थे। उनका नाम था सुंध और दसुंध।

''अपनी लूट-मार में दोनों की दृष्टि एक अति सुन्दर लड़की पर जा पड़ी। लड़की का नाम था तिलोत्तमा। दोनों उस पर मुग्ध हो गये। वे उसे पकड़कर घर ले गये। वहाँ दोनों की इच्छा उसे अपनी पत्नी बनाने की हो गयी। दोनों बैठकर निर्णय करने लगे कि वह किसकी भार्या रहेगी? बहुत योजनायें विचार की गयीं। तिलोत्तमा ने भी कई सुझाव दिये, परन्तु दोनों बली पुरुष सहमत नहीं हो सके। इस पर तिलोत्तमा ने कह दिया कि मैं दोनों में से अधिक बली की भार्या बनूँगी। इस पर दोनों परस्पर लड़ पड़े। युद्ध में दोनों अति घायल होकर और थकावट से क्लान्त हो भूमि पर लेट गये। उन्हें थका देख नगर के लोग आये और दोनों की हत्या कर समझे कि अब सुख से रह सकेंगे।

''वे सुख से रहे अथवा नहीं, यह आगे की कथा है। वर्तमान का इतने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से ही सम्बन्ध है कि पूर्वी यूरोप हम दोनों में बैठा है और हम उसके रहते परस्पर सुलह से नहीं रह सकते। यह सन्धि भंग होगी। सन्धि हमें भंग नहीं करनी चाहिए। इस कारण जर्मनी भंग करेगा और फिर युद्ध होगा जिसमें हम विजयी होंगे। हम सुन्ध और दसुन्ध दोनों की भाँति मूर्ख नहीं हैं। हम जर्मनी को तब तक सहन करेंगे जब तक वह दूसरों से लड़ता-झगड़ता हुआ दुर्बल हो भूमि पर लेट नहीं जायेगा।''

चिकोव ने अगला प्रश्न कर दिया, ''हमारी नीति है कि पूर्वी यूरोप में छोटे-छोटे राज्य बने रहें। तो क्या हम कभी इस नीति का त्याग भी करेंगे?''

'इसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आवश्यकता इस बात की होगी कि अपने सब सीमावर्ती देशों में कम्युनिज़्म का बल बढ़े और उन देशों को अपना साथी बनाया जाये। यही हमारी विजय का प्रतीक होगा।''

''यदि यह भविष्यवाणी मान ली जाये कि सन्धि टूटनी ही है तो हमें क्या करना चाहिए?'' चिकोव ने आगे पूछ लिया।

''यह 'स्टेट सीक्रेट' है। इसको मैं सार्वजनिक सभा में नहीं बता सकता। न ही इस विषय पर आलोचना करूँगा।''

''क्या आप स्टालिन से इस विषय पर बात करेंगे?''

''यदि राज्य के चीफ मुझे बुलायेंगे और इस विषय पर बात करेंगे तो मैं अवश्य अपनी बात बताऊँगा।''

इसके उपरान्त छात्रों के प्रश्नों की बौछार होने लगी। पद्मदेव उनका उत्तर बच-बच कर देने लगा। वह राज्य की किसी भी नीति पर अपनी सम्मति नहीं देना चाहता था।

एक विद्यार्थी ने पूछ लिया, ''क्या आप इस सन्धि को रूस के हित में समझते हैं?''

''मैंने बताया है कि प्रत्येक कार्य के गुण और दोष होते हैं। कार्य के गुणों को ग्रहण किया जाता है अथवा दोषों को, यह कार्य करने वाले विद्वानों की योग्यता पर निर्भर करता है।''

''क्या रूस और जर्मनी में स्थायी सन्धि नहीं हो सकती है?''

''हो सकती है। परन्तु उस अवस्था में सुन्ध और दसुन्ध दोनों को तिलोत्तमा के भोग की लालसा छोड़नी पड़ेगी।''

''तो हम क्या पूर्वी यूरोप 'रेप' (बलात्कार) का विचार रखते हैं?''

''हमारे शब्द-कोष में 'रेप' कोई शब्द नहीं है। हम विवाह करते हैं। 'रेप' नहीं करते।''

''तो फिर जर्मनी हमसे क्यों सन्धि भंग करेगा?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसलिए कि वह हमारा उस युवती से विवाह पसन्द नहीं करता। वह स्वयं उससे विवाह करना चाहता है।"

"वह इसे सुन्दरी की इच्छा पर नहीं छोड़ना चाहेगा क्या?"

"स्त्रियों की इच्छा पर उनके विवाह छोड़ने ठीक नहीं। उनमें अपने विवाह की इच्छा उत्पन्न करना एक वैध कार्य है। सब संसार में यह किया जाता है। कठिनाई यह है कि जर्मनी हमें यह भी करने देना नहीं चाहेगा। हम तो सन्धि का यह स्वभाविक परिणाम समझते हैं।"

: 8 :

निकोविस्की ने सभा बन्द कर दी। उसने घोषणा कर दी कि बहुत समय हो गया है और वक्ता थक गये प्रतीत होते हैं।

चिकोव ने सभा-भवन से निकलते हुए कहा, "मैं तो यह समझ रहा था कि आपसे चीफ सेक्रेटरी की आज भेंट होनी निश्चय है।"

"किसी ने उड़ती-उड़ती बात आपको बतायी है।"

चिकोव को विस्मय हुआ और उसने कह दिया, "हाँ, बात गलत भी हो सकती है।"

"और बात ठीक भी हो सकती है। वह मुझे किसी समय भी उपस्थित होने की आज्ञा दे सकते हैं। तब मुझे उनकी आज्ञा पालन करना ही होगा।"

चिकोव गया तो निकोविस्की पद्मदेव के साथ उसके निवास-गृह की ओर चल पड़ा। ऐमालीना भी सभा में आयी हुई थी। वह अपने जर्मन भाषा पढ़ने वाले विद्यार्थियों में बैठी थी। विद्यार्थी सभा के उपरान्त उसे घेर कर खड़े हो गये। वे यह जानना चाहते थे कि कामरेड चिकोव ने यह किस कारण कहा है कि प्रोफेसर साहब चीफ से मिलने जा रहे हैं?

"यह क्यों की बात तो मैं जानती नहीं।" ऐमालीना का उत्तर था।

"क्या इसमें कुछ भी सच्चाई है?"

"आपको यह प्रश्न उससे पूछना चाहिए जिसने आपसे यह बात बतायी है।"

"पिछले रविवार की बात है। कामरेड पद्मदेव क्रैमलिन से निकलते हुए देखे गए थे। इनके साथ चीफ सेक्रेटरी महोदय का अंगरक्षक था। हमारे विश्वविद्यालय के एक विद्यार्थी ने यह देख लिया। इस कारण जब प्रोफेसर साहब बस में बैठ गये तो उसने चीफ सेक्रेटरी महोदय के अंगरक्षक से पूछ लिया, 'यह प्रोफेसर साहब किससे मिलने आए थे?' अंगरक्षक ने कहा था, 'जो यहाँ रहता है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"इससे उस विद्यार्थी ने अनुमान लगा लिया कि यह क्रैमलिन में चीफ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेक्रेटरी साहब से मिलने ही गये थे। उस विद्यार्थी ने किसी से यही बात की तो वह बात पूर्ण विश्वविद्यालय में फैल गयी।''

बस पर ऐमालीना ने कहा, ''कामरेड स्टूडैंट! तुमको यह विदित होना चाहिए कि मार्क्सिस्ट फिलोसोफी में कल्पना के लिए कोई स्थान नहीं है। यह लोगों का अधिकार नहीं कि वे किसी घटना पर कल्पना करने लगें और फिर उस कल्पना का प्रचार करने लगें।

''इससे भी अधिक आपत्तिजनक बात यह है कि आप कल्पना करने लगे हैं, राज्य के कार्य के विषय में। यह भयंकर परिणाम उत्पन्न कर सकती है।''

लड़के विद्यार्थी इस सचेतक पर मौन हो अपने-अपने काम पर खिसकने लगे। ऐमालीना के साथ एक लड़की चल पड़ी। वह व्याख्यान के समय ऐमालीना के समीप ही बैठी थी। वह भी जर्मन भाषा पढ़ रही थी। चलते-चलते जब ऐमालीना को ज्ञात हुआ कि उसके साथ स्टोविना विंस्की चली आ रही है तो उसने उसकी ओर देखकर पूछ लिया, ''तुम्हें मुझसे कुछ काम है?''

ऐमालीना को विदित था कि उसे भी चीफ सेक्रेटरी से मिलने जाना है और उसका पति निवास-गृह पर उसकी प्रतीक्षा कर रहा होगा, इस कारण वह किसी को भी अपने साथ घर तक जाने की स्वीकृति नहीं दे सकती थी। इसी कारण उसने स्टोविना की ओर देखकर उक्त प्रश्न किया था।

स्टोविना ने भूमि की ओर देखकर कह दिया, ''मैं प्रोफेसर साहब से हिन्दुस्तानी सीखना चहती हूँ।''

''उसके सिखाने का प्रबन्ध विश्वविद्यालय में है। तुम वहाँ से सीख सकती हो।''

''मैंने उस श्रेणी में भी भरती होने का यत्न किया था, परन्तु स्वीकृति नहीं मिली।''

''कुछ कारण बताया गया होगा?''

''कारण नहीं बताया गया।''

''तुम्हारी प्रार्थना को अस्वीकार क्यों किया गया है? पहले इसका कारण जानो; तब मैं तुम्हारे हिन्दुस्तानी सीखने में सहायक हो सकूँगी।''

''पर मैं तो कामरेड देव से सीखना चाहती हूँ।''

''उसमें क्या विशेषता है?''

''वह एक सुन्दर पुरुष है। सुन्दर वस्तुओं के देखने की मेरी सदा इच्छा रहती है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''सुन्दर वस्तुओं को देखने का अधिकार सोवियत संघ में अबाध नहीं है। जिसे राज्य देखने की स्वीकृति देता है वही उसे देखनी चाहिए।''

इस व्यंग का अर्थ स्टोविना समझने के लिए ऐमालीना का मुख देखने लगी। ऐमालीना ने मुस्कराते हुए उसे समझा दिया, ''मैं समझती हूँ कि कामरेड देव के सौन्दर्य देखने के लिए उसे विश्वविद्यालय में नियुक्त नहीं किया गया। अत: उसके सौन्दर्य को देखने का अधिकार तुमको नहीं है। जिस बात के लिए उसकी नियुक्ति है वही तो तुम उससे पाने की आशा कर सकती हो। उससे अधिक पाने की आशा करोगी तो सोवियत स्टेट में अपराधी मान ली जाओगी।''

स्टोविना को इससे सन्तोष नहीं हुआ। इस पर उसने कह दिया, ''मैं समझती हूँ कि आपके उत्तर में कहीं दोष है। मैं अभी वह दोष समझ नहीं सकी। जब समझ जाऊँगी तो फिर मैं आपको अपना दृष्टिकोण समझाने का यत्न करूँगी।

''प्रोफेसर साहब से मिलने की मेरी उत्कट इच्छा है। मैं वह इच्छा क्यों पूर्ण नहीं कर सकती? मैं यह समझने का यत्न करना चाहती हूँ। मैं आपको अपना उनसे परिचय कराने के लिए कह रही हूँ।''

''परिचय के लिए फिर किसी दिन आना। साथ ही यह विचार छोड़कर आना कि तुम किसी सुन्दर पुरुष से परिचय करने आ रही हो। वह इतिहास के प्राध्यापक हैं। इतिहास का ज्ञान प्राप्त करने आओगी तो परिचय हो जायेगा। मेरी सहायता के बिना भी हो जायेगा।''

स्टोविना अवसर उपयुक्त न समझ वापस लौट गयी और ऐमालीना अपने निवास-गृह पर जा पहुँची। निकोविस्की और पद्मदेव वहाँ पहुँच कॉफी तैयार कर रहे थे। ऐमालीना को आया देख निकोविस्की ने कहा, ''ऐमालीना डीयर! कॉफी पी लो। क्रैमलिन जाने का समय हो रहा है।''

ऐमालीना ने कहा, ''आप यह बुर्जुआ वाक्य किसलिये प्रयोग करते हैं? मुझे 'डीयर' कहकर सम्बोधन करना इस देश में उचित नहीं।''

''तो वाक्य भी बुर्जुआ होते हैं? देखो, ऐमालीना! तुम सत्य ही बहुत प्यारी लड़की हो और यदि मन की इस भावना को प्रकट करना बुर्जुआपन है तो मैं भी बुर्जुआ ही हूँ। मुझे इसमें संकोच नहीं। मैं समझता हूँ कि कम-से-कम घर में बैठकर अपने प्रियजनों को प्रिय कहने की तो मुझे स्वतन्त्रता है।''

पद्मदेव हँस रहा था। ऐमालीना मुस्करा रही थी। उसने स्टोविना की बात बता दी। वह कहने लगी, ''यह लड़की मुझसे जर्मन भाषा सीखती है। यह बहुत ही चुलबुला स्वभाव रखती है और कॉलेज के लड़कों से 'फ्लर्ट' करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहती है। आज वह कामरेड देव से परिचय करने आ रही थी। वह इस कारण कि यह एक सुन्दर पुरुष हैं और उसको सुन्दर वस्तुओं को देखने में बहुत रुचि है।

"मैंने उसे कह दिया है कि इस 'सोवियत स्टेट' में जो वस्तु और व्यक्ति जिस काम के लिये नियुक्त हैं, उसको वही काम करना चाहिये। कामरेड देव अपने सौन्दर्य-प्रदर्शन के लिये नियुक्त नहीं। इस कारण वह अपना सौन्दर्य-प्रदर्शन कर 'स्टेट' में अपराध नहीं कर सकते।"

इस पर तो दोनों पुरुष भी हँसने लगे। निकोविस्को ने कह दिया, 'स्टेट मोनोपली' (एकाधिकार) में सौन्दर्य सम्मिलित है अथवा नहीं, विचारणीय है।"

"मेरा विचार है कि 'मोनोपली' न सही, पर इस पर नियन्त्रण तो है।" ऐमालीना का कहना था।

"कैसे नियन्त्रण रखा जाता है इस पर?"

"पुरुष और स्त्रियों को बन्दी बनाते समय जहाँ और बातों का ध्यान रखा जाता है वहाँ उनके सौन्दर्य का भी ध्यान रखा जाता है। मैं इसका यह अर्थ समझती हूँ कि सोवियत रूस में सब सुन्दर पुरुष और सुन्दर स्त्रियों को नियन्त्रण में रखने का विचार है।"

"कोई उदाहरण दो। तब ही बात सिद्ध हो सकती है।"

"उदाहरण तो आपके सामने है। कामरेड देव को हिन्दुस्तान लौटने की स्वीकृति मिल गयी थी, परन्तु मुझे उनके साथ जाने की स्वीकृति नहीं दी जा सकी। मुझे एक सुन्दर युवती समझ रोक लिया गया था। मैं बन्दी हूँ।"

"पर तुम एक सुन्दर युवती हो क्या?"

"ऐसा यहाँ के अधिकारी समझते हैं और मेरा विचार है कि कामरेड देव भी समझते हैं।"

इस पर तो दोनों पुरुष पुनः हँसने लगे। पद्मदेव ने कॉफी तैयार कर तीन प्यालों में डाल 'ड्राइंग-रूम' में तिपाई पर लाकर रख दी थी। तीनों तिपाई के समीप कुर्सियाँ खींचकर कॉफी का प्याला उठा पीने लगे। निकोविस्की ने पद्मदेव से पूछ लिया, "क्या, ऐमालीना टीक कहती है कि आप इसे एक सुन्दर युवती समझते हैं?"

"मैं इसे अपनी विवाहिता समझता हूँ। इस कारण मैं इसे इस देश में बन्दी की अवस्था में छोड़कर जा नहीं सका। रही बात यह कि यहाँ के अधिकारी इसे सुन्दर युवती मानते हैं अथवा किसी अन्य कारण से इसे रोके हुए हैं, मैं कह नहीं सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझता हूँ," निकोविस्की ने कहा, "यह बन्दी बनाना सौन्दर्य के कारण नहीं। इससे बहुत घटिया रूप-राशि रखने वाली स्त्रियों को भी रूस से बाहर जाने नहीं दिया जा रहा। यह उनके स्त्रीत्व के कारण है। ये सन्तान उत्पन्न कर सकती हैं और यहाँ का राज्य अच्छी सन्तान उत्पन्न करने की सामर्थ्य वालों को देश से बाहर जाने की स्वीकृति नहीं दे सकता। देखो कामरेड देव! भूमि उपज कर सकती है और कोई राज्य अपने देश की एक इंच-भर भूमि भी किसी विदेश के साथ मिलने नहीं दे सकता। इसी प्रकार स्त्री भी उपज का स्थान है। कम पुरुष अधिक भूमि पर पैदावार कर सकते हैं, परन्तु भूमि की कमी तो पुरुष पूरी नहीं कर सकते।"

"तब तो मैं समझता हूँ," पद्मदेव ने प्याले को 'सासर' में रखते हुए कहा, "ऐमालीना ठीक समझी है कि उसको उसके सौन्दर्य के लिये ही बन्दी बनाया हुआ है। स्त्री की उपजाऊ शक्ति ही स्त्री का सौन्दर्य माना जाता है। अनुपजाऊ स्त्रियाँ असुन्दर हो जाती हैं।"

"परन्तु पुरुषों को यहाँ क्यों कैद किया जा रहा है?"

"यह सौन्दर्य के कारण नहीं। मेरा विचार है कि उनको कैद करने में मुख्य कारण उनमें परिश्रम करने की सामर्थ्य है। यहाँ प्राकृतिक शक्ति के स्रोत विद्युत, कोयला, लकड़ी इत्यादि में वृद्धि होने पर भी अभी मानव-परिश्रम की कमी है। जब तक यह कमी रहेगी तब तक पुरुषों को भी देश से बाहर जाने नहीं दिया जायेगा।"

"और यदि स्त्रियों का बाहुल्य हो गया तो? ऐमालीना ने पूछ लिया।

"स्त्रियों को बाहुल्य कभी नहीं होगा। उनको यहाँ से बाहर जाकर अपनी मातृत्व सामर्थ्य का उपहार अन्य देश वालों को देने का कभी भी अवसर नहीं दिया जा सकेगा।"

पद्मदेव ने दीवार के साथ लगे 'टाईम पीस' पर समय देखा तो कह दिया, "चलने का समय हो गया है।" आज ये तीनों व्यक्ति क्रेमलिन जा रहे थे।

: 9 :

कॉलेज-होस्टल में एक कमरे में दो छात्र बैठे बातें कर रहे थे। ये दो वही थे जो कुछ दिन हुए प्रोफेसर पद्मदेव को सभा में भाषण करने का निमन्त्रण देने आये थे।

एक था ब्रैज़नोव। वह अपने साथी सरोविस्टोव से कह रहा था, "प्रोफेसर देव ने एक बात ऐसी कही है जिसके लिए सरकार उस पर नाराज़ हो सकती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या कहा है? मुझे तो उनके पूर्ण भाषण में एक भी शब्द ऐसा प्रतीत नहीं हुआ जो वर्तमान सरकार की प्रशंसा में न रहा हो।"

"उसने कहा है कि प्रत्येक राजनीतिक कार्य में गुण और अवगुण रहते हैं। यह राज्याधिकारियों का कार्य है कि किसी घटना के गुणों से लाभ उठायें और अवगुणों को ग्रहण न करें।"

"इसमें बुरा क्या है?"

"यही कि इस कथन से सन्देह उत्पन्न होता है कि अपने देश के शासक मूर्ख भी हो सकते हैं जो वे गुणों से लाभ नहीं भी उठा सकते।"

"वाह! यह तो इस वक्तव्य का अर्थ नहीं निकलता।" ब्रैज़नोव ने आगे कह दिया, "मुझे पार्टी-सेक्रेटरी ने यही कहा था कि पद्मदेव को इस सभा में बुलाना चाहिए। इस विवादास्पद विषय पर वह अवश्य कुछ ऐसी बात कह देगा जिससे कि वह पकड़ा जायेगा और फिर समाज से 'इलिमिनेट' कर दिया जाएगा।"

"तो तुमने मुझे यह बात पहले क्यों नहीं बतायी?"

"बताता तो क्या होता?"

"मैं प्रोफेसर साहब को भाषण देने के लिये कहने न जाता।"

"और तब जानते हो क्या हो जाता?"

"क्या हो जाता?"

"अब तक तुम किसी सुधार-कैम्प के बाशिन्दे बन चुके होते।"

"यह तो भारी अनर्थ हो जाता।"

"इसमें क्या अनर्थ है? तुम पकड़ कर यहाँ से लापता कर दिये जाते तो किसी को पता भी न चलता कि तुम कहाँ गये हो और दो दिन के उपरान्त सब तुमको भूल जाते।"

"परन्तु मुझे तो दुःख होता। मैं अपने अध्ययन को जारी न रख सकता और सुधार-कैम्प में भूख से तड़फ-तड़फ कर मर जाता।"

"तुम्हारे विचार से ठीक है कि अनर्थ हो जाता, परन्तु देश की समाज के लिये यह शान्तिदायक हो जाता।"

"देखो, मैं तुम्हें एक घटना सुनाता हूँ। स्टालिनग्राद में जर्मनी से सन्धि होने के पश्चात् एक 'सैमिनार' में सन्धि के विषय पर ही विचार हुआ और वहाँ बहुसंख्यक विद्यार्थियों का यह मत था कि यह सन्धि रूस के लिये घातक होगी।

"इस निर्णय को सरकार पर अविश्वास समझा गया और उस रात विश्वविद्यालय के एक सहस्र से ऊपर विद्यार्थियों को अपने-अपने कमरों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से जगाया गया और बन्दी बना ट्रकों में बैठा किसी अज्ञात स्थान को ले जाया गया। आज इस बात को एक वर्ष से ऊपर हो चुका है और उन पकड़े हुओं का पता ही नहीं कि वे कहाँ गये?

''सबसे विचित्र बात यह हुई कि सब लड़के पकड़े गये प्रिन्सिपल के सहयोग से और जब सब पकड़ कर अज्ञात स्थान को भेज दिये गये तो प्रिन्सिपल साहब भी अधिकारियों की मोटर-गाड़ी में बैठाकर ले जाये गये और उनका भी पता नहीं चला कि वे किधर गये हैं? दिन निकलते ही कॉलेज के नये प्रिंसिपल पहुँच गये और काम करने लगे।''

सरोविस्टोव यह बात सुन पूर्ण शरीर में कँपकँपी अनुभव करने लगा। उसने बात बदल दी, ''परन्तु तुम तो कहते हो कि प्रोफेसर देव ने कुछ भी आपत्तिजनक नहीं कहा।''

''हाँ, प्रोफेसर साहब का पूर्ण भाषण 'टेप रिकार्डर' पर ले लिया गया है और इस समय तक वह खुफिया पुलिस के कार्यालय में लिपिबद्ध किया जा रहा होगा।

''मैं समझता हूँ कि अपने सोवियत के सेक्रेटरी को निराशा होगी। कारण यह कि इसमें न केवल अधिकारियों के विरुद्ध कुछ कहा नहीं, वरंच उनकी योग्यता की प्रशंसा की है।

''साथ ही कामरेड देव ने कहा है कि यह संधि भंग होगी। इस दशा में रूसी सरकार मिस्टर देव को एक दूरदर्शी रूस का हितेच्छु मान उसको पुरस्कृत करेगी। कदाचित् उसे विश्वविद्यालय से निकाल शासन में ले लिया जायेगा।''

''परन्तु वह तो एक विदेशी है।''

''फिर क्या हुआ? विचार-समानता तो देश के हितों में है न?''

''और तमको भी देव के बच जाने पर शोक हुआ है क्या?''

''नहीं। मुझे हर्ष अथवा शोक कुछ नहीं। मैं तो सेक्रेटरी की बात कर रहा हूँ।''

''मैं समझता हूँ कि हमको सेक्रेटरी से मिलना चाहिये और यदि कुछ कामरेड देव के विरुद्ध होने वाला है तो उसे सतर्क कर देना चाहिये।''

''तो चलो, चलें।'' ब्रैज़नोव ने कहा।

दोनों उठे और अपने कमरे से निकल द्वार बन्द कर सेक्रेटरी के कमरे को चल पड़े सेक्रेटरी छटी श्रेणी अर्थात् एम.ए. की अन्तिम श्रेणी का छात्र था। उसके कमरे का द्वार खटखटाया गया तो भीतर से आवाज आयी, 'कौन है?'

''ब्रैज़नोव।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आ जाओ। द्वारा खुला है।"

दोनों भीतर पहुँचे तो सेक्रेटरी ने प्रश्न-भरी दृष्टि से उनकी ओर देखा।

ब्रैज़नोव ने कहा, "मिस्टर सेक्रेटरी! हम यह जानने आये हैं कि मिस्टर देव के भाषण को आपने कैसा समझा है।"

"बहुत 'ब्रिलिएण्ट' विवेचना थी वस्तुस्थिति की।"

"हम विचार कर रहे थे कि ऐसे व्यक्ति को तो सरकार को कोई उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य देना चाहिये।"

"उनके भाषण का 'टेप' सूचना-विभाग को चला गया है और वे ही सम्मति बना सकेंगे कि इस व्यक्ति से क्या किया जाये?

"जहाँ तक मेरी रिपोर्ट का सम्बन्ध है, मैंने इस प्रोफेसर के विरुद्ध पहले ही एक लम्बा वक्तव्य दिया हुआ है। वह यह कि यह अति भयंकर जीव है। यह विद्यार्थियों में स्वतन्त्रता से विचार करने की प्रवृत्ति उत्पन्न कर रहा है। यह एक अनिच्छित प्रवृत्ति है।"

"तो फिर?"

"उसी रिपोर्ट के परिणामस्वरूप इस विषय पर देव का भाषण कराने का आदेश आया था। वह मैंने पालन किया। भाषण पुलिस के हाथ में है। मैं अब यही विचार कर रहा था कि मेरी रिपोर्ट ठीक सिद्ध होगी अथवा गलत? यदि तो यह गलत सिद्ध हुई तो मुझे यहाँ से लेनिनग्राद भेज दिया जायेगा, जहाँ मैं सर्दी से ठिठुर-ठिठुर कर मर जाऊँगा।"

"तो आप वहाँ जाना नहीं चाहते?"

"कौन जाना चाहेगा वहाँ? वहाँ तीन महीने तो सूर्य ही नहीं निकलता। भला वहाँ भी रहने में कुछ मज़ा है?"

"परन्तु कामरेड सेक्रेटरी! वहाँ लगभग एक लाख कर्मचारी और ढाई लाख मज़दूर रहते हैं।

"वहाँ एक कन्सेन्ट्रेशन कैम्प भी है।"

"मैं जानता हूँ और वहाँ पचास प्रतिशत जनसंख्या उनकी है जिनके मस्तिष्क में रूस की नीतियों पर सन्देह हो गया है। इस कारण मैं वहाँ नहीं जाना चाहता।"

"परन्तु कामरेड! वह रिपोर्ट आपने भेजी ही क्यों?"

"इस कारण कि यदि न भेजता और वस्तुस्थिति का ज्ञान किसी दूसरे स्रोत से अधिकारियों को हो जाता तो मुझे विद्रोही की रक्षा करने के लिये साइबेरिया में भेज दिया जाता।"

दोनों छोटे दर्जे के छात्र तो सेक्रेटरी का मुख देखने लगे। कुछ देर विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर ब्रैज़नोव ने कहा, ''मैं तो समझा था कि सेक्रेटरी बनने में बहुत मज़ा है।''

''हाँ, मज़ा तो है। परन्तु भय भी है। बिना भय के मज़ा नहीं मिल सकता।'' इस समय द्वार पर किसी ने खटखटाया।

सेक्रेटरी ने पूछा, ''कौन?''

आवाज़ आयी, ''स्टोविना।''

सेक्रेटरी ने आवाज़ दी, ''आ जाओ।''

यह वह लड़की थी जो ऐमालीना के साथ-साथ पद्मदेव से परिचय प्राप्त करने जा रही थी। वह कमरे में दो अन्य छात्रों को बैठा देख झिझकी, परन्तु तुरन्त ही भीतर आ द्वार बन्द कर बोली, ''कामरेड ब्रैज़नोव! क्या कर रहे हैं यहाँ?''

उत्तर सेक्रेटरी ने दिया, ''हम पद्मदेव के भाषण पर विचार कर रहे थे।''

''और कामरेड को क्या समझ आया है?''

उत्तर ब्रैज़नोव ने दिया, ''मैं बहुत बारीकी में नहीं जा सकता। मोटे तौर पर भाषण में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं थी।''

''और कामरेड सेक्रेटरी क्या समझ रहे हैं?''

''मैं इस भाषण में कोई दोष नहीं पकड़ सका। इस पर भी मेरी सम्मति यही है कि यह व्यक्ति अति खतरनाक है।''

''कामरेड! वह बहुत सुन्दर है।''

सेक्रेटरी ने कहा, ''तुम तो उसके मोह में फँस गयी हो?''

''किसी से प्रेम करना कम्युनिस्ट विचारधारा के विपरीत है, परन्तु किसी के मोह में फँसता तो जुर्म नहीं है।''

''दोनों में क्या अन्तर है?''

इस समय ब्रैज़नोव ने कह दिया, ''जब किसी विषय पर मतभेद हो जाये तो निर्णय कौन कर सकता है?''

सेक्रेटरी ने कह दिया, ''सोवियत का सेक्रेटरी।''

''यही तो मुसीबत है। जिससे मतभेद हो वही निर्णय करने वाला है।''

''देखो कामरेड स्टोविना! मोह और प्रेम एक ही भाव को प्रकट करने वाले दो शब्द हैं। इनमें फँसने के लक्षण यह हैं कि जब तुम किसी अन्य से सहवास में आपत्ति करो। यदि तुम आज हममें से किसी के साथ सहवास करने के लिये तैयार हो जाओ तो यह माना जायेगा कि तुम प्रोफेसर देव के मोह कहो, चाहे प्रेम कहो; में नहीं फँसी हुई।''

ब्रैज़नोव ने कहा, ''इसका अर्थ यह हुआ कि प्रेम करना वर्जित नहीं, वरंच एक के साथ ही रहना जुर्म है।''
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ।" सेक्रेटरी का यह फतवा था, "अविवाहित सहचारिता में 'कान्स्टैंसी (निष्ठा) वर्जित है। यह बुर्जुआ मनोवृत्ति है।"

स्टोविना परेशानी अनुभव करती हुई चुप थी। सेक्रेटरी ने पूछा, "कामरेड स्टोविना! अब बताओ कि तुम सिद्ध कर सकती हो क्या कि प्रोफेसर देव के प्रेम में नहीं फँसी हुई?"

"हाँ। परन्तु आज नहीं।"

"क्यों?"

"मैं अपने 'पीरियड' में हूँ।"

"तो फिर किसी दिन परीक्षा ली जा सकती है।"

: 10 :

इस दिन कामरेड स्टालिन से भेंट के लिये पद्मदेव इत्यादि को बहुत देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। इनको एक सजे हुए कमरे में बैठाया गया और दो मिनट के भीतर ही चीफ वहाँ आ पहुँचा। तीनों ने उठकर उसका सत्कार किया। स्टालिन ने तीनों से हाथ मिलाते हुए कहा, "कामरेड देव के आज के व्याख्यान का 'टेप रिकार्ड' मैं सुनकर अभी आया हूँ। उसे सुनकर मुझ पर प्रथम प्रभाव बहुत अच्छा हुआ है। इस पर भी उसकी प्रतिलिपि 'पॉलिटी ब्यूरो' में जा रही है और दो-तीन दिन में उसकी प्रतिक्रिया भी मेरे पास आयेगी।

"एक बात मैं कामरेड देव को बता रहा हूँ कि कदाचित् कल तक संधि टूटने की घोषणा जर्मनी की ओर से हो जायेगी।"

"परन्तु," पद्मदेव ने पूछ लिया, "आपने जर्मनी पर अभी तक आक्रमण क्यों नहीं कर दिया?"

"हम सैनिक-आक्रमणों को गये ज़माने की बात समझते हैं। हमारा कल तक यही विचार था कि रूमानियाँ पोलैण्ड, चैकोस्लोवाकिया, हंगरी और हो सका तो यूनान तथा टर्की में भी वहीं के लोगों को तैयार किया जाये तो अपने-अपने देश का राज्य हमारे अधीन कर दें।"

"परन्तु कामरेड मन्त्री और 'पॉलिटी ब्यूरो' आज तो यह समझ गया होगा कि भूमण्डल के कुछ देशों में अभी भी आक्रमण करने की रीति प्रचलित है।"

"हमारे 'हाई कमाण्ड' का यह विचार है कि जर्मनी पश्चिम और दक्षिण युरोप में इतना व्यस्त है कि संधि भंग होने पर भी युद्ध अभी आरम्भ नहीं होगा।"

पद्मदेव सन्देह की दृष्टि में चीफ का मुख देखता रहा।

"विश्वास नहीं आ रहा न? हमको अपने हाई कमाण्ड की सूझबूझ पर विश्वास है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इतिहास इससे दूसरा परिणाम बताता है।"

"क्या कहता है इतिहास?"

"यही कि संधि भंग करने की घोषणा से पूर्व जर्मनी रूस पर आक्रमण कर देगा।"

स्टालिन कुछ परेशानी अनुभव करने लगा था। उसने बात बदल दी। वह कहने लगा, "मैंने आप तीनों को बुलाया है। मैं किसी दूसरे विषय पर बात करना चाहता हूँ। इस कारण मेरी समझ में आया है कि ऐमालीना और चान्सलर भी सहायक होंगे।"

इसमें उत्तर देने को कुछ नहीं थ। इस कारण तीनों स्टालिन के आगे कहने की प्रतीक्षा में उसका मुख देखते रहे। स्टालिन ने ही बात चलायी। उसने कहा, "मुझे किसी ने बता है कि ऐमालीना इस समय रूस की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी है। उसके कथन की परीक्षा के लिये मैंने पद्‌मदेव के साथ आप दोनों को भी बुला लिया है। ऐमालीना को देखने के लिये और वाइस-चान्सलर तथा पद्‌मदेव की इसमें सम्मति जानने के लिये।"

ऐमालीना तो यह समझ रही थी कि मार्टोव ने उसके माता-पिता की बात उच्चाधिकारियों से की है और उनके विषय में ही किसी प्रकार की बात पूछने के लिये बुलाया गया है। परन्तु यहाँ वार्तालाप का विषय ही दूसरा निकला।

परन्तु ऐमालीना से कुछ पूछा नहीं गया। इस कारण वह मौन बैठी थी। इस पर भी उसका हृदय धक्-धक् कर रहा था। वह नहीं जानती थी कि इस वार्तालाप में वह क्या भाग ले सकेगी?

निकोविस्की ने बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए कहा, "कामरेड चीफ सेक्रेटरी! यह विषय इतना कठिन है कि इस पर दो मनुष्यों का मत एक नहीं हो सकता। सौन्दर्य एक अनुभव करने की बात है। सब मनुष्यों के अनुभव समान नहीं होते। इस कारण सबकी सम्मति किसी के सौन्दर्य के विषय में एक नहीं हो सकती।"

"सबके अनुभव एक-सम्मान क्यों नहीं? सबके लिये समान कार्य, समान भोजन-व्यवस्था और समान जीवन-निर्माण किया जा रहा है। फिर भी सब एक-समान अनुभव क्यों नहीं रखते?"

"प्रथम बात तो यह है कि राज्य की ओर से यत्न करने पर भी सबको एक-समान सुख-सुविधा नहीं मिल रही। एक मज़दूर और एक प्रोफेसर को न तो समान वेतन मिलता है और न ही समान कार्य। कामरेड पद्‌मदेव दिन में आठ घंटे पढ़ने-लिखने में व्यतीत कर रहे हैं और एक इस्पात के कारखाने का कर्मचारी धधकती भट्ठी के सामने आठ घंटे कार्य करता है। इस भेद-भाव के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण अनुभवों में अन्तर है और फिर सम्मति में अन्तर है।''

''परन्तु मैंने तो दो ऐसे पुरुषों को अपने सामने बुलाया है जिनको समान वेतन, समान काम, मकान-वस्त्र, साथ ही भोजन समान मिल रहा है। दोनों रहते भी समान वातावरण में हैं। इस कारण दोनों की सम्मति समान क्यों नहीं होगी?''

स्टालिन ने समझा था कि उसने अति श्रेष्ठ युक्ति दी है। परन्तु दोनों प्रोफेसर समझ रहे थे कि यह युक्ति तो है नहीं। यह तो वस्तुस्थिति है। युक्ति तो यह है कि इस समान व्यवहार पर भी दोनों की सम्मति का एक न होना सम्भव ही नहीं, वरंच निश्चय है। पद्मदेव ने वार्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए कहा, ''कामरेड चीफ सेक्रेटरी! हम तीन पुरुष एक पदार्थ के विषय में सम्मति देने के लिये एकत्रित हुए हैं। आओ, हम तीनों सत्य-हृदय के अपने-अपने विचार बतायें। वस्तु एक है। देखें कि उस वस्तु के विषय में तीनों की सम्मति एक है अथवा नहीं? यदि तो सम्मति एक हुई तब तो सेक्रेटरी महोदय की बात ठीक हो जायेगी। यदि एक न हुई तो फिर इस एक न होने में कारण जानने का यत्न करेंगे।''

स्टालिन ने कहा, ''मैं अपनी सम्मति पहले देना नहीं चाहता। इस कारण कि प्राय: लोग मुझसे डर कर अथवा मेरी खुशामद करने के लिये वही बात कह देते हैं जो कि मैं कहता हूँ।''

इस पर निकोविस्की ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, ''परन्तु चीफ सेक्रेटरी क्या बात पसन्द करते हैं? वह अपनी सम्मति का समर्थन चाहते हैं अथवा हमारी स्वतन्त्र सम्मति?''

''मैं स्वतन्त्र सम्मति चाहता हूँ।''

इस पर पद्मदेव ने कहा, ''हमारे साहित्य में एक पुस्तक है-'पंचतन्त्र।' उसमें एक कहानी है-एक वन में नदी के किनारे एक बाघ जल पी रहा था। उसी समय एक हिरण का बच्चा नदी के नीचे कुछ दूर जल पीने आ गया। उसने बाघ को नहीं देखा था। बाघ ने उस हिरण के बच्चे को देखा तो उसके नरम स्वादिष्ट माँस को खाने की लालसा से उसके पास जा पहुँचा। हिरण का बच्चा डरकर भागने लगा तो बाघ ने उसे सान्त्वना दे कहा-'भागो नहीं। तैं तो इस वन का राजा हूँ और सदा न्याय की दृष्टि रखता हूँ।'

''हिरण का बच्चा अनुभव-विहीन था। वह ठहर गया। भागना चाहता तो भाग सकता था। बाघ हिरण की गति से भाग नहीं सकता। हिरण के बच्चे ने समझा कि यह एक राजा होकर झूठ नहीं बाल सकता। उसने कहा-'हुज़ूर! मैं भाग नहीं रहा था। आप तो दया की मूर्ति हैं। आपसे भला डरने में क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण हो सकता है?''

''जब बाघ सर्वथा समीप आ गया तो उसने उससे कहा, 'मगर तुमने एक अपराध किया है।'

'क्या हुज़ूर?'

'जब मैं जल पी रहा था, तुमने उसे गंदला कर दिया था।'

''हिरण के बच्चे ने युक्ति करते हुए कहा, 'हुज़ूर! जल तो आपकी ओर से मेरी ओर आ रहा था। भला, मैं इसे गदला कैसे कर सकता था?'

'नहीं। तुम झूठ बोलते हो। देखो, मैं परमात्मा को साक्षी मानकर कहता हूँ कि तुम मेरा जल गंदला कर रहे थे। एक राजा के जल को गन्दा करना एक ऐसा अपराध है जिसका कि दण्ड मृत्यु है।'

'पर हुज़ूर।' हिरण के बच्चे ने अपने-आपको फँस गया समझ मिन्नत के भाव में कहा, 'किसी से पूछ लीजिये। नदी के नीचे की ओर से जल पीने पर ऊपर का जल गन्दा नहीं होता।'

'तो मैं झूठ बोलता हूँ? देखो, तुमने एक दूसरा अपराध किया है। अपने राजा को झूठ बोलने वाला और मूर्ख कहा है। तुम्हारा दंड तो है ही मृत्यु।'

''इतना कह बाघ ने अपने नाखूनों से उसके पेट को फाड़ डाला और उसके माँस को नोच-नोच खाने लगा।''

पद्मदेव की कहानी सुन स्टालिन हँस पड़ा। उसने कहा, ''यदि इस कहानी को सत्य मान लें अर्थात् मैं अपने को बाघ समझ लूँ और तुमको हिरण का बच्चा तो भी अपने मन की बात सत्य-सत्य कहने में हानि नहीं। जब मरना ही है तो झूठ बोलकर अथवा गिड़गिड़ाकर बात करने में क्या लाभ होगा?''

पद्मदेव भी हँस रहा था। उसने कहा, ''मैं गिड़गिड़ाकर बात नहीं कर रहा, परन्तु जब आपने यह कहा कि प्राय: लोग आपकी खुशामद में आपकी बात ही कह देते हैं तब मैंने बताया कि सत्य अथवा झूठ, बाघ तो बाघ ही रहेगा और हिरण का बच्चा हिरण ही। इस कारण खुशामद करने से कुछ लाभ नहीं होगा, सत्य ही कहा जायेगा।''

''तो कामरेड अपने को हिरण का बच्चा मानते हैं?''

''हाँ, कामरेड चीफ सेक्रेटरी।''

''और मुझे बाघ?''

''वन का राजा।''

''यह मास्को वन है?''

''यह साहित्यिक कल्पना है।''

''और वन का राजा हिरण को मारेगा ही?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह एक स्वाभाविक बात है।"

"पर ऐसा है नहीं। आपको सब प्रकार की स्वतन्त्रता और सुख-सुविधा प्राप्त है।"

"श्रीमान्! जब वह वस्तु प्राप्त न हो जो एक निस्सहाय मनुष्य चाहता हो तो यह सुख-सुविधा कुछ अर्थ नहीं रखती।"

"कामरेड क्या चाहते हैं?"

"हिन्दुस्तान लौट जाना चाहता हूँ और अपने परिवार को साथ ले जाना चाहता हूँ।"

"परन्तु ऐमालीना तो यू.एस.एस.आर. की नागरिक है और रूस के नागरिक के अधिकार नहीं कि वह देश छोड़कर बाहर जाये।"

"देश के एक नागरिक के अधिकार तो बाहरी व्यक्ति से अधिक होने चाहिये। यदि उसकी इच्छा जाने की हो तो उसे जाने देना चाहिये।"

"और ऐमालीना! तुम जाना चाहती हो?" स्टालिन ने ऐमालीना की ओर देख पूछ लिया।

इस सब वार्तालाप के समय ऐमालीना पीत मुख, आँखें मूँदें बैठी थी। अब सीधा प्रश्न पूछे जाने पर उसने कहा, "नहीं। मैं रूस छोड़कर जाना नहीं चाहती।"

"यदि तुम्हें कामरेड पद्मदेव के साथ जाने दिया जाये तो जाना चाहोगी?"

"नहीं।" वह गले को साफ करते हुए बोली।

"अब बताओ कामरेड! हम तुमको आज ही जाने की स्वीकृति दे सकते हैं, परन्तु हमारे प्रश्न का उत्तर तो देना ही होगा।"

"हाँ। आपके दोनों प्रश्नों का उत्तर दे सकता हूँ। पहला प्रश्न है कि ऐमालीना रूस की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी है क्या? उसके उत्तर में मेरा यह कहना है कि मैंने पिछले सात वर्ष में इस देश में जितनी भी स्त्रियाँ देखी है, मुझे ऐमालीना उन सबसे सुन्दर दिखाई दी है। सारे रूस की बात मैं नहीं कह सकता। मैंने सारा राज्य नहीं देखा।

"दूसरा प्रश्न आपका यह है कि मैं यहाँ से जाना चाहता हूँ अथवा नहीं?

"मैं जाना तो चाहता हूँ। मैं हिन्दुस्तान का नागरिक हूँ, परन्तु मैंने ऐमालीना से विवाह किया है। इससे मेरे दो बच्चे हैं। मैं न तो अपनी पत्नी को छोड़कर जाना चाहता हूँ और न ही बच्चों को। ये सब यदि मेरे साथ नहीं जायेंगे तो में भी नहीं जाऊँगा।"

स्टालिन को इस बात का विस्मय हुआ। उसने पूछ लिया, "जब यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना ही नहीं चाहती तो आप कैसे ले जायेंगे?''

''जब वह मुझे तलाक दे पृथक् हो जायेगी तब बच्चों के विषय में भी निश्चय हो जायेगा कि वे किसके पास रहेंगे? तब ही मैं निश्चय कर सकूँगा कि मुझे रहना है अथवा नहीं।''

''ठीक है। यह आप जानिये और आपकी पत्नी जाने। अच्छा कामरेड निकोविस्की!'' स्टालिन ने बात बदल कर पूछ लिया, ''ऐमालीना के विषय में आपका क्या विचार है?''

निकोविस्की ने विचार कर गम्भीर हो कहा, ''मेरा विचार इसके सौन्दर्य के विषय में बहुत अच्छा नहीं है। यह एक साधारण स्त्री है। इस स्त्री में मूर्खता दूसरों से कुछ अधिक मालूम हुई है।''

''तो क्या इसकी मूर्खता इसके सौन्दर्य को कम कर रही है?''

''निस्सन्देह! मनुष्य में दो पदार्थ होते हैं। एक शरीर और दूसरा मन। शरीर तो इसका कुछ अधिक सुन्दर नहीं। मैं एक और स्त्री को जातना हूँ जो इससे भी अधिक सुन्दर थी, परन्तु वह अब है नहीं। ऐमालीना सौन्दर्य की दृष्टि से उससे बहुत ही घटिया है। साथ ही यह कुछ मूर्ख भी हो रही है। इससे इसके सौन्दर्य में और अधिक कमी हो रही है।''

''क्या मूर्खता की है इसने?''

''यही कि यह हिन्दुस्तान जाना नहीं चाहती। मैं समझता हूँ कि यदि यह मान जाती तो आप अपनी उदारता से पति-पत्नी और बच्चों को भी हिन्दुस्तान जाने की स्वीकृति दे देते।''

स्टालिन गम्भीर हो गया। गम्भीर हो उसने अपनी सम्मति दे दी। उसने कहा, ''मैं एक अंश में निकोविस्की की बात का समर्थन करता हूँ कि ऐमालीना शरीर से सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी तो है नहीं, परन्तु इसने जो मूर्खता की बात कही है कि यह अपने पति के साथ रूस से बाहर नहीं जाना चाहती, वह इसके सौन्दर्य में वृद्धि करने वाली सिद्ध हो रही है।

''स्त्रियों का सौन्दर्य उनकी मूर्खता में ही है। प्रोफेसर पद्मदेव क्या कहते हैं?''

पद्मदेव ने कह दिया, ''जब मैंने कामरेड चीफ सेक्रेटरी को यह कहा था कि मैंने जितनी स्त्रियाँ देखी हैं उनमें ऐमालीना सर्वश्रेष्ठ है तो मेरा अभिप्राय उसे शरीर, मन, प्राण और बुद्धि के विचार से ही था। इन चार के अतिरिक्त मैं इसमें एक बात और भी देखता हूँ वह है इसकी आत्मा। आप लोग उसके अस्तित्व को नहीं मानते। मैं उसके अस्तित्व को मानता हूँ। मैं कभी-कभी उसको स्पष्ट देखता भी हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इन पाँचों बातों के समुच्चय को प्राणी कहते हैं। ऐमालीना एक ऐसी प्राणी है कि इसमें पाँचों बातें एक-दूसरे के सौन्दर्य को बढ़ा रही हैं। इसी कारण मैंने कहा है कि इससे सुन्दर स्त्री मुझे अभी तक दिखायी नहीं दी।"

"परन्तु," चीफ सेक्रेटरी ने कह दिया, "वाइस-चान्सलर महोदय तो इसे मूर्ख मानते हैं। तो क्या वह मूर्खता भी इसके सौन्दर्य में वृद्धि करने वाली है?"

"मैं उसे मूर्खता मानता नहीं। मैं इसे इसकी बुद्धि की प्रखरता मानता हूँ। उसने तो इसके सौन्दर्य को और भी अधिक निखार दिया है।"

"तो इसका आपके साथ हिन्दुस्तान जाने के लिये तैयार न होना इसकी बुद्धिमत्ता है?"

"मैं ऐसा ही समझता हूँ।"

स्टालिन ने कह दिया, "मैं राज्य के पास सिफारिश करने जा रहा हूँ कि ऐमालीना को रूस की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी मान इसे 'मदर' की उपाधि दी जाये।"

इस पर पद्‌मदेव हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "पर कामरेड चीफ सेक्रेटरी! यह तो मेरे साथ अन्याय हो जायेगा। यदि वह सोवियत राज्य-संघ की 'मदर' घोषित हो गयी तो मैं उसे अपनी पत्नी कैसे बना सकूँगा? तब तो वह सबकी माँ हो जायेगी।"

"पर क्या माँ का पति नहीं होता?"

"होता है। पर वह 'फादर' कहलाता है। मैं जो यहाँ का नागरिक नहीं, भला यहाँ का पिता कैसे हो सकूँगा।"

स्टालिन इस पर कुछ कहना चाहता था कि कमरे के एक कोने में लगी घंटी बजी। स्टालिन कहता-कहता रुक गया और उठ खड़ा हुआ। उसने कहा, "आप ठहरिये। मैं इस घंटी का कारण जानकर अभी आता हूँ।"

इतना कह वह उनको छोड़ कमरे से बाहर निकल गया। ये तीनों एक-दूसरे का मुख देखते रह गये।

ये आधा घंटा-भर चीफ सेक्रेटरी के लौटने की प्रतीक्षा करते रहे और बैठे-बैठे ऊब गये थे। इस अपरिचित स्थान पर वे कुछ भी बोलना नहीं चाहते थे। वे नहीं जानते थे कि वहाँ की दीवारें भी गुप्तचर का काम नहीं कर रही होंगी।

आधे घंटे के उपरान्त वही सिपाही आया जो पिछली बार पद्‌मदेव को क्रैमलिन से बाहर ले गया था। उसने आते ही कहा, "चलिये! मैं आपको बाहर छोड़ आऊँ।"

ये उठे और उस सिपाही के साथ बाहर निकल बस में सवार हो गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

जब पद्मदेव, ऐमालीना और निकोविस्की क्रैमलिन से बाहर निकले, बस में सवार हुए तो पद्मदेव की दृष्टि मार्टोव पर जा पड़ी। वह बस में पहले से ही बैठा था।

पद्मदेव उसे देख प्रसन्न नहीं हुआ। उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह ही उस पर जासूसी कर रहा है। पिछली बार भी जब वह क्रैमलिन से निकला था तो मार्टोव उससे मिला था। ऐमालीना मार्टोव के पास खाली स्थान पर बैठ गयी। पद्मदेव और निकोविस्की उनके पीछे की ओर देखा। उसके देखने का आशय यह था कि यह कौन व्यक्ति है जिसके साथ ऐमालीना जा बैठी है और दोनों धीरे-धीरे बातें करने लगे हैं।

पद्मदेव ने बहुत धीरे-से कह दिया, ''यह गुप्तचर-विभाग का कर्मचारी है। ऐमालीना का मित्र है।''

''यह किसी शुभ का सूचक नहीं हो सकता।''

''मैंने तो तब से ही अपने को परमात्मा के हाथ में छोड़ रखा है जब से मैं रूस में आया हूँ।''

''यह नीति सबसे अच्छी है।'' निकोविस्की ने मुस्कराकर कहा।

बस में बैठे-बैठे और अधिक बातचीत नहीं हुई। विश्वविद्यालय क्षेत्र में पहुँच ये लोग बस से उतरे तो ऐमालीना के साथ ही मार्टोव भी उतर आया। मार्टोव ने पद्मदेव से हाथ मिलाकर कहा, ''मैं कल लेनिनग्राड जा रहा हूँ, ऐमालीना ने एक पत्र देने को कहा था। मैं वह पत्र लेने आपके घर चलूँगा।''

''आइये, आपका स्वागत है। अब भोजन का समय हो रहा है, भोजन करेंगे।''

''यहाँ आपके 'कैन्टीन' का भोजन अधिक स्वादिष्ट होता है।''

''तो आप इसे पसन्द करते हैं?''

''हाँ।''

''तो आइये, हम नर्सरी से होकर 'कैन्टीन' में चलेंगे।''

इस समय ऐमालीना ने कहा, ''जर्मनी ने आक्रमण कर दिया है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किस पर?" पद्‌मदेव ने पूछा।

"जर्मन सेना सोवियत सीमा पार कर दस मील भीतर आ चुकी है और वह धड़ाधड़ आगे बढ़ रही है।"

"और हमारी सेनायें?"

"उनकी अधिक शक्ति को न रोक सकने के कारण भाग रही हैं।"

पद्‌मदेव भौंचक्का मुख देखता रह गया। मार्तोव ने बात की, "सुरक्षा कमेटी बैठी है और आदेश जारी हो रहे हैं। आशा की जाती है कि प्रात:काल तक जर्मन वालों को बढ़ने से रोक दिया जायेगा।"

पद्‌मदेव को अब समझ आया कि क्यों स्टालिन एकाएक उठकर चला गया था। वह कह गया था कि अभी लौटता है, परन्तु उसे लौटने का अवकाश नहीं रहा होगा। एक बात पर वह प्रसन्न था कि उसने आक्रमण के समाचार से पहले ही आक्रमण होने की सम्भावना प्रकट कर दी थी।

निकोविस्की ने भी ऐमालीना के मुख से जर्मन आक्रमण की बात सुनी थी। उसने इस नवीन परिस्थिति पर कह दिया, "मैं भोजन करने के उपरान्त कामरेड पद्‌मदेव से अपने 'थीसेज़' के विषय पर विचार-विनिमय करना चाहता हूँ।"

पद्‌मदेव समझ गया कि वाइस-चान्सलर कोई गुप्त मन्त्रणा करना चाहता है। इस कारण उसने कहा, "मैं बच्चों के साथ कैन्टीन में भोजन कर आपके क्वार्टर में आ जाऊँगा।"

निकोविस्की ने ऐमालीना को यह कहा, "जब तक रेडियो पर समाचार घोषित नहीं होता तब तक युद्ध का समाचार किसी बाहरी व्यक्ति को नहीं बताना। साथ ही उतना कुछ बताना चाहिये जितना रेडियो पर बताया जाये।"

भोजनोपरान्त ऐमालीना माँ को पत्र लिखने बैठ गयी और पद्‌मदेव निकोविस्की से बातें करने उसके क्वार्टर पर चला गया। निकोविस्की का स्वार्टर पद्‌मदेव के क्वार्टर से एक फर्लांग के अन्तर पर था। वह टहलता हुआ वहाँ जा पहुँचा।

निकोविस्की उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वे सदा क्वार्टर के मध्य के कमरे में बैठकर राजनीति पर विचार किया करते थे। बातचीत से पहले बीच वाले कमरे के चारों ओर के कमरों को मानव-रहित देख और बन्द कर लिया जाता था। निकोविस्की ने पद्‌मदेव को बैठाकर पहले सब कमरों को भली-भाँति देखा और फिर उनको बन्द कर बीच के कमरे में बैठ बोला, "देखो, अभी तक मास्को रेडियो पर आक्रमण का समाचार घोषित नहीं हुआ। साथ ही आज वारसा, बुडापैस्ट, बर्लिन इत्यादि प्रसारणों में यहाँ से रुकावट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(choking) खड़ी की गयी है।

"इसका अभिप्राय मैं यह समझा हूँ कि सीमाओं पर एक से अधिक स्थानों पर आक्रमण हुआ है और हमारी सेनाओं में भगदड़ मच गयी है। हमारी सरकार आक्रमण की प्रगति को रोककर ही समाचार देना चाहती है।"

"कामरेड चान्सलर!" पद्मदेव ने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि अब कुछ वर्ष तक भाग-दौड़ रहेगी। यह सम्भव है कि विश्वविद्यालय बन्द हो जाये और विद्यार्थी तथा अध्यापक सब भरती कर लिये जायें।"

"सम्भव की बात छोड़िये। यह निश्चय ही समझिये। मैंने आपको इस कारण बुलाया है कि इस समय देश से बाहर भागने का अवसर रहेगा और हमें अवसर मिलते ही लाभ उठाने के लिये तैयार रहना चाहिये। मैं तो अमेरिका में जाकर रहना चाहूँगा।"

"युद्ध के दिनों में नियन्त्रण कड़ा नहीं हो जायेगा क्या?"

"परन्तु ऐसे स्थान भी हो सकते हैं जहाँ से भागने की सुविधा अधिक हो। मैं चाहता हूँ कि जब हम रूस से बाहर होने में सफल हो जायें तो हमारा सम्पर्क किसी प्रकार बन जाये?"

पद्मदेव ने अपने मित्र प्रोफेसर सुदर्शन का पता बताकर निकोविस्की को कण्ठस्थ करा दिया। निकोविस्की ने फिलाडाल्फिया विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर का नाम-धाम पद्मदेव को कण्ठस्थ करा दिया।

इसके उपरान्त दोनों ऐसे कामों की सूची बनाने लगे जिनमें सीमावर्ती देशों में जाने की योजना बन सके। दो घण्टे-भर लम्बी-चौड़ी योजनाओं पर बातचीत होती रही। निकोविस्की ने कहा, "यह सम्भव नहीं कि आपको और ऐमालीना को साथ-साथ काम पर लगाया जाये। इस कारण उसको मेरा नाम बताये बिना अपनी ओर से अपने भागने की योजना के विषय में बता देना, जिससे वह भी कोई योजना बना सके तो अच्छा है।"

"यह तो बहुत अन्याय हो जायेगा यदि पति-पत्नी को ऐसा काम दिया गया कि दोनों एक-दूसरे की संगत ही न पा सकें। मैं तो उसके बिना जाऊँगा नहीं।"

"पर मैं समझता हूँ कि वह तुम्हारे बिना भागने का अवसर मिलते भाग जायेगी।"

"तब तो ठीक है। उस अवस्था में मैं भी भागने में रुचि लेने लगूँगा।

"मुझे तो ऐसा ही प्रतीत होता है। आज स्टालिन के उसके सौन्दर्य की चर्चा करने से मैं तो यही समझ रहा हूँ कि वह ही उसके अपहरण का यत्न करने वाला है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मदेव को स्टालिन पर तो सन्देह नहीं था, परन्तु मार्टोव पर उसे सन्देह अधिक था। वह कई दिन से मार्टोव और अपशोक के रूप में तुलना कर रहा था। दोनों की नीली आँखें तो समान थीं, परन्तु नाक की बनावट में अन्तर प्रतीत होता था। इस कारण वह निश्चय नहीं कर सका था।

रात के बारह बजे वह अपने क्वार्टर को लौटा। उसे यह देख विस्मय हुआ कि उसके क्वार्टर की सब बत्तियाँ जल रही थीं। वह लम्बे-लम्बे पग उठाता हुआ क्वार्टर के बाहर पहुँचा तो उसका द्वार खुला मिला। वह भीतर गया तो क्वार्टर का सब सामान उलट-पुलट कर दिया दिखायी दिया।

वह एक कमरे से दूसरे और दूसरे से तीसरे कमरे में गया। सब कमरों का सामान अपने-अपने स्थान से हटा दिया गया था। मानो, कोई ऊपर-नीचे किसी वस्तु को ढूँढता रहा है। वह अपने अध्ययन कक्ष में गया। वहाँ भी उसी प्रकार उथल-पुथल हो चुकी थी। एक बात देखकर वह स्तब्ध रह गया। उसके लिखे हुए सब लेख लापता हो गये थे। उसका 'टाइपराईटर' खुला पड़ा था और उसमें उसकी पुस्तक की पाण्डुलिपी का एक पृष्ठ जो उस पर चढ़ा हुआ था, वह भी वहाँ नहीं था।

इस समय उसे ऐमालीना का स्मरण हो आया। वह वहाँ नहीं थी। बच्चे भी लापता थे। वह विचार करने लगा कि यह किसने किया होगा?

इस समय उसे ध्यान आया कि उसके उस दिन के भाषण की प्रतिलिपि 'पॉलिटी ब्यूरो' में गयी है। इस पर उसके मन में यह विचार उठा कि यह सब तलाशी उसी की आज्ञा से हुई है। परन्तु उसकी पत्नी और बच्चे क्यों लापता हैं? क्या वे भी 'पॉलिटी ब्यूरों' के आदेश से पकड़े गये हैं? परन्तु उनका इस बात से क्या सम्बन्ध हो सकता है?

इतना विचार कर उसे यह समझ आया कि अवश्य उसे भी अपने परिवार के साथ पकड़ने का आदेश होगा और उसके वहाँ न होने के कारण ही वह अभी तक पकड़ा नहीं था। इससे एक बात और स्पष्ट हो गयी कि मार्टोव कैटालीना के नाम ऐमालीना का पत्र ले गया होगा। यदि उसके वहाँ रहते हुए यह सब दुर्घटना होती तो वह उसका पता बता देता और पकड़ने वाले निकोविस्की के घर पर आकर उसे पकड़ लेते और यदि वह उससे मैत्री भाव के कारण पता नहीं बता सका तो उसे निकोविस्की के घर आकर बता जाता कि क्या दुर्घटना हुई है? वह विचारने लगा कि क्या वह भी पकड़ा गया है?

एकाएक उसे सूझा कि उसे यहाँ से लापता हो जाना चाहिये परन्तु वह कहाँ जाये? निकोविस्की के घर जाये? इस विचार पर उसे यह समझ आया कि इस समय उसके घर की देख-रेख भी हो रही होगी और उसके घर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ जाने की सूचना गुप्तचर विभाग को जा चुकी होगी और शीघ्र ही उसे पकड़ने के लिये आने वाले होंगे।

इतना विचार उसने अपने व्यवहार का निश्चय कर लिया। उसी अलमारी में कुछ वेतन के बचे कूपन रखे थे। उसने कूपन उठा जेब में रख लिये और मकान से बाहर निकल आया। निकलकर उसने मकान की परिक्रमा की। वह देखना चाहता था कि कोई छिपा-छिपा उसकी गतिविधियों को देख तो नहीं रहा। यथाशक्ति यह जानकर कि उसका कोई पीछा तो नहीं कर रहा, वह निकोविस्की के घर पर जा पहुँचा। निकोविस्की के घर की रोशनी बुझ चुकी थी। अभिप्राय यह कि निकोविस्की सो रहा था। निकोविस्की का सोने का कमरा क्वार्टर के पिछवाड़े में था। वह वहाँ पहुँच उस कमरे की खिड़की के द्वार पर नाखून से खरोंच करने लगा। दो-तीन मिनट तक ऐसा करने पर निकोविस्की उठा और खिड़की खोल बाहर झाँकने लगा। पद्मदेव ने कह दिया, "मैं हूँ देव। द्वार खोलो, मैं कुछ बताने आया हूँ।"

निकोविस्की ने बिना प्रकाश किये ही द्वार खोल देव को भीतर कर लिया और पहले की भाँति उसे भीतर के कमरे में ले जाकर बैठा दिया। तदुपरान्त मकान के सब कमरों को टार्च के प्रकाश से देखा गया और उनको बन्द कर निकोविस्की वहाँ आया और पूछने लगा, "हाँ, अब बताओ। लौट क्यों आये हो?"

पद्मदेव ने पूर्ण वृत्तान्त बताया और फिर पूछा, "क्या समझे हो?"

"मुझे तो मार्तोव की शरारत प्रतीत होती है।"

"परन्तु उसे विदित था कि मैं यहाँ पर हूँ और मुझे कोई पकड़ने नहीं आया। न यहाँ न वहाँ अब भी मैं अपने क्वार्टर पर आधा घंटा-भर रहा हूँ। आने से पूर्व मैंने अपने मकान की परिक्रमा करते हुए यह देखने का यत्न किया है कि मेरा कोई पीछा कर रहा है अथवा नहीं। कोई पीछा करता दिखायी नहीं दिया।"

"इस पर भी मुझे उसी पर सन्देह है। कदाचित् उसको आज्ञा ऐमालीना को पकड़ने की थी। तुम्हें पकड़ने का विचार नहीं भी हो सकता।

"देखो देव! तुमको मैं अपने एक घनिष्ट मित्र के यहाँ रात ठहरा देता हूँ और कल दस बजे तक मैं सब बात जानने का यत्न करूँगा।"

निकोविस्की उसे तीन-चार क्वार्टर दूर ले गया। वहाँ विश्वविद्यालय का एक क्लर्क रहता था। उसे जगाया गया और पद्मदेव को वहाँ ठहरा दिया गया। निकोविस्की ने उसे समझा दिया था कि यह व्यक्ति एस. एक है। इसकी रक्षा करनी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एस. से अभिप्राय 'सीक्रेट' से था। पद्मदेव को उस क्लर्क ने अपनी पत्नी के कमरे में सुला दिया और पत्नी को अपने सोने के कमरे में ले गया।

: 2 :

जब-जब भी किसी देश में तानाशाही स्थापित हुई है उसको भंग करने के लिये देश के बुद्धिशील लोगों ने ही विद्रोह का बीजारोपण किया है। चाहे तानाशाही धार्मिक रही हो अथवा राजनीतिक। विद्रोह का बीज बुद्धिशीलों द्वारा ही रोपित होता है। अतः कुशल तानाशाह देश में बुद्धि निःशेष करने का प्रयास करते रहते हैं। ऐस करने में वे एक बात भूल जाते हैं कि बुद्धि पुस्तकों, समाचार-पत्रों तथा भाषणों में रखी नहीं होती। यह तो प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क में जन्म के साथ उत्पन्न होती है।

भाषण, लेख इत्यादि इस बुद्धि के लिये भोजन का काम करते हैं। इनके अतिरिक्त चिन्तन भी बुद्धि के लिये पुष्टिकारक योग है। जब बुद्धि चिन्तन करने लगती है तो वह बिना भोजन के, अभिप्राय यह कि लेख, भाषणों के बिना भी, पुष्ट होने लगती है और फिर तानाशाही को भंग करने का यत्न आरम्भ कर देती है।

कार्ल मार्क्स ने लोक-कल्याण का प्रचलित से इतर एक विकल्प बताया था। साथ ही उसने अपने विकल्प को प्रचलित करने का उपाय बता दिया कि पुराने को नष्ट-भ्रष्ट कर दो।

लेनिन ने मार्क्स के इस आदेश का पालन करने के लिये बुद्धि को निःशेष करना आवश्यक समझा। अतः उसने देश-भर के विद्वानों के कथनों पर प्रतिबन्ध लगा दिया। उसने देश के बाहर से किसी प्रकार के लेख अथवा वक्तव्य को आने पर रोक लगा दी। साथ ही उसने देश के विद्वानों पर मार्क्स की मीमांसा के अतिरिक्त अथवा उसके विपरीत लिखने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। उसका इससे यही प्रयोजन था कि सब बुद्धिशीलों की बुद्धि को, भोजन से वंचित कर, हत कर देगा। एक बात वह भूल गया था कि प्रत्येक नये प्राणी की बुद्धि जन्म के समय निर्माण होती है और शरीर के अन्य अंगों के साथ-साथ पोषित होती है।

कुछ प्राणियों की बुद्धि ऐसी होती है कि वह चिन्तन मात्र से उन्नत और पुष्ट होती जाती है। लेनिन से नियत बुद्धि की हत्या की योजना में चिन्तन को रोकने का कोई प्रबन्ध नहीं था और कदाचित् इसका प्रबन्ध हो भी नहीं सकता था। अतः बुद्धिशीलों के निवास-स्थान में किसी बुद्धि का चिन्तन से पुष्ट हो जाना असम्भव नहीं था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यही बात हुई विश्वविद्यालय के क्लर्क शवर्नीक की पत्नी क्रीना के साथ। वह 'पॉलिटिकल साइंस' की छात्रा थी। जब वह अपनी शिक्षा समाप्त कर चुकी तो उसे 'युक्रेन' के एक गाँव ऐस्ट्रोवा में सोवियत का मंत्री बनाकर भेजा गया। उसके वहाँ पहुचते ही उसे एक आदेश-पत्र मिला। उसमें कार्य विधि के विषय में कुछ नियम थे।

क्रीना इन आदेशों को पढ़कर स्तब्ध रह गयी। उसमें एक आदेश यह था कि सोवियत का किसी को सदस्य बनाने से पूर्व उसके विषय में सब जानकारी लिखकर जिला-मंत्री से आज्ञा लेनी होगी।

गाँव की वयस्क जनसंख्या थी दो सहस्र। वहाँ की सोवियत की सदस्य संख्या थी बीस। वह इसको बहुत कम समझती थी। उसने सदस्य संख्या को उपयुक्त करने के लिये अधिकारी ढूँढने आरम्भ कर दिये। इस खोज में उसने लगभग एक सौ स्त्री-पुरुषों का निर्वाचन किया। इस प्रकार वह सदस्यता एक प्रतिशत से उठाकर पाँच प्रतिशत कर देना चाहती थी। अत: उसने एक सौ के लगभग गाँव वालों के नाम प्रस्तावित कर दिये।

उसे तुरन्त डाँट पड़ी कि पहले गाँव की परिस्थिति से भलीभाँति परिचय प्राप्त करो। तदुपरान्त सदस्यता के लिये नये नाम प्रस्तावित करना।

वह एक वर्ष तक वहाँ गाँव में रही। एक वर्ष के उपरान्त उसने एक सौ ग्यारह व्यक्तियों की सदस्यता के लिये नामों का प्रस्ताव कर दिया। इस बार जाँच हुई ओर परिणाम यह हुआ कि उसे वहाँ के मंत्री पद से हटाकर मास्को के एक कारखाने की सोवियत में नियुक्त कर दिया गया। क्रीना को इससे अति दुःख हुआ। वह अपने अधिकारियों से इस विषय में पूछने लगी तो उसे पता चला कि जिला-मंत्री ने राज्य-मंत्री से सम्मति ली थी और राज्य-मंत्री ने चीफ सेक्रेटरी से। वह चीफ सेक्रेटरी के कार्यालय में अपने तबादले का कारण जानने गयी तो उसे पता चला कि उसका काम आज्ञा का पालन करना है, युक्ति करना नहीं।

इस सूचना ने उसकी बुद्धि में चिन्तन जाग्रत कर दिया। वह विचार करने लगी कि यदि यही काम एक मंत्री का है तो उस पद के लिये एक 'पॉलिटिकल साइंस' की स्नातिका को नियुक्त करना राष्ट्र की शक्ति का अपव्यय नहीं क्या?

उसने मंत्रालय में निवेदन कर दिया कि वह 'पॉलिटिकल साइंस' की स्नातिका है। इस कारण उसे कुछ ऐसा काम दिया जाये जिसमें वह अपनी शिक्षा और योग्यता का उपयोग कर सके।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वहाँ से उत्तर आया कि वास्तविक शिक्षा का अर्थ 'रेजिमेन्टेशन' (एक

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मार्गीकरण) है। यदि तुम यह नहीं सीखी तो तुमने शिक्षाग्रहण नहीं की।

इन सब बातों को सुन-सुनकर क्रीना के मन में ग्लानि उत्पन्न होने लगी थी। वह अपने 'पॉलिटिकल साइंस' के अध्ययन से यह सीखी थी कि अपने मन और इन्द्रियों पर नियन्त्रण का नाम शिक्षा है, परन्तु नियन्त्रण सोवियत सरकार के मन्त्रालय का नहीं, वरंच अपनी बुद्धि का होना चाहिये।

इस विषय पर वह चिन्तन करने लगी तो उसे यह समझ आया कि उसे अपने जीवन को स्थिर और सोवियत मन्त्रालय के आश्रय से बाहर करना चाहिये। इसमें वह अपने विवाह की लालसा करने लगी। उसने मन्त्रालय से दो मास की छुट्टी ली और स्वास्थ्य-सुधाार के लिये कृष्ण सागर के तट पर एक सरसान नाम के स्वास्थ्यप्रद स्थान पर चली गयी। वहाँ एक होटल में ठहरे हुए उसकी कामरेड शवर्नीक से भेंट हो गयी। शवर्नीक मास्को विश्वविद्यालय में एक क्लर्क था। वह भी उस स्थान पर स्वास्थ्य के लिये आया हुआ था। दोनों में परिचय हुआ और जब क्रीना ने अपने काम से पलायन करने की कहानी बतायी को शवर्नीक ने विवाह का प्रस्ताव कर दिया।

इस प्रस्ताव का क्रीना विस्मय से मुख देखने लगी तो शवर्नीक ने बताया कि तुम मेरे विचार की स्त्री हो और यदि हम इकट्ठे रहेंगे तो कम-से-कम मानसिक शान्ति का उपयोग तो कर सकेंगे।

क्रीना को बात पसन्द आ गयी और दोनों ने विवाह कर लिया। वहीं सरसान में ही विवाह रजिस्टर करा वे दोनों एक ही कमरे में रहने लगे।

शवर्नीक की छुट्टी पहले समाप्त हो गयी और जब वह मास्को लौटने लगा तो क्रीना भी उसके साथ ही मास्को चली आयी और मन्त्रालय में यत्न करने लगी कि वह भी कहीं विश्वविद्यालय में काम पर लगा दी जाये। इसमें विश्वविद्यालय के वाइस-चान्सलर निकोविस्की सहायक हो गये। निकोविस्की भी इन्हीं के विचार का था।

निकोविस्की अपने साथियों और विद्यार्थियों में बुद्धि के प्रयोग की प्रेरणा देता रहता था। वह अधिक खुलकर न तो विद्यार्थियों के सामने और न ही मित्र-वर्ग में यू.एस.एस.आर. के राजनीतिक ढाँचे पर बात कर सकता था। जब कोई उससे पूछता कि वे अमेरिकन मैगज़ीन क्यों नहीं पढ़ सकते, तो वह कह दिया करता, "इसमें कारण तो हैं, परन्तु प्रकृति ने तुमको विचार करने की शक्ति दी। तुम विचार करो कि क्यों तुमको बाहरी जगत् की बातें जानने से वंचित रखा जाता है?"

इस पर कभी कोई कह देता, "बुर्जुआ विचारधारा से हमारी रक्षा करने के लिये ऐसा किया जाता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह मैं जानता हूँ। परन्तु क्यों? यही तो विचारणीय है। क्या मैं अपने लिये स्वयं विचार नहीं कर सकता?"

"नहीं।"

"तो किसको मेरे लिये विचार करना चाहिये?"

"मिस्टर ऐण्ड्रीव नियुक्त हैं।"

"तो मुझसे इस प्रश्न पूछने के स्थान कामरेड ऐण्ड्रीव से पूछना चाहिये।"

इस प्रकार वह अपने को बचाता हुआ कार्य कर रहा था। उसको अपने इस बुद्धिवाद का प्रचार करते-करते विश्वविद्यालय में ही कुछ ऐसे लोग मिल गये थे जो कि उसी की भाँति विचार करते थे। उनसे निकोविस्की की घनिष्ठता हो गयी थी।

विश्वविद्यालय का क्लर्क शवर्नीक और उसकी पत्नी क्रीना इसी विचार के लोग थे। शवर्नीक कभी-कभी निकोविस्की से मिलता रहता था और रूस से कहीं बांहर जाकर जीवन चलाने के विषय में विचार किया करता था।

उस रात वह पद्मदेव को शवर्नीक के घर छोड़कर आया तो उसका मन देश की पूर्ण व्यवस्था पर ग्लानि से भर गया था। वह पद्मदेव का यहाँ आ जाने में कुछ भी दोष नहीं समझता था। वह जानता था कि हिटलर ने जब यहूदी-विरोधी नीति को चलाते हुए जेवियर के परिवार को अकारण पकड़ना चाहा तो वे जर्मनी से झूठे पासपोर्ट के आश्रय भाग आये। वे रूस में इस कारण आये थे कि उनके विचारानुसार उन्होंने कम्युनिज़्म की सहायता की थी और रूस को उनकी रक्षा करने में रुचि होनी चाहिये थी। पद्मदेव तो वैसे ही जर्मनी से भाग रहे यहूदियों के प्रवाह में बहता हुआ यहाँ आ गया था। उसके पास भारत सरकार का पासपोर्ट था। उसका इंग्लैंड के बैंक में रुपया जमा था। वह किसी प्रकार से भी रूस पर न तो बोझा था और न ही वह रूस तथा कम्युनिज़्म का विरोधी था। एक जर्मन लड़की से विवाह करना और उसकी अरक्षित किसी विदेश में छोड़ने से इन्कार करना भला कैसे अपराध हो सकता था?

पद्मदेव का अपनी पत्नी के लिये अपनी स्वतन्त्रता तक का बलिदान एक गुण न समझ दोष माना गया। उसे भी देश में रहने पर विवश करना निकोविस्की को अयुक्तिसंगत प्रतीत हुआ था। इस बात ने उसके मन में पद्मदेव के लिये सहानुभूति और सोवियत राज्य के प्रति घृणा ही उत्पन्न की थी। उसे यह जानकर भी अति दुःख हुआ था कि उसे हिन्दुस्तान में अपने सम्बन्धियों से पत्र-व्यवहार भी करने नहीं दिया जाता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मदेव ने शवर्नीक को बताया था कि उसका एक मित्र यहाँ आया था। वह रूस सरकार का मेहमान था और उसके पता करने पर बता दिया गया कि पद्मदेव नाम का कोई व्यक्ति यहाँ नहीं। कदाचित् वह नाज़ी की गोलियों से मार डाला गया है। ये सब बातें उसे सोवियत रूस और यहाँ पर स्थित राज्य से विद्रोह करने की प्रेरणा दे रही थीं।

आज निकोविस्की पद्मदेव के क्वार्टर की तलाशी ली जाने और उसकी पत्नी और बच्चों के लापता किये जाने के समाचार से अत्यन्त दुःखी मन से अपने बिस्तर में लेटा हुआ अपने पिछले तीस वर्ष के जीवन की बातें स्मरण करने लगा था।

उसे एक इसी प्रकार की घटना उस दिन से पन्द्रह वर्ष पूर्व की स्मरण आ गयी थी और वह उसे स्मरण कर रो पड़ा था। वह विश्वविद्यालय से डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त कर विश्वविद्यालय में प्रोफेसर नियुक्त हुआ था। उसकी क्लास में एक अति सुन्दर लड़की से उसका परिचय हुआ तो वह उससे मेलजोल बढ़ाने लगा।

लड़की राजनीति में रुचि नहीं रखती थी, परन्तु उसका भाई मालाटोव एक प्रमुख कम्युनिस्ट वर्कर था। वह मास्को की नगर सोवियत का सेक्रेटरी था। यह एक बहुत बड़ी पदवी थी और मालाटोव इस पर गर्व अनुभव करता था।

मालाटोव की बहन कारनीना प्रोफेसर निकोविस्की के सम्पर्क में आयी तो वह इसमें बुद्धि जाग्रत करने लगा। निकोविस्की का ढंग विलक्षण था। वह कभी भी राज्य एवं राजनीति पर बात नहीं करता था। उसका ढंग अविवादास्पद विषयों पर बात करते हुए बुद्धि को विचार करने पर विवश करने का था।

निकोविस्की ने एक दिन कारनीना से पूछा, "कारनीना! यह मेज़ पर तुम्हारे सामने 'वोडका' का गिलास पड़ा है?"

"हाँ।"

"इधर कुर्सी पर तुम बैठी हो?"

"जी।"

"तुम अपने में और इस गिलास में कुछ अन्तर नहीं देखतीं?"

"देखती हूँ। मैं लड़की हूँ और यह गिलास है।"

"यह तो नामों में अन्तर हो गया। यदि तुम्हारा नाम भी गिलास रख दिया जाये तो तुम एक समान हो जाओगी क्या?"

कारनीना विचार करने लगी। यह बुद्धि जागृत करने के लिये प्रथम ठोकर थी। वह अभी विचार ही कर रही थी कि प्रोफेसर साहब को क्या उत्तर दे कि निकोविस्की ने एक और बात कर दी। उसने पूछा, "इस गिलास में क्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखा है?''

''वोडका है।''

''यदि यह वोडका तुम अपने पेट में डाल लो तो क्या होगा?''

''अपार उत्तेजना होगी।''

''परन्तु इस गिलास के पेट में होने पर भी यह किसी प्रकार की उत्तेजना उत्पन्न नहीं कर सकती।''

''यही तो अन्तर है इस गिलास और पेट में?''

''क्यों यह अन्तर है?''

वह अभी यह विचार ही कर रही थी कि अन्तर वर्णन करे कि मालाटोव आया और उनके समीप कुर्सी पर बैठ सामने रखे गिलास पर हाथ रखकर यह देख कि वह पीने योग्य गर्म है, बोला, ''कारनीना! तुम तो इसे पी नहीं रही और यह ठण्डी हो रही है। इससे में समझता हूँ कि मैं ही पी जाऊँ।''

इतना कह बिना कारनीना के उत्तर की प्रतीक्षा किये उसने गिलास उठाया और बोडका पीने लगा।

निकोविस्की ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, ''और तुम अपने में और अपने भाई में भी कुछ अन्तर देखती हो अथवा नहीं?''

''यह तो देखती हूँ। मुझे अपने में और गिलास में अन्तर समझ नहीं आया, परन्तु अपने में और भाई में तो अन्तर स्पष्ट ही है। यह महामूर्ख है और मैं अपने को बुद्धिमान मानती हूँ।''

इस पर मालाटोव आग-बबूला हो उठा। उसने पूछा, ''कारनीना! क्या मूर्ख इतनी बड़ी जिम्मेदारी के पद पर नियुक्त हो सकता है, जिस पर मैं हूँ?''

''क्या जिम्मेदारी है आपकी?'' कारनीना ने जानकारी प्राप्त करने के लिये पूछ लिया।

''मैं इतने बड़े डिस्ट्रिक्ट का सेक्रेटरी हूँ। यह क्या मामूली बात है?''

बात राजनीति की ओर जाते देख निकोविस्की ने कहा, ''कारनीना डीयर! मालाटोव ठीक कहता है। वह बहुत बड़ी जिम्मेदारी के स्थान पर है। वह देखो, क्या है?'' प्रोफेसर ने दीवार के साथ लगे बिजली के मेन स्विच की ओर संकेत कर दिया।

''वह हमारे घर में बिजली के नियन्त्रण के लिये स्विच लगा है। इससे बिजली पूर्ण घर में आती एवं जाती है।''

''ठीक है। वह एक जिम्मेदारी का स्थान है न?''

''हाँ।''

''बस इतनी ही बड़ी जिम्मेदारी कामरेड मालाटोव की है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु वह स्विच अपनी इच्छा से बन्द और खुल नहीं सकता। मैं तो अपनी इच्छा रखता हूँ।" मालाटोव ने कह दिया।

"सत्य? मुझे इसमें सन्देह है। यदि तुम जनरल सेक्रेटरी की आज्ञा को अपनी इच्छा से रोक दो अथवा बदल दो तब समझूँ कि तुम उस स्विच से कुछ भिन्न हो।"

"मैं रोक सकता हूँ और उसमें संशोधन भी कर सकता हूँ।"

"सत्य?" निकोविस्की ने कहा, "तब तो तुम सत्य ही एक जिम्मेदार अधिकारी हो।"

इस पर कारनीना ने कह दिया, "प्रोफेसर साहब! कामरेड ब्रदर झूठ बोल रहा है, यह अपनी इच्छा से कुछ नहीं कर सकता।"

"कब नहीं किया?" मालाटोव ने पूछ लिया।

"जब तुम अपनी निर्वाचित लड़की से विवाह करना चाहते थे।"

इस पर मालाटोव गम्भीर हो गया। कारनीना के मस्तिष्क के कपाट खुले रहे थे, परन्तु प्रोफेसर इस झगड़े में पड़ना नहीं चाहता था। वह बहाना बना उठकर चला गया।

मालाटोव वोडका से उत्तेजित हो रहा था और उसकी बहन ने एक बहुत ही प्रबल धक्का उसके मस्तिष्क को लगाया था। अत: प्रोफेसर साहब के चले जाने पर उसको प्रसन्नता ही हुई। वह अपने मन की बात कहने का अवसर पा गया। उसने जब बहन को अकेले देखा तो कह दिया, "तुम बहुत ही बदतमीज़ हो रही हो।"

"क्या बदतमीज़ी की है?"

"तुमने मेरे विवाह की बात क्यों कही है?"

"तुम एक गलत बात कह रहे थे कि तुम उस बोर्ड के मेन स्विच से कुछ अधिक हो। मुझे बताओ, तुमने कभी कोई मन की बात की भी है इस स्थान पर?"

"सब-कुछ तो मेरे विचारानुसार ही हो रहा है।"

"इसी कारण तो मैंने इस बात का कथन किया था जिसमें तुम अपने मन की नहीं कर सके थे।"

"परन्तु उसमें तो कारण था। मैं तुम्हारे साथ विवाह करना चाहता था और तुम बहन हो।"

"परन्तु मैं तो तैयार थी। हम दोनों ने परस्पर विवाह की बात पर विचार भी किया था। उस विचार के उपरान्त ही हम दोनों 'मैरिज रजिस्ट्रेशन' कार्यालय में गये थे और वहाँ से आज्ञा हो गई थी कि विवाह नहीं हो सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमने बताया भी था कि तुम इस राज्य की सोवियत के सेक्रेटरी हो, परन्तु जब अधिकारी ने बताया कि यह नहीं हो सकता तो तुम मौन हो गये। बताओ, क्या तुम्हारे विचार बदले हैं?''

''मैं तुमसे अविवाहित सम्बन्ध बनाना चाहता था। तुम मानी नहीं।''

''मुझे यह ठीक प्रतीत नहीं हुआ था।''

''तो अब यह क्यों नहीं हो सकता?''

''अब तो मैं किसी अन्य से विवाह की लालसा करने लगी हूँ।''

''किससे?''

''बता नहीं सकती। अभी मैंने उससे बात नहीं की। बात कर लूँ और यदि उसने स्वीकार कर लिया तो विवाह कर लूँगी।''

''यह प्रेम करना बुर्जुआ मनोवृत्ति है। मैं समझता हूँ कि इस प्रोफेसर ने तुम्हारा दिमाग खराब कर रखा है।''

''अभी तो इतना ही प्रोफेसर साहब ने समझाया है कि तुम एक स्विच मात्र हो।''

''तो यह कोई खराब बात है?''

''यह प्रोलिटेरियेट मनोवृत्ति है।'' इतना कह कारनीना हँस पड़ी। मालाटोव उठकर चला गया। उसके एक घण्टा उपरान्त कारनीना पकड़ी गयी और साइबेरिया के एक सोने की खान पर सुधार-कैम्प में भेज दी गयी।

निकोविस्की अगले दिन कारनीना की प्रतीक्षा करता रहा। वह उस दिन के उपरान्त अपनी श्रेणी में नहीं आयी। निकोविस्की स्वयं इस बात का पता करने नहीं जाना चाहता था। एक दिन उसने एक विद्यार्थी को कारनीना का पता करने उसके घर भेज दिया। उसकी माँ से बात हुई। जाँच करने वाले ने बताया कि लड़की का नाम सुनते ही माँ की आँखें आँसुओं से भर गयीं। उसने बताया कि वह देश के साथ बगावत करने के अपराध में पकड़ी गयी है और उसे साइबेरिया में 'गोल्ड माइन्ज़' पर भेज दिया गया है।

निकोविस्की को जब यह समाचार मिला तो वह कारनीना का पता करने लगा। बहुत यत्न करने के उपरान्त सात वर्ष के अनन्तर प्रोफेसर साहब को कारनीना का एक पत्र मिला।

पत्र पढ़कर तो निकोविस्की के रोंगटे खड़े हो गये। उसमें कारनीना ने संक्षेप में अपने सात वर्ष के कारावास की कथा लिखी थी।

पत्र के अन्त में लिखा था, ''भूख से व्याकुल और काम की थकावट से शिथिल कैम्प के अफसरों की विषय-वासना की शिकार हो गयी। पिछले सात वर्ष में मुझसे सैकड़ों मनुष्यों ने व्यभिचार किया है और अब मैं उस अति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारण बीमार हो हस्पताल में पड़ी हूँ। यहाँ न औषधि है, न कोई नर्स। डॉक्टर है, परन्तु वह स्वयं मुझसे कई बार दुराचार कर चुका था और उसका कहना है कि मैं शीघ्र ही इस जीवन से छूटने वाली हूँ। गुड बाई।

"पुनश्च:–यह पत्र मैं एक छूटने वाले कैदी के हाथ भेज रही हूँ। यदि मिल जाये तो मेरी स्मृति में सोवियत संयुक्त राज्य से घृणा करने का जीवन-भर का व्रत ले लो। इससे चित्त को शान्ति मिलती है।"

निकोविस्की को आज उस लड़की की याद आयी तो वह बेचैनी से बिस्तर में करवटें लेता हुआ छटपटाने लगा।

इन सब विचारों में वह रात-भर सो नहीं सका। जब नींद नहीं आयी तो वह अपना रेडियो खोल विदेशों से ट्यून करने लगा।

उसे इण्डिया दिल्ली रेडियो बोलता सुनायी दिया। आवाज़ बहुत धीमी थी, परन्तु रात की निस्ब्धता में समझ में आ रही थी। रेडियो कह रहा था, "जर्मनी ने रूस को धोखा दिया है और बिना सूचना के आक्रमण कर दिया है।"

मास्को रेडियो इस विषय पर मौन था। प्रातः छः बजे मास्को रेडियो ने पहली बार यह सूचना दी कि जर्मन सेनायें संधि भंग कर रूस की सीमाओं में घुस आयी हैं और वे सीमा से बीस मील भीतर तक पहुँच गई हैं। यहाँ उनसे घमासान युद्ध हो रहा है।

वह उठा। उसने जल गर्म किया और उससे स्नान किया। रात न सो सकने के कारण सुस्ती दूर हो गयी।

उसने अपने लिये कॉफी बनाई और वह पीने ही वाला था कि टेलीफोन की घण्टी बजी।

यह टेलीफोन विश्वविद्यालय के कार्यालय से आया था। कार्यालय ऐक्सचेंज से सम्बन्धित था और वहाँ से विश्वविद्यालय के कुछ उच्चाधिकारियों से टेलीफोन सम्बन्ध बना था। निकोविस्की के घर से भी सम्बन्ध था।

निकोविस्की ने टेलीफोन का चोंगा उठाया और पूछ लिया, "कौन है?" विश्वविद्यालय के कार्यालय से एक क्लर्क ने कहा, "क्रैमलिन से टेलीफोन है। सम्बन्ध जोड़ रहा हूँ।"

निकोविस्की ने उत्सुकता से सम्बन्ध बनने की प्रतीक्षा की। आखिर कोई बोला, "कौन बोल रहा है?"

"विश्वविद्यालय का वाइस-चान्सलर।"

"चीफ सेक्रेटरी सोवियत रूस आपसे मिलना चाहते हैं। कितनी देर में पहुँच सकते हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''प्रथम बस पर आ सकता हूँ।''

''तो आ जाओ।'' टेलीफोन बन्द हो गया।

: 3 :

''कामरेड निकोविस्की! रेडियो पर समाचार सुना है?''

''कामरेड चीफ सेक्रेटरी! सुना है।''

''आम लाम-बन्दी की आज्ञा होने वाली है।''

''किस-किस आयु के भीतर?''

''बीस से पचास के भीतर।''

''मुझे क्या आज्ञा है?''

''आप अपने अधीन सब अध्यापकों और छात्र-छात्राओं को सैनिक कैम्पों में जाने का आदेश दे दें। कल प्रातःकाल तक भरती करने वाले अधिकारी कामरेड क्रौमोव से मिल लें और पता कर लें कि उनको किस सैनिक-कैम्प में जाना है और वहाँ कब तक उपस्थित होना है?''

''कुछ अन्य आज्ञा?''

''कामरेड क्रौमोव ने विश्वविद्यालय के कार्यालय में आज्ञा कर दी होगी, परन्तु मैं यह जानना चाहता हूँ कि कामरेड देव कहाँ हैं?''

''अपने निवास-स्थान पर होना चाहिये।''

''वह वहाँ पर नहीं है। उसकी पत्नी और बच्चे भी नहीं हैं।''

''तो मैं नहीं जानता। आज्ञा हो तो पता करने का यत्न करूँ?''

''कैसे पता करोगे?''

''कल रात जब हम यहाँ से गये थे तो एक कामरेड मार्टोव ऐमालीना को मिलने आया था। वह उससे पूर्व-परिचित थी। मैंने पति-पत्नी और कामरेड मार्टोव तीनों को, कैन्टीन नम्बर तीन की ओर जाते देखा था। वहाँ से मैं अपने क्वार्टर पर चला गया था। उसके उपरान्त मैं अभी घर से निकल सीधा इधर आया हूँ।''

''इस पर चीफ सेक्रेटरी के मुख पर परेशानी का भाव आ गया। निकोविस्की उसके सामने अभी भी खड़ा था। चीफ सेक्रेटरी भी खड़ा-खड़ा ही बात कर रहा था। एकाएक चीफ सेक्रेटरी ने बताया, ''कामरेड देव के कल के भाषण से 'पॉलिटी ब्यूरो' को यह सन्देह हुआ है कि उसके घर में जर्मनी से सम्बन्ध रखने वाला कोई प्रसारण और समाचार-ग्रहण यन्त्र लगा है। उसके सन्देह पर उसके क्वार्टर की तलाशी ली गयी थी। गुप्तचर विभाग को वहाँ किसी प्रकार का यन्त्र तो मिला नहीं। एक छोटा-सा ग्रहण-यन्त्र तो था, परन्तु उससे मास्को के बाहर के समाचार नहीं सुने जा सकते थे। उसके ढेरों ही लिखे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कागज़ गुप्तचर विभाग उठा लाया है और वे 'पॉलिटी ब्यूरो' द्वारा देखे और समझे जा रहे हैं। वे अंग्रेज़ी भाषा में हैं।

"परन्तु जब गुप्तचर विभाग के लोग वहाँ पहुँचे थे तो देव, उसकी पत्नी और बच्चे वहाँ नहीं थे।"

"बहुत विचित्र है। गुप्तचर विभाग के कामरेड मार्टोव का पता किया जाये। मैंने उसको ही उनके साथ छोड़ा था।"

इस पर सोवियत संघ के चीफ सेक्रेटरी ने दीवार से लगी घंटी का बटन दबाया और दो क्षण उपरान्त उसका अंगरक्षक भीतर आ गया। सेक्रेटरी ने उसे कहा, "गुप्तचर विभाग के मार्टोव का पता करो।"

अंगरक्षक बाहर गया तो चीफ सेक्रेटरी बोला, "आज रात मास्को में 'ब्लैक आउट' रहेगा। किसी भी समय यहाँ बम्बबारी हो सकती है।"

"चीफ सेक्रेटरी के कथन में बहुत कुछ ऐसा था कि जिसके उत्तर की आवश्यकता नहीं थी। इस कारण निकोविस्की मौन सामने खड़ा था। दो मिनट में अंगरक्षक लौटा और बोला, "कामरेड मार्टोव रात की गाड़ी से लेनिनग्राद गया है।"

"उसे पकड़ कर ऐमालीना और कामरेड देव के विषय में पूछा जाये और तब तक छोड़ा न जाये तब तक यहाँ से आज्ञा न जाये।"

अंगरक्षक बाहर चला गया तो चीफ ने कहा, "अब आप जा सकते हैं। कामरेड देव से मेरा बहुत कार्य है। मैं उसे अपना निजी सचिव बनाना चाहता हूँ। उसके ज्ञान से हम सोवियत यूनियन को लाभाविन्त करना चाहते हैं। वह एक चमत्कारिक प्रतिभा और ज्ञान रखता है।"

"पता चलते ही रिपोर्ट करूँगा।"

निकोविस्की को वहाँ से छुट्टी मिली तो वह विश्वविद्यालय को लौट आया। वह पहले अपने क्वार्टर में पहुँचा और तुरन्त पद्मदेव को देखने के लिये कामरेड शवर्नीक के क्वार्टर पर जा पहुँचा।

शवर्नीक और उसकी पत्नी क्रीना पद्मदेव के साथ प्रातः का अल्पाहार ले रहे थे। वह भी वहीं जा बैठा। उसके सामने भी दूध में उबला हुआ दलिया रख दिया गया।

शवर्नीक ने कहा, "मैं आपके मकान पर आपको देखने गया था। मकान बन्द था और वहाँ कोई नहीं था।"

"मुझे चीफ सेक्रेटरी ने टेलीफोन से बुलाया था और मैं वहाँ गया था वहाँ कामरेड देव और इनकी पत्नी की खोज हो रही थी। मार्टोव को लेनिनग्राद में पकड़े की आज्ञा हो गयी है। साथ ही यदि पद्मदेव और ऐमालीना मिलें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उनको मास्को भेज देने की आज्ञा हो चुकी है।

"कामरेड पद्मदेव के घर की तलाशी इस कारण हुई थी कि 'पॉलिटी ब्यूरो' को यह सन्देह हो गया था कि उनके पास किसी प्रकार का प्रसारक अथवा जर्मनी से सम्बन्धित ग्रहण-यन्त्र लगा है। इस प्रकार के यन्त्र तो निकले नहीं। हाँ, पद्मदेव के लिखे लेखों की अब जाँच-पड़ताल हो रही है।"

पद्मदेव ने पूछ लिया, "परन्तु मेरी खोज किस कारण हो रही है?"

"अभी तक तो यही पता चला है कि आपको चीफ सेक्रेटरी अपना सचिव नियुक्त करने वाले हैं।"

पद्मदेव हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "मैं कुछ ऐसी ही आशा करता था। मैंने क्रीना से कहा था कि यदि यहाँ की सरकार में कुछ भी बुद्धि होगी तो वे मुझे एक सलाहकार के रूप में नियुक्त कर लेंगे।"

इस समय क्रीना ने कहा, "हम वाइस-चान्सलर महोदय के आने से पूर्व यही विचार कर रहे थे कि इस समय यहाँ से भाग निकलने का यत्न करना चाहिए अथवा नहीं। कामरेड देव का यह विचार है कि इस समय हम सब को रूस की रक्षा में अपना सहयोग देना चाहिए।"

"आपका रूस से क्या सम्बन्ध है?" निकोविस्की ने पूछ लिया।"

"मेरा सम्बन्ध मानव-समाज से है। मैं अपने को किसी देश से विशेष सम्बन्धित अथवा किसी का शत्रु नहीं समझता। मेरी सहानुभूति भले मानवों से है और सोवियत यूनियन अब मानवों के पक्ष में कर दी गई है।"

'परन्तु वे स्वेच्छा से तो स्वतन्त्र मानव-समाज के पक्ष में न थे और न हुए हैं।"

"ठीक है। परन्तु इस विवशता से लाभ उठाकर इस विशाल राष्ट्र को हम कदाचित् मानवों के पक्ष में स्थाई रूप में कर सकें।"

'कैसे कर लेंगे?"

"मुझे कुछ ऐसा समझ आ रहा है कि इंग्लैंड रूस को अपने गुट्ट में सम्मिलित कर लेगा।"

"चर्चिल?" निकोविस्की हँस पड़ा।

"हाँ। चर्चिल व्यवहार-कुशल व्यक्ति है। आप एक-दो दिन में ही सुनेंगे कि इंग्लैंड की ओर से सहानुभूति का सन्देश आया है और सहायता का प्रस्ताव भी।"

पद्मदेव ने बात इतने विश्वास से कही थी कि निकोविस्की उसके विपरीत नहीं कह सका। उसने कुछ विचारकर कहा, "तो आप स्टालिन की पेशकश स्वीकार करेंगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मदेव ने आँखें मूँद आधा मिनट तक विचार किया और फिर कहा, "मेरे विषय में चीफ सेक्रेटरी को सूचना दे दी जाये कि मैं रात अपने क्वार्टर में सब-कुछ अस्त-व्यस्त देख कामरेड शवर्नीक के क्वार्टर में जाकर सो गया था। कहिए कि मुझे शवर्नीक से कुछ काम था। मैं भोजन के पश्चात् मार्टोव, ऐमालीना और बच्चों को क्वार्टर में छोड़ शवर्नीक से मिलने चला आया था। जब मैं रात के ग्यारह बजे के लगभग लौटा तो तेरे क्वार्टर पर छापा पड़ा था और मेरी पत्नी, बच्चे तथा मेरे लेख लापता हैं। रात मैं शवर्नीक के क्वार्टर में ही जाकर सो गया था और अब मैं आपसे शिकायत करने आया हूँ।"

निकोविस्की ने अपने मन से पद्मदेव की बात को स्वीकार न करते हुए भी कहा, "विचार कर लो। यदि मेरे द्वारा यह बात सेक्रेटरी महोदय को कहलवानी है तो अभी मेरे क्वार्टर पर चलो। इस अवस्था में विलम्ब करना ठीक नहीं।"

पद्मदेव उठ खड़ा हुआ और निकोविस्की के साथ उसके क्वार्टर पर जा पहुँचा। पद्मदेव ने कार्यालय में टेलीफोन किया। वहाँ उपस्थित क्लर्क ने यह जानते ही कि कौन बोल रहा है, कहा, "आपत्कालीन स्थिति की घोषणा हो गयी है और देश के सब बीस से पचास वर्ष की आयु के लोगों को रिपोर्ट करने की आज्ञा है। विश्वविद्यालय क्षेत्र के लोगों को कार्यालय में कल दस बजे तक रिपोर्ट करने के लिए कहा गया है। एक सैनिक अधिकारी यहाँ आज आ जाएगा।"

निकोविस्की ने क्लर्क की बात सुनकर कहा, "क्रैमलिन से मिला दो।"

क्लर्क ने टेलीफोन मिलाया तो उसने कह दिया, "चीफ सेक्रेटरी महोदय को यह सूचना दे दो कि कामरेड देव यहाँ उपस्थित है और आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहा है।"

इस समय निकोविस्की विश्वविद्यालय को जाने की तैयारी करने लगा और पद्मदेव क्रैमलिन से आज्ञा आने की प्रतीक्षा करने लगा। दस मिनट तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। क्रैमलिन से टेलीफोन आया, "चीफ सेक्रेटरी कामरेड देव से तुरन्त मिलना चाहते हैं।"

"मैं आ रहा हूँ।"

पद्मदेव वहाँ से अपने क्वार्टर पर गया। वहाँ विश्वविद्यालय के कुछ अधिकारी और विद्यार्थी एकत्रित हो गए थे। वे सब अपना-अपना अनुमान लगा रहे थे कि पद्मदेव और उसकी पत्नी का क्या हुआ होगा? प्रायः सबका यही विचार था कि उनको राज्य ने पकड़ लिया है। सब यह ही कह रहे थे कि पिछले दिन के पद्मदेव के व्याख्यान का यह परिणाम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस विचार पर उपस्थित लोग पद्मदेव के भाषण पर विचार करने लगे थे। सब यही समझते थे कि अवश्य ही कोई बात कही गई होगी जिससे कि सरकार रुष्ट हो गयी होगी।

इस प्रकार की बातें हो ही रही थीं कि निकोविस्की के क्वार्टर की ओर से पद्मदेव को आते देख सब विस्मय करने लगे। उसके वहाँ पहुँचते ही सब उसे घेर कर पूछने लगे, "यह क्या है और क्यों है?"

पद्मदेव ने अपनी कहानी वहाँ दोहरा दी। उसने कहा, "मैं भोजन के उपरान्त शवर्नीक के क्वार्टर पर किसी काम से गया था। मेरे जाने के समय मेरी पत्नी और बच्चे यहाँ पर ही थे। मुझे वहाँ एक घंटा से ऊपर लगा था। जब मैं लौटा तो अपने क्वार्टर की यह अवस्था थी। मेरी पत्नी, बच्चे और मेरे लेख लापता थे। मैं यहाँ की अवस्था देख शवर्नीक के क्वार्टर में जाकर सो रहा था। वहाँ से मैं रिपोर्ट करने प्रातः वाइस-चान्सलर के घर पहुँचा था। वहाँ से मैंने गुप्तचर-विभाग को रिपोर्ट की तो मुझे आज्ञा हुई है कि मैं चीफ सेक्रेटरी से मिलूँ। अब मैं वहाँ जा रहा हूँ।"

इस सूचना से तो वहाँ एकत्रित लोग यही समझे थे कि पद्मदेव को पकड़ने के लिए बुलाया जा रहा है। इस प्रकार विचार कर एक व्यक्ति ने पूछ लिया, "तो आप चीफ सेक्रेटरी से मिलने जा रहे हैं?"

"मैं ऐमालीना और बच्चों के विषय में जानना चाहता हूँ।"

"अधिक सम्भव तो यह प्रतीत होता है कि आपको आपकी पत्नी के पास भेज दिया जाएगा।"

"मैं वहाँ जाकर प्रसन्नता अनुभव करूँगा।"

इस उत्तर पर तो लोग असंतोष प्रकट करते हुए अपने-अपने घरों और कामों पर लौटने लगे।

पद्मदेव अपने क्वार्टर में गया और अपने कपड़े बदल क्वार्टर की अस्त-व्यस्त अवस्था को ठीक किए बिना ही क्रैमलिन को चल पड़ा।

: 4 :

ज़ेवियर का परिवार और पद्मदेव को जब रूसी सीमा से बन्दी बनाकर मास्को लाया गया तो इन सब को पृथक्-पृथक् कर गुप्तचर विभाग के अधिकारियों के सम्मुख पूछताछ के लिए उपस्थित किया गया था। इस बात को नौ वर्ष हो चुके थे।

शरौडर और ज़ेवियर को तो तुरन्त ही लेनिनग्राद के 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' में भेजने की आज्ञा हो गयी, परन्तु ऐमालीना और कैटालीना के विषय में परस्पर विरोधी समाचार आ रहे थे। इस कारण निश्चय नहीं हो रहा था। जर्मनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से आए कुछ सोशलिस्ट इनको कम्युनिस्ट बताते थे और एक-दो ने यह भी बताया था कि ये कम्युनिस्ट थे, परन्तु चुनाव से पूर्व इन्होंने 'फासिस्ट पार्टी' की सहायता करनी आरम्भ कर दी थी।

इस कारण इन दोनों स्त्रियों को गुप्तचर विभाग के सर्वोच्च अधिकारी 'प्रज़िडियम' के सदस्य कामरेड बेरिया के सम्मुख उपस्थित किया गया। कैटालीना ने तो स्पष्ट कह दिया कि वह कम्युनिस्ट है, परन्तु वह अपने पति को छोड़ना नहीं चाहती। इस कारण वह 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' में जाकर रहना चाहेगी, जहाँ उसका पति ज़ेवियर रहेगा।

परन्तु बेरिया ने जब ऐमालीना को देखा तो वह उससे सौदेबाज़ी करने लगा। इसमें देर होने लगी। ऐमालीना अपने और अपने पति को हिन्दुस्तान जाने की स्वीकृति के बदले में बेरिया की बात मानने के लिए तैयार थी, परन्तु बेरिया ऐमालीना को अपने पास ही रखने का यत्न करने लगा। इस काल में पद्मदेव की पुस्तक की पाण्डुलिपि पढ़ने पर यह उचित समझा गया कि इस विद्वान् को किसी प्रकार रूस में ही रख लिया जाये। विश्वविद्यालय में निकोविस्की इतिहास विभाग का मुख्य प्राध्यापक था। उसे पद्मदेव की पुस्तक की पाण्डुलिपि दी गयी और उसे यह आज्ञा हुई कि वह पद्मदेव का रूस में ही रह जाने की प्रेरणा दे।

निकोविस्की पद्मदेव से मिला और उससे विभिन्न विषयों पर वार्तालाप करने लगा। जब यह पता चला कि पमद्देव अपनी पत्नी को छोड़कर हिन्दुस्तान में भी जाना पसन्द नहीं करेगा तब ऐमालीना के रूस से जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया और पद्मदेव को विश्वविद्यालय में काम पर लगा दिया गया। उसको अपने अन्वेषण के लिये प्रत्येक प्रकार की सुविधा मिलने लगी।

पद्मदेव के व्यवहार ने निकोविस्की के मन पर गहरा प्रभाव उत्पन्न किया। वह समझने लगा कि यह व्यक्ति-विशेष है और अपने मन की भावना पर सब-कुछ निछावर करने के लिये तैयार है। इस कारण वह कम्युनिस्ट-राजनीति के विरोधी अपने विचारों पर मनन करने लगा।

ऐमालीना अपने ढंग से अपने पति को छुड़ाने में यत्न कर रही थी। इस दुस्तर सागर से पार पाने में उसे बेरिया नौका समझ आया। परन्तु अभी बेरिया की इच्छा पूर्ण करने मे सौदेबाजी ही हो रही थी कि ऐमालीना के गर्भ ठहर गया। इस कारण वार्त्तालाप स्थगित हो गया और बेरिया ने उसे एक साधारण स्त्री समझ उसमें रुचि छोड़ दी।

ऐमालीना के प्रथम पुत्र हुआ और जब वह दो वर्ष का था तब ऐमालीना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनः पूर्ण रूप से स्वस्थ और सुन्दर हो गयी थी। कुछ लोग तो उसे पहले से भी अधिक सुन्दर हो गया समझने लगे थे। वह एक खिले फूल के समान लुभायमान हो गयी थी। एक दिन विश्वविद्यालय में दीक्षान्त-समारोह था। इन दिनों ऐमालीना जर्मन पढ़ाने का कार्य करने लगी थी। वह भी अध्यापक वर्ग में बैठी थी। कामरेड बेरिया समारोह का अध्यक्ष था और ज्यों ही वह अध्यक्षता के आसन पर बैठा तो उसका ध्यान एक अति सुन्दर स्त्री पर चला गया। वह स्त्री उसको देखी-भाली प्रतीत होती थी, परन्तु वह स्मरण नहीं कर सका कि कहाँ? पूर्ण समय वह वहाँ बैठा स्मरण करता रहा कि उसने उसे कहाँ देखा है? जब वह स्मरण नहीं कर सका तो उसने समीप बैठे वाइस-चान्सलर से पूछ लिया, "बायीं ओर कौन लोग बैठे हैं? ये विद्यार्थी प्रतीत नहीं होते।"

वाइस-चान्सलर ने बताया, "ये विश्वविद्यालय का अध्यापक वर्ग है।"

"और वह स्त्री लाल जाकेट पहने क्या पढ़ाती है?"

"यह जर्मन भाषा पढ़ाती है।"

"क्या नाम है इसका?"

"ऐमालीना। यह हमारे यहाँ एक इतिहास के प्राध्यापक की पत्नी है। प्राध्यापक हिन्दुस्तानी है और यह जन्म से जर्मन है।"

बेरिया को स्मरण हो आया। वह अनुभव करने लगा कि वह पुनः उसमें रुचि अनुभव करने लगा है।

इस दीक्षान्त-समारोह के उपरान्त उसने ऐमालीना से सम्पर्क उत्पन्न किया और फिर उससे मेल-मुलाकात आरम्भ कर दी। बेरिया के प्रलोभनों और उसके पति के छूट जाने की आशा ने ऐमालीना का बेरिया से सम्बन्ध बना दिया। और परिणाम हुआ अपशोक।

इस बच्चे के हो जाने के उपरान्त भी बेरिया ऐमालीना की आशा पूर्ण नहीं कर सका। एक दिन दोनों में खुलकर बात हो गयी। बेरिया ने कहा, "देखो, कामरेड ऐमालीना! मैंने कामरेड देव को रूस से छुट्टी दिलाने का यत्न किया है, परन्तु चीफ सेक्रेटरी नहीं मानते। इस कारण मैं विवश हूँ। तुम कुछ और माँग लो।"

"मेरी सबसे प्रिय भावना तो यही है कि मुझे और मेरे पति को यहाँ से जाने की स्वीकृति मिल जाये।"

वास्तविक बात यह थी कि बेरिया ऐमालीना के छोड़े जाने की सिफारिश करना ही नहीं चाहता था। पद्मदेव के जाने में तो कोई बाधा नहीं थी। ऐमालीना इस बात को जानती थी और समझ रही थी कि बेरिया झूठ बोल रहा है। इस कारण अपनी सर्वप्रिय वस्तु अपना सतीत्व भी अर्पित करने पर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह कार्य की सिद्धि नहीं कर सकी थी। अतः उसने अपनी चाल बदल दी। उसने कह दिया, ''एक दूसरे स्तर के प्रिय जन हैं। उनको देश से बाहर जाने की स्वीकृति दिलवा दें।''

''और उनमें तुम भी हो?''

ऐमालीना समझ रही थी कि उसके कारण ही तो उसका पति यहाँ से नहीं जाने दिया जा रहा। इस कारण उसने कह दिया ''नहीं। मैं अब रूस से बाहर नहीं जाना चाहती। मैं अपने माता-पिता के विषय में कह रही हूँ।''

बेरिया ने मुस्कराते हुए कह दिया, ''माँ-बाप से इतना लगाव तो बुर्जुआ मनोवृत्ति है।''

''मुझे इसमें कुछ भी बुर्जुआपन दिखायी नहीं देता। कारण यह कि मेरी उनमें सम्पत्ति की भावना नहीं। सन्तान की अपने पिता से वैसी भावना नहीं होती। हाँ एक पुरुष की अपनी प्रेमिका से बुर्जुआ की भावना हो सकती है। परन्तु मैं अपने प्रेमी की बुर्जुआ भावना का विरोध कर नहीं रही। मैं तो स्वेच्छा से उसके पास रहना चाह रही हूँ।''

''और तुम अपने पति को छोड़, तलाक दे, मेरे पास सदा के लिये आने को तैयार हो?''

''हाँ! मैं इस बात के लिये तैयार हूँ।''

''तो अपने पति से पूछो कि यदि तुम उसे तलाक दे दो तो वह क्या करेगा?''

''पूछूँगी। वह मान भी जायेगा। अफानासीव (अपशोक) को देख वह समझता है कि मैं उसकी निष्ठावान पत्नी नहीं रही, परन्तु मैं उससे तब पूछूँगी जब आप मेरे माता-पिता को रूस से जाने का पासपोर्ट दिलवा देंगे।''

''मैं विचार करूँगा।''

ऐमालीना की योजना यह थी कि माता-पिता के पासपोर्ट बन जाने पर वह किसी प्रकार स्वयं उनके साथ यहाँ से भाग जाये। इस योजना में मार्टोव सहायक हो गया। वह पहले बर्लिन में रूसी एजेण्ट था और वहाँ से भाग मास्को गुप्तचर विभाग में आ गया था। वैसे वह बहुत ही भला आदमी था और ऐमालीना ने जब अपनी पूर्ण स्थिति बतायी तो उसे ऐमालीना पर दया आ गयी और वह उसकी सहायता के लिये तैयार हो गया।

ऐमालीना ने एक पत्र अपनी माँ को भेजा और कैटालीना ने उस पत्र का उत्तर दिया। उस उत्तर में उसने लिखा कि ऐमालीना जाने से पूर्व अपनी पूर्ण योजना अपने पति को बता दे। उससे उसे कुछ भी छुपाकर नहीं रखना चाहिये।

ऐमालीना का विचार था कि जब वह स्वयं देश से बाहर हो जायेगी तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर मार्तोव के द्वारा वह अपने पति को सूचित कर देगी और तब पद्मदेव रूस से बाहर आ सकेगा। उसके बाहर जाने पर तो कोई प्रतिबन्ध नहीं। बेरिया के कहने पर ही उसने एक दिन पद्मदेव से तलाक के विषय पर बात की थी, परन्तु पद्मदेव ने पुनः अपना निश्चय घोषित कर दिया कि वह तलाक नहीं देगा।

इस पर बेरिया को विश्वास हो गया कि ऐमालीना उसको पूर्ण जीवन के लिये मिल गयी है। उसने चीफ सेक्रेटरी से कह जेवियर और कैटालीना को देश से बाहर जाने का पासपोर्ट दिलवा दिया। इस पासपोर्ट के विषय में बातचीत होने पर चीफ सेक्रेटरी ने पूछ लिया, " कामरेड! इन यहूदियों से आपका क्या सम्बन्ध है?"

"एक स्त्री है जिसे मैं रूस की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी मानता हूँ।"

"कौन है वह?"

"विश्वविद्यालय में एक हिन्दुस्तानी प्रोफेसर कामरेड देव की पत्नी है।"

पासपोर्ट तो मिल गया। वह गुप्तचर विभाग को भेज दिया गया और साथ ही उसको 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' से छोड़ने का आज्ञा-पत्र जारी हो गया।

मार्तोव सतर्कता से इन आज्ञाओं की प्रतीक्षा कर रहा था। वह दूसरे-तीसरे दिन ऐमालीना से भी मिलता रहता था। घटनावश ज़ेवियर और उसकी पत्नी के 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' से छूटने की आज्ञा और देश से बाहर जाने का पासपोर्ट जर्मनी से युद्ध छिड़ने के एक दिन पहले गुप्तचर विभाग में आये। मार्तोव को पता चला तो वह अपने मुख्याधिकारी से बोला, "मैं लेनिनग्राद जा रहा हूँ। इस कारण यदि ये मुझे दे दिये जायें तो वह मैं स्वयं ले जाकर उनको देना चाहूँगा।"

"क्यों, तुम्हारा क्या सम्बन्ध है इनसे?"

"मेरे वे सम्बन्धी हैं और मैंने उनके छुड़ाने में चीफ की कुछ सेवा भी की है।"

अधिकारी मान गया और वह पासपोर्ट उसे मिल गये। 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' से छूटने की स्वीकृति तो मार्तोव ने उसी दिन भेज दी। साथ ही एक पत्र भेज दिया कि वे दोनों कैद से छूटते ही अपने लड़के के पास चले जायें। उनकी लड़की उनके साथ जाने को मिल जायेगी।

मार्तोव ने कैटीलीना के पासपोर्ट का फोटोग्राफ ले, उस पर अधिकारी के हस्ताक्षर करा पासपोर्ट के फार्म पर ऐमालीना का फोटोग्राफ लगा दिया। यह सब उनके अपने विभाग में होता था। कई प्रकार के धोखा-धड़ी के कागज़ वहाँ सरकारी रूप में तैयार होते थे। इस प्रबन्ध से कर्मचारी अपने कार्य भी सिद्ध करते रहते थे। बड़े-से-बड़े अफ़सर भी इस प्रकार के निजी कार्य कराते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहते थे। कर्मचारियों के काम भी होते रहते थे। मार्टोव तो विभाग में बहुत मेल-मुलाकात रखता था। अतः सायंकाल तक सब तैयार कर वह पासपोर्ट लेकर विश्वविद्यालय क्षेत्र में जा पहुँचा। वहाँ से उसे पता चला कि देव और ऐमालीना क्रैमलिन गये हुए हैं। वह वहाँ जा पहुँचा।

पद्मदेव में क्रैमलिन की रुचि बेरिया की सिफारिश से उत्पन्न हुई थी। चीफ सेक्रेटरी इस अद्वितीय सुन्दरी का परिचय प्राप्त करना चाहता था। चीफ सेक्रेटरी ने पहले वाइस-चान्सलर से बातचीत की; फिर पद्मदेव को मिला। तत्पश्चात् उसने दोनों प्रोफेसरों और ऐमालीना से भेंट की।

घटनावश उसी समय समाचार मिला कि जर्मन सेनायें रूस की सीमा में घुस आई हैं। क्रैमलिन का वार्तालाप आगे नहीं चल सका, परन्तु मार्टोव ज़ेवियर और कैटालीना को लिख चुका था और उनको कैद से छोड़ दिए जाने की आज्ञा भेज चुका था। इस कारण वह अपनी योजना स्थगित नहीं कर सका।

मार्टोव को पद्मदेव के निकोविस्की के घर जाने पर अवसर मिल गया और वह ऐमालीना तथा दोनों बच्चों को लेकर पद्मदेव के जाने के पाँच मिनट के भीतर ही वहाँ से चल दिया। इनके जाने के आधा घंटा उपरान्त गुप्तचर विभाग के लोग पद्मदेव के घर की तलाशी लेने और वर्जित सामान वहाँ से ले जाने के लिए आ गये।

मकान खुला पड़ा था और घर में कोई प्राणी नहीं था। अतः आधे घंटे में पुलिस एक 'मीडियम वेव रेडियो' तथा उसके लिखे कागज़ लेकर चल दी।

: 5 :

अगले दिन मध्याह्न से पूर्व पद्मदेव ने क्रैमलिन में अपने पहुँचने की रिपोर्ट कर दी। आधा घंटा प्रतीक्षा करने पर चीफ सेक्रेटरी ने उसे अपने 'स्टडी रूम' में बुला दिया। पद्मदेव सामने उपस्थित हुआ तो चीफ सेक्रेटरी ने पहला प्रश्न ही पूछा, "ऐमालीना का पता चला?"

"नहीं।"

पूछने पर पद्मदेव ने वही कहानी सुना दी जो निकोविस्की ने बताई थी। कहानी सुन चीफ सेक्रेटरी ने कह दिया, "हमारा विचार है कि मार्टोव उसे ले भागा है। आशा की जाती है कि वह अब तक पकड़ लिया गया होगा।"

पद्मदेव समझता था कि ऐमालीना मार्टोव के साथ नहीं गयी। इस कारण उसने कह दिया, "मेरे विचार में उसे उस व्यक्ति ने पकड़ा है, जिसने यह कहा था कि वह रूस की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी है।"

इस पर चीफ सेक्रेटरी गम्भीर हो गया। कुछ विचार कर उसने पूछा, "कामरेड देव उसे जानते हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं। परन्तु उसका ज्ञान कामरेड चीफ सेक्रेटरी को अवश्य होगा।"

"हाँ है। हम पता करेंगे।"

"धन्यवाद।"

"देखो कामरेड देव! देश पर यह भीर का काल है और मैं नहीं जानता कि आप इस संकट के समय सोवियत संघ की सहायता करना पसन्द करेंगे अथवा नहीं? मैं जो काम आपसे लेना चाहता हूँ, वह बलपूर्वक नहीं लिया जा सकता।"

पद्मदेव ने कहा, "जर्मनी के वर्तमान युद्ध में मेरे लिए देशों की सीमाओं का विचार नहीं है। मेरे सामने मानवता और कही जाने वाली आर्यन सभ्यता में संघर्ष है। मेरा पक्ष मानवता का है और इस समय रूस इस पक्ष में धकेल दिया गया है। परिणामस्वरूप मैं आपकी सहायता करता हुआ अपने पक्ष की सहायता कर रहा समझूँगा।"

"यदि हिन्दुस्तान हमारा विरोधा भी करे?"

"वास्तविक हिन्दुस्तान जर्मनी के पक्ष में नहीं हो सकता।"

"सुना है कि सुभाष बाबू जर्मनी में हैं और जर्मनी की सहायता कर रहे हैं।"

"मुझे ज्ञात है। परन्तु मैं समझता हूँ कि वह हिन्दुस्तान के एक छोटे-से जन-समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं। हिन्दुस्तान का विशाल जन-समूह राजनीकि दृष्टि से विचार नहीं करता। राजनीति के पंडितों ने उस जन-समूह के मुख में कपड़ा ठूँसा हुआ है। इस कारण बाहर की दुनिया उसके मन की बात को सुन नहीं सकती। इस अवसर पर वह विशाल जन-समूह रूस और इंग्लैण्ड में मैत्री से प्रसन्न होगा।"

"चर्चिल की घोषणा सुनी है?"

"नहीं।"

"उसने कहा है कि इंग्लैण्ड रूस की सहायता करेगा। इंग्लैण्ड का मुख्य कार्य 'हिटलरइज़्म को परास्त करना है।"

"वह राजनीतिक दृष्टि से उसी परिणाम पर पहुँचा है जिस पर मैं मानवता की दृष्टि से पहुँचा हूँ। मैं समझता हूँ कि मुझे रूस की सेवा अपनी पूर्ण योग्यता और परिश्रम से करनी चाहिये।"

"तो कामरेड देव! क्या आप सोवियत संघ के चीफ सेक्रेटरी की निजी परामर्शदाता बनना पसन्द करेंगे?"

"यह देखना यहाँ के अधिकारियों का काम है कि पद्मदेव किस काम के योग्य है? मेरी सेवायें उपस्थित हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है। आप रहेंगे विश्वविद्यालय क्षेत्र वाले अपने मकान में ही, और आवश्यकता पड़ने पर यहाँ भी एक कमरा आपको मिल जायेगा।"

"धन्यवाद।"

"आपका कार्यालय इस साथ के कमरे में है। आप वहाँ जाकर बैठें। आवश्यकता पड़ने पर मैं आपसे उचित कार्य लूँगा।"

क्रैमलिन में काम मिल जाने पर पद्मदेव को युद्ध की गतिविधियों का ज्ञान रहने लगा। यहाँ दस-दस मिनट पर समाचार आ रहे थे कि जर्मन सेनाओं की प्रगति किस प्रकार चल रही है? इस कारण पद्मदेव अपनी जानकारी में वृद्धि होने से प्रसन्न था।

मध्याह्न भोजन के समय उसके लिये 'लंच' कमरे में ही आ गया। वह भोजन कर रहा था कि चीफ सेक्रेटरी का अंगरक्षक उसको एक लिफाफा दे गया। पद्मदेव ने लिफफा खोलकर पढ़ लिया। लिखा था, "इंग्लैण्ड का राजदूत आ रहा है। सम्भवतः कल प्रातःकाल तक पहुँच जायेगा। हम उनसे किस प्रकार बात करें और उनसे कैसा सम्बन्ध बनायें? इसका उत्तर विचार कर इंग्लैण्ड की ऐतिहासिक स्थिति के प्रकाश में लिखें। रात आठ बजे से पूर्व आपकी सम्मति मिल जानी चाहिये।"

पद्मदेव के लिये कुछ अधिक विचार करने की बात नहीं थी। इस पर भी उसने पत्र को एक ओर रख दिया और निश्चिन्त हो खाना खाता रहा। उसके कमरे में रूसी सेना के पीछे हटने और जर्मनी के आगे बढ़ने के समाचार लाये जाते थे और वह दीवार के साथ टंगे मानचित्र पर हरे और लाल पिन्न लगता जाता था। स्टालिन थोड़ी-थोड़ी देर के उपरान्त आता था और बेचैनी से मानचित्र को देख जाता था।

भोजन कर वह 'बाथ रूम' में हाथ धोकर आया तो चीफ सेक्रेटरी मानचित्र को देख रहा था। उसके आते ही चीफ सेक्रेटरी ने शोकमुद्रा बनाकर कहा, "एक बहुत बुरा समाचार है।"

पद्मदेव चिन्ता में चीफ सेक्रेटरी का मुख देखने लगा। चीफ सेक्रेटरी ने बताया, "मास्को ओड्डीसा लाइन पर मास्को से पाँच मील के अन्तर पर एक स्त्री का कटा हुआ शव मिला है। उसके बैग और कपड़ों में से चिह्न मिले हैं जिनसे सन्देह किया जाता है कि वह ऐमालीना का शव है। उसका सिर तो इस प्रकार कुचला गया है कि वह पहचानी नहीं जाती।

"मैं समझता हूँ कि तुम सैनिक जीप में हस्पताल चले जाओ और देखो कि तुम उसे पहचानते हो अथवा नहीं?"

पद्मदेव का मुख विवर्ण हो गया। उसने पूछा, "और बच्चे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वे वहाँ नहीं मिले।"

"मैं उसके शव को देखना चाहूँगा।"

"जाओ और लौट आओ। डॉक्टर को अपने बयान देकर शीघ्र चले आना। मैं इस पत्र का उत्तर सायं आठ बजे तक चाहता हूँ। अपनी मीटिंग में अपना निश्चित मत देना चाहता हूँ। मीटिंग रात के नौ बजे आरम्भ होगी।"

"आपको लिखित उत्तर सात बजे तक मिल जायेगा।"

"तो जाओ।"

पद्मदेव चीफ सेक्रेटरी के अंगरक्षक के साथ हस्पताल चला गया। मैडिकल अफसर के सामने उसे उपस्थित किया गया। चीफ सेक्रेटरी के अंगरक्षक ने डॉक्टर को बताया कि यह प्रोफेसर पद्मदेव हैं और उस शव को पहचानने आये हैं जो आज रेल के नीचे कुचला हुआ मिला है।

डॉक्टर पद्मदेव को लेकर शव-गृह में चला गया। वहाँ एक स्त्री का पूर्ण शरीर रक्त में लथपथ पड़ा था। पद्मदेव ने कपड़े देख बता दिया, "ये वे ही हैं जो मेरी पत्नी रात लापता होने से पहले पहने हुए थी।" सिर पर से रेलगाड़ी गुज़री थी और पूर्ण खोपड़ी सैकड़ों टुकड़ों में वहाँ पड़ी थी। इस कारण सूरत पहचानने का प्रश्न ही नहीं था। मद्मदेव ने कहा, "मैं मृत के नग्न शरीर को दखना चाहता हूँ। परन्तु मैं यह प्रार्थना करूँगा कि उस समय अन्य कोई सामने न हो।"

डॉक्टर ने सब को शव-गृह से बाहर निकल जाने को कहा। पद्मदेव ने उसके कपड़े उतार दिये। उसने शव को बहुत ध्यान से देखा और फिर उसे कपड़े से ढाँप दिया। तत्पश्चात् वह भी बाहर आ गया। बाहर आ उसने डॉक्टर से पूछा, "क्या इसके पास से कुछ निकला है?"

डॉक्टर उसे एक-दूसरे कमरे में ले गया। वहाँ जाकर ऐमालीना के हाथ की घड़ी, फाउण्टेन पेन, उसकी नोट-बुक जो उस बैग में से निकली थी, जो रेल की लाइन पर समीप ही पड़ा था, दिखा दी। पद्मदेव ने इन वस्तुओं को पहचाना और कह दिया, "मेरी पत्नी के हैं।"

"कामरेड देव! यह 'स्यू-साईड' (आत्म-हत्या) का मामला है। हमें बहुत शोक है। आपको यह सब-कुछ गुप्तचर विभाग को बताना होगा।"

"जब कोई आयेगा तो उसे बता दूँगा।"

पद्मदेव वहाँ से गम्भीर विचार में मग्न लौट आया। क्रैमलिन में चीफ सेक्रेटरी उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। जब वह उसके सामने उपस्थित हुआ तो चीफ सेक्रेटरी ने पूछा, "क्या देखा है देव?"

"उन सब लक्षणों से जो अभी तक उपस्थित थे, वह ऐमालीना ही सिद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई है।'

"मार्टोव लेनिनग्राद के कार्यालय मे उपस्थित मिल गया है। इस समय तक ऐमालीना के माता-पिता को 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' से छोड़ने और उनको देश से निकल जाने की आज्ञा दी जा चुकी थी और वे दोनों जहाँ तक समाचार मिला है दक्षिण की ओर चल दिये हैं। वे टर्की में से होकर जेरुसलम जाने का विचार रखते हैं। मैंने उनको पकड़ने की आज्ञा दे दी है।"

"किस कारण?"

"हमारे गुप्तचर विभाग के हेड मिस्टर बेरिया की यही आज्ञा है।"

पद्मदेव चुप रहा। वास्तव में जो कुछ वह अनुभव कर रहा था, बताना नहीं चाहता था। उसे मौन देख चीफ सेक्रेटरी ने कहा, "यह एक बहुत भयानक दुर्घटना हो गयी है, परन्तु उसने आत्महत्या की क्यों?"

"मैं इस विषय में कुछ नहीं जानता। मुझे तो अभी भी यह सब कार्यवाही उसी व्यक्ति की प्रतीत होती है जिसने उसके सौन्दर्य की प्रशंसा की थी।"

"मैंने उसे प्राईवेट भेंट के लिये बुलाया था। वह एक उच्च अधिकारी है। मैं उसके विरुद्ध कुछ भी कार्यवाही नहीं कर सकता। वह पदवी में मुझसे ऊँचा नहीं; इस पर भी मेरे जितना ही प्रभावी व्यक्ति है। एक बात मैं नहीं समझ सका कि उसका इस सुन्दर स्त्री को मरवा देने में क्या प्रयोजन हो सकता है?"

"कामरेड सेक्रेटरी! मेरा विचार यह नहीं है। मुझे कुछ ऐसा समझ आया है कि उसने ऐमालीना को अपने पास रहने के लिए इतना विवश किया होगा कि वह आत्म-हत्या करने पर विवश हो गयी होगी।"

"यह हो सकता है। फिर भी मैं उससे पता करूँगा।"

चीफ सेक्रेटरी के चले जाने पर पद्मदेव ने उस प्रश्न पर विचार करना आरम्भ कर दिया जो मध्याह्न भोजन के समय आये लिफाफे में लिखा था। पद्मदेव ने बहुत संक्षेप में लिख दिया। उसका कहना था, "युद्ध के समय समझौते युद्ध-काल के लिए ही होते हैं। ऐसे समझौते करने में कोई हानि नहीं, जिससे अपने लक्ष्य की पूर्ति में बाधा खड़ी न हो। अत: समझौता कर लेना चाहिए। इस समझौते में सोवियत रूस को पश्चिमी मोर्चे पर किसी प्रकार की की सहायता का वचन नहीं देना चाहिए, वरंच पूर्वी मोर्चे पर अपनी दुर्बल स्थिति का वर्णन कर सहायता की माँग कर देनी चाहिए। इंग्लैण्ड टैंक, बन्दूकें और कारतूस, तोपें और हथगोले भेज कर सहायता कर सकता है। इंग्लैण्ड को इस समय सबसे अधिक आवश्यकता है बौम्बर और फाइटर हवाई-जहाजों की। ये हमें नहीं माँगने चाहिए और अपने पास उनकी अधिकता का प्रदर्शन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं करना चाहिये।

'समझौता संधि के रूप में नहीं होना चाहिए। यह निश्चय होना चाहिए कि युद्ध की गतिविधि के अनुसार समय-समय पर दोनों राज्यों के प्रतिनिधियों में वार्तालाप हुआ करेगा और उनमें तत्कालीन परिस्थिति के अनुसार आगे के लिए समझौते होंगे। अपनी ओर से यह समझौता होना चाहिए कि पूर्वी युरोप पर वे अधिक-से-अधिक मोर्चों पर जर्मनी सैनिकों को युद्ध में व्यस्त रखेंगे।''

सायं सात बजे पद्‌मदेव ने अपने उत्तर को टाईप कर मुहरबन्द लिफाफे में रख चीफ सेक्रेटरी के पास भेज दिया। पन्द्रह मिनट में चीफ सेक्रेटरी ने पद्‌मदेव को अपने कमरे में बुलाया।

पद्‌मदेव वहाँ मार्टोव को खड़ा देख चकित रह गया। पद्‌मदेव को मार्टोव ने भी देखा, परन्तु उसने उसकी उपस्थिति से अपने को अनभिज्ञ ही प्रकट किया। चीफ सेक्रेटरी ने पद्‌मदेव को अपने समीप रखी कुर्सी पर बैठने की स्वीकृति दे दी। मार्टोव खड़ा ही रहा। चीफ सेक्रेटरी ने पद्‌मदेव से पूछा, ''इस व्यक्ति को पहचानते हैं?''

''जी। यह मार्टोव है।''

''मैं चाहता था कि तुम इसके कथन को सुन लो। मैंने इससे पूछा है कि जब पद्‌मदेव शवर्नीक के क्वार्टर को चला गया था तब वह ऐमालीना के पास कितनी देर तक रहा था? हाँ, मार्टोव! अब बताओ?''

''मैं उसको यह बताने गया था कि उसके माता-पिता के छूटने की स्वीकृति मिल गयी है और वह लेनिनग्राद उनके बन्दी स्थान के अधिकारी के पास भेज दी गई है। उनके देश को बाहर जाने का पासपोर्ट मैं लेकर जा रहा हूँ और उनसे मिलने पर उनको दे दूँगा। वे अपने पुत्र शरौडर के घर पर मिलेंगे।

''इस पर उसने रोते हुए यह मौखिक सन्देश दिया था, अंतिम विदा। प्रभु यहोवा उनकी सहायता करेगा। ये अपनी लड़की को भुला दें। कारण यह है कि अब चिरकाल तक इस संसार में नहीं रह सकती।''

''मुझे रात की गाड़ी पकड़नी थी। मैं जब उठकर वहाँ से आने लगा तो उसने एक बात और कही थी, ''यह छोड़े जाने की आज्ञा और देश से बाहर जाने का पासपोर्ट अपनी बेटी की ओर से उनके प्रति स्नेह की अन्तिम भेंट समझें।''

''पर तुम ऐमालीना में इतनी रुचि किसलिए ले रहे थे?''

''वे मेरे सम्बन्धी हैं। कैटालीना, ऐमालीना की माँ, मेरी मौसी लगती है। मैं ही माँ-बेटी दोनों को बर्लिन में कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य बना सका था। इसका पिता फासिस्ट था, परन्तु मेरे प्रभाव से ये दोनों कम्युनिस्ट दल में कार्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने लगी थीं। यहाँ तक कि 'रीख' के अन्तिम चुनावों में भी माँ-बेटी, बाप और भाई के विपरीत कार्य करती रही थीं।

'हमारी सूचना यह है कि ठीक चुनाव के एक दिन पहले ये दल बदलकर फासिस्टों की सहायता करने लगी थीं।''

''हार जाने वाले व्यक्ति अपनी भूलों का दोष सदा दूसरों पर लगाया करते हैं।''

''तुम यह सूचना कि ज़ेवियर और कैटालीना छोड़ दिये गए हैं, ऐमालीना को देने किसलिये गए थे?''

''मुझे यह विदित था कि ये दोनों सुविधायें ऐमालीना ने ही एक बहुत बड़े अधिकारी को प्रसन्न कर दिलवाई हैं और मैं समझा था कि उसे अपने प्रयत्न के सफल होने से प्रसन्नता होगी।''

एकाएक चीफ सेक्रेटरी ने पद्मदेव से पूछा, ''आप इससे कुछ और पूछना चाहते हैं तो पूछ सकते हैं।''

पद्मदेव ने कहा, ''कुछ नहीं।''

''आपको इसके कथन पर विश्वास है?''

''अविश्वास करने में कोई कारण नहीं समझता।''

चीफ सेक्रेटरी ने मार्टोव को कहा, ''तुम जा सकते हो। तुरन्त अपने चीफ के पास जाकर रिपोर्ट करो।''

मैं वहाँ से होकर आया हूँ। वहीं से मुझे कामरेड चीफ सेक्रेटरी के सामने उपस्थित होने के लिये भेजा गया है।''

मार्टोव गया तो चीफ सेक्रेटरी ने पद्मदेव को कहा, ''आपकी सम्मति पढ़ी है। उसके विषय में कल प्रातः बात करूँगा। अब आप अपने क्वार्टर पर जा सकते हैं। निकोविस्की ने उसकी व्यवस्था ठीक कर दी होगी।''

: 6 :

पद्मदेव विस्मय कर रहा था कि उसे रात भी वहाँ ही रह जाने की स्वीकृति क्यों नहीं दी गयी? कुछ न समझता हुआ वह क्रैमलिन से बाहर जाने लगा तो चीफ सेक्रेटरी का अंगरक्षक उसके साथ था। उसने फाटक से निकल बस पर चढ़ने से पूर्व पद्मदेव को कह दिया, ''मैं आपको यहाँ काम पा जाने पर बधाई देता हूँ।''

पद्मदेव इसका अर्थ नहीं समझा। इस पर भी उसने मुस्कराकर कह दिया, ''धन्यवाद। मुझे भी यहाँ सेवा-कार्य मिल जाने से प्रसन्नता ही हुई है।''

इतना कह वह सामने खड़ी बस की ओर चला गया। बस में वह बैठा ही था कि मार्टोव जो उस बस में इधर-उधर कहीं उपस्थित था, पद्मदेव के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समीप आ बैठा। इस पर भी उसने किसी प्रकार की बात नहीं की। रात के समय बस में सवारियाँ कम थीं। वे चाहते तो बातचीत कर सकते थे, परन्तु दोनों ही मौन थे और ऐसे बैठे थे मानो वे एक-दूसरे को नहीं जानते।

पद्मदेव भी मौन था। मार्टोव रह-रहकर उसके मुख पर देख रहा था, परन्तु कुछ कह नहीं रहा था। पद्मदेव बस से उतरा तो वह भी उतर पड़ा। पद्मदेव निकोविस्की के मकान की ओर चला तो मार्टोव ने कहा, "मैं आपसे मिलने के लिये ही इधर आया हूँ।"

"मेरा विचार है कि मेरे घर को ताला लगा होगा और चाबी वाइस-चान्सलर के पास होनी चाहिये।"

"ठीक है। मैं बाहर प्रतीक्षा करूँगा। मैं उसके सामने जाना भी नहीं चाहता।"

"तो ऐसा करिये। आप कैन्टीन में चलिये। मैं वहाँ ही आ रहा हूँ। मुझे भूख लग रही है।"

मार्टोव कैन्टीन की ओर चल पड़ा। वास्तव में वह भी उसे निकोविस्की के सामने ले जाना नहीं चाहता था।

निकोविस्की उसकी प्रतीक्षा में बैठा था। निकोविस्की को मेजर की पदवी पर नियुक्त कर उसको साइबेरिया, ब्लैडिवास्टोक में भेजा जा रहा था। रूस और जापान में यह सन्धि हुई थी कि दोनों एक-दूसरे पर आक्रमण नहीं करेंगे। अतः उस मोर्चे को सुरक्षित मान वहाँ अस्थायी रूप में भरती किये और अशिक्षित सैनिक भेजे जा रहे थे और वहाँ से शिक्षित सैनिक पश्चिमी सीमा पर जहाँ जर्मनी से घमासान युद्ध हो रहा था, बुलाये जा रहे थे।

पद्मदेव के वहाँ पहुँचने पर निकोविस्की ने बताया, "मैं तो कल की गाड़ी से 'ब्लैडिवास्टोक' जा रहा हूँ। इस कारण तुमसे मिलने की उत्कट इच्छा थी। मैंने क्रैमलिन पर टेलीफोन किया था और यह पूछा था कि आप रात कहाँ रहेंगे? वहाँ से पता चला कि आप अपने क्वार्टर में रात को ठहरेंगे। इस पर मैंने कहा कि वह पूर्ण क्वार्टर अस्त-व्यस्त पड़ा है और हमने सरकारी जाँच-पड़ताल के लिये इसे छुआ नहीं। इस पर मुझे यह आज्ञा हुई कि आज रात को और नित्य रात के समय आप अपने क्वार्टर पर रहा करेंगे। उस क्वार्टर को साफ करा, फरनीचर ठीक करवा दूँ। यह सूचना मिली है कि कल आपके क्वार्टर पर टेलीफोन लग जायेगा।"

"मुझे विस्मय इस बात का है कि जब काम वहाँ है तो रहने का स्थान यहाँ किसलिये नियत किया गया है?"

"वह मैं जानता हूँ। क्रैमलिन में रात के समय कोई बाहरी व्यक्ति रहने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं दिया जाता और तुम तो अभी रूस के नागरिक भी नहीं।''

इस पर पद्मदेव ने अपनी उस दिन की दिनचर्या सुना दी। उसने उस प्रश्नोत्तर के विषय में नहीं बताया जो उसके अपने परामर्शदाता के रूप में दिया था। ऐमालीना के विषय में पूर्ण बात जो उसने देखी थी, बता दी। ऐमालीना के आत्म-हत्या करने की बात सुन निकोविस्की ने कह दिया, ''मालूम नहीं होता कि क्यों उसने ऐसा किया?''

''मेरा विश्वास है कि वह शव ऐमालीना का नहीं था।''

''तो फिर किसका था?''

''यह मैं नहीं बता सकता। कपड़े वही थे जो वह कल लापता होने के समय पहने हुई थी। घड़ी और फाउण्टेन पैन जो मुझे दिखाया गया था, उसी के थे। परन्तु मैंने उसके नग्न शरीर को देखा था। उसके स्तन पर एक चिह्न था। वह चिह्न वहाँ नहीं था। साथ ही वह कोई बड़ी आयु की स्त्री प्रतीत होती थी।''

''तो यह किसने किया होगा? उसने स्वयं, मार्टोव ने अथवा किसी अन्य ने?''

पद्मदेव ने कहा, ''कल चीफ सेक्रेटरी ने कहा था कि किसी व्यक्ति ने कहा है कि ऐमालीना देश की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी है। मुझे सन्देह है कि ऐमालीना उसके पास है। उसने ही किसी शव को उसके वस्त्र पहनाकर उसका सिर रेल की पटरी पर रख उस पर से गाड़ी गुज़र जाने दी। मुझे चीफ सेक्रेटरी ने बताया है कि उसके सौन्दर्य की प्रशंसा करने वाला कोई बड़ा अधिकारी है है। वह यदि चीफ सेक्रेटरी से बड़ा नहीं तो भी उसके बराबर की पदवी रखने वाला व्यक्ति है।

''इस पर भी मैंने निश्चय किया है कि मैं यह नहीं कहूँगा कि वह शव ऐमालीना का नहीं था। इस दिशा में मूर्ख बने रहना ही ठीक है। हाँ, एक व्यक्ति इस समय मेरी कैन्टीन में प्रतीक्षा कर रहा है। वह मार्टोव है। उस पर चीफ सेक्रेटरी को सन्देह था। वह लेनिग्राद से पकड़ कर मास्को लाया गया है। वह मुझे कुछ बताने के लिये आया है, परन्तु वह यहाँ आपके मकान पर आकर बताना नहीं चाहता था। इस कारण उसको मैंने कैन्टीन में भेज दिया है। वहाँ भोजन कर मैं उसे अपने मकान पर ले जाऊँगा।''

''यह सब बहुत रुचिकर प्रतीत होने लगा है। मैं रात के बारह बजे तुमको मिलने जाऊँगा। प्रातः सात बजे मुझे गाड़ी पकड़नी है। जाने से पूर्व मैं ऐमालीना के विषय में सब बात जानना चाहूँगा।''

''मैं आपकी प्रतीक्षा करूँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मदेव कैन्टीन में पहुँचा तो मार्टोव को प्रतीक्षा करते देख क्षमायाचना करने लगा। उसने बताया, ''निकोविस्की मेजर बनकर पूर्व के किसी सीमा-स्थान पर जा रहा है। इस कारण उससे छुट्टी लेने में देर हो गयी है।''

''कुछ हानि नहीं हुई। भोजन कर मैं आपके घर चलूँगा।''

''दोनों चुपचाप भोजन करने लगे। भोजन के उपरान्त दोनों पद्मदेव के रहने के स्थान पर पहुँचे। आज उसका घर पुनः वैसा ही सजा था जैसा सदा हुआ करता था। पद्मदेव मार्टोव को लेकर बैठक घर में जा बैठा। वह सब द्वार बन्द कर मार्टोव से पूछने लगा, ''हाँ, अब बताइये।''

''पहले आप बताइये कि आप उस स्त्री के शव को देखने गये थे जो कि रेल के नीचे आकर कट गयी है?''

''हाँ, गया था।''

''क्या देखा है?''

''मुझे वह शव ऐमालीना का ही प्रतीत हुआ है।''

इस पर मार्टोव ने कह दिया, ''मैंने भी शव को देखा है। मैं लेनिनग्राद से दस बजे हवाई जहाज़ से चलकर चार बजे यहाँ पहुँचा था। यहाँ पहुँचकर मुझे पता चला कि मुझको पकड़ने की आज्ञा हो चुकी है। मुझ पर आरोप है कि एक प्रोफेसर पद्मदेव की पत्नी को मारकर रेल की पटरी पर लिटा कर मैंने हत्या को छुपाने का यत्न किया है।

''यह सुन मैं अपने चीफ कामरेड बेरिया के पास पहुँचा। मैंने उसको अपनी वह सब कहानी बतायी जो मैंने चीफ सेक्रेटरी के सामने आपको बतायी है। मैंने अपना सन्देह बताया कि वह शव ऐमालीना का नहीं भी हो सकता। इस पर मुझे कहा गया कि आपने उसे पहचान लिया है। आपने उसके नग्न शरीर को देखकर यही कहा है कि वह ऐमालीना का है। इस पर मैं भी शव देखने गया। मैं समझा हूँ कि वह उसका है ही नहीं। कपड़ों और घड़ी, फाउण्टेन पैन से ही यह पता चलता है कि वह ऐमालीना है।

''मैंने अपने चीफ को कह दिया है कि वह ऐमालीना का शव प्रतीत नहीं होता। मैंने उसे यह बताया है कि मुझे सन्देह है कि किसी ने उसका अपहरण किया है और ऐमालीना के अपहरण को छिपाने के लिये किसी स्त्री के शव को उसके कपड़े पहना रेल के नीचे पटरी पर सिर रखकर कुचलवा दिया है।

''इस पर हमारे चीफ पूछने लगे, 'क्या वह इतनी सुन्दर है कि उसके लिये इतना बड़ा झमेला किया जाये?'

''मेरा कहना था, 'इससे बहुत कम सुन्दर स्त्रियों के लिये राज्य तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनष्ट किये जा चुके हैं।'

"इस पर कामरेड बेरिया ने कहा, 'मैं भी कुछ ऐसा ही समझा था, परन्तु प्रोफेसर के शव पहचानने पर मैं चुप कर गया था।' वह आगे बोला, 'मुझे सन्देह है कि यह सब चीफ सेक्रेटरी ने किया है। अतः तुमको मैं इसकी गुप्त जाँच करने के लिये हेड नियुक्त करता हूँ।'

"उसने मुझसे शपथ ले ली है कि चीफ सेक्रेटरी को मैं अपना यह सन्देह बताऊँगा नहीं।"

"हो सकता है। कल जब हम उससे मिले थे तो वह ऐमालीना को सोवियत संघ की सबसे सुन्दर स्त्री कह रहा था।"

"मैं अब इस रहस्य की जाँच करने आया हूँ। जब आपने उसके नग्न शरीर को देखा था तो किसी गुप्त चिह्न को देखा था अपने?"

"हाँ। उसके दाहिने स्तन पर एक काले रंग का तिल था।"

"और वह इस शव पर था?"

"नहीं।"

"तो आपने कैसे कह यिा कि वह ऐमालीना का शव है?"

"मैं यह बात तब तक नहीं बताना चाहता था जब तक कि यह पता न चल जाये कि यह अदला-बदली किसने की है? मेरे गलत पहचानने पर वह निश्चिन्त हो जायेगा और ऐमालीना का पता लगाने में सुविधा हो जायेगी।"

मार्टोव कुछ देर तक आँखें मूँद विचार करता रहा। एकाएक उसने कहा, "और बच्चों का पता लगने से नहीं?"

"हाँ। परन्तु मेरा झूठ बोलना आपकी खोज में सहायक होगा।"

"मेरा यही सन्देह था कि यह शव ऐमालीना का नहीं था। इस बात के समर्थन के लिये मैं आपसे मिलने आया था। अब समर्थन हो जाने पर मैं इसकी खोज करूँगा। वैसे ऐमालीना के माता-पिता को भी पकड़ लेने की आज्ञा हो गयी है। यह विचार किया जा रहा है कि वे 'युक्रेन' की ओर गये हैं। उनके पकड़े जाने पर और रहस्य खुलेगा।"

"मिस्टर मार्टोव, आप यहूदी हैं। ऐमालीना का परिवार भी यहूदी है। आपने ही कहा था कि इस नाते आपकी सहानुभूति उनके साथ है। मैं एक हिन्दुस्तानी हूँ। इस पर भी क्या मैं यह आशा कर सकता हूँ कि आप मुझसे, ऐमालीना के प्रति सहानुभूति के नाते ही सही, झूठ और छल का व्यवहार नहीं करेंगे?"

मार्टोव ने हाथ मिलाने के लिये बढ़ाया और जब पद्मदेव ने अपना हाथ उसमें रख दिया तो उसने जोर से पकड हिलाते हुए कहा, "देखिये कामरेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रोफेसर! मैं एक यहूदी जाति का व्यक्ति हूँ। हमने अपने रक्त को यथाम्भव पवित्र रखने का यत्न किया है। इसका परिणाम ही है कि हमारी बुद्धि पूर्वी ढंग की है। हम पश्चिमी लोगों से सर्वथा विलक्षण हैं। उनका और पूर्वी, यदि भौगोलिक भाषा में कहूँ तो एशियाई और यूरोपीय विचारधाराओं में अन्तर यह है कि हम इकाई से चलकर संसार की असंख्य वस्तुओं, बातों और स्थितियों में से होते हुए पुन: एक इकाई परमात्मा की ओर अग्रसर हो रहे हैं और यूरोपीय संस्कृति के लोग आदि और अन्त की इकाई को तो स्वीकार हीं नहीं करते और अब चिन्तन की प्रारम्भिक इकाई को भी नि:शेष करने का यत्न कर रहे हैं। ये संसार असंख्य वस्तुओं, बातों और स्थितियों पर ही सब-कुछ निछावर कर रहे हैं।

"यूरोपीय संस्कृति में भूमि, परिश्रम और स्त्री मुख्य वस्तुएँ हैं। इसके अनुसार ये तीनों एक ही हैं। कारण यह कि यह न तो परमात्मा का अस्तित्व मानते हैं जो इन तीनों में कारण है, और न ही किसी जीव की सत्ता को मानते हैं जो मनुष्य के कर्मों का उत्तरदायी है। अत: परिणामस्वरूप घटनावश पैदा हुए मनुष्यों में जो चतुर शठ हैं वे एकत्रित हो पूर्ण भोले-भाले संसार को मूर्ख बना उनके परिश्रम का लाभ उठा रहे हैं। ये चतुर शठ अपनी श्रेणी के निर्वाचित शठों के लिये प्रारम्भिक 'सोवियत' बनाये हुए हैं। उसके सदस्य बहुत ध्यान से चुने जाते हैं और वे पूर्ण देश की सम्पत्ति और परिश्रम का भोग कर रहे हैं। इनके भोग से जो कुछ बचता है, उसका प्रयोग वे अपनी स्थिति को सुरक्षित रखने के लिये ही करते हैं।"

पद्मदेव अपने विचार तो किसी भी उत्तेजना अथवा भावुकता के अधीन मुखरित करना नहीं चाहता था। मार्टोव ने पुन: कहा, "मैंने सुना है हिन्दू सत्य को परम धर्म मानते हैं। अर्थात् वे वचन भंग करना महापाप समझते हैं। अत: आज हमने मित्रता का वचन दिया है। आप जो कुछ यहाँ हुआ वह किसी से नहीं कहेंगे। यदि मेरा रहस्य, रहस्य बना रहा तो मैं आपको भी बहुत लाभ पहुँचा सकता हूँ।"

"मुझे ऐमालीना ने बताया था कि वह चाहे कितनी भी पतित हो जाये, आप उसे सदा अपनी पत्नी ही मानेंगे। अत: मैं आशा करता हूँ कि यदि वह आपको पुन: मिल गयी तो आप उसे पत्नी बनने का अवसर देंगे।"

"यह बात मैंने उसे अपने विश्वास की बतायी थी। मैं विवाह को एक स्थायी सम्बन्ध मानता हूँ। वह किसी भी अवस्था में टूट नहीं सकता। यह सम्भव है कि यौन-सम्बन्ध न बन सके। यह विवाह का एकमात्र अंग नहीं है। मैं विवाह में अन्य कई कर्म मानता हूँ, वे बिना यौन-सम्बन्ध के भी चल सकते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं।''

''ठीक है। अब मुझे चलना चाहिये। मैं लेनिनग्राद से यहाँ लाये जाने के उपरान्त अभी तक अपने घर भी नहीं गया और वहाँ अपनी पत्नी तथा बच्चों से मिलना चाहता हूँ।''

: 7 :

मार्टोव गया तो पद्मदेव निकोविस्की की प्रतीक्षा करने लगा। रात के ठीक बारह बजे उसने क्वार्टर के बाहर किसी के आने की आहट सुनी। यह निकोविस्की ही था। वह अभी विचार ही कर रहा था कि किस स्थान पर खटखटाये कि कम-से-कम शब्द के साथ पद्मदेव जाग सके, पद्मदेव ने लपक कर द्वार खोल दिया।

जब पद्मदेव ने द्वार खोला तो निकोविस्की हैरान रह गय। उसने भीतर आते हुए बहुत ही धीरे-से पूछ लिया, ''तो द्वार के समीप ही खड़े थे?''

''हाँ, मन से।''

द्वार बन्द कर दोनों भीतर के कमरे में जा बैठे।

''हाँ, तो वह गुप्तचर विभाग का व्यक्ति क्या कह गया है?'' निकोविस्की ने मतलब की बात कर दी।

इस पर पद्मदेव ने पूर्ण वार्तालाप जैसा हुआ था वैसा ही वर्णन कर दिया।

''और तुम क्या समझे हो?'' निकोविस्की का अगला प्रश्न था।

''मुझे अभी तक मार्टोव की ईमानदारी में सन्देह नहीं हुआ। एक बात स्पष्ट है कि वह अति चतुर जासूस है। मुझे उससे पूर्ण रूप से सावधान रहना चाहिये।

''एक बात मैं और समझा हूँ। उसके विभाग का चीफ, कामरेड बेरिया देश के चीफ सेक्रेटरी से भी अधिक धूर्त है। जब चीफ सेक्रेटरी से मैंने कहा कि मुझे उस व्यक्ति पर सन्देह है जो ऐमालीना को रूस देश की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी कहता है। तो उसने उत्तर में कहा था, 'हो सकता है। मैं पता करूँगा।' इसके विपरीत जब मार्टोव ने बेरिया को बताया कि यह शव ऐमालीना का नहीं तब वह पूछने लगा तो इस प्रकार उसको छिपाने का उद्देश्य क्या हो सकता है और कौन यह कर सकता है?'' इसके साथ ही उसने कह दिया, 'यह अवश्य चीफ सेक्रेटरी हो सकंता है।'''

निकोविस्की बहुत देर तक गम्भीर विचार में निमग्न रहा और अन्त में उसने कहा, ''मार्टोव को भी यह पता चल गया है कि वह शव ऐमालीना का नहीं है। तुमको तो विश्वास है। दोनों की बात मिल जाने से मुझे अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूझ-बूझ पर गर्व हुआ है। मैं भी यही समझा था। एक बात मैं और बताता हूँ। इसको स्मरण रखना। ऐमालीना के लापता होने में मार्टोव का हाथ अवश्य है। उसने यह कैसे किया, क्यों किया और किसके लिये किया? यह रहस्य भविष्य के गर्भ में है।

"अब मैं कुछ अधिक देर तक यहाँ नहीं ठहर सकता। मैं प्रातः छः बजे अपने क्वार्टर से चल पड़ूँगा। सैनिक जीप मुझे लेने आयेगी। मैं तुमसे अभी से छुट्टी ले रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि एक वर्ष के भीतर ही मैं अमेरिका में बताये हुए पते पर चला जाऊँगा। यदि इस वर्तमान स्थान पर पहुँच कर भी तुम यहाँ से निकलने का यत्न न करो तो मूर्खता करोगे। लो, मैं चला।"

उसने पद्मदेव से हाथ मिलाया और चल पड़ा।

ऐमालीना के विषय में अगले दिन चीफ सेक्रेटरी से पुनः बात हुई। चीफ सेक्रेटरी ने पद्मदेव को बताया, "अंग्रेज दूत से बातचीत आज सायं चार बजे होगी। उसके बारह बजे तक यहाँ पहुँचने की आशा की जा रही है। रात 'वार कौन्सिल' में तुम्हारी बात मेंने उपस्थित की थी और वह शत-प्रतिशत स्वीकार कर ली गयी है। साथ ही दो सैनिक-अधिकारी उन शस्त्रास्त्रों की सूची बनाने में लगा दिये गए हैं जो इंग्लैंड के राजदूत से माँगे जाने चाहियें।"

पद्मदेव मुस्कराता रहा। एकाएक स्टालिन ने पूछा, "रात मार्टोव तुम्हारे घर क्या कहने गया था?"

पद्म समझ गया कि मार्टोव पर भी कोई गुप्तचर लगा हुआ है। इस कारण वह सावधान हो बताने लगा, "वह बाहर बस में मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। मार्ग में उसने बताया कि वह ऐमालीना की घटना पर सन्देह करता है और मुझसे मेरे शव-निरीक्षण के परिणाम पर कुछ पूछना चाहता है। मैं उसे घर ले गया था। वहाँ आधा घंटा-भर बातचीत हुई। उसका विचार था कि वह शव ऐमालीना का नहीं है। इस पर मैंने उसे अपनी पत्नी के नग्न अंग पर एक चिह्न बताया। वह चिह्न इस मृत शव पर था। अतः मैंने उसे अपना विश्वास बताया, परन्तु वह इस पर भी सन्देह करता था।"

"उसकी इस लड़की से क्यों इतनी रुचि है।"

"वह कहता है कि ऐमालीना का पिता जेवियर उसका मौसा है। अतः ऐमालीना उसकी बहन हुई।"

"कल मेरी उस व्यक्ति से बातचीत हुई है जिसने उसे सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी कहा था। उसका ऐमालीना के मारे जाने पर बहुत शोक हुआ है। विशेष रूप में जब तुमने यह कहा था कि सत्य ही वह शव उसका है; परन्तु वह मार्टोव को गुप्तचर विभाग का एक अति चतुर व्यक्ति मानता है। उससे आपकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूझ-बूझ पर सन्देह हो गया है। अतः उसी ने मार्टोव को आपसे बातचीत करने के लिए कहा था।''

''मैंने रात उससे पूछा था कि उसके उस शव को ऐमालीना का न मानने में क्या कारण है? उसने एक बात बतायी थी जिससे मेरा विश्वास भी डाँवाडोल हो रहा है। वह कहता था कि उसकी जाकेट शव पर फिट नहीं थी। वह ढीली थी। वह जानता है कि ऐमालीना की जाकेट उसे फिट थी। एक बात का सन्देह है कि सिर कट जाने से भारी रक्त-स्राव हो जाने के कारण शरीर सिकुड़ गया हो। मैंने यह बात बतायी तो वह चुप कर गया।''

''मैंने गुप्तचर विभाग को लिखा है कि मार्टोव को इस काण्ड की पूरी जाँच करने के लिये लगा दिया जाये।''

''यह ठीक ही है। मैं बीच-बीच में उससे मिलते रहना चाहता हूँ। मेरी इस विषय में रुचि स्वाभाविक ही है।''

चीफ सेक्रेटरी ने बात बदल दी। उसने कहा, ''मोर्चे से प्रातः के समाचार के अनुसार हमारी सेना में अभी भी भगदड़ मची हुई है। हम सीमा से एक सौ किलोमीटर पीछे हट चुके हैं।''

''वहाँ और अधिक सहायता भेजनी चाहिये। आगे बढ़ रही जर्मन सेना को घेरने का प्रबन्ध करना चाहिये।

''इस समय तीन स्थान पर सेनायें बढ़ रही हैं।'' पद्मदेव उठकर दीवार के साथ लगे मानचित्र पर लाल पिन्नों को देखने लगा। एक सेना बढ़ रही थी 'युक्रेन' में, दूसरी मास्को की ओर और तीसरी सेना लेनिनग्राद पर।

''मास्को और लेनिनग्राद की रक्षा करनी चाहिए। यहाँ असैनिकों को नगर खाली करने के लिये कह देना चाहिये। जब तक मास्को बचा रहेगा तब तक हिटलर की सफलता स्थायी नहीं हो सकती।''

''पर नेपोलियन के समय तो मास्को के लिये जाने के उपरान्त भी वह असफल किया जा सका था।''

''परन्तु कामरेड चीफ सेक्रेटरी यह भी जानते होंगे कि नेपोलियन अपनी सेना को अन्न-अनाज की कमी के कारण मास्को से वापस जाने पर विवश हो गया था। वैसे वह यहाँ से सैनिक कार्यवाही से नहीं निकाला जा सका था। आज हवाई जहाजों के कारण रसद-पानी की कमी नहीं रहेगी। साथ ही नेपोलियन स्वयं सेना के साथ मोर्चे पर था। अब हिटलर नहीं है और वह हवाई जहाजों से सैनिक मास्को भेज सकता है।''

चीफ सेक्रेटरी चुप कर रहा और समाचारों का नया 'डिस्पैच' आने पर उनको अध्ययन करते अपने कमरे में चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मदेव चीफ सेक्रेटरी की विशेष रुचि ऐमालीना में देख बेरिया के सन्देह की पुष्टि पाता था। सायंकाल उसे यह सूचना मिली कि उसको अपने सास-श्वसुर को पहचानने के लिये गुप्तचर विभाग में जाना चाहिये। लगभग पचास व्यक्ति पकड़कर लाये गए थे। सब लगभग उसी वयस के थे, जो जेवियर और कैटालीना की थी। वह चीफ सेक्रेटरी की आज्ञा से सैनिक जीप पर चढ़कर गुप्तचर विभाग में जा पहुँचा। बेरिया वहाँ उपस्थित था। पद्मदेव वहाँ पहुँचा तो उसे पकड़े हुए लोगों के सामने ले जाया गया। मार्टोव वहाँ पहले ही उपस्थित था, परन्तु उसने पद्मदेव की ओर ध्यान नहीं किया।

पद्मदेव ने सबको देखा और उनमें से किसी भी व्यक्ति को वह जेवियर और कैटालीना नहीं कह सका। मार्टोव ने भी यही बात अधिकारियों को बतायी थी। पद्मदेव को उन लोगों के निरीक्षण के उपरान्त क्रैमलिन भेज दिया गया। रात निवास-स्थान को जाने से पूर्व चीफ सेक्रेटरी ने पद्मदेव को कहा, ''कल से मास्को खाली होना आरम्भ हो जायेगा। तीस दिन में पूर्ण नागरिक जनता को चले जाने के लिये कह दिया गया है। यहाँ केवल वे सैनिक रहेंगे जिनकी नियुक्ति यहाँ पर है। मैं यहीं रहूँगा और आप भी रहेंगे। आपके क्वार्टर में टेलीफोन लग गया है। वह आपके 'बैड रूम' में लगवाया गया है जिससे रात के समय मैं आपसे सम्पर्क रख सकूँ।''

पद्मदेव चाहता था कि इंग्लैंड के राजदूत के साथ हुई वार्तालाप के विषय में उसे बताया जाये, परन्तु उसे कुछ नहीं बताया गया। रात वह अपने क्वार्टर में पहुँचा तो मार्टोव भी वहाँ आ पहुँचा। पद्मदेव सोने की तैयारी कर रहा था। जब मार्टोव ने कहा, ''मैं आपसे आज के निरीक्षण के विषय में वार्तालाप करने आया हूँ।''

पद्मदेव ने उसे भीतर बैठक-घर में ले जाकर बैठाया तो उसने कहा, ''मेरे और आपके बयान पर विश्वास नहीं किया गया और उन सब पकड़े हुए लोगों को साइबेरिया में किसी 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' में भेज दिया गया है।''

पद्मदेव ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछा, ''किस अपराध में?''

''अपराध का पता होता तो वे 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' में भेजने के स्थान फाँसी पर लटका दिये जाते। क्योंकि अपराध का ज्ञान नहीं हुआ और उन सबको निरापराध होने का विश्वास नहीं। इस कारण सब-के-सब वहाँ भेजे गये हैं जहाँ अज्ञात अपराध वाले भेजे जाते हैं।''

''यह तो न्याय का नियम नहीं हो सकता।''

''हाँ, दूसरे देशों में। यहाँ तो ऐसा ही होता है। सन्देह पर 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' में और अपराध सिद्ध होने पर फाँसी के तख्ते पर। जेलखाने यहाँ प्रायः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिक्त रहते हैं। उनको विदेशियों को दिखाने के लिये साफ-सुथरा रखा जाता है।''

पद्‌मदेव मार्टोव का मुख देखता रह गया। मार्टोव ने पद्‌मदेव को विस्मय करते देख कह दिया, ''यह सिद्धान्त है कि राज्य चलना चाहिये। किसी भी उपाय से चले वह ठीक ही है।''

पद्‌मदेव ने कुछ उत्तर नहीं दिया। मार्टोव ने कहा, ''मैं ऐमालीना की टोह पा गया हूँ। आशा करता हूँ कि कुछ ही दिनों में उसका ठीक पता आपको बता सकूँगा।''

''और मिस्टर बेरिया को नहीं?''

''उसे भी बताना होगा। आप यह बताइये कि आपको मास्को में ही रहने की आज्ञा हुई है अथवा कहीं बाहर जाने की?''

''अभी तो यही आज्ञा है कि मुझे मास्को में ही रहना है। आज मेरे क्वार्टर में भी टेलीफोन लग गया है।''

''कल यहाँ होस्टल और प्रोफेसरों के क्वार्टरों में सैनिक आ टिकेंगे।''

इसमें कुछ कहने को नहीं था। इस कारण पद्‌मदेव अशान्त मन से सामने बैठे गुप्तचर का मुख देखता रह गया। मार्टोव एकाएक उठा और बोला, ''यहाँ के जीवन का एक नियम बता दूँ तो आपको सुविधा रहेगी। जिस काम पर आप नियुक्त हैं, उस काम के अतिरिक्त यदि आप कुछ बात न करें तो सर्वोत्तम है। उस काम में भी आपको अपने सैद्धान्तिक विचार नहीं बताने चाहिये। और हाँ, यदि कभी कोई बात करनी ही हो तो स्त्रियों के सौन्दर्य पर ही बात करेंगे तो आप सुरक्षित रहेंगे।

''लो अब मैं चला। मैं अब ऐमालीना का ठीक पता जानने पर ही आऊँगा।''

: 8 :

अब यह बात विख्यात हो चुकी थी कि जर्मन तोपखाने ने बाईस जून को प्रात:काल ही रूसी मोर्चाबन्दियों पर गोलाबारी आरम्भ कर दी थी। बाईस जून को मध्याह्न के समय चिकोव ने विश्वविद्यालय भवन में व्याख्यान दिया था और पद्‌मदेव ने यह भविष्यवाणी की थी कि जर्मनी-रूस की सन्धि टूटेगी। इस पर चिकोव को विस्मय हुआ था। कारण यह कि जर्मन से युद्ध आरम्भ का समाचार रूस में प्रसारित नहीं किया गया था। रूस के समाचार-पत्र और रेडियो सर्वथा मौन थे। समाचार-पत्र तो इक्कीस जून को मालाटोव के जर्मन राजदूत से वार्तालाप पर टिप्पणियाँ लिखने तक ही सीमित रह गये थे।

अतः जब पद्‌मदेव के भाषण का 'टेप रिकार्ड' गुप्तचर विभाग में सुना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Central Library Gurukula Kangri University Haridwar 167513

गया तो यह सन्देह किया गया कि इसके पास कोई बहुत बढ़िया और शक्तिशाली रेडियो सैट है जिससे उसे इंग्लैण्ड इत्यादि से समाचार मिलते रहते हैं। 'टेप रिकार्ड' किया भाषण चीफ सेक्रेटरी ने टेलीफोन पर सुना तो कह दिया कि इसकी तलाशी ले ली जाये। वह और उसकी पत्नी मुझे मिलने आ रहे हैं। मैं उनसे बात करूँगा। साथ ही इस भाषण में यदि 'पॉलिटी-ब्यूरो' कोई बात आपत्तिजनक माने तो उस पर उचित कार्यवाही की जाये।

जब चीफ सेक्रेटरी ऐमालीना के सौन्दर्य पर विवेचना कर रहा था और निकोविस्की तथा पद्मदेव की सम्मति सुन रहा था तो उसे 'वार कौन्सिल' में बुलाया गया। घंटी बजी और वह उनको कह कि 'मैं अभी आता हूँ,' चला गया।

चीफ सेक्रेटरी को इस कारण बुलाया गया था कि 'वार कौन्सिल' की सम्मति में युद्ध की बात अधिक काल तक छिपाकर नहीं रखी जा सकती थी। जर्मन सेनाओं ने चार घंटे की गोलाबारी के उपरान्त सीमा में प्रवेश किया और वे तब से निरन्तर रूसी सेनाओं को पीछे धकेलती चली जा रही थीं। उस समय की स्थिति यह थी कि दक्षिण के और केन्द्रीय मोर्चे पर जर्मन सेनायें बीस किलोमीटर भीतर आ चुकी थीं।

चीफ सेक्रेटरी और अन्य मुख्याधिकारी वहाँ बैठे समाचार को प्रसारित करने से पहले सेना और गुप्तचर विभाग को सतर्क करना चाहते थे। इस कारण यह निश्चय किया गया कि सेना को गति दी जाये और रात के बारह बजे तक सब सुरक्षा-प्रबन्ध कर पीछे समाचार प्रसारित कर दिया जाये।

मार्टोव अपने कार्यालय में ऐमालीना के लिये झूठा पार-पत्र बनवा रहा था, जब वहाँ समाचार आया कि जर्मन और रूस में युद्धारम्भ हो गया है। मार्टोव का कार्य सैनिक-संगठन के साथ नहीं था। अत: उसे अपने कार्य में लगे रहने दिया गया। वह कारखानों में मजदूरों के विचारों की देख-रेख पर नियुक्त था। उसका मुख्य कार्य क्षेत्र था लेनिनग्राद और उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र। मास्को तो वह सरकारी काम से ही आता-जाता रहता था।

उस दिन उसी ने ऐमालीना को यह समाचार दिया था कि युद्ध आरम्भ हो गया है। उस समय तक यह घोषणा नहीं की गयी थी कि संधि भंग कब हुई और आक्रमण कब आरम्भ हुआ?

आज युद्ध के तीसरे दिन रेडियो पर सरकारी प्रवक्ता ने यह बताया कि किस प्रकार जर्मनी वाले रूसी सरकार को धोखे में रखकर आक्रमण की तैयारी करते रहे हैं? सरकारी प्रवक्ता का यह भी कहना था—"जब भी हमारा बर्लिन स्थित राजदूत इन सूचनाओं के विषय में पूछता, जो उसके ज्ञान में आती थीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जिनसे यह ज्ञात होता था कि जर्मनी रूस पर आक्रमण करने वाला है तो हिटलर से लेकर छोटे-से-छोटा कमर्मचारी यही कहते रहे थे कि इस प्रकार के झूठे समाचार प्रसारित करने वाले अंग्रेज और अमेरिकन हैं। वे युद्ध प्रोत्साहन-कर्ता (War mongers) हैं। उनकी इच्छा है कि रूस और जर्मनी परस्पर भिड़ जाएँ। एकाएक इक्कीस जून की सायंकाल जर्मन अधिकारियों ने हमें यह सूचना दी कि उनको विश्वास हो गया है कि रूस जर्मनी पर आक्रमण करने वाला है, इस कारण वे हमें यह बता देना चाहते हैं कि वे हमारे आक्रमण का प्रत्येक प्रकार से विरोध करेंगे। इस पर भी हम यह समझे थे कि जब हम आक्रमण करेंगे ही नहीं तो वे विरोध किस बात का करेंगे? अत: हमने अभी भी जर्मनी के आशय को नहीं समझा और मौन रहे।

"वाईस जून को प्रात: तीन बजे पूर्ण पन्द्रह सौ मील लम्बी सीमा पर 'आरकटिक सागर' के पैटसामों बन्दरगाह से लेकर कृष्ण सागर के तट तक गोलावारी आरम्भ कर दी गयी और सात बजे उनके टैंक रूस की सीमा में घुस आये।

"यद्यपि पिछले दो दिन में जर्मन सेनायें तीन स्थानों पर भीतर घुस आयी हैं, तथापि अन्य पूर्ण मोर्चे पर हमारी बहादुर सेनाओं ने उनका डटकर विरोध किया है। जर्मन सेना को हमारे शूर सैनिकों ने भारी हानि पहुँचायी है। यहाँ तक हमारी सूचना है कि जर्मन के एक सौ से ऊपर डिवीजनों में दस से अधिक डिवीज़नों का सफाया हो चुका है।

"हम अपनी नवीन सभ्यता और धन-सम्पद् की रक्षा के लिये पूर्ण रूप से कटिबद्ध हैं। जर्मनी को भी वैसी मुहँ की खानी पड़ेगी जैसी नेपोलियन को पिछली शताब्दी में खानी पड़ी थी।"

यह रेडियो प्रसारण पद्मदेव ने भी सुना था। वह क्रैमलिन में अपने कमरे में बैठा था। उसी समय चीफ सेक्रेटरी भी उसके पास आकर खड़ा हो गया। जब प्रसारण समाप्त हुआ तो चीफ सेक्रेटरी ने पूछ लिया, "कामरेड देव, क्या समझे हैं?"

"यही कि हिटलर अपनी विजय के शिखर पर पहुँच अपने भाग्य का धन्यवाद करने के स्थान अपनी चेष्टा की महिमा मान मदान्ध हाता जा रहा है।"

"तो कामरेड यह समझते हैं कि हिटलर मदान्ध हो गया है?"

"कामरेड चीफ सेक्रेटरी! मैंने यह नहीं कहा। इस समय तक उसने कुछ अधिक मदान्धता की बात नहीं की, परन्तु यह सम्भव प्रतीत होता है कि वह इस दिशा में आगे बढ़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मछली के सामने काँटे से लटक रहा माँस का टुकड़ा है। यह अधिक सम्भव प्रतीत होता है कि वह माँस के टुकड़े पर लपक कर कांटे से लटकी रह जाये। यद्यपि इससे बचने का भी मार्ग है, परन्तु विजय की मस्ती में वह भूल भी सकता है कि उस मांस के नीचे काँटा छिपा है।"

"तनिक स्पष्ट भाषा में समझाइये।"

"मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि तीन स्थानों को लक्ष्य रखकर जर्मन सेनायें बढ़ रही हैं। बाल्टिक सागर के राज्यों से सेनायें लेनिनग्राद की ओर बढ़ रही हैं। दूसरे, मास्को की ओर और तीसरे 'युक्रेन' में से कृष्ण सागर तट की ओर। युक्रेन और कृष्णा सागर को पार कर मांस का टुकड़ा वाकू के तेल-कूप हैं। मास्को में तो है केवल जन-रिक्त राजधानी, जिसमें कुछ भी मिलने वाला प्रतीत नहीं होता। लेनिनग्राद में हमारे उद्योग-धन्धे हैं, परन्तु जर्मनी के वहाँ पहुँचने से पूर्व अधिकांश कारखाने साइबेरिया में पहुँच जायेंगे और वहाँ भी कुछ मिलने वाला नहीं। उधर जो कुछ वह बाल्टिक राज्यों से पा चुका है उससे अधिक कुछ मिलने को नहीं है।

"युक्रेन और कृष्ण सागर पर वाकू का आकर्षण है, परन्तु वहाँ एक काँटा भी है और देखना यह है कि वह उस काँटे में वाकू के लोभ में फँसता है अथवा नहीं।"

"आप क्या समझते हैं कि क्या करेगा वह?"

"युरोप के प्राय: राजसी शक्ति-सम्पन्न देश मध्य सागर, कृष्ण सागर और अब तकनीकी उन्नति हो जाने से वाकू तथा ईरान के तेलकूपों पर लालचायी आँखें रखते हैं। यह इतिहास है और यदि इतिहास का कुछ भी मानव-मनोविकारों से सम्बन्ध है तो हिटलर भी यही भूल करेगा और वहाँ काँटे में फँस जायेगा।"

"परन्तु वहाँ काँटा है?"

"काँटा तो है मास्को में। यदि वह युक्रेन में आगे बढ़ेगा तो वह मास्को पर दबाव नहीं डाल सकेगा और यहाँ बैठे हुए हम रूस के राज्य के पूर्ण साधनों को युद्ध में ला सकेंगे। मास्को की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यह राजधानी बनकर पूर्ण रूस राज्य पर शासन कर सकता है।"

"हमें अब क्या करना चाहिये?"

"यह बताना सेना का काम है। इस पर भी सुझाव मात्र ही मैं दे सकता हूँ। मास्को हमें सैनिक गढ़ बना लेना चाहिये और इसकी रक्षा का पूर्ण प्रबन्ध करना चाहिये। यह भी प्रबन्ध करना चाहिये कि यह घिर न सके। लेनिनग्राद में हिटलर को बढ़ने से कुछ प्राप्त नहीं होगा। अतः वह उधर बढ़ेगा भी नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे युक्रेन में बढ़ने देना चाहिये, परन्तु धीरे-धीरे। और जर्मन सेनाओं को दूर-से-दूर तक बिना रुकावट, कृष्ण सागर के पूर्वी तट की ओर बढ़ आने देना चाहिये। यह मोर्चा जितना बर्लिन से दूर होगा उतना ही हिटलर की पराजय के साधन जुटते जायेंगे; परन्तु इस मोर्चे के दूर होने के साथ ही केन्द्रीय मोर्चे पर अर्थात् मास्को की ओर उसे बढ़ने नहीं देना चाहिये।''

''इसी आशय का एक वक्तव्य तैयार कर दो।''

पद्मदेव ने यह तैयार कर दिया और 'लंच' के समय चीफ सेक्रेटरी के सम्मुख उपस्थित कर दिया। अब कार्यालय मे ऐमालीना की बात नहीं होती थी। युद्ध की भयंकरता बढ़ती जा रही थी। जर्मन सेनायें धड़ाधड़ बढ़ती चली आ रही थीं। साथ ही जर्मन सेनाओं का रूसी जनता पर अत्याचार असीम होता जाता था।

इक्कीस दिन से युद्ध के परिणामस्वरूप केन्द्रीय सेना जो 'मार्शल फौन बौक' के अधीन थी, वियालिस्टौक (Bialystok) पर पहुँच गयी। वहाँ से मास्को दो सौ मील के अन्तर पर पूर्व की ओर रह गया था। उत्तर में फील्ड मार्शन फौन लीह (Leeh) की सेना बाल्टिक राज्यों में बढ़ती हुई लेनिनग्राद को जा रही थी। दक्षिण में 'फील्ड मार्शल रूण्डैस्टेड' (Rundsted) की सेना नीपर और कीव की ओर बढ़ रही थी। एक सहस्र मील की लम्बाई में जर्मन सेनायें बढ़ रही थीं।

हिटलर के सामने समस्या यह थी कि लेनिनग्राद, मास्को और कीव इतनी दूर-दूर हैं कि तीनों नगरों के लोगों के खिलाने-पिलाने का बोझा जर्मनी अपने सिर पर नहीं ले सकता था। अत: उसने यह आज्ञा दे दी थी कि लेनिनग्राद और मास्को को तो मानचित्र में रहने ही नहीं देना चाहिये। वहाँ के नगर नहीं रहेंगे। रूस की पराजय के उपरान्त इन दो नगरों का प्रश्न ही नहीं रह जाता। हाँ, कीव के विषय में वह भिन्न विचार रखता था। उसका स्वप्न था कि जर्मन-साम्राज्य के पूर्वी भाग की राजधानी कीव हो। इस भाग में पूर्ण युरोपियन रूस सम्मिलित होगा, सब बल्कान राज्य, टर्की और यूनान, पैलेस्टाईन और मैसापटोमिया। एशियाई रूस के विषय में उसके मस्तिष्क में बात स्पष्ट नहीं थी। एक धुँधला-सा चित्र उसके मस्तिष्क में था। वह सर्दी के कोहरे में दूर प्रशान्त महासागर के किनारे अपने स्वस्तिक के ध्वज को फहराते स्पष्ट रूप में ही देख रहा था।

हिटलर की सेना के अधिकारी हिटलर की इस योजना में सार नहीं पाते थे। वे इसको कार्य में लाने योग्य भी नहीं मानते थे। वे युक्रेन में बहुत आगे बढ़ने से पूर्व मास्को को ले लेना चाहते थे। उनका विचार था कि पूर्ण बल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मास्को-विजय में लगा देना चाहिये। एक बार मास्को पर अधिकार हुआ तो बस रूस समाप्त हो जायेगा। उनका तो यह भी कहना था कि यदि रूसी सरकार भागकर युराल पहाड़ों में जा पहुँची तो इसकी वहाँ स्वयं ही हत्या को जायेगी।

पद्मदेव की युक्ति रूसी अधिकारियों को समझ आ गयी थी और उन्होंने अपनी सेना की सबसे प्रबल टुकड़ी मास्को की रक्षा पर लगा दी थी। स्मौलैन्स्क के पूर्व की ओर रूसी सेना ने खाईयाँ खोद जर्मन सेना का मार्ग रोक दिया था। हिटलर अपनी हार जीत की बाज़ी इस स्थान पर लगाने को तैयार नहीं था। जर्मनी सैनिक उच्चाधिकारी समझते थे कि इस स्थान पर पूर्ण विजय हो जायेगी और वे इस रूसी मोर्चे को तोड़ने की सम्मति देने लगे।

योजना हिटलर की चली। युक्रेन में जर्मन सेनाओं को सहायता बढ़ा दी गयी और 19 सितम्बर को कीव जीत लिया गया। इस मोर्चे पर पौने सात लाख रूसी सैनिक बन्दी बनाये गए। जर्मन सेनायें आगे बढ़ने लगीं।

इस विजय से सन्तोष अनुभव कर हिटलर ने उत्तरी और केन्द्रीय मोर्चों को भी आगे बढ़ने का आदेश दे दिया, परन्तु न तो लेनिनग्राद और न ही मास्को शरद्-ऋतु के आगमन से पूर्व लिया जा सका।

केन्द्र में रूसी मोर्चे टूट तो गये, परन्तु इनके टूटने में देर लग गयी। मास्को से बीस मील तक पहुँचते-पहुँचते वर्षा आरम्भ हो गयी और भारी सैनिक-सामान, तोपें, टैंक और मोटर गाड़ियाँ कीचड़ में फँस गयीं और प्रगति रुक गयी।

दक्षिण में कीव के उपरान्त 'रैस्टोव' (Rastov) तक जर्मन सेनायें बढ़ीं, परन्तु यहाँ पहुँचते ही वर्षा और सर्दी आरम्भ हो गयी और शीघ्र ही रूसी जवाबी आक्रमण आरम्भ हुआ। जर्मनी की प्रथम पराजय 'रैस्टोव' पर हुई। इसे खाली करना पड़ा। जर्मनी को अपना पूर्ण सैनिक-सामान वहाँ छोड़ना पड़ा। इस पर भी हिटलर की आज्ञा थी कि जर्मन सेनायें वहीं डटी रहें, जहाँ डटी हैं।

खाइयाँ खोदी गयीं और जर्मन सेना रूसी जवाबी आक्रमणों से परेशान उनमें सिर छिपाती रही।

कीव विजय हुआ, परन्तु पद्मदेव की सम्मति थी कि यह विजय जर्मन की हार की सूचक होगी।

: 9 :

जब मास्को से जर्मन सेना पन्द्रह-बीस मील के अन्तर पर रह गयी तो मास्को एक सैनिक-शिविर बन चुका था। जर्मन हवाई आक्रमण के भय से चीफ सेक्रेटरी ने क्रैमलिन में रहना छोड़ दिया था और वह पद्मदेव के क्वार्टर में अज्ञात रूप में रहता थ। कार्यालय भी चलता-फिरता कर दिया गया था। मुख्य कार्यालय तो क्रैमलिन में ही रहा, परन्तु [illegible] के आवश्यक कागज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मदेव वहाँ से ले आता था और जहाँ अस्थायी कार्यालय होता था, वहाँ जा पहुँचा करता था।

अब पद्मदेव से भविष्य के विषय में जल्दी-जल्दी पूछा जाने लगा था। शीतकाल था। पूर्ण नगर और आस-पास का सब-कुछ हिमाच्छादित था। सूर्य बहुत कम काल के लिये निकलता था और रात को 'ब्लैक आउट' रहता था। भूमि-अन्तर्गत बहुत-से रक्षार्थ स्थान बन गये थे। विश्वविद्यालय में पद्मदेव के मकान के समीप एक पक्का कंक्रीट का 'बंकर' भूमि के नीचे रक्षार्थ बनाया गया था और चीफ सेक्रेटरी प्रायः वहाँ ही आकर सोया करता था।

एक रात जब नगर पर जर्मन हवाई जहाज मँडरा रहे थे तथा नगर पर गोले फेंक रहे थे और भूमि पर से उन पर 'फायर' किये जा रहे थे तो किसी को नींद नहीं आ रही थी।

चीफ सेक्रेटरी अपने शैल्टर में पलंग पर कानों में अँगुलियाँ दिये हुए बैठा था।

एकाएक शैल्टर के बाहर से किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। पद्मदेव उठकर बाहर गया। उसका विचार था कि सरकारी काम से कोई आया है। पद्मदेव ने द्वार खोला तो मार्टोव को खड़ा देख वह भौंचक्का रह गया। इस समय आकाश में बहुत-से जहाजों के आने की गड़गड़ाहट होने लगी। विश्वविद्यालय के भवनों की छतों पर 'ऐण्टी एयर क्राफ्ट गन' लगी थीं और वे आग उगल रही थीं।

मार्टोव ने कहा, "भगवान् के लिये मुझे भीतर आने दो।"

पद्मदेव चीफ सेक्रेटरी के वहाँ होने को छिपाने के लिये उसे आने देना नहीं चाहता था। पद्मदेव को आना-कानी करते देख मार्टोव ने पूछा, "क्या कोई अन्य भी भीतर है?"

"हाँ।"

"कौन है?"

"मेरी प्रेमिका।"

"ऐमालीना?"

"नहीं, उसकी माँ।"

मार्टोव हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, "पर मैं उसे कुछ नहीं कहूँगा। मैं तुम दोनों की ओर पीठ किये लेटा रहूँगा।"

इस पर चीफ सेक्रेटरी की भीतर से आवाज आयी, "आ जाने दो।"

मार्टोव के मुख से अकस्मात् निकल गया, "अरे! यह प्रेमिका है? यह तो कोई...।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीतर से आवाज आयी, "आओ मार्टोव! आ जाओ।"

पद्मदेव ने पुनः द्वार बन्द कर दिया। मार्टोव तो पहले ही भीतर आ चुका था और वह वहाँ के धीमे प्रकाश में चीफ सेक्रेटरी को बैठा देख बोला, "कामरेड! मुझे पता नहीं था कि भीतर कौन है? बाहर आज घूमना भय-रहित नहीं है। इस कारण विवश था। यहाँ कामरेड पद्मदेव के अतिरिक्त अन्य कोई परिचित नहीं था; इस कारण इसे कह रहा था कि वह मुझे भीतर घुस आने दे।"

चीफ सेक्रेटरी ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "इस समय कहाँ से आ रहे हो?"

"वैसे तो मैं 'रैस्टोव' से आ रहा हूँ। अपने चीफ को सूचना दे घर जाने की बात विचार कर रहा था कि 'एयर रेड' हो गयी और मैं सिर छिपाने के लिये यहाँ चला आया।"

"रैस्टोव से कब चले थे?" इस समय तक पद्मदेव भीतर आ चुका था और अपने पलंग पर बैठ चुका था। चीफ सेक्रेटरी ने उसे पद्मदेव के समीप बैठ जाने को कहा। मार्टोव ने बैठकर चीफ सेक्रेटरी के प्रश्न का उत्तर दे दिया, "मैं परसों सायंकाल वहाँ से चला था। हवाई जहाज में आया हूँ और मुझे सैनिक जीप में अपने चीफ के घर पहुँचा दिया गया। वहाँ वह थे नहीं। वहाँ से मुझे विश्वविद्यालय में उनके होने की बात बतायी गयी थी। यहाँ मैं उनसे मिला हूँ और अपनी रिपोर्ट दे दी है।"

"क्या रिपोर्ट है?"

"प्रथम तो यह कि सात लाख के लगभग सोवियत संघ के सैनिक कीव के समीप क्षेत्रों में पकड़े गये थे। मुझे भेजा गया था कि मैं यह जाँच करूँ कि इतनी बड़ी संख्या में ये सैनिक पकड़े किसलिये गए हैं?

"मैं कीव के क्षेत्र में एक जर्मन सिपाही की वर्दी पहने हुए घूमता रहा। मुझे यह ज्ञात हुआ है कि पकड़े गये सैनिकों में प्रायः स्वेच्छा से कैदी हुए हैं। वे समझने लगे थे कि हमारी पराजय निश्चय है। अतः व्यर्थ में जान गँवाने की क्या आवश्यकता है? यह बात उनमें विख्यात थी कि यदि सेना से पलायन किया तो गोली से उड़ा दिये जायेंगे और यदि सैनिक युद्ध-बन्दी बन गये तो उनके साथ अच्छा व्यवहार होगा। इस प्रलोभन में बहुत-सी 'रेजीमेंट' एक भी गोली चलाए बिना कैदी बन गयीं।

"परन्तु कामरेड! जर्मन सैनिकों का व्यवहहार उनसे बहुत ही बुरा हुआ है। उन सात लाख में से लगभग पाँच लाख तो उसी दिन ही गोली और तोपों से उड़ा दिये गए। कुछ अपने सैनिक वहाँ से भाग और पुनः अपने पक्ष में आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिले हैं। उन्होंने वहाँ की भयंकर कहानी सुनायी तो हमारे सैनिक, पक्ष बदलने पर जान न बख्शी जाती देख अब अपने पक्ष में ही जी-जान से लड़ने लगे। उसी का परिणाम है हमारी रैस्टोव में विजय। रैस्टोव वापस ले लिया गया है।''

'तो यह कहना चाहिये कि सैनिकों में जर्मन अत्याचार और क्रूरता का समाचार फैला दें।

''यह चीफ रेडियो विभाग को टेलीफोन से कह दिया गया है। कल प्रातः ही सैनिक-प्रसारण में यह बात कही जायेगी।''

चीफ सेक्रेटरी ने बात बदल दी। उसने कहा, ''आज नींद नहीं आ रही। बाहर इतना शोर है कि द्वार तक खोला नहीं जा सकता।''

''आज का आक्रमण विशेष रूप से विश्वविद्यालय को विनष्ट करने के लिये ही किया जा रहा है।''

''किसी ने सूचना दे दी प्रतीत होती है कि यहाँ उच्चाधिकारी आकर रात को सोते हैं।''

''मेरा विचार दूसरा है।'' मार्टोव का कहना था।

''क्या?''

''जर्मनी की नीति कुछ ऐसी प्रतीत होती है कि मास्को को इतना विनष्ट कर दिया जाये कि यहाँ कभी कोई नगर रहा था, भास ही न हो सके। भावी मानचित्रों में यहाँ कोई नगर न दिखाया जाये।''

चीफ सेक्रेटरी के कँपकँपी हो उठी। यह उसके दोनों साथियों ने देखा। पद्मदेव ने मुस्कराते हुए कहा, ''हमारे कामरेड चीफ सेक्रेटरी तो मरने से डर रहे हैं।''

''और कामरेड देव नहीं डर रहे?'' चीफ सेक्रेटरी का प्रश्न था।

''मैं तो मर नहीं रहा।'' पद्मदेव ने मुस्कराते हुए कहा।

''कैसे जानते हो यह?''

''हमारा एक धर्म-शास्त्र है 'गीता' उसमें कहा है-

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः अर्थात्-न मनुष्य पैदा होता है और न मरता है। न यह कभी नहीं था और न ही यह कभी नहीं रहेगा। और मुझे इस बात पर विश्वास है।''

''पर ये लाखों जो मर रहे हैं?''

''ये मर नहीं रहे।

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः।

अर्थात्-इस देह का अन्त होता है। इसके भीतर शरीर के स्वामी का नहीं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह सब बकवास है। हम शरीर और शरीर के स्वामी दोनों की मृत्यु होती देखते हैं।"

"मुझे इस बात का विश्वास है कि शरीर और शरीर का स्वामी पृथक्-पृथक् हैं।"

"यदि विश्वास है तो इस समय मेरा एक सन्देश लेकर बेरिया के पास चले आओ।"

"हाँ, यदि कामरेड उस सन्देश का भेजना मेरे जीवित रहकर राज्य की सेवा से अधिक आवश्यक समझते हैं तो मैं जाने के लिये तैयार हूँ।"

इस पर चीफ सेक्रेटरी आँखें मूँद विचार करने लगा। कुछ देर विचार करने के उपरान्त उसने आँखें खोलीं और कहा, "बेरिया से कहो कि मैं उससे तुरन्त किसी बात पर सम्मति करना चाहता हूँ।"

"ठीक है।" पद्मदेव ने कहा और पलंग से उठ कपड़े पहनने लगा। उसने अपना 'ओवर कोट' पहना तो मार्टोव भी उठ खड़ा हुआ। इस पर चीफ सेक्रेटरी ने उससे पूछा, "और कामरेड मार्टोव, कहाँ जा रहे हैं?"

"मैं अपने चीफ के छिपने का स्थान बताने जा रहा हूँ।"

"कामरेड देव पता कर लेगा।"

"इन्हें पता करने में समय लगेगा और भटकना पड़ेगा।"

"पर तुम मर भी सकते हो?"

"अपनी करनी से अथवा किसी के प्रयत्न से कोई मरता नहीं।"

"तो कैसे मरता है?"

"जब अपना जीवन समाप्त होता है तो मरता है।"

"एक वर्ष से लाखों की मृत्यु उनके जीवन समाप्त होने पर हो रही है क्या? यदि जर्मनी में हिटलर जैसा खर-दिमाग पैदा न होता और यह युद्ध न होता तब भी यह मर जाते?"

"निस्सन्देह, कामरेड चीफ सेक्रेटरी! रूस संघ ने युद्ध न करने का कम यत्न नहीं किया। फिर भी जो होना है वह ही हो रहा है।"

"तो तुम भी 'फेटलिस्ट' (भाग्य मानने वाले) हो?"

"हाँ, कामरेड।"

"तो जाओ, तुम भी भाड़ में जाओ।" चीफ सेक्रेटरी की आँखों में क्रूरता दिखायी देने लगी। इस समय दोनों वस्त्र पहन जाने को तैयार हो चुके थे। बर्फ पर चलने योग्य जूता पहनने में देर लगी थी।

दोनों 'शैल्टर' से बाहर निकले तो चीफ सेक्रेटरी ने पीछे द्वार बन्द कर लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मदेव अपने क्वार्टर से बाहर निकल विश्वविद्यालय की मुख्य इमारत की ओर दौड़ लगाने वाला था कि मार्टोव ने उसके कन्धे पर हाथ रख उसे रोक लिया। दोनों क्वार्टर की दीवार के साथ लगकर खड़े हो गए। इस समय आकाश से गिरने वाले बम्बों के फटने से और भूमि पर से 'ऐण्टी एयर क्राफ्ट' बन्दूकों की गोलियों से रह-रहकर प्रकाश हो रहा था। आक्रमण का पूरा बल था और दोनों ओर से गोलियों की वर्षा हो रही थी।

जब मार्टोव ने पद्मदेव के कन्धे पर हाथ रखा तो दीवार के साथ लगकर पद्मदेव ने पूछ लिया, "क्या है?"

"यह तो बहुत ही निर्दयी मनुष्य है।"

"सो तो वह पहले भी था, परन्तु अब उसने अपनी मूर्खता का ही प्रदर्शन किया है।"

"मैं आपसे विशेष रूप में मिलने के लिये आया था। अपने आने का प्रयोजन आपको बता देना चाहता हूँ। पता नहीं मैं मारा जाऊँ और फिर वह बात बताने वाला यहाँ कोई न रहे।"

"हाँ, शीघ्र बताओ?"

"ऐमालीना जीवित है और इस समय अमेरिका में अपने माता-पिता के साथ पहुँच गयी है।"

पद्मदेव को विश्वास नहीं आया। मार्टोव ने कहा, "यह सत्य है। मेरी सम्मति मानिये तो अब आप भी यहाँ से भाग निकलने का यत्न करिये।"

"परन्तु इस समय तो बेरिया से मिलना है।"

"हाँ, देखिये! उसका 'शैल्टर' शवर्नीक के क्वार्टर के नीचे है। यहाँ के सैनिकों को विदित नहीं। हमारे विभाग के लोग ही इसे जानते हैं।"

"ठीक है। अब तुम भीतर जाकर ठहरो। मैं जा रहा हूँ।"

इतना कह मार्टोव को वहीं छोड़ शवर्नीक के क्वार्टर की ओर भागा। वह कुछ ही दूर गया था कि उसे मार्टोव उसके पीछे-पीछे भागा आता अनुभव हुआ। वह खड़ा हो उसे कहने लगा कि वह लौट जाये, परन्तु मार्टोव ने उसकी बाँह-में-बाँह डाल उसको घसीटते हुए कहा, "मूर्ख मत बनो। भागो।"

दोनों भाग खड़े हुए। क्षण के एक अंश-भर उपरान्त उसी स्थान पर, जहाँ ये खड़े हुए थे, गोलियों की बौछार टकरायी। ये शवर्नीक के मकान के पास पहुँचे तो भूमि से कुछ ही ऊपर बहुत जोर का धमाका हुआ। एक जर्मन जहाज में विस्फोट हुआ था और वह जलता हुआ वहीं आ गिरा जहाँ वे भागते-भागते खड़े हुए थे।

ऐसा प्रतीत होता है कि इनको भागता देख एक जर्मन जहाज ने गोता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा इन पर गोलियाँ चलायी थीं और उसी समय रूसी 'ऐण्टी एयर क्राफ्ट गन' ने उसको छलनी कर दिया था। जहाज के पैट्रोल टैंक को आग लग गयी और वह फटकर टूक-टूक हो जलता हुआ भूमि पर आ गिरा था। अभी भी रूसी गोलियों की उस पर बौछार हो रही थी। इसका प्रयोजन था कि जहाज से कोई जीवित न बच सके।

पद्मदेव ने 'शैल्टर' का द्वार खटखटाया तो द्वार खुला। इनसे काम पूछा गया तो चीफ सेक्रेटरी का नाम लेने पर वे भीतर कर लिये गए। पद्मदेव को द्वार खोलने वाले ने पहचान लिया। मार्टोव को तो उसने अभी ही देखा था।

"चीफ बैठे हुए कुछ लिख रहे हैं।" अंगरक्षक ने कहा।

पद्मदेव ने कहा, "चीफ सेक्रेटरी का एक आवश्यक सन्देश है।"

बेरिया का अंगरक्षक भीतर गया और शीघ्र ही वापस लौट आया और बोला, "आइये, कामरेड।"

दोनों भीतर चले गये। बेरिया बूट और वस्त्र पहने एक कुर्सी पर बैठा था। मानो, वह कहीं बाहर जाने वाला हो। इनके भीतर जाने पर उसने पूछा, "कामरेड मार्टोव! तुम इस नरक में कहाँ घूम रहे हो?"

"मैं रात कामरेड पद्मदेव के क्वार्टर में सोने गया था। वहाँ चीफ सेक्रेटरी मिल गये। वह कामरेड पद्मदेव को आपके पास भेज रहे थे। मैंने यह विचार कर कि यदि इसे, भयंकर गोलाबारी में आपका पता पाने के लिये भटकना पड़ा तो यह बच नहीं सकेगा। अतः आपके पास इसे पहुँचाने के लिये मैं साथ चला आया हूँ।"

बेरिया आँखें फाड़-फाड़कर पद्मदेव की ओर देखता हुआ पूछने लगा, "कामरेड चीफ सेक्रेटरी क्या कहते हैं?"

"वह आपसे सम्मति करने के लिये आपको तुरन्त बुला रहे हैं।"

"तुरन्त?"

"हाँ। इसी कारण इस अग्नि-वर्षा में मुझे भेजा है।"

"वह पागल हो गया है। उसे कह दो, सो जाये। इस समय मैं नहीं आ सकता। इस नरक-कुण्ड में कूदना पागलपन है।"

"तो कामरेड बेरिया सोने की तैयारी में हैं?" पद्मदेव ने उसके कसे हुए बूटों की ओर देखकर पूछ लिया।

"मैं इस 'शैल्टर' से हुई किसी दुर्घटना पर यहाँ से भागने की तैयारी में हूँ।"

"ओह् तो मैं चीफ सेक्रेटरी से क्या कहूँ?"

'कहो कि मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ कि इस समय 'शैल्टर' से बाहर घूमता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिरूँ। सम्मति इस आक्रमण के उपरान्त होगी।''

: 10 :

जब पद्मदेव और मार्टोव बेरिया के 'शैल्टर' से बाहर निकले तो हवाई आक्रमण का जोर कम हो चुका था। पूर्ण मास्को-भर में सैकड़ों इमारतें भूमि से समतल हो गयी थीं। सहस्रों की संख्या में लोग हताहत हुए थे। इस समय तक अपने सब बम्ब मास्को पर फेंक जर्मन हवाई जहाज लौट रहे थे। अत: वापस लौटने में उतनी दौड़ नहीं करनी पड़ी जितनी कि आते समय करनी पड़ी थी।

इन्होंने उस 'शैल्टर' का द्वार खटखटाया जिसमें चीफ सेक्रेटरी छिपा हुआ बैठा था, परन्तु द्वार खुला नहीं। पद्मदेव का विचार था कि उसके साथ किसी प्रकार की दुर्घटना हो गयी है, परन्तु मार्टोव का विचार था कि वह जान-बूझकर द्वारा नहीं खोल रहा।

पद्मदेव ने आकाश को साफ देख और आक्रमण करने वाले हवाई जहाजों की गरड़-गरड़ दूर विलीन होती सुन कह दिया, ''अब तो हमें आशा करनी चाहिये कि आज रात कोई नया आक्रमण नहीं किया जायेगा। आओ, क्वार्टर में चलकर सोने का यत्न करें।''

''यह ठीक है।'' दोनों अभी क्वार्टर के बैठक-घर में गये ही थे कि आक्रमण समाप्त होने का 'सायरन' बजा। इसके साथ ही उन्होंने चीफ सेक्रेटरी के 'शैल्टर' के द्वार खुलने का शब्द सुना।

दोनों वापस हो 'शैल्टर' के बाहर गये तो चीफ सेक्रेटरी ने 'शैल्टर' से निकलते हुए कहा, ''मैंने आपके द्वार खटखटाने का शब्द सुना था, परन्तु यह विचार कर कि आप बेरिया को बुलाने गये ही नहीं और तब से वहीं खड़े हैं मैंने यही उचित समझा कि आपको कुछ देर तक और खड़े रहने दिया जाये तो हानि नहीं।''

पद्मदेव ने मुस्कराते हुए कहा, ''मगर हम तो उसके पास गये थे।''

''तो वह आया क्यों नहीं?''

''वह कहा था कि इस प्रकार की बम्बबारी में बाहर घूमना मूर्खता होगी।''

''उसको बताया नहीं कि एक अत्यावश्यक काम है?''

''बताया था और वह कहता है कि वह काम बम्बबारी के उपरान्त हो सकेगा।''

चीफ सेक्रेटरी ने कह दिया, ''विश्वास नहीं आता।''

''तो चलिये, उससे पूछ लीजिये।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु अब उसे आ जाना चाहिये। अब तो बम्बबारी बन्द हो गयी है।"

मार्टोव ने अपने चीफ की सफाई देते हुए कहा, "उसे आपके ठहरने के स्थान का ज्ञान नहीं।"

"तो तुमने बताया नहीं।"

"उन्होंने पूछा नहीं और हमने बताया नहीं।"

"अब मैं आराम करना चाहता हूँ। रात के दो बज रहे हैं। दो-तीन घंटे सोने का यत्न करना चाहिये। मार्टोव, तुम कहाँ आराम करोगे?"

"इस समय यदि सवारी मिल गयी तो मैं अपने घर जाऊँगा।"

"कामरेड देव! आप यहीं आराम करेंगे क्या?" चीफ सेक्रेटरी ने पद्मदेव की ओर देखते हुए पूछ लिया।

पद्मदेव को चीफ सेक्रेटरी के स्वभाव और संस्कारों का ठीक-ठीक ज्ञान आज हुआ था। इस कारण वह चाहता तो यही था कि इस व्यक्ति के साथ एक ही कमरे में सोया न जाये, परन्तु अन्य कोई स्थान नहीं जानता था जहाँ वह जा सके। अतः वह मार्टोव की ओर देख पूछने लगा, "पुनः कब मिल सकेंगे?"

"वर्तमान स्थिति में भविष्य के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता। यदि मास्को में रहा तो अवश्य कहीं-न-कहीं भेंट होगी।"

मार्टोव विश्वविद्यालय की केन्द्रीय इमारत की ओर चल पड़ा। वहाँ सैनिक कार्यालय था। मार्टोव को आशा थी कि उसे घर जाने के लिये जीप मिल जायेगी।

पद्मदेव चुपचाप अपने बिस्तर में घुस गया। उस रात सर्दी इतनी अधिक थी कि पद्मदेव को कमरा गरम करने के लिये हीटर जलाना पड़ा।

चीफ सेक्रेटरी लेटा-लेटा ही पूछने लगा, "तो आप सत्य ही बेरिया के पास गये थे।"

"हाँ, कामरेड! हम गये थे। वह कपड़े पहन, बूट पहने कुर्सी पर बैठा कुछ लिख रहा था।"

"तो वह आया क्यों नहीं?"

"जो कुछ उसने आपको बताने के लिये कहा था, वह सब मैं बता चुका हूँ।"

चीफ सेक्रेटरी ने बात बदल दी और पूछ लिया, 'यह मार्टोव यहाँ क्यों आया था?"

"कहता था कि हवाई आक्रमण में सुरक्षित स्थान की खोज में आया था। मेरा इससे परिचय [illegible] की जाँच करने के नाते हुआ था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो उस विषय में कुछ बता गया है?"

"नहीं। उसके विषय में कोई बात ही नहीं हुई।"

"आपने पूछा भी नहीं?"

'मैं उसको मर गयी समझता हूँ।"

"हम सब उसे मरा नहीं मानते। मैं आज आपको एक 'स्टेट सीक्रेट' बताता हूँ। आपकी पत्नी के सौन्दर्य की प्रशंसा करने वाला बेरिया ही है। वह कहता था कि दोनों में परस्पर यौन-सम्बन्ध भी था। ऐमालीना का दूसरा लड़का उसी का है। वह उसको अपने पास स्थायी रूप में रखना चाहता था। इसके लिये वह आपके विरुद्ध देश-द्रोह का मुकद्दमा बनाना चाहता था। परन्तु विश्वविद्यालय के वाइस-चान्सलर के कारण आप बचे रहे हैं।"

"एक दिन बेरिया ने ऐमालीना के सौन्दर्य की प्रशंसा की थी। अगले दिन निकोविस्की ने आपकी प्रशंसा की और मैंने आप दोनों को देखने की इच्छा प्रकट कर दी। आपसे मैं पहले मिला, पीछे ऐमालीना से। आपको तो मैंने सरकारी सेवा के योग्य समझा, परन्तु ऐमालीना मेरी दृष्टि में कुछ जँची नहीं।

"उसी रात से वह लापता है। बेरिया सन्देह करता है कि मार्टोव ने कोई षड्यन्त्र कर उसे देश से भगा दिया है। ऐमालीना अमेरिका में है। उसके माता-पिता भी वहाँ ही हैं।'

"मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है। परन्तु कामरेड चीफ सेक्रेटरी! यह 'स्टेट सीक्रेट (राज्य का रहस्य) कैसे हो गया है?"

"हम यह बात देश में विख्यात होने देना नहीं चाहते कि यहाँ से लोग भागकर जा सकते हैं और उनको कहीं आश्रय मिला सकता है। इससे यहाँ भगदड़ मच जायेगी।"

"भगदड़ किसलिये मच जायेगी?"

चीफ सेक्रेटरी ने उत्तर नहीं दिया और करवट बदल खुर्राटें भरने लगा।

अगले दिन चीफ सेक्रेटरी ने कहा, "रात में 'शैल्टर' में नहीं जाऊँगा।

"मेरे लिये क्या आज्ञा है?"

"आपका रात को कुछ काम नहीं होता। 'ऐयर रेड' के अतिरिक्त आप टेलीफोन के समीप सोया करें, जिससे मैं जब चाहूँ आपसे सम्पर्क बना सकूँ।"

इस रात के 'ऐयर रेड' से क्रैमलिन की इमारत को भी हानि पहुँची थी। विश्वविद्यालय की केन्द्रीय इमारत का भी एक कक्ष गिर गया था। प्रातः स्नान कर पद्मदेव अल्पाहार करने कैन्टीन में गया। वह मलबे का ढेर हो चुकी थी। अतः वह नगर को चल पड़ा। वहाँ पर किसी कैन्टीन में अल्पाहार लेने का विचार कर रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्पाहार कर वह क्रैमलिन में जा पहुँचा। चीफ सेक्रेटरी 'वार कौन्सिल' की मीटिंग में गया हुआ था। जब से पद्मदेव प्रातः जागा था, वह मन में विचार कर रहा था कि ऐमालीना के साथ वह कैसे सम्पर्क बनाये? अभी तक उसे कोई उपाय सूझ नहीं रहा था।

वह इसी चिन्ता में बैठा था कि चीफ सेक्रेटरी मीटिंग से अवकाश पा वहाँ आ गया। उसने अपने अंगरक्षक को भेज पद्मदेव को अपने कमरे में बुला लिया।

पद्मदेव सामने उपस्थित हुआ तो वह बोला, "बेरिया कहता है कि रात आप उससे मिलने नहीं गये।"

"तो इससे यह सिद्ध हुआ कि मैं न केवल भीरु हूँ, वरंच अनृतभाषी भी हूँ। मैं समझता हूँ कि ऐसे व्यक्ति से आपको किसी प्रकार का सेवा-कार्य नहीं लेना चाहिये। एक भीरु और अनृत-भाषी पुरुष देश के सम्राट् का सचिव नहीं होना चाहिये।"

"परन्तु यहाँ तो कोई व्यक्ति तब तक ही जीवित रह सकता है जब वह आठ घंटे नित्य काम करे।"

"इस अवस्था में मुझसे कुछ ऐसा काम लिया जाये जो भीरुओं से और अनृत-भाषियों से लिया जा सकता है। अन्था मुझे मृत्युदंड दे दिया जाये।"

"यह सुझाव ठीक है। इस विषय पर विचार किया जायेगा।"

"तब तक मैं अपने क्वार्टर पर रहूँ क्या?"

"यह भी विचार का विषय है।"

"तो मैं क्या करूँ?"

"अपने कमरे में बैठकर काम और उद्योग-विभाग के निर्णय की प्रतीक्षा करो।"

पद्मदेव अपने कमरे में चला गया। वहाँ मेज़ पर उसके लिये एक मुहरबन्द लिफाफा पड़ा था। पहले भी उसकी विभिन्न राज्य-कार्यों के विषय में सम्मति के लिये नित्य प्रातः एक प्रश्नावली आ जाती थी और वह उस पर अपनी सम्मति अथवा सम्मति देने से पूर्व अधिक जानकारी की माँग लिख दिया करता था। कभी-कभी उससे मौखिक प्रश्नोत्तर भी किये जाते थे। भिन्न-भिन्न विभागों के 'चीफ' उससे मिलने और सम्मति जानने भी आया करते थे।

आज उसने सामने रखा लिफाफा खोला। पढ़ा और फिर एक भी शब्द उस पर लिखे बिना कागज़ों को पुनः लिफाफे में रख दिया।

कुछ कालोपरान्त बेरिया आया। पद्मदेव उसका यथोचित आदर करने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिये खड़ा हो गया। बेरिया ने कहा, ''बैठिये।''

पद्‌मदेव बैठा तो बेरिया ने कहा, ''मुझे पता चला है कि आपको ऐमालीना के विषय में पता चल गया है?''

''केवल इतना कि वह मरी नहीं। यहाँ से भागकर अमेरिका चली गयी है।''

''मेरी जाँच का परिणाम यह है कि उसे यहाँ से निकालने में मार्टोव सहायक था। वह इस समय बन्दी-गृह में है और उससे पूछ-ताछ की जा रही है कि वह उसे भगाने में कैसे सफल हुआ है?''

इस सब में पद्‌मदेव से कुछ पूछा नहीं गया था। इस कारण वह चुपचाप सुनता रहा। बेरिया एक-दो क्षण चुप रहकर बोला, ''क्या कामरेड देव इसमें राज्य की सहायता कर सकते हैं?''

''इस समय पद्‌मदेव स्वयं अपने पद से च्युत हो चुका है। इस कारण वह एक मृत प्राणी की भाँति यहाँ पड़ा है। मृत किसी की सहायता नहीं कर सकता।''

''आपको पुनः जीवित किया जा सकता है।''

''कैसे?''

''चीफ सेक्रेटरी को कहकर।''

''परन्तु उन्होंने मुझे निकाला नहीं है। निकला तो मैं स्वयं हूँ। वह तो मेरे लिये कोई अन्य कार्य ढूँढ रहे हैं। उनका कहना था कि रूस-राज्यसंघ में प्रत्येक मनुष्य को आठ घंटे नित्य काम करना होता है। अन्यथा उसे फाँसी पर लटका दिया जाता है।''

''पर आपने काम छोड़ा क्यों है?''

''चीफ सेक्रेटरी और आपने यह सिद्ध कर लिया है कि मैं भीरु हूँ और झूठ बोलने वाला हूँ। इस कारण मैं अनुभव करता हूँ कि इतने बड़े राज्य के मुख्यमंत्री को मन्त्रणा देने वाला एक भीरु और असत्यवादी व्यक्ति नहीं होना चाहिये।''

''परन्तु मैंने तो ऐसी कोई बात नहीं की जिससे आप भीरु और झूठ बोलने वाले सिद्ध हो जाओ।''

''रात जब 'एयर रेड' जोरों से चल रही थी तो कामरेड चीफ सेक्रेटरी ने मुझे आपको तुरन्त बुलाने के लिये भेजा था। मार्टोव भी वहाँ आ गया था। वह मेरा पथ-प्रदर्शक बना और हम उस भयंकर गोलाबारी में आपके पास पहुँचे थे। आपने कहा था कि उस समय शैल्टर से बाहर निकलना मूर्खता होगी। यही बात हमने लौटकर चीफ सेक्रेटरी को बता दी थी। इस पर वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्देह करने लगे थे कि मैं आपके पास गया भी था अथवा नहीं? आज कुछ समय पूर्व उन्होंने मुझे बताया है कि आपने उनके सन्देह का समर्थन किया है कि मैं रात आपसे मिलने नहीं गया था।

"अत: मैंने जब कहा कि मुझे जैस झूठे और भीरु को तो वर्तमान काम के योग्य नहीं समझना चाहिये। मुझे छुट्टी दे दी जाये। इस पर उन्होंने यह आज्ञा दी है कि मैं किसी अन्य काम के मिलने की प्रतीक्षा करूँ। वह मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"मैं इसी कारण तो आया हूँ। आज से आप जैसे बहादुर और सत्यवक्ता को मैं गुप्तचर-विभाग में काम देना चाहता हूँ।"

"परन्तु आपने तो कामरेड चीफ सेक्रेटरी से कहा है कि मैंने झूठ बोला है कि मैं आपके पास पहुँचा था।"

"देखो, कामरेड देव! यह बात हमारी 'स्टेट सीक्रेट' है। मैंने चीफ सेक्रेटरी की आज्ञा का उल्लंघन किया था। यदि मैं मान जाता तो मैं फाँसी पाने के योग्य हो जाता। कम-से-कम वर्तमान पद पर तो रह नहीं सकता था। इस कारण थोड़ा झूठ बोलना पड़ा है। इस पर भी मैं जानता हूँ कि आप एक बहादुर और सत्यवक्ता हैं। इसी कारण मैं चीफ सेक्रेटरी से कह आया हूँ कि मैं आपको अपने विभाग में लेना चाहता हूँ। केवल शर्त यह है कि मार्टोव से मिलकर वह सब कहानी पूछ दें कि वह आपकी पत्नी को कैसे देश से निकालने में सफल हुआ है?"

पद्मदेव ने तुरन्त निर्णय किया और कह दिया, "मैं यह सब स्वयं भी सुनने के लिए उत्सुक हूँ, परन्तु इसमें मार्टोव दोषी नहीं भी हो सकता। आप तो उसको पूर्ण सत्य जाने बिना ही दोषी मान बैठे हैं।"

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। मैं सत्य जानने के लिये उत्सुक हूँ और फिर मैं ऐमालीना को वापस चाहता हूँ।"

"यह भी तो उसकी इच्छा पर निर्भर करता है।"

"आपको यत्न करना होगा। मैं यह वचन देता हूँ कि युद्ध के उपरान्त आप दोनों को रूस से जाने की स्वीकृति दे दी जायेगी।"

"तब तो ठीक है। मुझे नियुक्ति की आज्ञा मिल जाये।"

"यह सायंकाल से पूर्व मिल जायेगी। कल प्रात: साढ़े नौ बजे मेरे कार्यालय में चले आइयेगा। मैं मार्टोव से आपकी भेंट करा दूँगा।"

"मुझे स्वीकार है।"

पद्मदेव को इस पूर्ण योजना में से भाग निकलने का छिद्र दिखायी देने लगा था। यद्यपि छिद्र अभी बहुत छोटा था, इस पर भी वह उसे स्पष्ट देख रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

ऐमालीना ने अपने पति, अपने तथा बच्चों को रूस से बाहर भेज सकने की आशा में अपने को गुप्तचर विभाग के चीफ के समक्ष पराभूत कर दिया था। बेरिया सदा उसको वचन देता रहता था कि वह यत्न कर रहा है। इसमें एक वर्ष लग गया और इतने में अपशोक का जन्म हो गया। इसके लगभग एक वर्ष उपरान्त बेरिया ने पुन: अपनी प्रेमिका ऐमालीना से सम्बन्ध बनाने का यत्न आरम्भ किया। इस बार ऐमालीना ने पहले वचन पूरा करने का हठ करना आरम्भ कर दिया।

ऐमालीना को विश्वास हो गया था कि बेरिया झूठ कहता है कि उसने यत्न किया था, परन्तु बेरिया ने यह भी कहा था कि वह अभी तक यत्न कर रहा है, परन्तु विश्वविद्यालय का वाइस-चान्सलर उसके पति की इतनी प्रशंसा कर रहा है कि चीफ सेक्रेटरी उसे छोड़ने के लिये मान ही नहीं रहा।

इस समय बेरिया ने यह कह दिया कि वह अपनी कोई अन्य प्रिय बात मनवा सकती है। इन दिनों ऐमालीना का मार्टोव से साक्षात् हो चुका था। उसने अपनी विडम्बना का वर्णन किया तो मार्टोव ने उसे फिर कभी मिलकर इस विडम्बना से निकलने का उपाय बताने का वचन दे दिया।

लगभग एक मास के विचारोपरान्त मार्टोव ने अपनी एक योजना बता दी। उसने बताया, ''ऐमालीना! यदि तुम यहाँ से भागने का साहस कर सको तो मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ। पीछे पद्मदेव स्वयं ही यहाँ से जाने की स्वीकृति माँगेगा और यह सम्भव है कि उसे स्वीकृति मिल जाये।''

''पर मैं कैसे जा सकती हूँ?'' ऐमालीना का प्रश्न था।

''यदि अपने पति से भी यह बात चोरी रख सको तो मैं तुम्हें एक उपाय बता सकता हूँ।''

''मैंने अपने पति से अपने दूसरे बच्चे के पिता की बात अभी भी छिपा कर नहीं रखी। यह सब उनको यहाँ से निकालने के लिये ही था। यदि कोई ऐसी योजना हो जिससे हम दोनों रूस से भाग सकें तो मैं उनसे दूसरी वंचना खेलने के लिये भी मन को तैयार कर सकती हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आशा तो करता हूँ कि यह योजना सफल हो जायेगी।"

"तो बताओ?"

'तुम अपने माता-पिता के छोड़े दिये जाने की माँग करो। उनके लिये 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' से छोड़ दिये जाने की आज्ञा और देश से बाहर जाने के लिये पार-पत्र माँगो। जब वह मिल जायेंगे तो निस्सन्देह मैं ऐसा प्रबन्ध कर दूँगा कि तुम उनके साथ ही बाहर जा सको। तदुपरान्त तुम्हारे पति के यहाँ से निकल जा सकने की आशा की जा सकती है।"

ऐमालीना ने यत्न किया और बेरिया मान गया। उसे ऐमालीना मिल गयी। अब वह यत्न करने लगा कि पद्मदेव को देश-द्रोह के अपराध में साइबेरिया भेज दिया जाये। निकोविस्की उसकी रक्षा कर रहा था। जब ज़ेवियर और कैटालीना को छोड़ने की आज्ञा प्राप्त की गयी तो चीफ सेक्रेटरी को बताना पड़ा कि वे कौन हैं और वह किस कारण उनकी सिफारिश कर रहा है? उसने बताया कि कैटालीना की एक लड़की यहाँ मास्को में है और उसे वह रूस संघ की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी प्रतीत हो रही है। इस पर तो चीफ सेक्रेटरी के मन में इस सुन्दर स्त्री को देखने की लालसा जाग पड़ी।

इस काल में ज़ेवियर तथा कैटालीना के छोड़ देने की आज्ञा हुई और उनके देश से निकल जाने के लिए पार-पत्र बन गये। मार्टोव ने पार-पत्रों की एक 'ब्लैंक फार्म' पर ऐमालीना का विवरण तथा चित्र लगाकर नाम की नकली मुहर कार्यालय में ही बनवाकर फोटो के ऊपर लगवा दी। वह ज़ेवियर और कैटालीना से मिल यह निश्चय कर आया था कि कैम्प से छूटते ही वे अपने लड़के के घर पर चले जायें। अगले दिन प्रातःकाल ऐमालीना अपने पासपोर्ट के साथ उनसे मिल जायेगी। वहाँ से वे सीधा फिनलैण्ड में जाकर वहाँ से जहाज़ में सवार हो शीघ्रातिशीघ्र स्वीडन चले जायें। वहाँ से जहाज़ का प्रबन्ध कर वे अमेरिका जा सकेंगे।

मास्को में ऐमालीना को मर गयी सिद्ध करने के लिए उसने हस्पताल में एक यहूदी डॉक्टर से यह प्रबन्ध करा दिया कि किसी स्त्री के शव को वे वस्त्र जो वह भेजेगा, पहना कर रेल के नीचे ऐसा कटवा किया जाए कि जिससे वह शव पहचाना न जा सके।

इस पर उसे अपनी योजना में कुछ परिवर्तन करना पड़ा। वह ऐमालीना से मिलने उनके क्वार्टर पर पहुँचा और वहाँ से पता पा कि वह अपने पति के साथ क्रैमलिन गयी है, वह क्रैमलिन जा पहुँचा।

यह विचार था कि अब ऐमालीना अपने पति को बताकर लेनिनग्राद जायेगी, परन्तु ठीक समय पर पद्मदेव को स्वेच्छा से निकोविस्की से मिलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाते देख उसने ऐमालीना और बच्चों को बिना बताए ही चले जाने की सम्मति दे दी। अब योजना इतनी दूर तक जा चुकी थी उसको रोका नहीं जा सकता था।

ऐमालीना ने अपने पहने हुए कपड़े मार्टोव को दे दिए और अपनी घड़ी तथा फाउण्टेन पैन भी पहचानने के लिए दे दिया। वह स्वयं पद्मदेव को बताए बिना बच्चों को लेकर चल दी। मार्टोव ने नई योजना के अनुसार कपड़े इत्यादि डॉक्टर को भेज दिए।

यद्यपि दोनों एक ही गाड़ी से लेनिनग्राद गए थे, परन्तु यात्रा में भिन्न-भिन्न डिब्बों में बैठकर ही जा सके थे।

बहुत प्रातःकाल वे लेनिनग्राद पहुँचे और वहाँ से वे दोनों शरौडर के घर पहुँच गए। शरौडर और उसके माता-पिता उत्सुकता से ऐमालीना की प्रतीक्षा कर रहे थे। इनके पहुँचते ही जल्दी-जल्दी अल्पाहार ले ज़ेवियर, कैटालीना, ऐमालीना तथा नाकेश और अपशोक फिनलैण्ड के लिए चल पड़े। इस समय जर्मन के आक्रमण का समाचार प्रसारित हो चुका थ। अभी आक्रमण युक्रेन और केन्द्रीय क्षेत्र में आरम्भ हुआ था। उत्तर की सीमा अभी शान्त थी। ये लोग सुगमता से सीमा पार कर तीसरे प्रहर सुरक्षित स्थान पर पहुँच गए थे। फिनलैण्ड के वाल्टिक की खाड़ी में वासा बन्दरगाह पर पहुँच वे जहाज़ में सवार हो गए। लेनिनग्राद से वासा तक जाने के लिए शरौडर ने अपने विभाग की एक जीप का प्रबन्ध कर दिया था। जीप का ड्राईवर भी एक यहूदी ही था। योजनानुसार उसने कार्यालय में रिपोर्ट कर दी थी कि जीप बिगड़ गयी है और वह वर्कशाप में जा रहे हैं। वास्तव में वह वासा को चल पड़ी थी।

अट्ठारह घण्टे की यात्रा पर वे वासा पहुँचे थे। यद्यपि रात के तीन बज गए थे, परन्तु धीमा सूर्य का प्रकाश हो गया था। वे वहाँ जहाज़ पर सुगमता से पहुँच गए थे। फिनलैण्ड में भी युद्ध की तैयारी थी और यह प्रतीक्षा की जा रही थी कि जर्मन सेनाओं को कुछ करने की आज्ञा आने ही वाली है। वहाँ से आक्रमण में दो दिन का विलम्ब हो गया था। यह विचार था कि युक्रेन की रक्षा के लिए उत्तर की सेनाओं को दक्षिण की ओर चलने की आज्ञा हो जाएगी। तब लेनिनग्राद को विनष्ट कर देना सुगम होगा।

मार्टोव शरौडर के घर से ऐमालीना आदि को विदा कर अपने कार्यालय में पहुँचा और वहाँ अपने काम में लीन था कि मास्को से आज्ञा आयी कि मार्टोव को तुरन्त वापस मास्को भेज दिया जाए। वह हवाई जहाज़ में तीसरे प्रहर मास्को पहुँच गया। वहाँ पहुँचते ही उसे चीफ के सामने उपस्थित कर दिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम कहाँ थे? चीफ ने पूछा।"

"लेनिनग्राद अपने कार्यालय में।"

"वहाँ क्या कर रहे थे?"

'मज़दूरों की सोवियत मन्त्रियों को बुला युद्ध की स्थिति में उनके कर्तव्य का परिचय दे रहा था।"

"ऐमालीना को जानते हो?"

"प्रोफेसर पद्मदेव की पत्नी को? हाँ, जानता हूँ।"

"वह कहाँ है?"

"वह अपने पति के पास विश्वविद्यालय क्षेत्र में होनी चाहिए।"

"अच्छा, देखो। हस्पताल में एक शव को पहचानो। यदि पहचान सकते हो तो बताओ कि वह किसका शव है?"

मार्टोव को हस्पताल भेज दिया गया। उसने शव देखा और लौटकर अपनी जाँच का परिणाम बता दिया। मार्टोव का कहना था, "उस शव पर कपड़े, घड़ी और फाउण्टेन पैन तो ऐमालीना के हैं, परन्तु शव उसका नहीं।"

"तो शव किसका है?"

"मैं नहीं जानता। इतना निश्चय से कह सकता हूँ कि वह ऐमालीना का नहीं है।"

"परन्तु पद्मदेव कह गया है कि शव उसकी पत्नी का है।"

"मुझे उससे मिलने दिया जाए। मैं समझना चाहूँगा कि वह उसे किस प्रकार ऐमालीना का समझता है?"

बेरिया मार्टोव को घूर रहा था, परन्तु मार्टोव निर्भीकता से उसकी आँखों में देख रहा था। इस निर्भीक दृष्टि ने ही बेरिया को सन्देह में डाल दिया। अतः बेरिया को अपने विचार पर अविश्वास होने लगा था। वह समझ रहा था कि ऐमालीना को किसी और ने लापता कर दिया। पद्मदेव को उसका ज्ञान है। अतः मार्टोव को पद्मदेव पर जासूसी करने लगा दिया गया।

युद्ध के कारण बढ़ गए कार्य में ऐमालीना की बात विस्मरण हो गयी थी। अक्टूबर मास आ गया था। उत्तरी और केन्द्रीय मोर्चों पर खाईयाँ खोदकर सेना बैठ गई थी। जिस रात आकाश साफ होता था, हवाई जहाज़ों से आक्रमण किया जाता था।

एक दिन एक जर्मन सैनिक युद्ध-बन्दी बनाया गया। उसकी तलाशी ली गई तो उसकी जेब से एक पत्र निकला। पत्र पर न तो भेजने वाले का नाम था और न ही पता था कि वह पत्र किसको भेजा गया था, परन्तु पत्र में मार्टोव को धन्यवाद देने की बात लिखी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र का पता बेरिया को लगा तो उसने पत्र को देखने के लिए मँगवा लिया। वह ऐमालीना का लेख पहचान गया। उस पत्र में लिखा था कि वह अपने माता-पिता और बच्चों के साथ न्यूयॉर्क पहुँच गई है। वहाँ उसके पिता के पुराने व्यापारिक सम्बन्ध हैं और वे सुरक्षित हैं। मार्टोव को उसकी सहायता के लिए धन्यवाद दे देना।

मार्टोव और न्यूयॉर्क में पुराने सम्बन्धों से उसे सन्देह हुआ कि पत्र ऐमालीना का ही है। साथ ही वह उसके लेख को पहचानता था।

मार्टोव को बुलाया गया और उससे पूछा गया कि क्या वह ऐमालीना के लेख को पहचानता है? यह बात उस दिन की थी जिस दिन पद्मदेव ने चीफ सेक्रेटरी के सलाहकार के काम को करने से इन्कार कर दिया था।

"नहीं।" मार्टोव ने कहा।

"तुमने उसका कभी कोई पत्र देखा है?"

"नहीं।"

"तुम्हारी जाँच कहाँ तक पहुँची है?"

"युद्ध सम्बन्धी काम मिल जाने से मैं ऐमालीना सम्बन्धी खोज नहीं चला सका। इस पर भी दो बातों का पता चला था। एक तो यह कि पद्मदेव उसको मर गयी समझता है और दूसरा यह कि वह अपने माता-पिता के साथ ही देश से निकली है। वह किसी-न-किसी प्रकार टर्की के मार्ग से निकल भागे हैं। वह शव और उसको ऐमालीना के वस्त्र पहनाने वाला अवश्य कोई मास्को में अथवा किसी समीपवर्ती गाँव में है।"

बेरिया ने कहा, "मार्टोव! यह तुम्हारा काम ही है कि तुम इसमें अपनी सफाई उपस्थित करो। तुमको यह सिद्ध करना चाहिए कि यह मार्टोव जिसका पत्र में उल्लेख है, तुम नहीं हो। दूसरा यह कि पत्र लिखने वाली ऐमालीना नहीं है।"

"तो मुझे इस व्यक्ति से मिलने का अवसर दिया जाए जिससे यह पत्र मिला है।"

"वह व्यक्ति जर्मन युद्ध में बन्दी था। उसे मार डाला गया है।"

"देखिए कामरेड चीफ! यह पत्र जर्मन भाषा में लिखा गया है और एक जर्मन को भेजा गया है। इस कारण इस पत्र में मेरा उल्लेख नहीं हो सकता जो रूस में रहता है।"

"सब बातों का ध्यान कर यही कहा जा सकता है कि यह पत्र ऐमालीना का है और तुमने उसे यहाँ से भाग जाने में सहायता दी है। इस कारण जब तक तुम अपना अपराध स्वीकार नहीं करते, तुमको 'आइजार बैजान' के लेवर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैम्प में रखने की आज्ञा दे रहा हूँ। तुम जा सकते हो।''

मार्टोव को बन्दी बना जेल में और उसके उपरान्त सरकारी सूचना के अनुसार 'आइज़र बैजान' भेज दिया गया।

: 2 :

उक्त वार्तालाप और मार्टोव को बन्दी बनाने की आज्ञा देने के उपरान्त ही बेरिया युद्ध-कौन्सिल की मीटिंग में क्रैमलिन में आया था। कौन्सिल का काम समाप्त करने के उपरान्त चीफ सेक्रेटरी ने गुप्तचर विभाग के चीफ को अपने कमरे में ले जाकर पूछा, ''रात मैंने कामरेड बेरिया को एक आवश्यक काम के लिये बुलवाया था।''

''कब और कहाँ?'' बेरिया का प्रश्न था। वह स्वीकार नहीं करना चाहता था कि उसने आज्ञा भंग की है।

इस पर चीफ सेक्रेटरी ने पद्‌मदेव को उसके पास भेजने की बात बता दी। बेरिया ने उसके उससे मिलने के लिये आने से इन्कार कर दिया। इस पर चीफ सेक्रेटरी ने कहा, ''मैं इस व्यक्ति से ऊब गया हूँ और इससे छुट्टी पाना चाहता हूँ। यह झूठा है और कायर भी है।''

''कैसे छुट्टी पायेंगे?''

''इसे किसी 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' में भेज दूँगा।''

''इसे तुम मेरे विभाग में भेज दो। मैं इससे ऐमालीना को भगाने वाले की जाँच कराना चाहता हूँ। पीछे उसे और इसे दोनों को समाप्त कर दिया जायेगा।''

''उसमें पता करने के लिये अब क्या रह गया है? वह मार्टोव की शरारत थी। उसे दण्ड मिल जाना चाहिये।''

''कामरेड देव ने झूठ बोला था कि वह शव उसकी पत्नी का ही है। इस कारण मुझे सन्देह है कि वह भी इसके भगाने में सम्मिलित था। अतः दण्ड तो दोनों को ही मिलना चाहिए, परन्तु मै चाहता हूँ कि यदि कोई अन्य भी इस षड्‌यन्त्र में सम्मिलित था तो उसका भी पता लग जाना चाहिए।''

''ठीक है। इसे तुम मिल लो। यदि वह तुम्हारे काम आ सके तो लाओ।''

इस पर बेरिया पद्‌मदेव से मिला और उससे बातचीत के उपरान्त वह चीफ सेक्रेटरी से उसकी गुप्तचर विभाग में बदली की आज्ञा ले आया। तदन्तर पद्‌मदेव बेरिया के साथ ही गुप्तचर विभाग में चला गया।

वहाँ सब कागज़ात जिनका सम्बन्ध ऐमालीना से था, पद्‌मदेव के निरीक्षण के लिए रख दिये गए। सब कागज़ात पढ़ने के उपरान्त पद्‌मदेव ने बताया, 'यह पत्र ऐमालीना की लिखावट में ही है। परन्तु यह मार्टोव कौन है और उसके धन्यवाद के लिये पत्र जर्मन भाषा में और जर्मनी के किसी सैनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पास भेजा गया? यह एक प्रश्न है जिसके उत्तर में ही पूर्ण रहस्य छिपा हुआ है।"

"ठीक है। वह जर्मन सिपाही जिससे यह पत्र मिला है, वह तो मर गया है। इस कारण यह नहीं कहा जा सकता कि पत्र वहाँ भेजने में क्या उद्देश्य हो सकता था?"

"आप मुझे भी बन्दी बना मार्टोव के साथ रख दीजिये। तब मैं उसके मन की छिपी बात पता करने का यत्न करूँगा।"

इस प्रस्ताव पर गुप्तचर विभाग का चीफ गम्भीर विचार में निमग्न हो गया। वह इन दोनों को एक ही बन्दी-गृह में रखना नहीं चाहता था। उसको सन्देह था कि मार्टोव के सम्बन्ध बहुत लोगों से हैं। कहीं वह इस विदेशी विद्वान से मिलकर किसी अन्य प्रकार का षड्यन्त्र न करने लगे। उसने यह कहा, "मार्टोव इस समय बन्दी-गृह में है। परन्तु मैं उसे यहाँ बुला सकता हूँ और तुमसे इसी कार्यालय में भेंट करा सकता हूँ।"

"जैसा उचित समझा जाये, किया जाये। परन्तु इतना स्मरण रखना चाहिए कि इस कार्यालय में मैं उससे घनिष्ट सम्बन्ध नहीं बना सकूँगा जिससे वह अपने मन की बात बता सकेगा।"

"कामरेड देव! तुम्हारा विचार ठीक है, परन्तु यदि तुम्हारे उससे घने सम्बन्ध हो गये तो तुम उसके मन की बात हमें बताओगे भी क्या?"

"अपने विषय में मैं आपको मौखिक वचन ही दे सकता हूँ कि मैं ऐमालीना की सत्य-सत्य कहानी बता दूँगा, परन्तु यदि यह सत्य है कि वह जीवित है और रूसी सीमाओं से पार जा चुकी है तो फिर उसको यहाँ बुलाने का प्रयत्न मैं नहीं करूँगा।"

"किसलिए?"

"मैं उसके स्वेच्छा से विचरने में बाधा खड़ी नहीं करूँगा। यहाँ से किसी भी अन्य देश में उसका जाना और जाने का जोखिम सिर पर लेना यह प्रकट करता है कि उसके लिये मुझसे अधिक आकर्षण कहीं अन्यत्र पैदा हो गया है। मैं इसमें हस्तक्षेप नहीं करूँगा।"

"परन्तु हम तुमको उसके साथ रहने का अवसर देना चाहते हैं।"

"इसके लिये मैं आपका धन्यवाद कर सकता हूँ, परन्तु वह अवसर प्राप्त करना उसकी इच्छा के विपरीत नहीं होगा।"

बेरिया पद्मदेव को चीफ सेक्रेटरी के यहाँ से ले तो आया, परन्तु वह निश्चय नहीं कर सका कि किस प्रकार पद्मदेव को प्रयोग करे? पद्मदेव की बातें सुन उसके मन में आया कि इसे भी '[illegible]' के 'लेबर कैम्प'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में भेज दिया जाये और दोनों को वहाँ मरने दिया जाये। परन्तु ऐमालीना की स्मृति उसके मन में अभी हरी-भरी थी और वह उसको वापस रूस में लाने का कोई उपाय ढूढ़ नहीं सका था। उसने पद्मदेव को कहा, ''आप कोई अन्य उपाय विचार करें। दो बातें विचारणीय हैं। एक तो यह कि मार्टोव और अन्य कौन-कौन व्यक्ति थे जो ऐमालीना को देश से निकल जाने में सहायक हुए थे? दूसरी बात जिसके विषय में आपको कुछ करना है, वह यह कि तुम और ऐमालीना कैसे रूस में इकट्ठे रह सकते हैं?''

पद्मदेव मन में विचार कर रहा था कि जब देश को इतनी घोर आपत्ति का सामना करना पड़ रहा है तो ये अधिकारी कैसी बच्चों की-सी बातों में समय और शक्ति का अपव्यय कर रहे हैं? क्या इनके लिये उसे इस देश में रखना और इस सब मुसीबत को सिर पर लेने का कोई कारण हो सकता था? एक समय उसने कहा था कि रूस अब मानवता के पक्ष में आ खड़ा हुआ है। भला, कैसे मानवता का पक्ष लिया जा रहा है? इस समय यह घटना इस झमेले से निकल जाने की स्वीकृति थी। अब यद्यपि उसने यत्न नहीं किया था, परन्तु उसे वह स्वीकृति मिल सकेगी? किंचित्मात्र भी आशा नहीं थी।

किसी प्रकार का कोई मार्ग न देख उसने कह दिया, ''मैं आपका मूल्यवान समय इस छोटे-से काम में नष्ट करना नहीं चाहता। मुझे इस विषय पर विचार करने दीजिये। मैं आपको इस विषय में कोई योजना कुछ ही दिनों में बता सकूँगा। आप मुझे बतायें कि यहाँ मार्टोव किन-किन लोगों से घनिष्ठ सम्बन्ध रखता था?''

''तुम इस विभाग के कर्मचारियों से हिल-मिल कर जानो।''

''ठीक है। मुझे समय दीजिये।''

''उस दिन पद्मदेव उस कार्यालय में रहा। मध्याह्न का भोजन तो वह क्रैमलिन में ही कर आया था। अब मध्याह्नोत्तर के चाय का समय हो गया था। उसने वहाँ के कार्यालय की कैन्टीन में जाकर चाय पी और वहाँ उसने वहाँ के लोगों से मेल-जोल बनाने का यत्न आरम्भ कर दिया।

उसकी मेज़ पर बैठे चाय पी रहे एक व्यक्ति ने पद्मदेव से पूछ लिया, ''आप विश्वविद्यालय में प्राध्यापक नहीं थे क्या?''

''हाँ, परन्तु विश्वविद्यालय बन्द हो जाने से मुझे पहले चीफ सेक्रेटरी के कार्यालय में काम दिया गया था और अब यहाँ काम दिया गया है।''

''आप किस काम पर नियुक्त हुए हैं?''

''मुझे एक विषय पर जाँच के लिए लगाया गया है। मैं उस पर काम कर रहा हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे अधिक उस व्यक्ति ने नहीं पूछा। अब उसने कह दिया "पिछले वर्ष मैं विश्वविद्यालय में पढ़ता था वहाँ आप को देखा करता था। आपको आज यहाँ देख विस्मय हुआ है।"

"इसमें विस्मय करने की क्या बात है?"

"यहाँ हमारा काम भले लोगों से नहीं पड़ता और विश्वविद्यालय के अध्यापक उन लोगों के सम्पर्क में आयें, यह कोई शोभा की बात नहीं। हम आपको, मेरा मतलब है कि अध्यापक वर्ग को अति श्रेष्ठ व्यक्ति मानते हैं।"

"कदाचित् बुरे कामों में कुछ भले लोग भी फँस रहे हैं।"

इस पर सामने बैठा व्यक्ति मुस्कराता हुआ कहने लगा, "हाँ, आज के काल में भले और बुरे में भेद-भाव करना कठिन हो गया है। जिनको हम भले समझ रहे थे, वे बुरे सिद्ध हो रहे हैं।"

"नहीं कामरेड! लोग तो बदल नहीं रहे। जो लोग भले थे, वे अब भी भले ही हैं। बुरे सदा बुरे ही रहते हैं। काल का आवरण ही उनको श्वेत से काला और काले से श्वेत प्रकट कर रहा है। काल का प्रभाव हमारी बुद्धियों पर भी होता है और प्रायः हम ही श्वेत को काला और काले को श्वेत देखने लगते हैं। भला-बुला तो जन्म के समय ही बन जाता है।"

"मनुष्य जन्म के उपरान्त बदलता नहीं है क्या?" दूसरे ने अपनी शिक्षा को छोटा किया जाता समझ कुछ उत्तेजित हो पूछ लिया।

पद्मदेव कई दिन के उपरान्त बौद्धिक वार्त्तालाप में उलझ रहा अनुभव करने लगा था। जबसे वह क्रैमलिन में कार्य करने लगा था। तब से उससे वार्तालाप करने वाले सोवियत सरकार के अधिकारी ही होते थे और वे अपने संस्कारों, स्वभाव अथवा वातावरण के कारण बुद्धि का प्रयोग करते ही नहीं थे। उनके लिए प्रत्येक कार्य और बात के नियम-उपनियम बने हुए थे और वे उन नियमों-उपनियमों में जकड़े हुए काष्ठ की भाँति शुष्क हो चुके थे। उनमें लचक लेशमात्र भी नहीं रही थी। आज यह सामने बैठा व्यक्ति युक्ति करने लगा था और कुछ जानने की लालसा करता प्रतीत हुआ था। इस पर भी पद्मदेव को सात वर्ष से रूस में रहते हुए सदा सतर्क और सचेत रहने का अभ्यास हो गया था। इस कारण उसने सावधानी से उत्तर दिया-

"बदलता है परन्तु ऊपर-ऊपर के छिलके में ही। भीतर की गुठली तो उसकी वैसी-की-वैसी ही रहती है। कुछ ही लोग हैं जो अपने भीतर के मानव को विपरीत पाते हैं तो दुःख अनुभव करते हैं। प्रायः लोग अपने भीतर झाँकने की योग्यता रखते ही नहीं और कभी रखते हैं तो अभ्यास न रहने से झाँकने की सामर्थ्य खो चुके होते हैं। अतः उनकी शिक्षा, वातावरण तथा विवशता से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहरी छिलके से उत्पन्न परिवर्तन ही दिखाई देते हैं और भीतर की बात उन्हें समझ आती ही नहीं।''

सामने बैठे व्यक्ति ने कैन्टीन के हाल में लगी घड़ी को देखा तो कहा, ''कामरेड प्रोफेसर! क्षमा करें, मैं इस समय एक आवश्यक काम पर जा रहा हूँ। इस कारण आपकी रुचिकर बात को आगे सुन नहीं सकता। यदि आप इस विभाग में स्थायी रूप में आ गए हैं तो यह चर्चा आगे चल सकेगी। यहाँ कुछ और भी हैं जो इस प्रकार की तार्किक बातों में रुचि रखते हैं।''

इतना कह वह उठ पड़ा। पद्मदेव भी अपनी चाय समाप्त कर चुका था। वह भी उठा और पूछने लगा, ''मैं कामरेड का नाम जान सकता हूँ क्या?''

''सर्वगोविस्की।''

पद्मदेव ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा, ''आशा करता हूँ कि आपसे फिर मिल सकूँगा।''

''आप आजकल रहते कहाँ हैं।

''अभी तो विश्वविद्यालय वाले अपने क्वार्टर में ही रहता हूँ।''

''आप से मिलूँगा।''

पद्मदेव क्रैमलिन से सदा रात के आठ बजे छुट्टी पाया करता था और वह रात के भोजन के समय विश्वविद्यालय कैन्टीन में जा पहुँचा करता था। भोजन कर वह सो जाया करता था। आजकल उसका स्वाध्याय नहीं चल रहा था।

आज वह सायं पाँच बजे क्वार्टर पर पहुँच गया था। वह देख रहा था कि उसकी देख-रेख हो रही है। ज्यों ही वह गुप्तचर विभाग के कार्यालय से निकला कि उसके पीछे-पीछे ही एक कार्यालय का व्यक्ति निकला और उसके समीप बस स्टैण्ड पर आ खड़ा हुआ। जब बस आई तो पद्मदेव बस में सवार हो गया। इस पर वह व्यक्ति भी सवार हो गया। बस कुछ दूर ही गयी थी कि वह व्यक्ति पद्मदेव के समीप से उठ साथ वाली सीट पर एक युवती के समीप जा बैठा। वह उससे कुछ कह कर अगले बस के ठहरने के स्थान पर बस से उतर गया। उसी समय वह युवती अपने स्थान से उठ पद्मदेव के साथ के खाली स्थान पर आ बैठी।

इस समय पद्मदेव को सन्देह हुआ कि कदाचित् वह 'शैडो' (पीछा) किया जा रहा है। इस प्रकार एक गुप्तचर से दूसरे गुप्तचर के हाथ में दिए जाने की बात वह निकोविस्की से सुन चुका था। इससे वह समझने लगा कि अब उसके इस देश में स्वतन्त्रता से विचरने के दिन समाप्त हो चले हैं। इससे वह इन जासूसों के 'रिंग' (घेरा) को तोड़ बाहर निकलने पर विचार करने लगा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय बस विश्वविद्यालय क्षेत्र में जा पहुँची थी। वह उठा और नीचे उतरा तो साथ के स्थान पर बैठी युवती भी उठकर बस से नीचे उतर आयी। पद्मदेव अब सतर्क था। वह स्वयं उस युवती को देखने लगा था कि वह किधर जा रही है? युवती ने एक क्षण तक ही अन्य लड़की से कुछ कहा और स्वयं वह भागकर पुनः बस में चढ़ गई। यह लड़की कुछ काल तक अन्यमनस्क भाव से आकाश की ओर देखती हुई खड़ी रही और जब पद्मदेव चला तो उसके साथ चल पड़ी इस पर पद्मदेव को विश्वास हो गया कि उसका पीछा किया जा रहा है।

पद्मदेव को वहाँ के रहने वाले जानते थे। उनको विदित था कि वह चीफ सेक्रेटरी के साथ रहने वाला अधिकारी है। अतः सब उसका मान करते थे और जो कोई भी उसको मिल जाता, वह उसे आदरयुक्त भाव में 'सैल्यूट' करता था।

पद्मदेव का एक पड़ोसी था। जब वह अपने क्वार्टर में जाने लगा तो वह लड़की उसी पड़ोसी के क्वार्टर में चली गयी। पद्मदेव ने उसे उस क्वार्टर में जाते देखा तो वह अपने क्वार्टर में घुस द्वार बन्द कर पर्दे के पीछे खड़ा हो खिड़की के शीशे में से उसी क्वार्टर को देखने लगा। एक मिनट के उपरान्त ही पड़ोसी की पत्नी बाहर निकली और चारों ओर देख पद्मदेव के क्वार्टर पर आ खड़ी हुई। उसने द्वार खटखटाया तो पद्मदेव ने द्वार खोल दिया।

द्वार खोलते हुए एक क्षण में ही पद्मदेव समझ गया कि उस पर जासूसी करने वाले पड़ोसी की स्त्री ही हो सकती है। जब से वह क्रैमलिन में कार्य करने जाने लगा था तो ये लोग उससे कम मिलते थे। कई दिन के उपरान्त आज यह स्त्री उससे मिलने आयी थी।

पद्मदेव ने द्वार खोला और पूछा, "कामरेड सिस्टर! कुछ काम है क्या?"

"नहीं। आज आप समय से बहुत पूर्व आये हैं। अतः पूछने आयी हूँ कि आप स्वस्थ तो हैं?"

"हाँ, मैं सर्वथा स्वस्थ हूँ। बात यह है कि मेरी बदली हो गयी है। मैं अब एक दूसरे विभाग में काम करने लगा हूँ। वहाँ से जल्दी ही छुट्टी हो गयी है।"

"यहाँ की कैन्टीन तो रात के हवाई आक्रमण से सब विनष्ट हो गयी थी। आज मध्याह्न से कैन्टीन दक्षिण कक्ष में चली गयी है।"

"यह तो बहुत दूर हो गयी है।"

"हाँ, सैनिक शिविर भी यहाँ से हटाया जा रहा है और कदाचित् हमको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी यहाँ से कहीं अन्यत्र जाने के लिए आज्ञा हो जाएगी।"

"तो अब यहाँ कौन लोग आ रहे हैं?"

"यह तो युद्ध-बन्दियों के लिए खाली किया जा रहा है।"

पद्मदेव तो अपने पर इस स्त्री को जासूसी करने वाली मान विस्मय में पड़ गया था। उसको उसके घरवाले पर सन्देह हो सकता था, परन्तु वह इस स्त्री को एक भली स्त्री समझता था। वह यह भी जानता था कि जासूसी का काम भले लोग नहीं कर सकते। पद्मदेव चुपचाप अपने मन की बात पर विचार कर रहा था।

इस समय उस स्त्री ने बात बदल दी। उसने पूछा, "आपकी पत्नी और बच्चों का कुछ पता चला है?"

"नहीं। अभी कुछ भी पता नहीं चला। मेरे तो मन में यही बात बार-बार आती है कि वह और बच्चे मर चुके हैं।"

इस पर स्त्री शोक प्रकट करने लगी। पद्मदेव ने पूछ लिया, "कामरेड, आपके 'हसबैण्ड' घर पर हैं?"

"नहीं। वह तो 'फ्रण्ट' पर भेज दिये गए हैं।"

"कब से?"

"उसे गए दस दिन से ऊपर हो गए हैं।"

"किस 'फ्रण्ट' पर हैं?"

"यह तो मुझे बताया नहीं गया। तीन दिन हुए उसके सही-सलामत होने और शत्रुओं का सफाया करने का समाचार आया था।"

: 3 :

उस रात 'एयर रेड' नहीं हुई और पद्मदेव शान्ति से सो रहा था कि उसके बिस्तर के पास रखे टेलीफोन की घण्टी बजी। पद्मदेव उठा और टेलीफोन कान से लगा बोला, "देव बोल रहा हूँ।"

"मैं स्टालिन।"

"कामरेड चीफ सेक्रेटरी?"

"हाँ।"

"आज्ञा करिए।"

"आपसे सम्मति करनी है।"

"टेलीफोन से ही?"

"नहीं। तुम क्रैमलिन आ जाओ।"

"इस समय सवारी नहीं मिल सकती।"

"सवारी भेज दी है। वह पहुँचने वाली ही होगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं उपस्थित हो जाऊँगा। परन्तु कामरेड, आज मैं गुप्तचर विभाग के कामरेड चीफ के अधीन हूँ। अत: घर से बाहर जाने की स्वीकृति उनसे मिल जानी चाहिये।"

"मैंने कामरेड चीफ को टेलीफोन किया था। वह अपने कमरे में नहीं है। उसकी 'मिस्ट्रेसेज़' का न तो पता है और न ही उनमें से किसी के घर टेलीफोन है। इस पर भी मैं यह स्वीकृति ले लूँगा। अब तो तुम चले आओ।"

पाँच मिनट उपरान्त उसके द्वार पर एक जीप आ खड़ी हुई। इस समय तक पद्मदेव वस्त्र पहन, ऊपर चैस्टर पहने, बूट इत्यादि कसे खड़ा था।

जीप के आते ही उसने द्वार खोला और क्रैमलिन में रहने वाले चीफ सेक्रेटरी के अंगरक्षक को देख पद्मदेव ने कह दिया, "कहाँ से आये हैं।"

"क्रैमलिन से। चीफ सेक्रेटरी याद कर रहे हैं।" अंगरक्षक ने कहा।

पद्मदेव विचार कर रहा था कि इस मौखिक आज्ञा पर चलना चाहिए अथवा नहीं? उसे ज्ञात था कि ये लाग झूठ बोल सकते हैं इस समय उसकी दृष्टि पड़ोस के क्वार्टर पर चली गई। पड़ोसी की स्त्री द्वार खोल बाहर झाँकती हुई दिखाई दी। वह समझ गया कि वह इस समय उसके कहीं जाने पर परेशानी अनुभव करने लगी है।

पद्मदेव उसकी चिन्ता दूर करने के लिए उसके सामने जा खड़ा हुआ और बोला, "कामरेड सिस्टर! मैं क्रैमलिन को जा रहा हूँ। चीफ सेक्रेटरी ने बुला भेजा है।"

इस पर तो वह स्त्री समझ नहीं सकी कि कामरेड देव उसे क्यों बताने आया है? पद्मदेव ने उसका संशय निवारण करने के लिए कह दिया, "वह लड़की सुबह पता करने आए तो उसे कह देना कि मैं क्रैमलिन में गया था।"

"उसको क्यों बता दूँ?" उस स्त्री ने पूछा।

"जिससे जासूसी की 'चेन' न टूटे और वह वहाँ पहुँच जाये।"

इस पर तो वह स्त्री झेंप गयी और बोली, "नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। आप पर जासूसी नहीं है।"

पद्मदेव ने इस बात का उत्तर नहीं दिया और जीप पर सवार हो गया। पन्द्रह मिनट में उसे चीफ सेक्रेटरी के सामने उपस्थित किया गया। चीफ सेक्रेटरी पद्मदेव को सामने उपस्थित हो सैल्यूट करते देख हँस पड़ा। पद्मदेव इस हँसने का अर्थ नहीं समझ सका। अत: वह प्रश्नभरी दृष्टि में उसका मुख देखता रहा। एकाएक चीफ सेक्रेटरी ने गम्भीर हो अंगरक्षक को हाथ से संकेत किया कि वह बाहर चला जाये। जब वह चला गया तो उसने पद्मदेव को बैठने के लिए कहा "हमें अभी-अभी सूचना मिली है कि जापान ने एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घण्टा पूर्व अमेरिका के सैनिक अड्डे 'पर्ल हार्बर' पर आक्रमरण कर दिया है और अमेरिका को बहुत हानि पहुँचायी है।''

पद्मदेव ने कमरे में लगी घड़ी में समय देखा और कह दिया, ''रविवार सात दिसम्बर प्रात:काल? जापान ने बहुत ही गलत दिन चुना है।''

''तो जापान पराजित होगा?''

''इतना कहा जा सकता है, रूस के लिए यह शुभ अवसर है।''

''क्यों?''

''इंग्लैण्ड और अमेरिका युद्ध में मित्र हो जायेंगे। रूस को भी उनके साथ सम्मिलित होने का अवसर मिलेगा और रूस, ब्रिटेन, अमेरिका और इनके सहायक कनाडा, आस्ट्रेलिया और हिन्दुस्तान यह संसार में इतना बड़ा गुट्ट होगा कि जापान, जर्मनी और इटली भूमि चाट जायेंगे।''

''परन्तु मुझे भय है कि यदि हमने इंग्लैण्ड और अमेरिका का साथ दिया तो जापान रूस पर आक्रमण कर देगा।''

''यदि जापान के नीतिज्ञों में किंचित्मात्र भी बुद्धि हुई तो वे रूस के साथ अपनी संधि पालन करेंगे।''

''यह समझाओ कि क्यों पालन करेंगे?''

''रूस से जापान युद्ध कर नहीं सकेगा जब तक पूर्वी-दक्षिण एशिया पराजित और उसके अधिकार में नहीं हो जाता। इसको यदि जापान जीतता ही चला गया तब भी दो वर्ष तक लग जायेंगे। तब तक हम हिटलर को वापस जर्मन में लौटा देंगे। ...और पूर्वी यूरोप पर हमारा एकाधिकार हो जायेगा। उस समय रूस एक ऐसी शक्ति हो जायेगी कि जिसका विरोध भूमण्डल की सब शक्तियाँ मिलकर भी नहीं कर सकेंगी।''

''परन्तु हम जर्मनी को पराजित कर सकेंगे क्या?''

आज के साढ़े पाँच मास पूर्व जिस दावे से कहा जा सकता था कि हम जर्मनी को पराजित करेंगे, उससे कहीं अधिक विश्वास के साथ आज कहा जा सकता है कि हमारी विजय होगी। एक बात आपको और बता सकता हूँ कि रूस की अमेरिका से मित्रता इंग्लैण्ड की तुलना में अधिक लाभदायक होगी।''

''वह तो कम्युनिज़्म का घोर शत्रु है।''

''प्रत्यक्ष रूप में और वह भी कम्युनिस्टों की एक भूल से।''

''यह मैं समझा नहीं। तनिक व्याख्या से समझाओ।''

''प्रथम, अमेरिका की जीवन-मीमांसा और सोवियत संघ की जीवन-मीमांसा मूल रूप में एक ही है। दोनों जड़वादी विचारधारा की शाखाएं हैं। दोनों इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन में सुख प्राप्ति को किसी परलोक के सुख पर उपमा देते हैं। यह है मूल दोनों देशों की जीवन-पद्धतियों का। अन्तर जो दिखायी देता है वह देखने का है, वास्तविक नहीं।''

''तो क्या निर्धन और धनी में जो अन्तर वहाँ दिखायी देता है, वह कम्युनिज़्म की विचारधारा के विपरीत नहीं है?''

'यह अन्तर की बात तो सर्वसाधारण को बताने की है। यह दोनों ने अपनी-अपनी दुकान का विज्ञापन बना रखा है। देखिये, कामरेड चीफ सेक्रेटरी! अन्तर तो हमारे यहाँ भी है। जो कुछ मुझे मिलता है वह एक इस्पात के कारखाने में काम करने वाले मजदूर से कहीं अधिक है। हाँ, यह अन्तर वहाँ अधिक है और यहाँ कम है। यह अधिक और कम से सिद्धान्त में अन्तर नहीं पड़ जाता। उनके पास हमसे अधिक प्राकृतिक साधन हैं। इस कारण उनके एक मज़दूर को हमारे मज़दूर से अधिक मिलता है। इसी कारण दोनों में अन्तर बढ़ गया है। ज्यों-ज्यों यहाँ आर्थिक सम्पन्नता बढ़ेगी त्यों-त्यों यहाँ भी अन्तर बढ़ेगा। एक बात है कि हम इस आर्थिक अन्तर को बल-पूर्वक कम करने का यत्न करते रहते हैं। वे भी कम करने का यत्न करते हैं, परन्तु आर्थिक शक्तियों के द्वारा राजसी शक्तियों से नहीं।''

''इस बात में मैं आपसे सहमत नहीं हूँ।''

''मैं अर्थ-शास्त्री नहीं। मैं इतिहास का ज्ञाता होने से इतिहास की बात ही कर सकता हूँ। यह सम्पत्ति पर एकाधिकार और बलपूर्वक समानता लाने के परीक्षण पहले भी किये जा चुके हैं और वे सफल सिद्ध नहीं हुए। हिन्दुस्तान में संयुक्त परिवार एक प्राकृतिक विधान है जिससे ऊँच-नीच बराबर होती रहती है। मनुष्य उसके अनुसार वही कुछ कर रहा है जो आप राजसी शक्ति से करते रहते हैं।''

''परन्तु पूँजीपति देशों में कई-कई पीढ़ियों तक ज़मींदारियाँ, साहूकारों तथा कारखानों का स्वामित्व देखा जाता है। यहाँ तो जब किंचित्मात्र ऊँच-नीच दिखायी देती है, वह हम मरने के समय बराबर कर देते हैं।''

''हाँ, यह तो है कि उनके प्राकृतिक विधान में इतनी उतावली देखने में नहीं आती जो बात आप एक ही पीढ़ी में करने का यत्न करते हैं। वह वहाँ कई पीढ़ियों में सम्पन्न होती है। इस पर भी सम्पन्न होती है। धनी निर्धन होते हैं और निर्धन धनी होते हैं।''

''परन्तु पूँजी के बल पर धनवान बने रहने की बात तो एक ऐसा अन्तर है जो तुम भी देख सकोगे। हमारे यहाँ पूँजी के बल पर धनवान होने की स्वीकृति नहीं हो सकती।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उस सीमित अवधि में जो आपने निश्चय कर रखी है, पूँजी के बल पर धनवान होने की स्वीकृति है। उदाहरण के रूप में मैं विश्वविद्यालय का प्राध्यापक हूँ। मुझे अधिक वेतन और सुविधाएँ प्राप्त हैं। क्या यह मेरी विद्वत्ता के कारण नहीं? मेरी विद्वत्ता ही मेरी पूँजी है जो मैंने बहुत तपस्या से उत्पन्न की है।

"देखिये कामरेड! अन्तर यह नहीं कि पूँजी के बल पर आय में वृद्धि और फिर उस वृद्धि में से पुनः वृद्धि की स्वीकृति यहाँ है अथवा नहीं? यह बात तो यहाँ पर भी है। अन्तर केवल यह है कि आप पूँजी उसको समझते हैं जो भूमि से सम्बन्ध रखती है। दूसरे, पूँजी के बल से उपार्जन पर आपने राज्य की ओर से एक सीमा बाँध रखी है। वैसे तो राज्य की ओर से सीमा अमेरिका इत्यादि देशों की ओर से भी बाँधी गयी है, परन्तु वह वहाँ के आर्थिक प्रपंच के अधीन है। उसका राजनीति से सम्बन्ध नहीं है।"

"यह सब बकवास है! तुम यह बताओ कि कम्युनिस्ट क्या भूल कर रहे हैं। जिससे अमेरिका रूस का शत्रु माना जा रहा है?"

"कामरेड चीफ सेक्रेटरी! मैंने यह बताया है कि दोनों पद्धतियाँ मूल से एक ही हैं। ऊपर शाखाओं में अन्तर मात्रा में है, सिद्धान्तों में नहीं। वहाँ के मज़दूर यहाँ के मज़दूरों से कम सुखी नहीं हैं। कम्युनिस्ट भूल यह कर रहे हैं कि मूल की समानता को न देख शाखाओं में अन्तर देख झगड़ा करते हैं।

"एक बार इस सैद्धान्तिक समानता का ज्ञान हुआ तो सोवियत रूस संघ और अमेरिका के संयुक्त राज्य संघ में ऐसी गाढ़ मित्रता होगी कि दुनिया भय से काँप उठेगी। मैं तो वह दिन दूर नहीं देखता जब इन दो जीवन-पद्धतियों में मैत्री हो जायेगी। तब संघर्ष होगा जड़वादियों में और आत्मवादियों में। उनमें जो जीवन को जन्म से मरणपर्यन्त मानते हैं और उनमें जो इस शरीर को व्यर्थ की बात मानकर अथवा इसे केवल एक यन्त्र मान, इस यन्त्र के चलाने वाले के कल्याण का ध्यान करते हैं। वह संघर्ष वर्तमान व्यक्तिगत पूँजीवाद और राज्यगत पूँजीवाद में संघर्ष से अधिक भयंकर होगा।"

चीफ सेक्रेटरी ने बात बदल दी और पूछ लिया, "तो क्या हमें इंग्लैण्ड की भाँति अमेरिका से भी मित्रता कर लेनी चाहिए?"

"हाँ। जापान से संधि की बात स्पष्ट कर देनी चाहिए। अर्थात् आपकी मित्रता जर्मनी और इटली के विरोध तक ही रहेगी।"

चीफ सेक्रेटरी उठ खड़ा हुआ। उठते हुए उसने कहा, "कामरेड देव! अब कहाँ जाना पसन्द करेंगे? अपने क्वार्टर में अथवा यहाँ ही शेष रात व्यतीत करेंगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरे लिये कोई अन्तर नहीं पड़ता। यह सरकारी गुप्तचर विभाग में पता करना चाहिए कि जहाँ उनको मुझ पर जासूसी करने में सुभीता रहे।"

चीफ सेक्रेटरी हँस पड़ा। हँसकर कहने लगा, "अभी दो बजे हैं। चार घण्टे तुम निश्चिन्त होकर यहाँ आराम कर सकते हो। मैं कामरेड से सात बजे मिलूँगा। तब ही आपके रहने का स्थान निश्चय हो जायेगा। विश्वविद्यालय में रहने का अब कोई प्रयोजन नहीं रहा।"

: 4 :

चीफ सेक्रेटरी के कमरे से निकल जाने पर उसका अंगरक्षक आया और पद्‌मदेव को एक कमरे में ले गया, जहाँ उसको सोने के लिये कहा गया। वहाँ सोने के लिये सोफा इत्यादि था। पद्‌मदेव वहाँ लेट गया तो अंगरक्षक बाहर निकल गया। पद्‌मदेव देख रहा था कि इस पूर्ण कार्यक्रम में कुछ प्रच्छन्न कारण भी अवश्य है। इतना पूछना मात्र तो दिन निकलने की प्रतीक्षा भी कर सकता था। वह कुछ न समझता हुआ सोने का यत्न करने लगा।

यथार्थ बात यह थी कि रात के दो बजे अमेरिका के युद्ध में सम्मिलित होने अथवा किये जाने पर सोवियत रूस की भावी नीति पर विचार के लिये 'प्रेजीडियम' की विशेष बैठक होने वाली थी। चीफ सेक्रेटरी पद्‌मदेव से बात कर 'कॉन्फ्रेंस रूम' में चला गया। वहाँ 'प्रेज़ीडियम' के अन्य सदस्य आ रहे थे।

अभी मीटिंग आरम्भ नहीं हुई थी कि बेरिया उठकर चीफ सेक्रेटरी के समीप आ पूछने लगा, 'कामरेड देव अपने क्वार्टर में नहीं हैं?"

"तो क्या हुआ।"

"उसकी गुप्तचर विभाग को बहुत आवश्यकता है।"

"मेरा विचार है कि गुप्तचर विभाग से अधिक उसकी सोवियत रूस की विदेश-नीति निर्माण करने के लिए आवश्यता है।"

"वह क्या जानता है विदेश-नीति के विषय में?"

"वास्तव में हममें से पृथक्-पृथक् कोई भी कुछ नहीं जानता। सब मिलकर ही हम एक नीति निर्धारित करते हैं। इस संयुक्त निर्णय में उसका भी योगदान है। वह एक विदेशी नागरिक होने के कारण 'प्रेज़ीडियम' में नहीं आ सकता। इस कारण मैं उससे पृथक् में सम्मति किया करता हूँ।"

"परन्तु उसके भाग जाने का डर है।"

"वह कैसे यहाँ से भाग सकता है?"

"जैसे ऐमालीना और उसके माता-पिता भाग गए हैं और मुझे अभी-अभी सूचना मिली है कि मार्टोव बन्दी-गृह से लापता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लापता है? वह कैसे?"

"यह जाँच की जा रही है।"

चीफ सेक्रेटरी कुछ काल के लिए गम्भीर विचार में लीन रहा, परन्तु तुरन्त ही बोला, "इसका अर्थ यह है कि वह तुम्हारी देख-रेख से क्रैमलिन की देख-रेख में अधिक रक्षित है।"

"तो वह यहाँ है?"

"हाँ, परन्तु वह जानता है कि उस पर तुम्हारा विभाग जासूसी करता है। उसने मुझसे कहा है कि मैं उसके विषय में तुम्हारे विभाग से जान लूँ कि उस पर जासूसी करने के लिए कहाँ सुभीता रहेगा?"

बेरिया मुस्कराया और बोला, "बहुत ही चतुर है यह हिन्दुस्तानी।"

"परन्तु वह हमारे विरुद्ध भी है क्या?"

"यही तो मुसीबत है। मेरे पास इस विषय में कोई प्रमाण नहीं।"

"तो उसे यहाँ रहने दो। तुम भी उससे यहाँ मिल सकोगे।"

इस समय मीटिंग आरम्भ हो गई। मालाटोव ने बताया कि अभी तक अमेरिका ने किसी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा नहीं की, परन्तु यह आशा की जा रही है कि कल अर्थात् आठ दिसम्बर को 'प्रेजीडेण्ट' एक घोषणा करने वाला है। उस घोषणा में वह क्या कहता है, सब सम्बन्धित देश प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

चीफ सेक्रेटरी ने कहा, "इस पर भी अमेरिका के प्रधान रूज़वैल्ट ने यह आज्ञा दे दी है जापानी जहाज़ों को जहाँ भी देखें, डुबो दें। यही आज्ञा आज से दो दिन पूर्व जर्मन जंगी जहाज़ों और पनडुब्बियों के विषय में पहले ही दी जा चुकी है।

"इस कारण हमारे लिये विचारणीय बात यह है कि जापान और अमेरिका में युद्धारम्भ हो गया है। घोषित हो अथवा न हो। इस अवस्था में हमारा अमेरिका के साथ क्या सम्बन्ध है? मित्र अथवा शत्रु का?"

मालाटोव ने कहा, "शत्रु तो हम हैं नहीं। जापान से हमारा यह समझौता है कि पाँच वर्ष तक हम एक-दूसरे पर आक्रमण नहीं करेंगे। अतः हमको इसका पालन करना चाहिए। मेरी यह धारणा है कि जापान भी समझौते का पालन करेगा। उसका इसी में लाभ है और हम अपनी पूर्ण शक्ति जर्मनी को पराजित करने में लगायेंगे।"

इस पर चीफ सेक्रेटरी ने कहा, "मेरी सूचना यह है कि अमेरिका जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा नहीं करेगा, परन्तु जर्मनी और इटली यह युद्ध घोषणा करेंगे। परिणाम वही होगा जो अमेरिका के घोषणा करने से होने वाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। इस प्रकार जर्मनी, इटली और जापान एक ओर होंगे और इंग्लैण्ड, रूस और अमेरिका दूसरी ओर होंगे। फ्रांस की स्वतन्त्र सरकार भी हमारी ओर होगी। यद्यपि वह कुछ अधिक सहायता नहीं कर सकेगी। इसमें समस्या यह है कि हमको जापान के साथ अपनी सन्धि की बात मित्र राष्ट्रों को बता देनी होगी।

"जापान को हम आश्वासन देंगे कि हम उसके विरुद्ध युद्ध नहीं कर रहे और उसे भी हमारे विरुद्ध युद्ध नहीं करना चाहिए। इस पर भी हमको जापान की ओर से सतर्क रहना होगा।"

मालाटोव को आशा नहीं थी कि जर्मनी, अमेरिका के विरुद्ध युद्ध-घोषणा करेगा। इस कारण उसने मुस्कराते हुए कहा, "मैं जर्मन वालों को इतना मूर्ख नहीं समझता कि वे अमेरिका को यूरोप की राजनीति में हस्तक्षेप का निमन्त्रण दें। मैं अपने लिए भी यह समझता हूँ कि अमेरिका को इस महाद्वीप पर बुलाना एक दैत्य को बुलाने के समान होगा।"

"मेरी धारणा इसके विपरीत है।" चीफ सेक्रेटरी ने पद्मदेव के कथन के आधार पर वक्तव्य दे दिया, "अमेरिका से हमारी मित्रता हितकर होगी। अमेरिका इंग्लैण्ड से अधिक हमारा हितकर सिद्ध होगा।"

"यह सम्मति उस हिन्दुस्तानी की तो नहीं जिसको विश्वविद्यालय में बाँध रखा था।"

चीफ सेक्रेटरी ने कुछ विचारकर कहा, "है तो उसी की, परन्तु मैं देख रहा हूँ कि उसके सब अनुमान आज तक ठीक सिद्ध हुए हैं।"

इस पर सब चुप कर गये। यह निश्चय हो गया कि दो-तीन दिन और ठहरा जाये; तब पुनः 'प्रेज़ीडियम' की बैठक बुलायी जाये और फिर उचित घोषणा की जाये।

: 5 :

मीटिंग के उपरान्त गुप्तचर विभाग का चीफ और चीफ सेक्रेटरी दोनों मीटिंग-रूम से बाहर इकट्ठे निकले। बेरिया ने कहा, "मैं कामरेड देव से मिलना चाहता हूँ।"

"इस समय वह सो रहा है। मैंने उसको सात बजे मिलने के लिये कहा है।"

बेरिया ने घड़ी पर समय देखा। उस समय तीन बज रहे थे। उसने कह दिया, तो मैं अपने कमरे में आराम कर रहा हूँ। मैं भी सात बजे उससे मिलने आऊँगा।"

ठीक सात बजे बेरिया चीफ सेक्रेटरी के 'स्टडी-रूम' में आ पहुँचा। वह पद्मदेव से भेंट के लिये तैयार बैठा था। चीफ सेक्रेटरी ने कहा, "मैंने उसे यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही रख लेने का विचार कर लिया है। तुम भी अपने विभाग के लोगों को क्रैमलिन के बाहर नियुक्त कर दो जिससे वह जब भी यहाँ से बाहर जाये तो उसको 'शैडो' (पीछा) कर सको।

''देखो कामरेड बेरिया! हमारा इसमें स्वार्थ कुछ नहीं होना चाहिये। मेरा तो कभी भी इसमें स्वार्थ नहीं था। तुम्हारा उसकी पत्नी के कारण था, परन्तु वह अब नहीं है। वह वापस नहीं लायी जा सकती। उसकी हत्या तो करायी जा सकती है, परन्तु पकड़ कर यहाँ नहीं लायी जा सकती।

''मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि तुम्हारा वह स्वार्थ भी अब उसमें नहीं है। इस कारण देश का हित यह है कि उसे स्वतन्त्रता से सोवियत संघ के पक्ष में अपना ज्ञान प्रयोग करने दें। वह यहाँ से भाग न जाये, यही देखने की बात है। उसने वचन दिया है कि जब तक जर्मनी पराजित नहीं हो जाता, वह स्वेच्छा से सोवियत संघ की सेवा करेगा।

''अतः उसे यहाँ ही रहने दिया जाये। मैं उसे पुनः अपना परामर्शदाता बना लूँगा।''

''तो उसे बुलाइये। मैं उससे मार्टोव के विषय में एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ। मुझे यह सूचना अभी-अभी मिली है कि रात कामरेड देव के वहाँ से चले आने के उपरान्त कोई व्यक्ति उसके सोने के कमरे की खिड़की पर संकेत कर रहा था। जब उसकी दृष्टि हमारे विभाग के व्यक्ति पर पड़ी तो वह वहाँ से चला आया था। मेरा विचार है कि वह मार्टोव था।''

''कामरेड बेरिया! तुम्हारा विभाग बहुत दुर्बल हो गया है। तुम रात को अपनी 'मिस्ट्रेसेज़' के साथ सोये रहते हो और उसी समय यह सब खराबियाँ होती हैं।''

''बात यह है कि पहले मुझे यह अधिकार दिया गया था कि मैं जिसको चाहूँ, गोली से मरवा सकता था। जर्मनी से संधि होने के समय से मेरा यह अधिकार छिन गया है। यही कारण है कि मेरे प्रबन्ध में शिथिलता आ गयी है।''

''परन्तु उससे कई निर्दोष भी तो मारे जाते थे?''

''यदि एक चोर को मारने के लिये दस भले लोग भी मार डाले जायें तो हानि नहीं। चोर मारा जाना चाहिये। मेरा सिद्धान्त था कि जब तक असली चोर न मिले तब तक जो भी सामने आये, मारते चले जाओ। इसी से मैंने व्यवस्था बनायी थी। यह व्यवस्था भंग हुई है। इसमें कारण मेरे अधिकारों में कमी किया जाना है।''

''इस पर 'प्रेसीडियम' में विचार करेंगे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना कह चीफ सेक्रेटरी ने घण्टी बजायी। अंगरक्षक भीतर आया तो उसने कहा, "कामरेड देव को यहाँ ले जाओ।"

अंगरक्षक ने बताया, "वह अभी सोकर उठा प्रतीत नहीं होता।"

"तो उसे जगा दो और यहाँ ले जाओ। वह 'बाथ-रूम' में पीछे जायेगा। हम उसकी प्रतीक्षा में बैठे हैं।"

अंगरक्षक गया और दो मिनट में लौट आया। उसके मुख पर परेशानी स्पष्ट अंकित थी। दोनों अधिकारी उसके मुख पर प्रश्न-भरी दृष्टि से देख रहे थे। अंगरक्षक ने झिझकते हुए कहा, "कामरेड देव वहाँ नहीं है जहाँ सो रहा था।"

इस पर दोनों अधिकारी चौंककर खड़े हो गये। बेरिया ने कहा, "नहीं है? कहाँ गया?"

इस पर चीफ सेक्रेटरी ने पूछ लिया, "और तुम यहाँ क्या कर रहे हो? उसको तुरन्त ढूँढ़ों। वह यहीं किसी कमरे में छिपा होगा।"

बेरिया ने सामने रखे टेलीफोन से अपने कार्यालय से सम्पर्क बनाया। उसने यह कह दिया, "कामरेड पद्मदेव लापता है। उसको पकड़ने का प्रबन्ध करना चाहिए। वह क्रैमलिन से भागा है।"

पाँच मिनट में पूर्ण क्रैमलिन के सब स्थान ढूँढ़ डाले गए और यह भी पता चला कि क्रैमलिन के द्वार पर गुप्तचर विभाग में कई लोग चौकसी कर रहे थे।

जब अंगरक्षक ने पद्मदेव को चैस्टर उतार, परन्तु अन्य वस्त्र पहने ही सोफा पर लेटते देखा तो वह एक बत्ती के अतिरिक्त और सब बत्तियाँ बुझा बाहर चला गया। उसके जाने के पाँच मिनट के भीतर पद्मदेव को कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि कोई कमरे में चल रहा है। पद्मदेव आँखें मूँदे सोने का यत्न कर रहा था। उसने आँखें खोलीं और देखा कि कोई व्यक्ति लम्बा कोट पहने दीवार के साथ-साथ खिसकता हुआ उसकी ओर आ रहा है।

इस पर वह लपक कर उठ खड़ा हुआ। उसके खड़े होते ही चोरी-चोरी कमरे में घुस आने वाले ने मुख पर से कोट के 'हुड' को एक ओर कर अपने होठों पर अँगुली रख चुप रहने का संकेत कर दिया।

यह मार्टोव था। पद्मदेव ने उसे पहचाना और प्रश्न-भरी दृष्टि में उसके मुख पर देखने लगा। मार्टोव ने पद्मदेव के चैस्टर की ओर संकेत किया और फिर अपने पीछे चले आने का अँगुली से संकेत कर दिया।

पद्मदेव ने घड़ी में समय देखा। दो बजकर बीस मिनट हुए थे। वह उठा। उसने अपना चैस्टर पहना और चुपचाप मार्टोव के पीछे हो लिया। कमरे से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकलने और कमरे के 'कॉरिडार' में कुछ दूर तक जाने में वे बहुत सावधान थे। इसके उपरान्त वे दोनों साथ-साथ चल पड़े। मार्टोव ने साथ चलते हुए पद्मदेव को धीरे से कहा, "मैं रूस से बाहर जा रहा हूँ।"

"कैसे?"

"और तुमको भी साथ ले जा रहा हूँ।"

"कहाँ?"

"चुपचाप चले आओ।"

इस समय वह सीढ़ियाँ उत्तर भूमि तल पर आ गए थे। पद्मदेव देख रहा था कि मार्टोव इस विशाल महल के सब भागों को भली-भाँति जानता है। वह संशय-मन था। उसको वहाँ से और रूस से भाग निकल सकने में सन्देह प्रतीत हो रहा था। इस पर भी वह मन में विचार कर रहा था कि अब तो वह चल पड़ा है। पीछे लौटने के लिए न तो अवसर रहा है और न ही यह सम्भव। इस कारण वह दृढ़ पगों से और गरदन ऊँची किए मार्टोव के साथ-साथ चल रहा था।

इस समय वे महल की ड्योढ़ी पर जा पहुँचे थे। वहाँ सैनिक प्रहरी खड़ा था। मार्टोव ने अपने ओवर कोट की जेब से एक कार्ड निकालकर दिखाया। प्रहरी ने कार्ड को देखा और मार्ग छोड़ दिया। दोनों बाहर निकल आये। वहाँ पुनः कार्ड देखा गया। वहाँ मार्टोव ने दूसरा कार्ड दिखाया। उसे पढ़कर मार्ग छोड़ दिया गया। दोनों कुछ अन्तर पर खड़ी एक जीप में जा बैठे। उनके बैठते ही जीप चल पड़ी। पद्मदेव को कुछ ऐसा समझ आया कि जीप का ड्राईवर भी उनके साथ भागा जा रहा है और वह जानता है कि कहाँ जाना है। वह मार्टोव की शक्ति और चतुराई पर चकित था। इस पर भी एक तीसरे व्यक्ति की उपस्थिति में उसने अपना मुख नहीं खोला। मार्टोव भी मौन था। मास्को नगर की सीमा पर पहुँचने पर जीप रुक गयीं सैनिक-प्रहरियों ने परमिट देखना चाहा। यह परमिट ड्राईवर ने अपनी जीप के डिब्बे में से निकालकर दिखाया। प्रहरी वह परमिट सड़क के तट पर बने कार्यालय में ले गये। ड्राईवर साथ गया और दोनों यात्री चुपचाप जीप में बैठे रहे।

वहाँ चार-पाँच मिनट लगे। ड्राईवर परमिट को और उसके साथ एक अन्य कागज़ लपेटता हुआ कार्यालय से लौट आया। ड्राईवर चुपचाप जीप में अपने स्थान पर बैठ, कागज़ों को डिब्बे में रख चल पड़ा।

जब वे सीमा से कुछ अन्तर पर पहुँचे तब मार्टोव ने मुख खोला। उसने कहा, "कामरेड! मुझे विश्वास था कि तुम मेरे साथ चल पड़ोगे। मैं जानता हूँ कि हमारा मार्ग अति बीहड़ और भययुक्त है। मैं यह समझता हूँ कि तुम भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसकी कठिनाई को समझते हो। इस पर भी तुम अवश्य मेरे साथ चलोगे, मुझे विश्वास था...।''

पद्मदेव ने अपने साहस और सूझ-बुझ की प्रशंसा सुनने के स्थान मतलब की बात पूछ ली। उसने पूछा, ''हम किधर जा रहे हैं?''

''कैस्पियन सागर को पार कर ईरान में जायेंगे।''

पद्मदेव ने अँगुली से ड्राईवर की ओर संकेत कर प्रश्न-भरी दृष्टि में मार्टोव की ओर देखा।

मार्टोव ने बताया, ''यह एक कामरेड है। यह हमें कैस्पियन सागर के तटवर्त्ती नगर गुरयेव के पास ले जायेगा। वहाँ हम इससे विदा लेंगे और फिर हमारा वास्तविक अभियान आरम्भ होगा। आगे हम पैदल ही जा सकेंगे। मेरे एक परिचित हैं जो यदि सहायता करने पर तैयार हो गये तो हम सागर पार करेंगे अन्यथा सागर के तटवर्त्ती क्षेत्रों को पैदल पार करते हुए एक छोटे-से नगर गुरयेव के बाहर एक गाँव में ठहरेंगे। वहाँ मेरी पत्नी और बच्चे पहले चले गये हैं। मेरा विचार है कि वहाँ पर हमारे लिए सीमा पार करने का प्रबन्ध हो चुका होगा।''

''तो तुमने अपने बच्चों व पत्नी को पहले ही निकाल दिया है?''

''हाँ, मास्को से। उन्हें तो मैंने उस दिन ही वहाँ भेज दिया था जिस दिन मुझे लेनिनग्राद से पकड़ कर यहाँ लाया गया था। मैं समझ रहा था ऐमालीना तथा उसके माता-पिता के भागने की योजना में कहीं भूल भी हो सकती है और मैं पकड़ लिया जाऊँगा। मैं अपने विषय में बन्दी-गृह से भागने की योजना तो कर सकता था और की ही है, परन्तु परिवार वालों को अपने साथ लेकर भागना सम्भव नहीं था। पत्नी के विपरीत कुछ बात भी नहीं और वह अपनी मौसी से मिलने गयी हुई है।''

ज्यों-ज्यों ये आगे निकलते जाते थे, त्यों-त्यों पद्मदेव को मार्टोव की भागने की योजना पर विश्वास होता जाता था। परन्तु यह सब कुछ सरलता से नहीं चल सका।

अभी रात ही थी कि मार्टोव ने जीप की सीट के नीचे से सैनिक-अधिकारियों के वस्त्र निकाले और दोनों ने वे पहन लिये। मार्टोव की वर्दी पर ब्रिगेडियर जनरल के बिल्ले लगे हुए थे और पद्मदेव के कोट पर लेफ्टनेण्ट जनरल के। एक निर्जन स्थान पर जीप खड़ी कर ड्राईवर ने भी वर्दी बदल ली। उसके भी सैनिक-चिह्न बने थे। इन्होंने अपने वे कागज़ और पार-पत्र जो मास्को की सीमा पर दिखाये थे, वे सब जला दिये। ब्रिगेडियर जनरल के कोट की जेब में दूसरे पार-पत्र थे। उन्हें निकाल कर मार्टोव का नाम था ब्रिगेडियर जुकोव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और पद्मदेव का नया नाम था लेफ्टिनेण्ट विशिन्सकी।

पासपोर्ट पर लिखा था—सीक्रेट मिशन। कैस्पियन सागर पर। दिन चढ़ने तक वे मास्को से दो सौ मील से अधिक जा चुके थे। स्थान-स्थान पर चौकियों पर गाँव की सोवियत की चौकीदारी थी और इनको अपने कागजात निकाल कर दिखाने पड़ते थे। पूर्ण मार्ग भर में बर्फ पड़ी हुई थी। कहीं-कहीं तो मार्ग अति फिसलना था। वहाँ जीप की गति बहुत हल्की करनी पड़ जाती थी। ड्राईवर मार्ग को जानता था और कहीं पर वह सड़क छोड़ खेतों में जो उस समय बर्फ से ढके हुए थे, में ले जाता था और सड़क के लम्बे मार्ग को छोटे मार्ग से पार कर जाता था और कई प्रकार की चौकियों की रेख-रेख से बच जाता था।

रात इनको एक गाँव में ठहरना था। गाँव की सोवियत के सेक्रेटरी को ढूँढ़ा गया और उसके घर में रात बितायी गयी। रातभर बर्फ पड़ती रही थी। अतः वे वहाँ ठहर कर सुख अनुभव करते रहे थे।

सोवियत के सेक्रेटरी ने ब्रिगेडियर को बताया कि हमें जिला सेक्रेटरी का एक टेलीफोन आया है कि दो जर्मन ऐजेण्ट किसी प्रकार से सैनिक बन्दी-गृह से भाग कर किसी ओर भाग गये हैं। वे किसी मोटर गाड़ी में अथवा पैदल हो सकते हैं। इन संदिग्ध व्यक्तियों को पकड़कर तुरन्त मास्को भेजने का प्रबन्ध किया जाय।

सेक्रेटरी कह रहा था, ''यह सूचना है कि मास्को से किसी प्रकार प्रातः पाँच बजे निकले हैं और उससे मैं यह विचार कर रहा हूँ कि उनके, यदि वे किसी अच्छी मोटर गाड़ी में हुए तो कल मध्याह्न तक यहाँ पहुँचने की आशा है।''

मार्टोव ने पूछा, ''पर उनके पास कैसी सवारी है?''

''यह नहीं बताया गया।''

मार्टोव ने कह दिया, ''मैं समझता हूँ कि वे कहीं गोली मार समाप्त कर दिये गये होंगे।''

''हाँ। यह हमें आज्ञा है कि जिस किसी पर भी जर्मन होने का सन्देह हो, मार डाला जाये। इस युद्ध के समय में लम्बी-चौड़ी जाँच-पड़ताल के लिये समय नहीं है।''

मार्टोव इत्यादि अभी सो ही रहे थे कि सेक्रेटरी उनके पास आया और बोला, ''यह सूचना है कि भागने वाले रूसी भाषा बोल सकते हैं। उनमें से एक हिन्दुस्तानी है। उसका हुलिया भी वर्णन किया गया है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मार्टोव ने कहा, ''यह तो बहुत अच्छा है कि तुमने हमें यह सूचना दे

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी है, हम भी मार्ग में सतर्क रहेंगे।''

इस बार सेक्रेटरी इन दोनों सैनिक-अधिकारियों को बहुत ध्यान से देखता रहा था। उसे सन्देह के लिये कोई कारण नहीं दिखायी दिया। वह इनको यह बता चला गया और सो रहा।

सेक्रेटरी की पत्नी और बच्चे भी थे। सेक्रेटरी ने अपनी पत्नी से भी कहा, ''मुझे सन्देह हुआ था कि कहीं ये ही दोनों जर्मन फरार व्यक्ति न हों। इस कारण मैं उनको यह समाचार बता उनके मुख पर देख रहा था, परन्तु इनके मुख पर तो किंचित्मात्र भी घबराहट दिखायी नहीं देती थी।''

उस भली औरत ने कहा, ''कोई भागेगा तो इस ओर क्यों भागेगा? इधर से निकलने का कोई मार्ग तो है नहीं।''

''यह सूचना केवल हमें ही तो नहीं आई होगी। इसका प्रसार तो पूर्ण देश-भर के सोवियत सेक्रेटरियों को गया है।''

''पर इनके कागज तो रूसी सेना के है।''

''हाँ! पर ये कैस्पियन सागर की ओर किधर जा रहे हैं?''

''मैं दिन के समय इनके यहाँ होने की सूचना जिला के सेक्रेटरी को दे दूँगा।''

''तो अब सो जाओ।''

सेक्रेटरी का घर पर्याप्त सुविधाजनक था। कमरों में बिजली का हीटर लगा था और खाने-पीने का सामान भी अच्छा था।

सर्दी की ऋतु में दिन तो वहाँ दक्षिण में भी साढ़े दस बजे निकलता था, परन्तु ब्रिगेडियर और उसके साथी प्रातः छः बजे ही जाने के लिए तैयार हो गए।

सेक्रेटरी के घर से इन्होंने जल्दी-जल्दी में हल्का-सा नाश्ता लिया और चल पड़े। वहाँ से निकल वे गाँव से बाहर आये तो मार्टोव हँसकर वह कहने लगा, ''यदि यह ठीक है कि जर्मनों के भागने की सूचना है तो हम सुगमता से निकल जायेंगे।''

''यह तो ठीक है।'' पद्मदेव का कहना था, ''परन्तु सेक्रेटरी हमारी ओर सन्देह से देखता प्रतीत होता था।''

''हाँ, परन्तु हमारी भाषा का उच्चारण ऐसा था कि उसके बाप को भी सन्देह नहीं हो सकता था कि हम जर्मनी के रहने वाले हो सकते हैं।''

ड्राईवर ने अब मुख्य सड़क को छोड़ गाँवों की छोटी-छोटी सड़कों से जाना आरम्भ कर दिया। इसमें कुछ समय लग रहा था, परन्तु उनके पास सड़कों का मानचित्र होने से वे दक्षिण-पूर्व की ओर अग्रसर हो गये। एक स्थान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर वे सैनिक-शिविर में जा पहुँचे। वह शिविर एक लेफ्टिनैण्ट जनरल के अधीन थी। उनको कागज़ात दिखाने पर तो इनकी बहुत आवभगत की गयी। वहाँ किसी जर्मन सिपाही के भागने का समाचार नहीं था। वहाँ मास्को के मोर्चे पर के समाचार जानने की उत्सुकता थी। मार्टोव ने पहले पूछा, ''रेडियो पर के समाचार सुनते हो अथवा नहीं।''

''हाँ। परन्तु उन पर कितना विश्वास किया जा सकता है, कोई कह नहीं सकता।''

इस पर लेफ्टिनैण्ट जनरल ने बहुत युक्त भाषा में बता दिया, ''आक्रमण जून के महीने में आरम्भ हुआ था। दस दिन के भीतर जर्मन सेना स्मालैन्स्क तक पहुँच गई थी। वहाँ हमने अपनी सुरक्षा का प्रबन्ध किया हुआ था। बस वहाँ से वह आगे नहीं बढ़ सकी। दोनों ओर से खाईयाँ खुद गई थीं और जुलाई से अक्टूबर तक दोनों ओर से गोलाबारी होती रही। फिर वर्षा आरम्भ हुई और हमने खाइयों से निकल उन पर आक्रमण करने आरम्भ कर दिये। दिसम्बर के आरम्भ से तो हम अब आगे बढ़ रहे हैं। जर्मन सेनायें पीछे धकेली जा रही हैं।

''हमने दक्षिणी मोर्चे पर 'रैस्टोव' को अधिकार में ले लिया है और हम रैस्टोव से लगभग पचास मील आगे भी निकल गए हैं। यही प्रगति चलती रही तो जनवरी तक हम कीव वापस ले लेंगे।''

''पर सुना है कि गर्मी आरम्भ होने पर पुनः जर्मन दबाव बढ़ेगा।''

''हाँ, पहले हम विश्वास कर रहे थे कि हिटलर हमसे धोखा नहीं करेगा, परन्तु उसने एकाएक बिना किसी प्रकार के संकेत के आक्रमण कर दिया। अब हम सचेत और सतर्क हैं। अब दबाव के बढ़ने पर भी हम आगे बढ़ते ही जायेंगे। यह अनुमान है कि आगामी सर्दियों तक हमारी सेनायें जर्मनी में घुस बर्लिन पर अधिकार कर लेंगी।''

'अमेरिका से हमारे क्या सम्बन्ध होंगे?''

''हम अमेरिका के विरुद्ध युद्ध नहीं कर रहे। अमेरिका भी अब हमारे विपरीत युद्ध नहीं करेगा। अमेरिका हमारी सहायता करेगा अथवा नहीं, यह विचारणीय है।''

वहाँ के सैनिक अधिकारी ने कहा, ''आज रेडियो पर यह समाचार था कि अमेरिका ने जापान के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की है।''

''और जर्मनी ने?''

''जर्मनी और इटली ने भी अमेरिका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसीलिए तो हम कह रहे हैं कि हमारी स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। जर्मनी की पराजय निश्चित है। जापान भी पराजित होगा।"

इस प्रकार के वार्तालाप से शिविर के सैनिक अधिकारियों को यह विश्वास हो गया कि ये कोई 'प्रेज़ीडियम' के अन्तरंग अधिकारी हैं।

यहाँ पर पद्मदेव और मार्टोव बहुत कम ठहरे और अगले दिन अर्थात् दस तारीख को सायंकाल ये गुरयेव के समीप एक छोटे से गाँव सारावोब में जा पहुँचे। सारावोब में इनकी जीप एक फार्म पर काम करने वाले मज़दूर के घर के सामने जा खड़ी हुई। जीप का शब्द होते ही एक वृद्ध व्यक्ति मुख में पाईप लिये हुए और धूम्रपान करता हुआ द्वार में पर्दे के पीछे से झाँकने लगा।

ड्राईवर ने आगे बढ़कर द्वार के समीप खड़े हो धीरे-से उस बूढ़े को कुछ कहा तो वह पर्दा हटाकर बाहर निकल आया।

मार्टोव अब लपक कर जीप से नीचे उतर आया और आगे बढ़ उस बूढ़े से हाथ मिला यहूदी भाषा में कुछ बोला। इसे पद्मदेव समझ गया कि वह भी यहूदी है और मोट्रोव उसका नाम है।

वृद्ध ने कहा, "आ जाओ।"

ये तीनों जीप को वहाँ छोड़कर भीतर चले गये। उस समय उस मकान में वह वृद्ध और उसकी उत्नी वृद्धा ही थे। दोनों ने नये आने वालों का स्वागत किया।

जब सब बैठ गये और कहवा तैयार कर पीया गया तो उस वृद्ध ने मार्टोव को बताया, "तुम्हारी पत्नी को हम यहाँ बहुत देर तक रख नहीं सके। इस कारण उसको हमने एक दिन रात के समय नौका पर चढ़ाकर उद्रेक नदी के मुहाने पर ईरानी चुंगी को पार कर तबरूक भेज दिया है। आजकल यहाँ बहुत भगदड़ मच रही है। प्रायः मुसलमान और यहूदी यहाँ से भाग रहे हैं। नित्य रात को एक नौका भर यात्री यहाँ से जाते हैं।"

मार्टोव का प्रश्न था, "मार्ग में क्या कठिनाई रहती है?"

"कुछ नहीं। मेरा काम है सैनिकों से प्रबन्ध करना। प्रत्येक यात्री पर तीन सौ डुकेट का व्यय बैठता है। इसमें से दो सौ डुकेट तो सीमा के इस पार देना पड़ता है और एक सौ डुकेट ईरानी चुंगी पर।

"एक सीमा की 'पायलॉट' नौका भागने वालों की नौका के आगे-आगे जाती है। वह सब रुपया गिनकर ले लेती है और पायलॉट नौका वाले हरी लालटेन दिखा देते हैं। इस पर उद्रेक का द्वार खुल जाता है। ये ईरानी सीमा में चले जाते हैं। वहाँ नौका का कैप्टन यात्री गिनकर धन ईरानी चौकीदार के हाथ में दे देता है और यात्री किनारे पर उतर जाते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और बाबा, तम क्या लेते हो?"

"मैं प्रति यहूदी से दस डुकेट और मुसलमान से पन्द्रह डुकेट लेता हूँ।"

मार्टोव ने इतने धन का प्रबन्ध कर रखा था। उसने अपने और पद्मदेव के लिये आठ सौ पच्चीस डुकेट बूढ़े के हाथ में दिए तो भोजन का प्रबन्ध हो गया। उस रात की नौका भर चुकी थी। अत: मार्टोव को अगले दिन तक वहाँ रुकना पड़ा। ड्राईवर तो इनको छोड़ वापस लौट गया।

मार्टोव ने बताया, "वह ड्राईवर भी इसी 'गैंग' का एक सदस्य है। इस प्रकार के कुछ अन्य लोग भी यह काम करते हैं। शीतकाल में यह मार्ग खुल जाता है और ग्रीष्म ऋतु में फिनलैण्ड का मार्ग खुल जाता है।"

उस दिन मध्याह्न के समय बूढ़े ने बताया, "आपके लिए नौका में स्थान मिल गया है, परन्तु यह सूचना आयी है कि दो सैनिक अधिकारी सेना से भाग कर जा रहे हैं उनकी देखभाल की जाए।

"यद्यपि धन से सब प्रकार की कठिनाई दूर हो जाती है, परन्तु व्यर्थ का भय मोल लेने के लिए आप अपनी सैनिक वर्दी उतार दें।"

अत: उनको अपनी सैनिक वर्दियाँ वहाँ दे देनी पड़ीं और उनके स्थान उन्होंने पहले वाले कपड़े पहन लिए। यहाँ बर्फ नहीं पड़ रही थी। इस पर भी सर्दी तो थी और बड़े कोटों की आवश्यकता थी।

उसी दिन अंधेरा होते-होते वे घर से निकल गाँव की अन्धेरी गलियों में से होते हुए सागर-तट पर जा पहुँचे। वह वृद्ध उनका पथ-प्रदर्शन कर रहा था। ज्यों-ज्यों वे सागर-तट की ओर चलते गए, कुछ अन्य लोग भी उस वृद्ध के साथ होते गए। सागर-तट तक पहुँचते-पहुँचते वे बीस स्त्री-पुरुष और बच्चे हो गये थे। सब मौन और सहमे हुए प्रतीत हो रहे थे। तट के समीप एक बड़ी-सी नौका खड़ी थी। कुछ अन्य लोग उसमें पहले से ही बैठे थे। ये भी उनके समीप जा बैठे। वह वृद्ध नौका के कप्तान को दाम देकर लौट गया। नौका में इक्यावन यात्री थे। चार नौका चलाने वाले थे और एक उनका कप्तान था। नौका मोटर से चलती थी।

रात के सात बजे के लगभग एक छोटी-सी मोटर-बोट गुरयेव बन्दरगाह की ओर से आयी और कप्तान से कुछ बातचीत कर इस बड़ी नौका के आगे चल पड़ी। दोनों नौकायें अन्धेरे में बिना किसी का प्रकाश किये चलती गयीं। पूर्ण रात-भर की यात्रा पर ये दोनों नौकायें उद्रेक नदी के मुहाने पर जा पहुँची। नदी के किनारे पर से लाल बत्ती से संकेत हुआ। इधर से पायलॉट नौका से हरी बत्ती से संकेत दिया गया। नदी के किनारे पर से सामने किनारे पर संकेत हुआ। तदनन्तर दोनों ओर से हरी बत्ती दिखा दी गयीं और बड़ी नौका नदी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल पड़ी। पायलॉट नोका बाहर सागर में ही रह गयी।

आधा मील जाने पर नौका किनारे के साथ जा लगी। यह ईरानी चौकी थी। यहाँ पहुँचते ही सब यात्रियों को किनारे पर उतारा गया और चुंगी वालों ने निरीक्षण किया। उस निरीक्षण में नौका की तलाशी ली गयी और सब यात्रियों के नाम, पते लिखकर हस्ताक्षर करा लिये गए। यहाँ पर पुनः नकली नाम व पते लिखाये गये। अब मार्टोव केवल जुकोव था और पद्मदेव विशिन्सिकी रह गया।

चुंगी से निपटकर ये लोग पैदल ही वहाँ से कुछ दूर गाँव में जा पहुँचे। गाँव का नाम था नबी दाग। मार्टोव ने वहाँ पहुँच अलज़हीर के मकान का पता पूछ लिया।

अलज़हीर गाँव का मुन्तज़िम आला था। इस कारण उसका मकान सुगमता से मिल गया। गाँव भी छोटा-सा ही था।

मार्टोव की पत्नी और बच्चे वहाँ ही ठहरे हुए थे। मार्टोव अभी मुन्तज़िम से बातें ही कर रहा था कि उसकी आवाज़ सुन भीतर से बच्चे बाहर निकल आये और अपने पिता से गले मिलने लगे।

पद्मदेव इतनी सुगमता से रूसी सीमा को पार कर निकल आने पर आश्चर्यचकित था। जब मार्टोव अपने परिवार वालों से एक कमरे में मिल रहा था तो अलज़हीर पद्मदेव से बाहर मकान की बैठक में परिचय प्राप्त कर रहा था।

जब पद्मदेव ने अपना परिचय दिया तो अलज़हीर निस्संकोच भाव से बातें करने लगा। पद्मदेव का प्रथम प्रश्न यह था, "हज़रत! आप इस्लाम पर एतकाद (विश्वास) रखते हैं क्या?" अलज़हीर टूटी-फूटी रूसी भाषा में जवाब देने लगा। पद्मदेव के प्रश्न पर मुस्कराया और पद्मदेव का मुख देखने लगा। पद्मदेव समझ गया कि कुछ रहस्य की बात है जो यह बताना नहीं चाहता। उसने एक अन्य प्रश्न कर दिया, "ईरान सरकार नित्य आने वाले लोगों से तो परेशान होगी?"

"नहीं।" अलज़हीर का उत्तर था, "जितने भी यहूदी आ रहे हैं, वे सब यहाँ से दूसरे मुल्कों में भेज दिए जाते हैं। कोई भी यहूदी इस मुल्क में रहना नहीं चाहता।"

"पर हज़रत! रूस में तो लोगों के पास इतना पैसा जमा ही नहीं होता तो वे सब लोग यात्रा के लिए इतना धन कहाँ से ला रहे हैं?"

"आपके पास मार्ग का खर्चा कहाँ से आया है?"

"मुझे तो ज्ञात नहीं। मेरे मास्को के सरकारी बैंक में तीन हज़ार डुकेट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से कुछ अधिक जमा थे, परन्तु मैं वहाँ से निकाल नहीं सका। भागने के समय धन निकालने का अवसर ही नहीं मिला।''

''आप उस धन का चैक मुझे दे दें, मैं निकलवा लूँगा।''

''पर मेरे पास तो चैकबुक भी नहीं है।''

''तो फिर कुछ नहीं हो सकता। मैं समझता हूँ कि मार्टोव ने आपको बताया होगा?''

''नहीं। मार्ग में एकान्त नहीं मिला।''

''मार्टोव ने कुछ धन वहाँ एकत्रित किया हुआ था। उससे उसने अपनी पत्नी और बच्चों का तथा अपना गुरयेव तक पहुँचने का प्रबन्ध किया होगा। उसका आज से जो कुछ खर्च होगा, हमारी यहूदी एसोसियेशन देगी। गुरयेव से आगे का सब खर्च यहाँ से दिया जाता है।''

''पर यहूदी समिति ऐसा क्यों कर रही है?''

''हम फिलिस्तीन में अपना देश बनाने का विचार कर रहे हैं। इस युद्ध के पश्चात् यह सम्भव हो सकेगा। इस कारण आस-पास के क्षेत्रों से हम यहूदियों को वहाँ बसाने के लिए भेज रहे हैं।''

''यहाँ तेल की अमेरिकन कम्पनी हमारी समिति को रुपया देती है। इस कम्पनी का सम्पर्क अमेरिका के अन्य यहूदी व्यापारियों से है। धन वहाँ से आ रहा है। मार्टोव और उसका परिवार अभी हिन्दुस्तान जायेगा। वहाँ से युद्ध की समाप्ति पर तेल अबीब आ जायेगा।''

: 7 :

पद्मदेव को सब बात समझ आ गयी। उसने कह दिया, ''तो यह भूमण्डल के यहूदियों का संगठन है और वे यह षड्यन्त्र कर रहे हैं?''

''प्रोफेसर! यह षड्यन्त्र नहीं है। यह जातीय उत्थान का एक आयोजन है। दो सहस्र वर्ष से अधिक काल हुआ है कि हम दास बनाये गए थे, परन्तु ईसा की सोलहवीं शताब्दी में तो हम अपने देश से धक्के दे-देकर निकाल दिये गए थे। ईसाई लोग हमारी कुशलता के कारण हमारे साथ ईर्ष्या करते थे। इस कारण हमारा प्रत्येक प्रकार से दलन करते रहे हैं। इस पूर्ण काल में हम भूमण्डल-भर में बिखर गए। अब यातायात के साधन सुगम होने के कारण हम यह संगठन बना सके हैं और हम अब आशा कर रहे हैं कि युद्ध के उपरान्त हम अपने देश में बस जायेंगे। कुछ बड़े देशों ने हमें आशीर्वाद भी दे दिया है।''

''इन आशीर्वाद देने वालों में क्या रूस भी सम्मिलित है?''

''नहीं। इंग्लैण्ड सबका अग्रणी है। अमेरिका भी हमें आशीर्वाद देने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात कर रहा है। रूस तो यहूदियों का घोर विरोधी है।''

''मुझे तो ऐसा समझ में आ रहा है कि अधिकतर लोग रूस से ही आ रहे हैं।''

''इसमें दो कारण हैं। एक तो यह कि रूस में हमें अपनी कार्य-कुशलता दिखाने का अवसर नहीं मिल रहा। इस कारण वहाँ यहूदी मन:स्थिति के लोग सुखी नहीं। रूस से प्राय: लोग अमेरिका जाकर रहना चाहते हैं, परन्तु फिलीस्तीन में रहने के लिए अधिकतर जर्मनी से भागे हुए लोग आते हैं। जर्मन यहूदी अभी तो इंग्लैण्ड और अमेरिका में जाकर रह रहे हैं, परन्तु अधिकांश, युद्ध समाप्त होते ही तेल अबीब के इलाके में आ बसेंगे।''

''हमारी यह एसोसियेशन गुप्त रूप से कार्य कर रही है और हम युद्ध समाप्त होते ही अपने देश पर अधिकार करने का यत्न करेंगे।''

इस पर पद्मदेव ने एक और प्रश्न कर दिया, ''युद्ध में विजय किसकी होगी? यदि रूस जीत गया और उसका अधिकार फिलीस्तीन पर हो गया तो आप यहाँ अपना देश बना नहीं सकेंगे।''

''कोई भी बड़ी शक्ति यदि फिलीस्तीन पर अधिकार पा गयी तो हमारा स्वप्न पूरा नहीं हो सकेगा। परन्तु हमारे विद्वानों का मत यह है कि यूरोप की कोई भी बड़ी शक्ति मुसलमानों से झगड़ा करने की सामर्थ्य नहीं रखती। मुसलमान मज़हबी दीवाने हैं। यूरोप के धर्म-विहीन लोग इनसे टक्कर नहीं ले सकते। इनसे टक्कर तो हम ही ले सकेंगे। एक और कौम है, परन्तु वह इस समय स्वयं दासता में बँधी हुई है। उसमें एक दोष यह भी है कि वह इस समय हिन्दुस्तान में ही सीमित रह गयी है। वह अन्तर्राष्ट्रीय शक्ति नहीं बन सकती। मेरा अभिप्राय हिन्दुओं से है। मुसलमानों का उन्होंने सफलतापूर्वक विरोध किया है।''

पद्मदेव अलज़हीर का इतना अधिक ज्ञान देख चकित रह गया।

इस समय मार्टोव अपनी पत्नी इत्यादि से मिलकर बाहर आ गया। उसने अलज़हीर से कहा, ''मैं कल प्रात:काल यहाँ से चल दूँगा। मेरे और मेरे मित्र के लिये पासपोर्ट बनने चाहियें। अब हिन्दुस्तान की सरकार का भी एक वीसा मिलना चाहिये, अन्यथा वहाँ रह नहीं सकेंगे।''

''इस सबका इन्तज़ाम तेहरान में जाकर हो जायेगा। ईरान में रहने का वीसा मैं बनवा दूँगा।''

पद्मदेव के मन में पुन: हिन्दुस्तान तक पहुँचने की बहुत ही क्षीण आशा थी, परन्तु अलज़हीर की बातें सुन वह आश्वस्त अनुभव करने लगा। अब वह अपने मित्रों और अपनी पत्नी से मिलने के विचार से रोमांच अनुभव करने लगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। इस पर भी वह आरम्भ से ही अपने को परमात्मा के भरोसे रखे हुए था और ऐसा अभी भी था।

इस पर भी बात इतनी सुगमता से नहीं हुई। पद्मदेव को यहूदी संस्था की ओर से धन ऋण के रूप में दिया गया। यह कहा गया कि यह धन किसी गैर-यहूदी को नहीं दिया जा सकता, परन्तु चूँकि उसकी स्थिति विलक्षण है, वह एक यहूदी लड़की का पति है, इस कारण उसकी सहायता की जा रही है। उसको दो सहस्त्र डालर की धन-राशि ऋण के रूप मे दी जायेगी। वह यह धन हिन्दुस्तान में पहुँच कर दे सकता है।

मार्टोव की पत्नी कारनीना से पद्मदेव का परिचय हुआ। मार्टोव के बच्चों से भी परिचय हुआ। बच्चे तो अभी छोटे-छोटे थे। उनमें सबसे बड़ा लड़का बारह-तेरह वर्ष का था। कारनीना ने बताया, "मैं आज से दस वर्ष पूर्व से ही अपने पति को रूस छोड़ने के लिए कह रही थी और ये टालमटोल कर रहे थे। जब ये बर्लिन में थे, मैं तो तब ही भागने की योजना बना रही थी, परन्तु मेरा बर्लिन में पहुँचना कठिन था। यह तो जर्मनी से रूस की सुलह हो जाने के उपरान्त इधर का मार्ग खुला है और मैंने इस ओर से निकलने की योजना बनायी। जब जर्मनी ने रूस पर आक्रमण किया और जर्मनी की विजय होने लगी तब रूस में रहने वाले यहूदियों को अपनी स्थिति डाँवाडोल प्रतीत हुई और तब यह भी माने कि हमको वहाँ से निकलना चाहिये। इस पर भी पहले हमें भेज स्वयं वहाँ ही बैठे रहे।

"मैं नित्य प्रभु यहोवा से इनके सुरक्षित यहाँ पहुँच जाने के लिए प्रार्थना किया करती थी। यहोवा ने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली। कल जो लोग आये थे, उनमें से एक व्यक्ति इनकी सूचना लाया था कि यह एक अन्य व्यक्ति के साथ गुरयेव पहुँच गये हैं।

"सबसे कठिन समस्या कैस्पियन सागर की थी, परन्तु यहाँ की यहूदी एसोसियेशन ने दोनों देशों की 'बार्डर पुलिस' को इतना धन दिया है कि यह कठिन काम भी सुगम हो गया है।"

अगले दिन बहुत प्रातःकाल कुछ अन्य लोग भी अलजहीर के पास आये और भावी यात्रा के लिए अन्य स्थानों पर ठहरे लोगों के लिए वीसा बनवाने लगे।

मार्टोव ने अपनी यात्रा के लिए ऊँटों का प्रबन्ध कर रखा था। दो ऊँट थे। एक पर तीन व्यक्ति बैठ सकते थे। पद्मदेव के साथ मार्टोव के दोनों लड़के, गुस्टोव और उसका छोटा भाई मालाटोव बैठ गये। दूसरे ऊँट पर मार्टोव अपनी पत्नी और एक छोटी के बच्चे को साथ ले बैठ गया। अल नुर्ल महाड़ और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर दशते कबीर मरु-भूमि ऊँटों पर ही पार करनी थी। ऊँटों के मालिक ऊँटों की नकेल में बँधे रस्से पकड़े पैदल ही साथ-साथ चल रहे थे।

तीन दिन की निरंतर यात्रा के उपरान्त ये एक छोटे-से रेल-स्टेशन पर पहुँचे और फिर चार घण्टे की रेल से यात्रा कर तेहरान जा पहुँचे।

मार्टोव और उसके बाल-बच्चों का प्रबन्ध तो तुरन्त हो गया। पद्‌मदेव के लिए कठिनाई उपस्थित हुई। भारत का वीसा मिलना कठिन था। पद्‌मदेव के पास हिन्दुस्तान के नागरिक का पासपोर्ट नहीं था। वह रूस में रह गया था और जब इसने यह लिखाया कि वह हिन्दुस्तान के लाहौर का रहने वाला है तो इसके विषय में हिन्दुस्तान सरकार से जाँच-पड़ताल की आवश्यकता पड़ गई।

यदि पद्‌मदेव अपने को रूस से भाग कर आया यहूदी बताता तो उसे भी मार्टोव की भाँति तीन मास का वीसा मिल जाता, परन्तु जब उसने लिखाया कि वह हिन्दुस्तान का नागरिक है और वह हिन्दुस्तानी नागरिक के रूप में लौटना चाहता है तो समस्या जटिल हो गई।

जापान से युद्ध आरम्भ हो जाने के कारण भारत से उत्तर शीघ्र नहीं आ सका। पद्‌मदेव ने तेहरान से एक पत्र प्रोफेसर सुदर्शन को लिखा। उसमें उसने अपने रूस से जीवित निकल आने का समाचार लिखा और आग्रह किया कि वह हिन्दुस्तान में उचित अधिकारियों से मिलकर उसके लिए पासपोर्ट का प्रबन्ध कराये।

मार्टोव इत्यादि बम्बई के लिए जाने लगे तो पद्‌मदेव ने अपने मित्रों और सम्बन्धियों का पता दे दिया। मार्टोव ने यह विश्वास दिलाया कि वह शीघ्र ही उसके हिन्दुस्तान जा सकने के प्रबन्ध का यत्न करेगा।

उसने तेहरान से न्यूयॉर्क में ज़ेवियर को भी पत्र लिखा कि वह भी पद्‌मदेव के साथ तेहरान पहुँच गया है और दोनों हिन्दुस्तान जाने का विचार रखते हैं।

: 8 :

एक मार्टिन बैंजेमिन नाम का व्यक्ति फोर्ट एरिया बम्बई काटन एक्सचेंज के कार्यालय में काम करता था। वह यहूदी रिहेबिलिटेशन कॉरपोरेशन का एजेण्ट था। एक्सचेंज में काम तो एक बहाना मात्र था। वास्तव में वह कॉरपोरेशन से भिन्न-भिन्न देशों से लाये जाने वाले यहूदियों को उचित स्थानों पर पहुँचाने के लिए बम्बई के अड्डे का मुख्याधिकारी था। तेहरान में उसका पता हिन्दुस्तान में आने वाले यहूदियों को दिया जाता था। मार्टोव को भी उसका पता मिला था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बम्बई बन्दरगाह पर उतर मार्टोव टैक्सी कर फोर्ट एरिया में मार्टिन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैंजेमिन के मकान पर पहुँचा। वहाँ पहले ही बहुत लोगों की भीड़ लगी थी। मार्टिन सबसे पृथक्-पृथक मिल रहा था। उसका नाम-धाम पूछ वह उसे देश के कॉरपोरेशन के अधिकारियों के पत्र देखता और फिर उनका किसी होटल में ठहरने का प्रबन्ध कर देता।

दो घण्टे की प्रतीक्षा पर मार्टोव की बारी आयी। वह मार्टिन के सामने पहुँचा तो मार्टिन उसका परिचित निकला। मार्टिन, जर्मनी के डुसलडौर्फ नगर से, हिटलर के राज्यारोहण के समय वहाँ से हालैण्ड, हालैण्ड से इंग्लैण्ड और फिर अमेरिका चला गया था। इंग्लैण्ड में ही उसको इस कॉरपोरेशन में काम पर नियुक्त कर दिया गया था। न्यूयॉर्क से मार्टिन बम्बई में आ पहुँचा था। यहूदियों की योजना में बम्बई, अदन, सिप्रस और सिकन्दरिया महत्व के स्थान थे।

उस समय मिस्र में अंग्रेजों का प्रभाव था और हिन्दुस्तान से मिस्र तथा मिस्र से तेल अबीब, यह लक्ष्य बनाया गया था।

मार्टिन, मार्टोव को कुछ सैकेण्ड तक पहचानता रहा। मार्टोव तो देखते ही पहचान गया था। इस पर भी यह अपने पहचाने जाने की मुस्कराते हुए प्रतीक्षा करने लगा।

मार्टिन ने पहचाना तो लपक कर उठा और हाथ मिला पूछने लगा, ''मुझे पहचाना है क्या?''

''हाँ भाई! मार्टिन बैंजेमिन डुसलडौर्फ के मिलियोनीयर।''

''तुम इधर कैसे आ गए?''

''मिस्टर बैंजेमिन! यह मेरी पत्नी कारनीना और ये तीन बच्चे हैं। मैं रूसी नागरिक था और हृदय से कम्युनिस्ट था। मेरी पत्नी इंग्लैण्ड आने वालों के साथ सम्पर्क बनाती रहती थी और इसको इस्राईल के पुनः स्थापना की योजना का एक धुँधला-सा चित्र पता चला तो यह उस योजना में सहायक होने की लालसा करने लगी; परन्तु रूस से किसी स्त्री का बाहर जा सकना प्रायः असम्भव है। पर यह निरन्तर कहती रहती थी कि मैं वहाँ के गुप्तचर-विभाग का अधिकारी होता हुआ यदि देश के बाहर जाने का प्रबन्ध नहीं कर सकता तो मैं एक अयोग्य व्यक्ति हूँ।

''परन्तु मैं कभी भी रूस छोड़ने के लिए तैयार न होता, यदि मेरा सम्पर्क वहाँ विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर से न हो जाता। वह हिन्दुस्तान का रहने वाला बर्लिन की एक यहूदी लड़की का पति बन गया और हिटलर के शक्ति-सम्पन्न होने पर वहाँ से अपने सास-श्वसुर तथा पत्नी के साथ रूस की सीमा की ओर भागा। वह यहूदी परिवार और यह हिन्दुस्तानी प्रोफ़ेसर रूसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूहेदानी में फँस गए। प्रोफेसर तो छूट जाता, परन्तु हमारे विभाग के चीफ की दृष्टि इस प्रोफेसर की पत्नी पर पड़ गयी और वह उसके प्रेम में इतना फँसा कि उसने लड़की को रूस में ही रोक लेने की आज्ञा दिलवा दी। हिन्दुस्तानी प्रोफेसर को जब यह बताया गया कि वह जा सकता है, परन्तु उसकी पत्नी नहीं जा सकती तो उसने भी रूस से जाने से इन्कार कर दिया। अत: प्रोफेसर को विश्वविद्यालय में नियुक्त कर दिया और उसकी पत्नी से हमारा चीफ सम्बन्ध बनाने का यत्न करने लगा।

"उस यहूदी लड़की ने अपने को उसके सहवास के लिए प्रस्तुत किया। इस शर्त पर कि उसे और उसके पति को रूस से जा सकने की स्वीकृति मिल जायेगी, परन्तु चीफ ने अपने वचन का पालन नहीं किया।

"इस समय वह कहीं सड़क पर चलती-चलती मुझे मिल गयी। मेरी उससे बर्लिन से जान-पहचान थी। उसने अपनी कठिनाई बतायी तो मैं उसको निकालने में तैयार हो गया। मैंने यह कहा कि उसे मैं रूस से बाहर कर दूँगा। जब वह बाहर चली जाएगी तो फिर उसके पति को सुगमता से रूस से चले जाने की स्वीकृति मिल जायेगी। वह मान गयी। उस स्त्री को पुन: चीफ से सम्बन्ध बनाना पड़ा और उसको अपने माता-पिता को, जो 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' में थे; छुड़ाने और देश से बाहर जाने की स्वीकृति मिल गयी। मैं उनके साथ ही उस स्त्री के लिए भी झूठे कागज़ात बनवा दिये। वह भागने में सफल हो गयी।

"इन दिनों मेरा उस प्रोफेसर से सम्पर्क बना और उसने मेरे मस्तिष्क से कम्युनिज़्म को नि:शेष कर दिया। तब मैंने कारनीना की बात मानी और पहले इसको और बच्चों को ईरान पहुँचाया; पीछे स्वयं उसी प्रोफेसर के साथ भाग कर आया हूँ। यह पासपोर्ट तो ईरान सरकार से लिया है।"

"और वह प्रोफेसर कहाँ है?"

"वह तेहरान में है। वह हिन्दुस्तानी है। उसके लिए हिन्दुस्तान की सरकार से पूछताछ हो रही है। यहाँ से अभी कोई उत्तर नहीं गया और वह वहाँ पर ही रह गया है।"

"उसे अपने को यहूदी प्रकट करना चाहिए था।"

"उससे भूल हो गयी है। वह अब अनुभव करता है कि उसे किंचित् झूठ बोल देना चाहिए था।"

"अच्छा मार्टोव! तुम्हारे लिये होटल अपोलो में प्रबन्ध कर देता हूँ। वहाँ एक 'डबल रूम' मिल जायेगा। अभी तुम ठहरो, फिर मैं तुम्हारे भविष्य की योजना में जानकारी प्राप्त करने का यत्न करूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और उस हिन्दुस्तानी प्रोफेसर की बात?"

"वह मैं यत्न करूँगा। आशा करता हूँ कि कुछ तो कर ही सकूँगा।"

न्यूयॉर्क में ज़ेवियर, कैटालीना और ऐमालीना पहुँचे। जिस कम्पनी में ज़ेवियर जर्मन में रहता हुआ काम करता था, उसकी शाखा न्यूर्यार्क में थी। वहाँ वे जा पहुँचे। लन्दन से ज़ेवियर ने एक पत्र पहले ही लिख दिया हुआ था। अतः जब वहाँ पहुँचे तो ज़ेवियर को तो उसी समय काम मिल गया।

वहाँ से ऐमालीना ने दो पत्र भेजे थे। ऐमालीना पद्मदेव से सम्पर्क बनाना चाहती थी। एक पत्र मार्टोव को भेजा गया। दूसरा डुसलडौर्फ के एक फासिस्ट को। जर्मनी को भेजे गये पत्र में यह लिखा था कि वह पत्र शरौडर को लेनिनग्राद में पहुँचा दे। शरौडर को पत्र एक फासिस्ट गुप्तचर के हाथ भेजा गया था। अकस्मात् वह जासूस सीमा पर पकड़ लिया गया और गोली से मार दिया गया। उसकी तलाशी ली गयी तो ऐमालीना का पत्र उसकी जेब से निकल आया। पत्र में न तो यह लिखा था कि पत्र किसको मिले और न ही यह लिखा था कि पत्र किसने लिखा है। जब पत्र बेरिया की दृष्टि में आया तो वह लेख पहचान गया, परन्तु जिस व्यक्ति के पास से वह पत्र मिला था, वह गोली से मारा जा चुका था। अतः शरौडर की बहन को भगाने में शरौडर के भाग का पता नहीं चला।

मार्टोव को पत्र युक्रेन के मोर्चे पर मिला था। मार्टोव तो पत्र में लेख पहचान गया और उसका अर्थ भी समझ गया। वह युक्रेन के मोर्चे से जब मास्को पहुँचा तो पद्मदेव से मिलने चल पड़ा। और वहाँ वह उसको चीफ सेक्रेटरी के साथ शैल्टर में मिला। उस समय जर्मनी ने मास्को पर हवाई आक्रमण कर रखा था और चीफ सेक्रेटरी ने पद्मदेव की निर्भीरता की परीक्षा के लिए उसे बेरिया से मिलने के लिए भेज दिया।

मार्टोव उसके साथ ही शैल्टर से बाहर निकल गया। उस समय ऐमालीना का पत्र देने का समय नहीं था, परन्तु मार्टोव ने सूचना दे दी कि ऐमालीना न्यूयॉर्क में और सही-सलामत पहुँच गयी है।

इस सूचना के उपरान्त ही पद्मदेव रूस से निकलने की बात विचार करने लगा था।

परन्तु मार्टोव पकड़ा गया और उसके पीछे गुप्तचर लग गये। इस स्थिति में पद्मदेव अपने भी पकड़े जाने की आशा करने लगा था। इस पर भी वह निर्भीकतापूर्वक व्यवहार कर रहा था।

क्रैमलिन में ही जब उसे तीन-चार घण्टे सोने को कहा गया तो वह समझ गया कि प्रातः उसे किसी लेबर कैम्प में भेज दिया जायगा। परन्तु जब मार्टोव

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ पहुँचा और अँगुली से उसके पीछे चलने का संकेत करने लगा तो उसने निश्चय कर लिया कि वह भागने का प्रयास करेगा।

इस प्रकार वह मार्टोव के साथ तेहरान में पहुँच गया। तेहरान में पहुँच ही वह समझा था कि जेल से छूट गया है। इस पर भी हिन्दुस्तान पहुँचने में देर हो रही थी।

मार्टोव का पत्र तेहरान से हवाई डाक के द्वारा न्यूयॉर्क पाँच दिन में पहुँचा। ऐमालीना को जब पत्र मिला तो वह तुरन्त वहाँ से ईरान अथवा हिन्दुस्तान आने को यत्न करने लगी।

मार्ग मिल गया। न्यूयॉर्क से हवाई जहाज़ के द्वारा मैक्सिको, वहाँ से न्यूज़ीलैण्ड में मार्लबरो, मार्लबरो से कोलम्बो और कोलम्बो से बम्बई। ऐमालीना को पत्र मिलने के एक सप्ताह बाद वह बम्बई पहुँच गयी। वहाँ वह भी मार्टिन बैंजेमिन के कार्यालय में जा पहुँची।

जब उसने रूस से भागकर आये एक मार्टोव से मिलने की बात कही तो मार्टिन ने उससे पूछ लिया, "तुम कौन हो?"

इस पर ऐमालीना ने अपना संक्षिप्त-सा परिचय दे दिया। परिचय में उसने बताया कि वह एक हिन्दुस्तानी प्रोफेसर की पत्नी है और उसे पता चला है कि उसका पति भी मार्टोव के साथ रूस से निकलने में सफल हो गया है। इस पर मार्टिन को स्मरण हो आया। उसने कहा, "मैं समझ गया। तुम न्यूयॉर्क से आयी हो?"

"हाँ।"

"तुम्हारे पति को हमने अभी अस्थाई वीसा दिलवा कर बम्बई मँगवा लिया है। उसके कुछ सम्बन्धी भी लाहौर से आये हुए हैं और सब लोग अपोलो होटल में ठहरे हुए हैं।

ऐमालीना इस समाचार को सुनते ही उठकर अपोलो होटल को भागी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

सुदर्शन रूस गया था। उसका वहाँ जाने का संयोग सरस्वती के कथन पर बना था। सरस्वती की बात उसकी पत्नी साधना ने उसे बतायी थी। साधना ने कहा था–"सरस्वती कहती है कि उसे विश्वास हो रहा है कि सुधीर के पिता जीवित हैं और किसी बन्दीगृह में बन्द हैं।"

प्रोफेसर सुदर्शन और पद्मदेव सहपाठी थे और मित्र थे। जब पद्मदेव लाहौर के सरकारी कॉलेज में इतिहास पढ़ाता था तब से दोनों में विचार-समानता भी बन गयी थी। पद्मदेव की हिन्दुस्तानी पत्नी सरस्वती को सरकारी रूप से यह सूचना मिली थी कि बर्लिन से कुछ कम्युनिस्टों के साथ भागते समय जब पद्मदेव जर्मनी की सीमा पार कर रहा था, वह चुंगी वालों की गोली का शिकार हो गया था।

उक्त वार्त्तालाप इस सूचना के पाँच वर्ष उपरान्त की बात है। इस सायं तक पद्मदेव के सब मित्रों और सम्बन्धियों में यह बात मानी जा चुकी थी कि सरस्वती का पति पद्मदेव स्वर्ग सिधार चुका है।

प्रोफेसर सुदर्शन की पत्नी साधना प्रायः सरस्वती से उसके संगीत विद्यालय में मिलने जाया करती थी। सरस्वती का लड़का सुधीर अब आठ वर्ष की आयु का था, और वह प्रोफेसर सुदर्शन के घर रहता था। सुधीर को साधना सरस्वती से मिलाने अपने साथ ले जाया करती थी। सुधीर भी माँ से मिलने की इच्छा तो करता था, परन्तु वह रहना प्रोफेसर साहब के घर पर ही चाहता था। उसका मेल-जोल प्रोफेसर साहब के लड़के मोहन और उसकी बहन माधुरी से बहुत था। मोहन सुधीर से दो वर्ष के लगभग बड़ा था और माधुरी दो वर्ष छोटी थी। तीनों में बहुत स्नेह और सहचारिता थी।

साधना पिछले दिन सरस्वती से मिलने गयी थी। जब वह वहाँ से लौटने लगी तो सरस्वती ने एकाएक कह दिया, "मुझे विश्वास होता जाता है कि सुधीर के पिता अभी जीवित हैं और किसी बन्दीगृह में पड़े हुए छटपटा रहे हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

साधना ने घर आकर वही बात अपने पति को कही थी। इस पर प्रोफेसर

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब ने पूछ लिया, ''अपने इस विश्वास का उसने आधार क्या बताया है।''

''यह तो मैंने पूछा नहीं आज विद्यालय में साप्ताहिक सत्संग का दिन था। पूर्ण समय तो उस सत्संग में ही व्यतीत हो गया था। यह बात उसने उस समय कही थी जब मैं वहाँ से चलने के लिये उठ पड़ी थी।''

''साधना भी बहुत भोली है। तीन घण्टे तुमने वहाँ व्यतीत किये और दो मिनट ठहर कर बात भी नहीं कर सकीं?''

''यह दो मिनट का प्रश्न नहीं था। उससे जब उसके पति की बात आरम्भ की जाये तो आधा घण्टा से कम नहीं लगता।''

सुदर्शन यह जानता था। इस कारण उसने कह दिया, ''तो ऐसा करो। अभी उसे टेलीफोन करो और उसे कल मध्याह्न का भोजन करने यहाँ बुला लो। फिर उसके इस विश्वास में कारण जानने का यत्न करेंगे।''

इस पर साधना ने समीप रखे टेलीफोन का चोगा उठाया और ऐक्सचेंज में सरस्वती संगीत विद्यालय निस्बत रोड का नम्बर बता उससे मिलाने को कह दिया। सरस्वती बोली तो साधना ने कहा, ''मैं साधना बोल रही हूँ। विद्यालय से चलते समय तुमने कुछ विश्वास की बात बतायी थी। मोहन के पिता उस विश्वास का आधार जानना चाहते हैं। इस कारण मैं तुमको कल मध्याह्न के भोजन पर आमन्त्रित करती हूँ जिससे बात समझी जा सके।''

सरस्वती ने उत्तर में कहा, ''आधार तो है, परन्तु मैं टेलीफोन पर बता नहीं सकूँगी। साथ उसी विषय पर भैया महोदव के घर मध्याह्न के समय भोजन का निमन्त्रण है।''

''तो उनको भी ले आओ। उनसे मिले भी तो बहुत काल व्यतीत हो चुका है।''

''यह तो उनसे पूछे बिना कैसे कह सकती हूँ?''

''तो सरस्वती बहन! उनसे पूछ लो। वह भी तो टेलीफोन पर हैं।''

''अच्छा, अभी बन्द कर दो। मैं उनसे बात कर टेलीफोन करूँगी।''

साधना ने टेलीफोन बन्द कर अपने पति को जब महादेव की बात बतायी तो सुदर्शन ने कह दिया, ''इससे तो पता चलता है कि सरस्वती के विश्वास में किसी प्रकार का आधार है। महादेव आजकल कम्युनिस्टों से बहुत हेल-मेल रख रहा है।''

''आपका उससे कहाँ मेल होता है?''

''महादेव से नहीं। परन्तु एक कम्युनिस्ट मेरे भी सम्पर्क में आ रहा है। देखो, तुमको एक रहस्य की बात बताता हूँ। पिछले मास एक सन्तराम हमारे घर में आकर कुछ दिन रहा था। वह कम्युनिस्ट है और उस समय उसके वारण्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे और वह फरार था। हमारे घर में वह इस कारण आकर छिपा हुआ था कि वह इस घर को सर्वथा सुरक्षित समझता था। मुझ-जैसे कट्टर हिन्दू का कम्युनिस्ट को संरक्षण देने में कोई चिन्तन भी नहीं कर सकता था।

''महादेव ने उसकी पंजाब सरकार से सिफारिश की थी और उसके वारण्ट वापस हो गये हैं। इस सिफारिश से मैं समझा हूँ कि उसका सम्पर्क भी कम्युनिस्टों से है।''

पति-पत्नी अभी बातें ही कर रहे थे कि टेलीफोन की घण्टी बजी और साधना ने उठा सुना। फोन सरस्वती का था।

सरस्वती का कहना था, ''साधना बहन! मेरे विद्यालय में कोई पुरुष आ नहीं सकता। इस कारण मैं भैया से मिलने उनकी कोठी पर जाया करती हूँ। वह कल मेरी किसी ऐसे व्यक्ति से भेंट कराने वाले हैं जो सुधीर के पिता की बात बताते हैं।

''जब मैंने उनको आपके यहाँ भोजन का निमन्त्रण दिया तो वह बोले कि वह अपने साथ उस जानकार व्यक्ति को भी ले आयेंगे। वह व्यक्ति प्रोफेसर साहब को भलीभाँति जानता है। उसका नाम है सन्तराम। भैया ने कहा है कि मैं आपको सूचित कर दूँ।''

साधना ने कहा, ''ठीक है, आने दो। तुम तो जानती हो कि हमें इस विषय में कितनी रुचि है?''

इसका परिणाम यह हुआ कि अगले दिन मध्याह्न के भोजन के समय प्रोफेसर मुदर्शन के घर पर सब एकत्रित हो गये। प्रोफेसर सुदर्शन और उनकी पत्नी साधना तो आतिथेय थे। साधना का लड़का मोहन, उसकी बहन माधुरी और सरस्वती का लड़का सुधीर, ये तीन घर में बच्चे थे। सरस्वती थी, उसका भाई महादेव, उसकी पत्नी रफीका तथा उसके दो बच्चे शमशाद और रोशन और सरस्वती के पति की सूचना देने वाला सन्तराम सब मिलाकर ग्यारह व्यक्ति थे। भोजन तो सबने इकट्ठे ही किया और भोजन के उपरान्त बच्चों को बैठक-घर में खेलने के लिये छोड़ प्रोफेसर सुदर्शन सब बड़ों को अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में ले गये। वहाँ सबको बैठा उसने महादेव से पूछ लिया, ''कल सरस्वती बहन ने यह कहा था कि आपने पद्मदेव के विषय में कुछ कहा है? मैं चाहता हूँ कि आप अपनी पूरी जानकारी बतायें तो हम उनको ढूँढ़ने का यत्न करें।''

महादेव ने बताया, ''मैं इसी कारण सन्तराम जी को साथ ले आया हूँ। इसने ही कुछ दिन हुए मास्को विश्वविद्यालय में एक हिन्दुस्तानी प्रोफेसर के विषय में बताया था। यह आपको वह सब बात और उस समाचार का स्रोत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बता देंगे।

"यह कल मेरे पास ही बैठे थे कि जब सरस्वती का फोन आया था कि आप उस प्रोफेसर के विषय में और अधिक जानकारी के लिये इच्छा कर रहे हैं। मैं इनको सरस्वती बहन के सामने सब बात बताने के लिये कह रहा था। जब मैंने आपके विषय में बताया तो यह बोले कि यह आपको भलीभाँति जानते हैं। अतः यहाँ आने के लिए तैयार हो गये हैं।"

अब सब सन्तराम के मुख पर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगे। सन्तराम ने बताया, "प्रोफेसर साहब! आप तो यह जानते हैं कि मैं अपने प्रान्तीय कम्युनिस्ट पार्टी का मन्त्री हूँ। अतः जब भी पार्टी की गतिविधियों के विषय में जाँच करने के लिये रूस से कोई आता है तो वह मुझसे भी मिलता है। आजकल 'इण्टरनेशनल' कम्युनिस्ट संस्थान के चीफ सेक्रेटरी यहाँ गुप्त रूप से आये हुए हैं। एक दिन मेरे घर पर रात भोजन करते हुए वह एक हिन्दुस्तानी प्रोफेसर के विषय में बताने लगे। उनका कहना था कि उस प्रोफेसर ने वहाँ पर यह सिद्ध कर दिया है कि हिन्दुस्तान में भी विद्वान लोग उत्पन्न हो सकते हैं। उस प्रोफेसर ने मास्को विश्वविद्यालय के एक विद्यार्थी-समारोह में हिंसा-अहिंसा की ऐसी मीमांसा उपस्थित की थी कि हमें वह विचारों में लेनिन का उत्तराधिकारी ही समझ में आया है। उसने बताया था कि इस शरीर में वास्तविक तत्व तो मरता नहीं। मरने के समय विनष्ट होता है यह शरीर और वह तत्व इसे छोड़ किसी अन्य शरीर में चला जाता है।

"किसी की हत्या केवल किसी दुष्ट व्यक्ति के हाथ में पकड़ी बन्दूक छीन लेने के समान है। जब कोई जीव इस शरीर से ऐसे कर्म करने लगता है जो कर्म समाज में दुर्व्यवस्था उत्पन्न करते हैं और वह मना करने पर भी मानता नहीं, तब एक बागी सिपाही के हाथ से बन्दूक छीन लेने के समान उस मनुष्य से यह शरीर छीन लेना चाहिये। इसे लोग हत्या कहते हैं।

"इस व्याख्यान पर विश्वविद्यालय में बहुत ले-दे होती रही थी। मैंने उनसे प्रोफेसर का नाम पूछा तो वह बोले, "कामरेड देव के नाम से विख्यात हैं।"

इस पर सुदर्शन और साधना को सरस्वती के कथन कि सुधीर के पिता जीवित हैं की सत्यता समझ में आने लगी। परन्तु यह ये समझ नहीं सके कि जब वह वहाँ पर इनती मान-प्रतिष्ठा के पद पर है तो उसने अभी तक हिन्दुस्तान में अपने मित्र-सम्बन्धियों से सम्पर्क बनाने का यत्न क्यों नहीं किया? इस कारण सुदर्शन ने पूछ लिया, "और कुछ पता चला है उनके विषय में?"

"महमूद साहब के कहने पर मैंने अपने इण्टरनेशनल संस्थान के सेक्रेटरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से प्रोफेसर देव के विषय में और जानकारी मालूम करनी चाही थी, परन्तु उन्होंने बताया नहीं। या तो उनको कुछ अधिक पता नहीं था या बताना नहीं चाहते थे।''

''तो तुम लोग आपस में भी एक-दूसरे से बात छिपाकर रखते हो?'' महमूद का प्रश्न था। महादेव का ही मुसलमानी नाम महमूद सप्रू था। प्रोफेसर और सरस्वती इत्यादि ने यह निश्चय कर रखा था कि वे उसे हिन्दुवाना नाम से ही पुकारेंगे। पहले तो महादेव माना नहीं। पीछे वह मान गया था। यह बात पिछले कई वर्ष से चल रही थी। सन्तराम भी यह बात जानता था, परन्तु उसके लिये महमूद और महादेव में कोई अन्तर नहीं पड़ता था। इस कारण वह महादेव को महमूद के नाम से ही पुकारता था।

महादेव के प्रश्न पर सन्तराम मुस्कराया और बोला, ''इसको हम बुरा नहीं मानते। जैसे विवाहित पति-पत्नी किसी अल्प-वयस्क बालक अथवा कुमार को अपने परस्पर के यौन कार्य को नहीं बताते वैसे ही पार्टी में जिस-जिस पदवी पर कोई व्यक्ति होता है, उस पदवी पर बतायी जाने योग्य बातों से अधिक हम नहीं बताते।''

प्रोफेसर सुदर्शन ने बात पुनः पद्मदेव पर घुमा दी। उसने कहा, ''मेरी इच्छा कामरेड देव से मिलने की हो रही है। यह कैसे हो सकता है।''

''हो तो सकता है। प्रोफेसर साहब! मैं आपको रूस की सैर करा सकता हूँ। आपने जो मेरी सहायता मेरे पलायन काल में की थी, यह उसका कुछ प्रतिकार ही समझें। महमूद जी ने भी मुझे मुक्त कराया है। मेरे वारण्ट वापस करवाये हैं और यह कहते हैं कि कदाचित् वह प्रोफेसर देव इनके बहनोई हैं। मैं इनके अहसान के नीचे भी दबा हुआ हूँ। यह हो सकता है। इसमें दो बातें हैं एक तो यह कि यदि भारत सरकार को पता चल गया कि आप चोरी-चोरी रूस गये हैं तो ये आपको भी कम्युनिस्ट मान लेंगे और फिर जो कुछ अन्य कम्युनिस्टों से हो रहा है, वह आपसे भी होने लगेगा। दूसरे, यदि आपने रूस में जाकर किसी ऐसे व्यक्ति से मिलने की इच्छा प्रकट की जिससे कि आपको वहाँ के अधिकारी मिलाना नहीं चाहते तो वे आपको वहाँ ही रोक लेंगे और कुछ दण्ड दे दें तो विस्मय करने की बात नहीं होगी।''

सुदर्शन ने एक क्षण तक ही विचार किया और कहा, ''मैं यह भय सिर पर लेने के लिए तैयार हूँ।''

''आप विचार कर लें। हम यहाँ से दस कार्यकर्ता प्रतिवर्ष रूस को भेजा करते हैं। वे जाते हैं और आ जाते हैं। कइयों के जाने के विषय में तो यहाँ की सरकार को पता भी नहीं चलता है। हाँ, जिनके विषय में पता चल जाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है, उनके पीछे पुलिस लग जाती है।''

''कुछ हानि नहीं, सन्तरामजी! आप प्रबन्ध करिये। मुझे कुछ काल पहले बता दीजियेगा। मैं यहाँ से लापता होने का प्रबन्ध कर लूँगा।''

''अच्छी बात है। मैं अपने पार्टी वालों से पता करूँगा। तब तक आप भाभी साधना जी से बात कर लें। कुछ भय उनके लिये भी तो है। वैसे मैं आपको बताता हूँ कि दो वर्ष हुए तो मैं भी गया था। वहाँ तीन मास रह आया हूँ। मेरे विषय में सरकार को पता नहीं चला था। यह तो यहाँ के कार्यों के कारण ही मेरी ख्याति हो गयी है कि मैं कम्युनिस्ट हूँ।''

इस विषय में और भी बातचीत हुई। सन्तराम ने बताया, ''हम लोग वहाँ जाते हैं तो हमें वहाँ के गुप्तचर विभाग की देख-रेख में ही भ्रमण की स्वीकृति मिलती है। जो कुछ वे दिखाना चाहते हैं, वे दिखा देते हैं और जो कुछ दिखाना नहीं चाहते, वे नहीं दिखाते।

''यहाँ से जाने वाले कम्युनिस्ट-दल के सक्रिय कार्यकर्ता ही होते हैं। अतः यदि आपने जाना होगा तो आपको पार्टी के एक कार्यकर्ता के रूप में ही वहाँ विचरना होगा।''

''कुछ हानि नहीं। आप मुझे अपने दल की जैसी भी जानकारी देंगे, वैसी ही मैं वहाँ के गुप्तचर विभाग को दूँगा।''

इस प्रकार बात निश्चय हो गयी। एक मास के भीतर ही प्रोफेसर सुदर्शन के जाने का प्रबन्ध हो गया। यह निश्चय हुआ कि सुदर्शन अपने ही नाम से रूस में घूमने जायेगा। वहाँ इसे एक कट्टर कम्युनिस्ट और यहाँ के एक कॉलेज का प्राध्यापक घोषित करना होगा। इससे उसको कुछ स्वतन्त्रता मिल जायेगी। उसे कामरेड देव के विषय में सीधे रूप से बात नहीं करनी चाहये। घूम-घुमाव कर जो चाहें, पूछ सकते हैं।

प्रोफेसर सुदर्शन ने अपने कॉलेज से एक वर्ष की बिना वेतन के छुट्टी ले ली। उसने लिख दिया कि वह अपने विषय पर गहन चिन्तन करने के लिये किसी अज्ञात स्थान पर जाकर रहना चाहता है। यत्न करने पर छुट्टी मिल गयी। डी.ए.वी. कॉलेज के अधिकारी प्रोफेसर सुदर्शन के इस गहन अध्ययन और चिन्तन की बात पर हँसते थे। वे उसे मूर्ख मानते थे, परन्तु वह अपने कथन पर दृढ़ था।

एक दिन वह लाहौर से विलुप्त हो गया। छः मास तक विलुप्त रहने के पश्चात् वह लौटा तो उसके मित्र कॉलेज के साथी और अधिकारी उसको मूर्ख समझ उसकी हँसी उड़ाने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कम्युनिस्ट दल के अतिरिक्त केवल चार व्यक्ति थे जो सुदर्शन लाल के विषय में जानते थे। उसके गहन अध्ययन की कथा उन्होंने उसके आने पर सुनी थी। कम्युनिस्ट दल को तो उसने अपने 'टूअर' की रिपोर्ट लिखकर दी थी। इस रिपोर्ट को हिन्दुस्तान के 'पॉलिटी ब्यूरो' ने पढ़ा था और उस पर विचार-विनिमय भी किया था। प्रोफेसर साहब ने 'पॉलिटी ब्यूरो' में उपस्थित हो अपनी प्रतिक्रिया भी वर्णन की थी।

लाहौर वापस पहुँचते ही उसकी यात्रा और यात्रा के उद्देश्य के विषय में जानने के लिये महादेव, सरस्वती और सन्तराम उससे मिलने घर पर आये। प्रोफेसर साहब ने अपनी यात्रा का वृत्तान्त इस प्रकार वर्णन किया–

''देखो, सरस्वती बहन! सबसे पहली बात यह है कि मैं प्रोफेसर साहब से मिल नहीं सका। इस पर भी एक विश्वस्त सूत्र से उनका समाचार ले लाया हूँ और यह जान आया हूँ कि उनकी वहाँ पर क्या स्थिति है?

''हम यहाँ से चलने वाले दस व्यक्ति थे। उनमें सबसे सज्जन और सहायक थे मुहम्मद असलम। वह अकेले ही मुसलमान थे। शेष हम नौ लोग हिन्दू या कह कहो कि हिन्दुस्तानी थे। वैसे मुझे असलम अधिक हिन्दू लगा था और हिन्दुओं में भगवानस्वरूप सबसे अधिक असुर प्रतीत हुआ है।

''हम लाहौर से सब न तो एक दिन ही चले थे और न ही एक गाड़ी से। मैं यहाँ से दस सितम्बर सन् 1938 को रात 'फ्रण्टीयर मेल' से चला था। अगले दिन दो बजे के लगभग मैं नौशहरा स्टेशन पर उतर पड़ा। हमें वहाँ सराय यूसुफ में एकत्रित होना था। मुहम्मद असलम मुझको सराय में ले चलने के लिये 'प्लेट फार्म' पर उपस्थित था। यों तो वह मुझे लाहौर में मिल चुका था, परन्तु उसके विषय में मुझे भलीभाँति जानने का अवसर नौशहरा में ही मिला।

''असलम जानता था कि मैं उनकी पार्टी का टिकट होल्डर नहीं हूँ। पार्टी में मुझे एक साथी 'फैलो ट्रैवलर' के रूप में लिया गया था। हम दोनों सराय की एक ही कोठरी में ठहरे थे। वहाँ उसने मुझे पठानों की सी सलवार, कुरता, कुर्ती और पगड़ी ला दी। वह मैंने पहन ली। उसने बताया कि मुझे उर्दू में बातचीत करनी चाहिये। वह स्वयं कन्धार का रहने वाला होने के कारण पश्तो जानता था। हमारे साथियों में अभी तीन अन्य लोग आये हुए थे। वे सराय की एक दूसरी कोठरी में ठहरे थे। मेरे खाने इत्यादि का प्रबन्ध असलम ही कर रहा था।

''स्टेशन से सराय में पहुँचते ही मैंने स्नान किया। तब तक वह मेरे लिये एक हिन्दू की दुकान से पूरी और हलुवा ले आया था। मैं यह देख विस्मित रह गया। मैंने पूछा, 'यहाँ भी यह मिल गयी है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह मुस्कराया और बोला, "यहाँ एक हिन्दू की दुकान थी। मैंने पूछा पूरी बना दोगे?"

"वह मान गया और पन्द्रह मिनट में ही उसने सेर-भर पूरी बना दी है। हलुवा तो उसके पास सुबह का बना तैयार था। उसे गरम करवा लाया हूँ।"

"हम दोनों ने खायीं। अन्य तीन पहले ही खा-पी चुके थे। असलम ने मेरे सामने बैठ खाते हुए पूछ लिया, 'प्रोफेसर साहब! यहाँ तो यह मिल गया है, मगर आगे न तो कोई हिन्दू मिलेगा और न ही हलवाई। गोश्त और जवार की रोटी मिलेगी।

"मैंने कहा, "मांस तो खा लूँगा। सिर्फ मोटा मांस खाने में ऐतराज करूँगा।"

"वह यहाँ नहीं मिलेगा। भेड़ या बकरे का मांस मिलेगा। मगर जब सोवियत रूस के इलाके में चले गये तो कुछ मुश्किल होगी।"

"तो वहाँ मैं माँस खाऊँगा ही नहीं।"

"देखिये, कोशिश करूँगा। मगर आपको गाय का गोश्त खाने में परहेज़ क्यों है?"

"मैं खाता-खाता रुक गया। उसकी आँखों में देखकर मैंने पूछा, 'तो सत्य बात जानना चाहते हो?' "

"वह खिलखिलाकर हँस पड़ा उसने कहा, 'मुझे सन्तरामजी ने बताया है कि आप कट्टर हिन्दू हैं और आर्यसमाजी हैं। आप गाय को मुतबर्रिक मानते हैं?"

'मुतबर्रिक का अर्थ मैं नहीं समझा। देखो, दोस्त असलम! मैं तुमको कुछ बातें बताता हूँ जो तुम्हारे लिये शायद बिल्कुल नयी हैं। पहली बात यह समझ लो कि मज़हब दो बातें का मजमूहा (संयोग) है। एक तो जज़बात और दूसरे अक्ल। मेरे मज़हब में अक्ल को उतना ही दखल है जितना कि किसी खाने की वस्तु में सफाई देखने में है। जज़बात (भावनाओं) के बनाने के वक्त मैं अक्ल का इस्तेमाल करता हूँ और फिर उनके इस्तेमाल के वक्त भी मैं अक्ल को ताला लगाकर नहीं रखता। इसलिये मेरा हिन्दू होना अक्ल के बाहर नहीं। अगर कोई अक्ल से बाहर की बात करता है तो वह मेरे लिये काबिले अम्ल (माननीय) नहीं।'

"मुहम्मद असलम ने मुझे रोककर कहा, 'प्रोफेसर साहब! आप तो बहुत अच्छी उर्दू बोलते हैं। पर मैं आपको बता दूँ कि मैं बहुत अच्छी हिन्दी समझता ही नहीं, वरंच बोल और लिख भी सकता हूँ। मैं रहने वाला रज़मक का हूँ, परन्तु मेरे पिता लखनऊ में पहले रुपया ऋण पर देने का काम करते थे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर गांधीजी के प्रभाव में आकर वह काम छोड़ कौमी संघर्ष में भाग लेने लगे थे। इस कारण मेरा जीवन दोनों स्थानों पर बना है। मेरी पत्नी ज़िला बारहबंकी की रहने वाली है। वह एक ठाकुर की लड़की है और बहुत शुद्ध हिन्दी बोलती-लिखती है।''

'क्या नाम है आपकी पत्नी का?'

'रुक्मिणी! वैसे मेरे पिता और माता ने उसका नाम रहमानिन रखा हुआ है। रुक्मिणी की माँ भी कांग्रेस में कार्यकर्ता थी। सन् 1930 के सत्याग्रह में वे हमारे पिताजी के सम्पर्क में आये और फिर हमारे परिवार से मेल-जोल हो गया। सन् 1935 में रुक्मिणी के पिता का देहान्त हो गया था। सन् 1936 में मेरा विवाह हो गया और अब घर में एक बच्चा भी है।'

'और वह भी कामरेड है?'

''असलम हँस पड़ा और बोला, 'यह बात मैं आपको तब बताऊँगा जब आपके कामरेड होने की गहनता पा जाऊँगा। एक बात तो आपने बतायी है कि आप बुद्धि और भावना का संयोग कर चलते हैं। यह एक प्रसन्नता की बात है, परन्तु सब मज़हबी लोग सिवाय मुसलमानों के यही कहते हैं। कम्युनिस्ट भी यही कहते हैं।'

''असलम मुस्कराता हुआ मेरा मुख देख रहा था। मैंने उसे अपने मन की प्रतिक्रिया बता दी, 'तो तुम सब मज़हब वालों को ढोंगी मानते हो? अभिप्राय यह कि तुम यह समझते हो कि मज़हबी बातों में बुद्धि को दखल नहीं?' ''

'नहीं मित्र! मैं मज़हब को अक्ल के अतिरिक्त समझता हूँ। इसी कारण मैं मज़हबी प्राणी नहीं हूँ।'

'और कम्युनिज़्म को क्या मानते हो?'

'यह भी एक मज़हब है और इस दृष्टि से मैं कम्युनिस्ट नहीं हूँ, परन्तु मैं ऐसा कहता नहीं हूँ।''

'पर मैं इससे कुछ भिन्न बात मानता हूँ। मैं समझता हूँ कि प्रत्येक मज़हब का आधार बुद्धिवाद होता है, परन्तु यह मनुष्य का स्वभाव है कि वह समय पाकर बुद्धि का प्रयोग छोड़ देता है और संस्कारों के आधार पर काम करने लगता है। संस्कार ही भावनायें बन जाती हैं।

'मनुष्य काल व्यतीत होने के साथ संस्कारों के अधीन काम करने लगता है, परन्तु काल के कारण परिस्थितियों में परिवर्तन आ जाते हैं और संस्कार पुराने होने से व्यर्थ हो जाते हैं।

'अतः संस्कारों, अभिप्राय यह कि भावनाओं के आधार को बुद्धि से परिमार्जित करते रहने से इनमें ताल-मेल बना रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'देखो, मैं गाय के विषय में ही बात बताता हूँ। गाय को क्यों पवित्र माना जाता है? इस कारण कि हम लोग इसका दूध पीते हैं। दूध पीने से ही इसको गौ-माता कहते हैं। जिसका एक बार दूध पी लिया उसका माँ का-सा आदर बन जाता है। यह आदर ही है जिसको संस्कारों का रूप मिला है। हिन्दू लोग इस बात को तो भूल रहे हैं और लकीर पीट रहे हैं।'

'पर क्या दूध न देने वाली गाय के माँस खा जाने में कोई हानि नहीं?'

'यह तो तुम इसी प्रकार कह रहे हो जैसे कि कोई कहे कि माँ का दूध जब न पीना हो तो उसे एक साधारण स्त्री की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है।''

'क्या मतलब?'

'यही कि सम्भव हो तो पत्नी के रूप में भी।'

'मगर उम्र की बात भी तो है?'

'मगर आप तो यह जानते होंगे कि कुछ ऐसे लोग हो चुके हैं जो पच्चीस वर्ष की आयु में चालीस वर्ष की स्त्री से विवाह करते रहे हैं।'

'असलम हँस पड़ा और बोला, 'मगर वह माँ तो नहीं होती?'

'तो आपकी आपत्ति आयु के विषय में नहीं है। मैं भी इसको बुरा नहीं मानता। मेरा कहने का मतलब तो यह है कि जब किसी स्त्री अथवा प्राणी में माँ की भावना बन गयी तो फिर उसको माँ का आदर मिलना ही चाहिये। दूध, विशेष रूप में गाय का दूध, हमारे लिये एक बहुत आवश्यक भोज्य पदार्थ है। फिर जिसका दूध पी लिया उसके लिये आदर का भाव तो होगा ही और जब समूची-की समूची जाति बचपन से वृद्धावस्था तक और शोक, रुग्ण तथा प्रसन्नता की अवस्था में भी गाय का दूध पीती है तो उसके लिये माँ का आदर मिलना विस्मय करने की बात नहीं। जैसे माँ जब हमारा पालन-पोषण नहीं करती, तब भी तो वह माँ ही रहती है और वह पत्नी नहीं बन सकती। इसी प्रकार गौ पूर्ण जाहि की माँ है और यह सदा माँ ही रहती है।

'कोई किसी की माँ से अनाचार करना चाहे तो कत्ल और बलवे हो जाने स्वाभाविक ही हैं।'

'पर हम गाय तथा माँ के दूध के बिना भी तो रह सकते हैं?''

'जब ऐसा समय आयेगा तब विचार कर लेंगे। मुझे तो इससे कुछ उलट होता प्रतीत हो रहा है। इंग्लैण्ड और अमेरिका में दूध का चलन बढ़ रहा है।'

'आप गौ को तो माँ मान लीजिये, परन्तु भूमि जो पेट-भर अन्न देती है, उसे क्या मानेंगे?'

'पृथ्वी भी माता है। जब उसकी कोई हत्या करने आयेगा तो झगड़ा उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी होगा। यह होता ही है। एक देश के दूसरे देश पर आक्रमण का यही अर्थ है और तुम देख सकते हो कि इसके लिये किस प्रकार युद्ध होते हैं और भूमि छोड़ने के स्थान लोग मरने-मारने पर तैयार हो जाते है।'

'परन्तु आक्रमण करने वाले भी तो उसको माँ मानेंगे ही?'

'यदि वे माँ मानेंगे तो पहले माँ मानने वाले उनके भाई हो जायेंगे और तब वैमनस्य रहेगा नहीं। देखो असलम साहब! मुसलमान हिन्दुस्तान में आये तो उन्होंने यहाँ रहने वालों को भाई नहीं समझा। उनके धन-दौलत, माँ-बहन को भाई की माँ-बहन और सम्पत्ति नहीं समझा। इस कारण झगड़ा हुआ था और अब भी अंग्रेज यहाँ आया है तो उसने भी वही किया है जो मुसलमान ने किया था। अत: इससे भी झगड़ा है।

'वह हिन्दुस्तान की भूमि का अन्न खाता हुआ इसी मातृ-भूमि के अन्य बच्चों को अपना भाई नहीं मानता। मानता तो अपने लिये उनसे अधिक हक-हकूक न माँगना।'

: 3 :

''उन दिन तो और बात नहीं हो सकी। उसके विषय में तो मैं केवल यह समझ सका कि वह एक हिन्दू लड़की का पति है। हिन्दी बोल और समझ सकता है। अपने विषय में तो मैंने बहुत कुछ बता दिया था।

''हम अभी बातें ही कर रहे थे कि हमारे साथी वहाँ आ गये और बात बन्द हो गयी। वे बोले, 'घूमने नहीं चलियेगा, प्रोफेसर साहब?'

''मैंने यह कहा, 'भाई! मैं थका हुआ हूँ। अभी सोऊँगा।'

''असलम उनके साथ घूमने चला गया और मैं खाट पर अपना बिस्तर लगा सो गया।

''सायंकाल से पूर्व ही वे लोग लौट आये। रात का भोजन तो नान और शोरबा, मांस का पतला-पतला रस था। मांस का एक ही टुकड़ा मिला। रात के समय भी हमने साथियों से पृथक् खाया। असलम से बात उस समय भी हुई। असलम ने ही पहले पूछा, 'दूसरे कामरेड पूछ रहे थे कि आपने मुझसे परहेज़ तो नहीं किया?'

'और आपने क्या बताया है?'

'जो देखा था, बता दिया और जो सुना था वह नहीं बताया।'

'क्यों, वह क्यों नहीं बताया?' मैंने मुस्कराते हुए पूछा।

'वह गधों को मेवा खिलाना हो जाता। वे भावना और दलील में अन्तर नहीं मानते। मास्को से जो आज्ञा आती है, उसे ही वह युक्ति मान जाते हैं। उनमें एक है रामकृष्ण। वह कभी किसी स्कूल में मास्टर था। वह मेरे विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने पर मेरी हँसी उड़ाने लगा था। यह कल की बात है कि जब मैंने कहा, 'मास्टर कामरेड! विवाह तो तुम भी करते हो?'

'न, यह बात गलत है।' उसने तमक कर कहा।

मैंने पूछा, 'तो उस रमणी से क्या करने गये थे बरेली में?'

'तो उसे तुम विवाह करते हो? वह तो एक बीयर की बोतल पीने के समान है।'

''मेरा कहना था, 'कामरेड! रुक्मिणी मेरे लिये केवल एक बोतल नहीं, प्रत्युत बीयर के बीसियों-ड्रमों के समान है जो मेरे लिये जीवन-भर समाप्त नहीं होंगे।'

'इसी को तो पूँजीवाद कहते हैं। तुमने इतनी बीयर जमा कर रखी हैं।'

''मैं हँस पड़ा। हँसकर पूछने लगा, 'तो एक रात की पूँजी में और जीवन-भर की पूँजी में जाति का अन्तर तो है नहीं, मात्रा का ही अन्तर है। पूँजी ही है। एक दिन के लिये हो चाहे जीवन-भर के लिये ही।'

'तो दैनिक वेतन पर काम करने वाले और जीवन-भर पेंशन लेने वाले में अन्तर नहीं समझते?'

''मैं समझ गया था कि इसे पता नहीं कि वह क्या कह रहा है? इस विषय पर उससे बात करनी व्यर्थ थी, परन्तु वह मेरा मुख देख रहा था। इस कारण कुछ कहना ठीक समझा। मैंने कहा, 'भाई! वेतन और पेंशन में अन्तर है। साथ ही पत्नी और पूँजी में अन्तर है। वेतन, पेंशन और पूँजी तीनों के लक्षण पढ़ लेना फिर बात करेंगे।'

'और पत्नी के लक्षण तुम बता दो।' उसने अभी भी उत्तेजना में पूछा।

''मेरा कहना था, 'जो कुछ तुमने एक रात में किया था वह मैंने जब भी दोनों की इच्छा हो अथवा होगी, जीवन-भर करने का प्रबन्ध किया हुआ है। मैं इसे विवाह कहता हूँ। तुम इसे क्या कहते हो, मैं नहीं जानता। मुसलमानों में एक प्रकार का ऐसा विवाह ही होता है जो सायंकाल किया और प्रातःकाल तलाक दे दिया।'

''वह इसका उत्तर नहीं दे सका। इस कारण आज मैंने उनको बताया नहीं कि हमारी क्या बातें हुई हैं? हाँ, मैंने उनको बताया कि जब हम पूरी खाने लगे थे तो आपने मुझे हाथ धो लेने के लिए कहा था और बस... मेरी हँसी निकल गयी और मैंने पूछा, 'तो वे हाथ नहीं धोते?'

'आपके आने से पहले एक बार मैंने उनके साथ खाना खाया था। वे एक ही तश्तरी में से नान भिगो-भिगोकर इकट्ठे खाते हैं। उस समय तो मैंने खा लिया, परन्तु पीछे मैंने उनके साथ खाना छोड़ दिया।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'यह क्यों?'

'रुक्मिणी ने मुझे समझाया था कि इससे कोई भी छूत की बीमारी लग सकती है। उसने मुझे एक पुस्तक में से कई भयंकर बीमारियों की छूत के भय की बात पढ़ायी थी। यह मास्टर रामकृष्ण स्त्रियों के पास जाता रहता है। यह सम्भव है कि वह कभी भी फरंग रोग में ग्रस्त हो जाये और मुझे अपनी छूत दे दे। मैं अब इनसे पृथक् भोजन करने लगा हूँ। आपने न तो दिन के समय ऐसा किया था और न ही अब कर रहे हैं। आपने अपना सूप पृथक् कर लिया था।'

'वास्तव में हम हिन्दुओं में शुद्धता धर्म का एक अंग हैं।'

'हाँ, रुक्मिणी बताती थी। परन्तु वह बेचारी धर्म का अर्थ नहीं बता सकी।'

'अर्थ तो सरल है। धर्म कहते हैं जो करने योग्य है। करने योग्य कर्मों को दो श्रेणियों में बाँटा है। एक व्यक्तिगत और दूसरे समष्टिगत। इनमें स्वच्छ, शुद्ध और पवित्र रहना व्यक्तिगत धर्म भी है और समष्टिगत भी। कुछ धर्म हैं जो केवल व्यक्तिगत होते हैं। उनमें धैर्य रखना एक है। अपने मन को नियन्त्रण में रखना दूसरा व्यक्तिगत धर्म है। इसी प्रकार धीः अर्थात् अपनी बुद्धि को सतर्क और निर्मल रखना तीसरा व्यक्तिगत धर्म है। विद्या, अभिप्राय यह कि ज्ञान संग्रह करना भी एक व्यक्तिगत धर्म है।

'इसी प्रकार कुछ समष्टिगत धर्म है—सत्य बोलना, क्षमा का भाव रखना, दूसरे का अधिकार नहीं छीनना; जिसे साधारण भाषा में चोरी न करना कहते हैं। इसी प्रकार क्रोध न करना; ये समष्टिगत धर्म हैं।'

'बस? असलम ने विस्मय में पूछ लिया।

''मेरा कहना था, 'हाँ, संसार के सब काम इन धर्मों के अन्तर्गत ही आ जाते हैं। इस पर भी यदि कहीं भ्रम हो जाने की सम्भावना हो तो उसके लिए एक कसौटी भी है। पूर्ण धर्मों का सार यह है कि हम किसी से भी वह व्यवहार न करें जैसा कि हम अपने से नहीं चाहते।'

'वाह! यह तो कुछ भी न हुआ। मान लीजिये कि मैं एक चोर को पकड़ लेता हूँ। तो क्या मैं उसे छोड़ दूँ, क्योंकि मैं स्वयं पकड़ा जाना पसन्द नहीं करता?'

'चोरी करते हुए पकड़े जाओगे तो यह अधर्म करते हुए पकड़ा जाना होगा और तब यदि छूटने का यत्न करोगे तो तुम चोरी को एक अच्छी बात समझकर ही ऐसी इच्छा कर सकोगे। अर्थात् चोरी को बुरी बात समझकर तुम छूटना नहीं चाहोगे। हाँ, तुम क्षमा किया जाना पसन्द करोगे। वह तुम चोर से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी कर सकते हो। क्षमा तब ही माँगी जाती है जब पुन: वैसा पाप-कर्म करने का विचार न हो।'

''इस पर असलम भौंचक्का हो मुख देखता रह गया।

''इस प्रकार सरस्वती बहन, मुझे एक बुद्धिशील साथी मिल गया और छ: महीने से ऊपर हम इकट्ठे रहे हैं। मैं समझता हूँ कि वह अब कम्युनिस्ट नहीं रहेगा।

''अगले दिन हमारे शेष साथी भी आ गए। हमने खाकी, पठानों के ढंग के कपड़े पहन लिए थे और बहुत ही संक्षिप्त-सा सामान, जो प्रत्येक अपनी पीठ से बाँधकर चल सके, ले लिया और चल पड़े। हमारा मार्ग निश्चित था। प्रत्येक स्थान पर कम्युनिस्टों के अड्डे बने थे और प्रत्येक स्थान पर हमें खाना-पीना मिलता रहा है।

''ये अड्डे प्राय: गाँव के किसी आदमी का घर होते हैं। वह आदमी गाँव में कुछ-न-कुछ काम करता रहता है और अपनी जीविका चलाता है। वैसे वह रूस की अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का कार्यकर्ता होता है।

''मुख्य-मुख्य स्थान जिनको मैं अब स्मरण रख सका हूँ और जहाँ से हम गुज़रे थे पालन्दी, दाताई, वहाँ से सफेद कोह पार कर अलिखेल, सिकराम, गुलदौर, बदरक और तेद जहिन थे। इन स्थानों से हम रूस में पहुँच गये और यहाँ हमें रेलगाड़ी मिल गयी। तेद जहिन स्टेशन से छ: घण्टे की यात्रा से हम कारनावो डैक कैस्पियन सागर के तट पर जा पहुँचे। वहाँ से जहाज़ में गुरयेव।

''यहाँ से हमारे 'गाइड' हमारे साथ हो गए। पहले हमें 'कीव' ले जाया गया। कीव से काले सागर के कई स्वास्थ्यप्रद स्थान दिखाकर मास्को, लेनिनग्राद, स्टालिनग्राद और अन्य अनेकों नगर, उद्योग केन्द्र, कर्मचारियों की बस्तियाँ, होटल, जेल, अभिप्राय यह कि विविध स्थान दिखाये गए। इन सबका विवरण मैं अपने यात्रा-विवरण की पुस्तक में लिखूँगा।

: 4 :

''मुख्य बात वह विषय था जिसके लिए मैं इस रुचिकर यात्रा पर गया था। सन्तराम ने कहा था कि कहीं मैंने जन-साधारण से इस विषय पर पूछा तो मुझ पर किसी प्रकार का संकट भी आ सकता है। सबसे सुगम और भयंकर बात यह हो सकती है कि किसी रात मुझे विष दे दिया जाए और प्रात: यह घोषित कर दिया जाए कि मेरे हृदय की गति एकाएक बन्द हो गई।

''इस कारण मैं सतर्क था। मार्ग में मैंने अपने साथियों से इस विषय पर बात नहीं की। मुहम्मद असलम से भी नहीं कहा। पहली बार मैंने अपने 'गाइड' से इस विषय पर कीव में बात की। हम दस की मण्डली के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन रूसी गाइड थे। वे सब हिन्दी बहुत भलीभाँति बोलते और समझते थे। उनमें एक अंग्रेज़ी भी बोल सकता था।

"कीव पहुँचने में हमें दो सप्ताह लगे थे। मार्ग में हम कई स्थानों पर ठहरे थे। इन दो सप्ताहों में मैं अपने तीन गाइडों में से एक से बहुत खुल-खुलकर बात करता रहा। मैंने समझा कि उससे अपनी इच्छा को गोल-मोल ढंग से कहनी चाहिए।'

"कीव में हम एक समय अपने साथियों से पृथक् हो गए। मैंने वह अवसर देख उससे पूछ लिया, 'मिस्टर स्लूस्टेव! क्या मैं किसी जानकारी के लिए यहाँ के किसी सरकारी विभाग से पत्र-व्यवहार भी कर सकता हूँ?'

"इस पर वह विस्मय में मेरा मुख देखने लगा। फिर कुछ विचार कर बोला, 'यहाँ प्रत्येक जानकारी जो हम किसी को भी देना चाहते हैं, वह छपी रखी है। उसमें से आपके 'ग्रुप' के जानने की सब बातें आपको बता दी जायेंगी।'

"मैंने कुछ साहस बटोरकर कहा, 'वह जानकारी छपी नहीं हो सकती। कारण यह कि वह व्यक्तिगत है। किसी सार्वजनिक विषय पर नहीं है।'

'व्यक्तिगत जानकारी मिलनी अति कठिन है।'

'यदि नहीं मिल सकेगी तो इन्कार हो जायेगा। यही न? मुझे इस पर खेद नहीं होगा।'

'मिस्टर सुदर्शन।' स्लूस्टेव ने कह दिया, 'आप एक अभूतपूर्व बात कर रहे हैं। मुझे गाइड का काम करते हुए दस वर्ष से ऊपर हो चुके हैं और आप पहले व्यक्ति हैं जिसने इस प्रकार की बात की है। यहाँ तो यह नियम है कि सब प्रकार के निश्चय सरकार करती है और सरकार के अतिरिक्त किसी व्यक्ति को कुछ कहने अथवा जानने की आवश्यकता नहीं है।'

"मैंने अब दृढ़ता से कहा, 'देखो, मिस्टर स्लूस्टेव! मैं किसी सरकारी रहस्य के विषय में नहीं पूछना चाहता। एक मेरा मित्र था। वह एक समय बर्लिन में स्विस होटल में रहता था। वहाँ उसका सम्पर्क वहाँ के सोशलिस्टों से हो गया था। हिटलर के शक्ति हथियाते ही सोशलिस्टों की पकड़-धकड़ आरम्भ हो गई। वह कुछ सोशलिस्टों के साथ चैकोस्लोवाकिया की ओर भागा और अपने साथियों के कहने पर वह रूस की सीमा तक पहुँचा। इतना वृत्तान्त हमें बर्लिन स्थित अंग्रेजी दूतावास से पता चला है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या यहाँ उसकी किसी प्रकार की सूचना है।'

"इस पर स्लूस्टेव ने गम्भीर हो सका, 'हाँ, यह बात छपी सूचना में नहीं हो सकती, परन्तु यहाँ किसी सरकारी विभाग को इसका ज्ञान होगा अथवा नहीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि हुआ भी तो वह बताना चाहेगा अथवा नहीं मैं कह नहीं सकता। आप एक प्रार्थना-पत्र लिख दीजिए। मैं वह अपने चीफ को भेज दूँगा और फिर जो कुछ उचित होगा, आपको बता दिया जायेगा।'

''अगले दिन मैंने एक पत्र लिखकर उसे दे दिया। उसमें देव का नाम और अंग्रेजी दूतावास का वृत्तान्त लिख दिया। दो मास तक मुझे कुछ उत्तर नहीं मिला। तब तक हम घूमते-घूमते लेनिनग्राद में जा पहुँचे थे। मास्को और लेनिनग्राद में हमारे लिये एक-एक सप्ताह का पढ़ाई का कार्यक्रम रखा हुआ था। उस पढ़ाई पर हम परस्पर किसी प्रकार समालोचना नहीं कर सकते थे। हमारे गाइड सदा हमारे साथ रहते थे।

'मास्को में एक घटना और घटी। स्लूस्टेव को हटाकर हमारे साथ किसी अन्य को भेज दिया गया। वह एक क्रास्टेव नाम का युवक था। उसने आते ही पूछा, 'मिस्टर सुदर्शन कौन हैं?'

''जब मैंने अपने-आपको बताया तो वह बोला, 'आपने सरकार को कोई प्रार्थना-पत्र दिया था?''

'हाँ।' मैंने उत्तर में कहा।

'ऐसा आपको नहीं करना चाहिए था। आप एक सोवियत ग्रुप की ओर से उनके व्यय पर भ्रमण कर रहे हैं। आपको कोई ऐसा काम करने, लिखने अथवा सोचने की आवश्यकता नहीं जो आपकी पार्टी से सम्बन्ध नहीं रखता।'

'परन्तु कामरेड गाइड! वह बात न तो हिन्दुस्तान की पार्टी के और न ही सोवियत स्टेट के विपरीत थी। वह मेरी निजी बात थी और उसके विषय में यदि यहाँ की सरकार को कुछ विदित नहीं अथवा सरकार बताना नहीं चाहती तो इन्कार कर दे। इसमें किसी पर रोष प्रकट करने की बात नहीं।'

'रोष की बात तो है। आपने अपना समय, कागज़, कलम और स्याही सब व्यर्थ गँवाया है।'

'तो मैं क्षमा माँग सकता हूँ।'

'वह मैं मौखिक रूप में बता दूँगा। पर मैं आपसे यही कहूँगा कि आपको कोई ऐसी बात नहीं करनी चाहिए जो मैं अथवा मेरे कामरेड गाइड आपसे न पूछें।'

''मैं इस भर्त्सना से निराश हो गया, परन्तु जब मैं लेनिनग्राद में पहुँचा तो इस सम्बन्ध में एक और घटना घटी। मैं एक फैक्टरी देखता हुआ अपने साथियों से भटक गया तो एक अपरिचित व्यक्ति मेरे साथ चलते-चलते धीरे-धीरे पूछने लगा, 'आप कामरेड सुदर्शन हैं?'

'हाँ।' मैंने उसके मुख पर देखते हुए कहा। उसने धीरे से कहा, 'चलते चलिए, ठहरिए नहीं। आपने किसी पदाधिकारी को लिखकर पूछा है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं चल पड़ा। उसने कहा, 'वह मास्को विश्वविद्यालय में इतिहास पढ़ाता है, परन्तु उस विषय में आपको जो कुछ उत्तर मिलेगा वह गलत है। पर आप उसके विषय में कुछ किसी से कहिएगा नहीं।'

'मैं उससे मिल नहीं सकता क्या?'

'असम्भव है।' इतना कह वह लम्बे-लम्बे पग भरता हुआ आगे निकल गया और मैं विस्मय में उसे जाते देखता रह गया।

"एक दिन मुझे रूसी गुप्तचर विभाग का एक पत्र मिला। पत्र में लिखा था, 'कामरेड सुदर्शन को यह सूचित किया जाता है कि रूसी सरकार को किसी पद्‌मदेव का ज्ञान नहीं है। उन दिनों जर्मन से भागे हुए बहुत लोग आये थे। बहुत-से जर्मन सीमा पर मार डाले गए थे। कुछ पोलैण्ड और रूस की सीमा पर मारे गए थे। जर्मन सीमाओं और जर्मनी के भीतर अनेकों पकड़ कर समाप्त कर दिए गये थे। हमारे पास किसी पद्‌मदेव के विषय में कोई सूचना नहीं है।'

"मैंने वह पत्र अपने सूटकेस में रख दिया था, परन्तु जब मैं रूस से चलने लगा तो वह पत्र मेरे सूटकेस में नहीं था। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी ने वह पत्र निकाल लिया है।

'जब मैं मास्को से चलने वाला था और गाइड बदल दिये गए थे तो वही व्यक्ति जिसने मुझे पद्‌मदेव के विषय में लेनिनग्राद के एक कारखाने में सूचना दी थी, हमारे निवास-स्थान पर आया और नये गाइड के सम्मुख ही पूछने लगा, 'क्यों, प्रोफेसर साहब! भ्रमण कैसा रहा है?'

"मैं उसके प्रश्न का अर्थ नहीं समझा। साथ ही नया गाइड किस प्रकार का व्यक्ति है, मैं जानता नहीं था। अब गाइड एक ही था और वह केवल मात्र हमें गाड़ी पर चढ़ाकर रूस की सीमा तक ले जाने के लिए आया था। पहले गाइड तो एक प्रकार से हमारे 'ट्यूटर' थे। वे हमें कम्युनिज़म की शिक्षा देने के लिए नियुक्त हुए थे। यह गाइड केवल गुप्तचर विभाग का व्यक्ति ही प्रतीत होता था। मैंने एक क्षण तक विचार किया और उत्तर दे दिया, 'कुछ ज्ञान में वृद्धि तो हुई है, परन्तु जो कुछ पहले मालूम था, उसमें पुष्टि ही हुई है।'

'आपको क्या ज्ञात था?'

'यही कि कम्युनिस्ट विचारधारा मानव-कलयाण के लिए है और मानव-कल्याण नियन्त्रण में बँध कर रहने में है। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता मनुष्य के लिए कल्याण की सूचक नहीं।

'यहाँ आकर हम सबको इस कल्याण का क्रियात्मक रूप दिखायी दिया है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह व्यक्ति खिलखिलाकर हँस पड़ा। हँसकर बोला, 'हमने भूतल पर स्वर्ग निर्माण करने का यत्न किया है। यही हम आप सब के मस्तिष्क पर अंकित करने का यत्न करते रहे हैं।'

'हो गया है।' मैंने यत्न से अपने मन की कटुता को छिपाते हुए कहा, 'और यह अंकित ज्ञान अब मरणपर्यन्त मिट नहीं सकता।'

'बहुत खूब! प्रोफेसर साहब, आप हिन्दुस्तान में क्या पढ़ाते हैं?'

'इतिहास।'

'हमारे यहाँ भी एक हिन्दुस्तानी इतिहास के प्रोफ़ेसर हैं। अपने विद्यार्थियों के अति प्रिय हैं। वह भी अब इस बात को मान गए हैं कि भूमण्डल में साम्यवाद का प्रचार शीघ्र ही होने वाला है।'

'क्या नाम है उनका?'

'वह तो मुझे स्मरण नहीं रहा।' उसने कहा, 'उनकी एक जर्मन पत्नी है। उसे रूस से बाहर जाने की स्वीकृति नहीं मिल रही। कदाचित् प्रोफेसर पत्नी को छोड़कर जा नहीं सकता।'

'कामरेड! वह चमत्कार भी हमको दिखा देते तो बहुत अच्छा रहता।' मैंने अपने गाइड की ओर देखकर कह दिया। इस पर वह बोला, 'मैं आपको कुछ दिखाने के लिए नियुक्त नहीं हुआ। आपके देखने का कार्यक्रम समाप्त हो गया है। मैं तो आपको सीमा तक पहुँचाने के लिए आया हुआ हूँ।'

'और कामरेड! आप क्या सहायता कर सकते हैं इसमें?' मैंने उस व्यक्ति से पूछ लिया जिसने पद्मदेव की सूचना दूसरी बार आकर मुझे दी थी। उसने यह क्यों दी थी, मैं समझ नहीं सका। कदाचित् वह पद्मदेव से मिला होगा और उसने मेरे प्रार्थना-पत्र के विषय में कहा होगा। यह सम्भव है कि पद्मदेव ने मेरे विषय में कुछ कहा हो परन्तु सन्तराम का कथन मेरे मस्तिष्क में चक्कर काट रहा था कि यदि वहाँ की सरकार को मेरे वहाँ जाने के उद्देश्य का पता चल गया तो वह मुझे भी वहाँ कैद कर सकती है। इस कारण मैं पद्मदेव जी से मिलने की अधिक उत्सुकता प्रकट नहीं कर सका।

"वह अभी बैठा ही था कि रूसी सरकार की ओर से हमें 'गिफ्ट' के रूप में पुस्तकें दी गयीं। दस बण्डलों में पुस्तकें थीं। पद्मदेव का पता देने वाले व्यक्ति ने सब बण्डलों को ध्यान में देखा और फिर उनमें से एक को चुनकर उसने मुझे वह बण्डल दे दिया। साथ ही कहा, 'आपके लिये इसमें ऐंजिल द्वारा लिखे संसार के इतिहास की विवेचना मैंने विशेष रूप में रखवा दी है। आप अपने 'ग्रुप' में सबसे अधिक पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं, इस कारण हमारे विभाग ने वह पुस्तक और एक लेनिन द्वारा लिखी 'कम्युनिस्ट सोसाइटी ऑफ फ्यूचर'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की एक प्रति विशेष रखवायी है।

'इसी कारण मैं आपके लिए बण्डल को पहचान कर पृथक् कर रहा था। वह यही है।'

"इतना कह वह व्यक्ति उठकर जाने के लिए तैयार हुआ तो मैंने भी उठकर उसे विदा करने के लिए उससे हाथ मिला कहा, 'बहुत धन्यवाद है। क्या मैं आपका नाम जान सकता हूँ?'

'मेरा नाम मार्टोव है। डब्ल्यू मार्टोव। मैं एक-दो वर्ष में पुन: हिन्दुस्तान भेजा जाने वाला हूँ। मैं आपको वहाँ पर मिलूँगा।'

'तो मेरा पता नोट कर लें।' हम बात करते-करते कमरे के द्वार की ओर चल पड़े थे।

"उसने मेरी व्यर्थ की बात का उत्तर देने के स्थान कहा, 'पुस्तकों को ध्यान से पढ़िएगा। मैं जब आऊँगा तो उनमें लिखे विषय पर बात करूँगा। कदाचित् आप हमारी योजना में बहुत सहायता कर सकेंगे।'

"हमारा गाइड भी हमारे साथ-साथ था। मैं समझ रहा था कि वह केवल मुझ पर ही नहीं, वरंच मार्टोव पर भी जासूसी करता रहा था।

"मैंने द्वार पर हाथ मिलाया और फिर अपने गाइड के साथ लौट आया। आहे ही मैंने वह बण्डल जो मार्टोव ने मुझे दिया था और जो मैं अभी तक अपने हाथ में ही पकड़े हुए था, अपने सूटकेस में रख लिया। मुझे सन्देह था कि उस व्यक्ति की प्रत्येक बात में कुछ रहस्य है। पुस्तकों में भी कुछ रहस्य हो सकता है। इस समय तक मुझे सरकारी पत्र के सूटकेस से चोरी होने की बात पता हो चुकी थी।

"अत: मैंने सूटकेस को ताला लगा दिया। पुन: गाइड से मैंने पूछ लिया, 'यह व्यक्ति किस विभाग में कार्य करता है?'

उसने बताया, 'गुप्तचर विभाग के सूचना उप-विभाग में।'

उसी सायंकाल हम रेल के स्टेशन को ले जाये गए और दक्षिण ऐक्सप्रेस में बैठाकर स्टालिनग्राद की ओर भेज दिये गए।

: 5 :

"लौटते समय हमारे पास सामान कुछ अधिक था। मैंने भी अपने लिए वहाँ एक सूटकेस ले लिया था। मैं अपने कपड़े ठीक ढंग से वहाँ रखना चाहता था। इसका लाभ भी हुआ था। मैं अपनी पार्टी का लीडर माना जाता था। मैं आयु में सबसे बड़ा था, शिक्षा में सबसे अधिक था और अनुभव भी सबसे अधिक रखता था। परन्तु इसमें मुख्य कारण यह था कि मेरे कपड़े सबसे अच्छे रहते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुहम्मद असलम ने भी एक सूटकेस खरीदा था। इसके लिए हमें वहाँ बहुत बड़ी रकम देनी पड़ी थीं इस पर भी वह सूटकेस यहाँ के घटिया-से-घटिया से भी अधिक घटिया था।

"हम कैस्पियन सागर तट पार कर रूस की सीमा पर रेल से उतरे तो मैंने असलम से पूछा, 'इस सब सामान को हम यहाँ तो उठा सकते हैं, परन्तु अफगानिस्तान की पगडण्डियों पर कैसे लेकर चल सकेंगे? लम्बी राह पर इसको उठाये चला नहीं जा सकेगा।'

"उसका उत्तर था, 'मैं भी यह विचार कर रहा हूँ। मेरी यह योजना है कि हमें अपने सूटकेस यहीं बेच देने चाहिये। हमें अपने कपड़े भी बेच देने चाहिये। केवल एक कम्बल और एक दरी ही रखेंगे। हमारी पुस्तकें हमारे तकिये का काम देंगी। हमें अपना सामान बेचकर नये जूते खरीद लेने चाहिये। लम्बी यात्रा पर चलते हुए हमारे पुराने जूते काम नहीं कर सकेंगे।'

'मगर हम यह सामान बेच सकेंगे क्या? कौन खरीदेगा ये पुरानी वस्तुयें?'

'तनिक सरकारी देख-रेख से बाहर होने दो। सब कुछ हो जायेगा।' जब हमें हमारे गाइड ने अन्तिम नमस्कार की और हम अफगानी सीमा में प्रविष्ट हुए तो असलम के कहने के अनुसार हमारा सामान खरीदने के लिये खरीदारों की भीड़ एकत्रित हो गयी।

"यह वहाँ नित्य होता था। असलम ने बताया कि "ये रूसी ही हैं। ये प्राय: यात्रियों से सामान खरीद कर अपने देश में ले जाकर अच्छे लाभ पर बेचते हैं। कुछ यात्री अपने साथ अनावश्यक वस्तुएँ भी ले आते हैं और उनको यहाँ बेचकर लाभ उठाते हैं।

"परन्तु उनको यह अनावश्यक सामान मिल कहाँ से जाता है?"

"लोग कंजूसी से निर्वाह कर अपने खर्च में से धन बचा लेते हैं। तदनन्तर वे अपने कारखानों के स्टोरों में से व्यर्थ का सामान खरीद लेते हैं। वहाँ उनको सस्ते दाम पर मिल जाता है। ये लोग खरीदकर उन लोगों के पास बेच देते हैं जिनको उन स्टोरों का माल मिल नहीं सकता।

"हमें तो सूटकेस इत्यादि सामान खुली मार्केट में मिला था। उसके लिए बहुत भारी रकम व्यय करनी पड़ी थी। उतना तो मिल नहीं सका। इस पर भी असलम ने ऐसे ढंग से बात की कि हमें व्यय किये से आधा दाम मिल गया।

"इस पर भी मैं बहुत प्रसन्न था। मार्ग का बोझा हल्का हुआ था। जाते समय हम मार्च के मास में गये थे, परन्तु आते समय सितम्बर का मास था और सर्दी कम थी। इस कारण कपड़े बेच देने से कष्ट नहीं हुआ।

"इस सब यात्रा में सबसे अधिक कठिनाई हिन्दुस्तान की सीमा में प्रवेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने पर हुई। जर्मनी का युद्ध आरम्भ हो चुका था और लौटते समय तक पहले से अधिक देख-रेख होने लगी थी।

''यद्यपि रूस से इंग्लैण्ड की युद्ध की अवस्था नहीं थी; इस पर भी रूस जर्मनी मैत्री के कारण रूस से आने वालों पर सन्देह किया जाता था। हमारे दल के नेता ने बताया कि हम गुलदौर, अफगानिस्तान से आ रहे हैं, परन्तु चुंगी वालों को विश्वास नहीं आया। इस पर हमारे नेता ने कहा, 'मैं कल तक अपना साक्षी उपस्थित कर सकता हूँ।' इस पर हमें वहाँ रोक लिया गया। हम चुंगी पर बने जेल में रख दिये गए। असलम ने अपने गाँव में एक व्यक्ति भेजा और वहाँ से एक कम्युनिस्ट कार्यकर्ता को अगले दिन बुला दिया। उसने लेन-देन की बात चला दी और हम सब पचास रुपये घूस देकर छूट आये।

''जो पुस्तकें मार्टोव ने मुझे दी थीं, वे मैं रूसी सीमा के भीतर खोल नहीं सका। मैं अपने गाइड के सामने उनको खोलना नहीं चाहता था। मुझे सन्देह हो रहा था कि उनमें पद्‌मदेव के विषय में कुछ है। अफगानिस्तान की सीमा में आकर एक सराय में बैठे हुए मैं उन पुस्तकों को देखने लगा जिनके विषय में उसने कहा था कि मेरे लिए ही हैं। ऐंजिल की पुस्तक 'इतिहास की विवेचना' को खोलते ही मुझे एक पत्र अंग्रेजी भाषा में लिखा मिला। वह पत्र मैंने पढ़ा तो चकित रह गया। मुझे विश्वास हो गया है कि वह व्यक्ति किसी-न-किसी कारण से प्रोफेसर पद्‌मदेव और मुझसे सहानुभूति रखता था। उसने मुझको पत्र लिख कर भारी जोखम का काम किया था। वह पत्र मैं साथ लाने में सफल हो सका हूँ।''

इस पर प्रोफेसर ने अपनी जेब से अपना पर्स निकाला और उसमें रखे एक पत्र को पढ़कर सुना दिया। पत्र में लिखा था–

'मैं पद्‌मदेव जी से मिलने का यत्न करता रहा हूँ, परन्तु कई कारणों से मिल नहीं सका। हाँ, एक बात का पता चला है। उनकी पत्नी ऐमालीना एक जर्मन यहूदी की लड़की थी। वह बर्लिन के समाजवादी दल की सदस्या थी, परन्तु प्रोफेसर साहब के प्रभाव से वह समाजवादियों की विरोधी हो गयी थी। इस बात का ज्ञान समाजवादियों को हो गया था। इस कारण जब वह रूस में भागती हुई पहुँची तो वह अपने माता-पिता, भाई तथा पति के साथ बन्दी बना ली गयी थी। पीछे पद्‌मदेव ने प्रार्थना की कि वह हिन्दुस्तानी नागरिक है और घटनावश रूस में आ गया है। अतः उसे और उनकी पत्नी को यहाँ से जाने की स्वीकृति दे दी जाए।

'कुछ कारणों से जिनका उल्लेख मैं यहाँ कर नहीं सकता, ऐमालीना को सरकारी अधिकारी जाने देना नहीं चाहते थे। प्रोफेसर को रूस से चले जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की स्वीकृति मिल गयी, परन्तु पत्नी के बिना। प्रोफेसर साहब ने पत्नी छोड़कर जाना उचित नहीं समझा।

'अब स्थिति यह है कि ऐमालीना रूस से बाहर जा नहीं सकती और प्रोफेसर साहब उसके बिना रूस से बाहर जाना नहीं चाहते। प्रोफेसर साहब में कई कारणों में मेरी रुचि है। यद्यपि वह मुझे अभी तक नहीं जानते। मैं उनसे मिल नहीं सका; इसी कारण मैं आपको यह सूचना भेज रहा हूँ कि वह यहाँ पर किस कारण से टिके हैं।

'शेष जब हिन्दुस्तान में आऊँगा तो बता दूँगा। यदि यह पत्र किसी भी रूसी अधिकारी के हाथ में चला गया तो मैं तो किसी 'कन्सेन्ट्रेशन कैम्प' में ले जाकर मार डाला जाऊँगा और कदाचित् पद्मदेव का एक प्रशंसक रूस में कम हो जाएगा और उसके लिए कभी भविष्य में भी वर्तमान नरक-कुण्ड से निकल सकना कठिन हो जाएगा।

'प्रोफेसर साहब के एक हितैषी और हैं, परन्तु वह प्रोफेसर साहब से बड़ी आयु के हैं और मद्य खूब पीते हैं। इस कारण वह कितनी देर तक जीवित रहेंगे, कहना कठिन है।'

''इस पत्र को मैंने मुहम्मद असलम को नौशहरा से लाहौर की गाड़ी में बैठे हुए दिखाया था। हम दोनों 'सैकेण्ड क्लास' में यात्रा कर रहे थे। शेष साथी 'थर्ड क्लास' में बैठे थे।

''मुहम्मद असलम को मैंने अपने रूस जाने का उद्देश्य बताया तो वह खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसने कहा, 'मैं तो पहले दिन ही जब हम नौशहरा की सराय में बैठे बाते कर रहे थे तो समझ गया था कि आपका रूस जाने में कुछ विशेष प्रयोजन है। यद्यपि वह प्रयोजन समझ नहीं सका था, परन्तु इतना समझ गया था कि उस प्रयोजन का कम्युनिज़्म के साथ सम्बन्ध नहीं।'

''मैंने पूछा, 'असलम भाई! भला क्या बात तुमने मुझमें देखी थी जिससे यह अनुमान लगा लिया था कि मैं कम्युनिस्ट नहीं हूँ?'

''मेरे प्रश्न पर वह गम्भीर हो गया। कुछ विचारकर बोला, 'आप बुद्धिशील व्यक्ति हैं और कम्युनिस्ट होने के लिये बुद्धि को तिलाञ्जलि देनी पड़ती है। वह आपने दी नहीं थी।'

''इस पर मैंने मुस्कराते हुए पूछ लिया, 'तो क्या आप मुझसे कम बुद्धिशील हैं? भला आप किस प्रकार कम्युनिस्ट हैं?'

''उसका कहना था–'बस मैंने आपको वैसा ही कम्युनिस्ट समझ लिया था, जैसा मैं हूँ। मैं कम्युनिस्ट था। कांग्रेस में कार्यकर्ता रहने के परिणामस्वरूप ही मैं कम्युनिस्ट हुआ था। वर्तमान युग की 'डेमोक्रैसी' कम्युनिज़्म की ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने का मार्ग है।'

"मैं विस्मय में उसका मुख देख रहा था। किसी समय पद्मदेव यही बात कहा करता था। असलम मेरे मन की अवस्था और परेशानी के लक्षण देख रहा था। उसने मेरे मन की अवस्था को समझ कहा, 'देखो दोस्त! मैं बताता हूँ। 'डेमोक्रैसी' में प्रत्येक व्यक्ति के मत का समान मूल्य है। समाज में अशिक्षित, मूर्ख और अयोग्यों की संख्या बहुत अधिक होती है। जब वे राजनीति विचार से बराबर हो जाते हैं तो वे प्रत्येक बात में बराबरी चाहते हैं। यही कम्युनिज़्म है। इसी को साम्यवाद कहा जाता है।

'साम्यवाद की भावना 'डेमोक्रैसी' उत्पन्न करती है। जनता के प्रतिनिधि जनता को जब राजा मान लेते हैं तो जनता को समान रूप में प्रत्येक बात का अधिकारी मान लेते हैं। उस सब बातों में आर्थिक समानता मुख्य है।

'यह समानता की भावना तो उत्पन्न हो जाती है, परन्तु समानता न है और न हो सकती है। जनता के नेता कैसे बन जाते हैं, यह वे जनता को बता नहीं सकते। वे नेता इसी कारण बने होते हैं, कि उन्होंने जनता में समानता की भावना उत्पन्न की होती है। अब वे लोगों को बता नहीं सकते कि अभी तक वे उनको गुमराह किये हुए थे, परन्तु उनका काम सबको समान मानने से चल नहीं सकता। अतः वह सब आचरण जो हम रूस में देख आये हैं, चलाना आवश्यक हो जाता है। सत्तानवे-अट्ठानवे प्रतिशत जनता को दो-ढाई प्रतिशत का दास बनाकर रखने के लिए सबको लौह-आवरण में रखा हुआ है।

'मैं तो जाने से पहले ही कम्युनिस्ट नहीं था, परन्तु मैं अपने मन का विश्वास और निष्कर्ष इन मूर्खों को बताना नहीं चाहता था। तुम्हारी बात मुझे विलक्षण प्रतीत हुई है।'

"मुहम्मद असलम के स्पष्टीकरण के बाद मैंने कह दिया—'मेरा रूस जाने का उद्देश्य केवल मात्र प्रोफेसर पद्मदेव के विषय में जानकारी प्राप्त करना था। मैंने एक समय पंजाब के एक कम्युनिस्ट नेता की कुछ सेवा की थी और उसके प्रतिकार में उसने मुझे यह अवसर दिलाया है। छः मास के घोर प्रयत्न से में यह पत्र पा सका हूँ।'

'अच्छा प्रोफेसर साहब! जब यह मार्टोव हिन्दुस्तान आये और आपसे मिले तो मुझसे भी मिलाइयेगा। कदाचित् तब तक मैं पार्टी का टिकट होल्डर भी नहीं रहूँगा। पार्टी हमसे अपने-अपने रूस के अनुभवों पर वक्तव्य माँगेगी और मैं अपने सत्य अनुभव लिखकर देने वाला हूँ। परिणाम यह होगा कि मेरा टिकट मुझसे वापस ले लिया जाएगा।'

'रिपोर्ट तो मैं भी सत्य-सत्य ही दूँगा। मुझे तो पार्टी से कुछ लेना नहीं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर असलम ने मेरी ओर ध्यानपूर्वक देखते हुए पूछ लिया, 'प्रोफेसर साहब! यह बताइये, संसार जैसा है, उसको देखते हुए राज्य-पद्धति कैसी रखी जाए? किस प्रकार मानवों की उन्नति और स्वतन्त्रता में बाधक न होते हुए भी राज्य चलाया जा सकता है?"

: 6 :

"मैंने उसे अपने मन की बात बता दी थी। मैंने कहा था, 'भारतीय समाज-शास्त्र में समाज और व्यक्ति के विषय में एक धारणा है। वह यह कि व्यक्ति से समाज बनता है। समाज व्यक्तियों का निर्माण करने लगे तो संसार में पतन होने लगता है। जितना-जितना समाज का अधिकार व्यक्ति पर बढ़ता है, मानव उतना ही बेड़ियों में जकड़ता जाता है और मन, बुद्धि एवं शरीर से हीन होता जाता है। तब समाज जो व्यक्तियों का एक समूह मात्र है वह भी हीन हो जाता है।

'परन्तु किसी व्यक्ति के व्यक्तिगत विकास में समाज की सहायता एक आवश्यकता होती है। समाज जब व्यक्तिगत विकास में सहायक होता है तो वह व्यक्ति को ऐसा विकास देना चाहता है जिससे व्यक्ति समाज का एक अंग मात्र बना रह जाए।

'इस परस्पर विरोधी स्थिति को भारतीयों ने एक ढंग से सुलझाया था। समाज में एक ऐसी श्रेणी निर्माण की थी जो ब्राह्मण कहाते थे। ब्राह्मण का समाज में पद सर्वोपरि था। उसे व्यक्ति निर्माण का कार्य दिया जाता था। ब्राह्मण न तो राज्य का कर्मचारी हो सकता था और न ही समाज के अधीन और आश्रित। वह विद्वान्, बुद्धिशील, निर्भीक और स्वार्थ-रहित हो तो ब्राह्मण माना जा सकता था। ब्राह्मण ही व्यक्तियों के शिक्षक बनते थे।

'ऐसे ही ब्राह्मणों की सम्मति से हमने समाज के अधिकार नियत किये थे। समाज के अधिकार सीमित रखे थे और शेष अधिकार व्यक्ति को दिये थे। समाज के सुरक्षित अधिकारों में हस्तक्षेप करने वाला व्यक्ति दण्डित होता था। समाज व्यक्ति के जीवन में हस्तक्षेप करे तो ब्राह्मण-वर्ग के नेतृत्व में समाज के प्रति विद्रोह खड़ा कर दिया जाता था।

'यह अधिकारों की सीमा धर्म कहलाती है। हमारे हिन्दू-समाज का और वास्तव में पूर्ण मानव-समाज का पतन इसी कारण हो रहा है कि समाज ने अपने अधिकारों की वृद्धि करते-करते व्यक्ति को बौना बना दिया है। कम्युनिस्टों ने इस दिशा में सबसे अधिक प्रयास किया है। बौने व्यक्तियों की समाज अपने सब घटकों को लेकर डूब मरेगी।

"समाज की सभ्यता और आचार की बात उसकी शिक्षा पर सामूहिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकार है। परिणाम-स्वरूप समाज अपने मतलब के व्यक्ति निर्माण करने का यत्न करता है। ऐसा करने के लिए व्यक्ति को काटछाँट कर छोटा करना पड़ता है। परिणाम यह होता है कि व्यक्ति काट-छाँट से छोटा होता जाता है। समाज की आवश्कयताएँ बढ़ती जाती हैं और व्यक्ति का व्यक्तित्व छोटा होता जाता है। इससे समाज भी छोटा होने लगता है।

'इसके लिए हमने एक बात और की थी। राज्य समाज के अधिकारों का संरक्षक है। हमने उसको भी एक घेरे में बन्द कर दिया था। समाज के अधिकार व्यक्ति के अधिकारों की तुलना में कम और सीमित होते थे। समाज के अधिकारों की तुलना में राज्य के अधिकार तो और भी कम तथा सीमित थे।

'इस प्रकार उन सब बातों में समाज का अधिकार नहीं था, जिसमें व्यक्ति किसी दूसरे से सम्पर्क नहीं रखता।

'उदाहरण के रूप में मनुष्य क्या खाता है, क्या पहनता है, क्या करता है, कहाँ रहता है, क्या विचार करता और अपने व्यक्तिगत कल्याण के लिए क्या करता है—इन सब बातों का अति विशाल क्षेत्र है। इन सब बातों में व्यक्ति को पूर्ण स्वतन्त्रता रहती थी। समाज का हस्तक्षेप केवल उन बातों में रहता था जिनमें एक व्यक्ति का दूसरे से सम्बन्ध बने। हमारे यहाँ धर्म के दस लक्षण बताये हैं और उन दस में सात ऐसे हैं जिनका सम्बन्ध केवल व्यक्ति से है वे हैं धृति, दम, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, धीः, विद्या और अक्रोध। इनमें पाँच तो व्यक्ति के शुद्ध अपने साथ सम्बन्ध रखने वाले धर्म हैं। वे हैं—धृति, दम, इन्द्रिय-निग्रह, धीः और विद्या। केवल दो ऐसे हैं जिनका सम्बन्ध कर्ता के अपने साथ भी रह सकता है और अन्य के साथ भी हो सकता है।

'शुद्ध सामाजिक धर्म तो केवल तीन हैं—क्षमा, अस्तेय और सत्य। इनमें ही समाज का हस्तक्षेप पूर्ण रूप से होता है और इनके उल्लंघन करने वाले को दण्डनीय माना जाता है।'

''मेरी बात सुन असलम गम्भीर विचार में निमग्न हो गया। एकाएक उसने सिर उठाया और पूछा, 'प्रोफेसर साहब! एक बात मैं समझ नहीं सका। मान लीजिए कि एक पड़ोसी अन्न के अभाव में भूखा मरने लगता है तो उसे मरने दिया जाये क्या? यह व्यक्तिगत धर्म के अन्तर्गत है अथवा समष्टिगत धर्म के अन्तर्गत है?'

'जहाँ तक उसके पास अन्न के अभाव का प्रश्न है, वह क्यों है, यह देखना और समझना समाज का काम है। अन्न का अभाव समष्टिगत कर्तव्यों के उल्लंघन से भी हो सकता है और व्यक्तिगत कर्तव्यों के उल्लंघन से भी।

'मान लो कि फसल के समय श्री अवस्थी महाशय को अपने परिश्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का फल अन्न के रूप में मिला था, परन्तु वह अन्न उसकी अपनी असावधानी से विनष्ट हो जाता है तो उसका भूखा मरना समाज की चिन्ता का विषय नहीं है। हाँ, कभी उसके अन्न का अभाव समाज के किसी दोष से भी हो सकता है। उदाहरण के रूप में चोरी हो जाती है अथवा कोई ठग उसको जाली नोट देकर उठा ले जाता है तब समाज को उसके अन्न-अनाज के अभाव की चिन्ता करनी ही चाहिये।

'परन्तु दोनों अवस्थाओं में किसी व्यक्ति को दया के भाव से उसकी सहायता करने में आपत्ति नहीं की जा सकती, वरंच ऐसा करने वाले को प्रशंसा का पात्र माना जाता है। परन्तु एक व्यक्ति जब अपनी ही करनी से अभावग्रस्त होता है तो उसके मरने का सोच करना भी निरर्थक है।

'एक और उदाहरण देता हूँ। एक ही कारखाने में काम करने वाले दो समान वेतन पाने वाले व्यक्ति वेतन लेकर आते हैं। एक, उस वेतन में एक मास का व्यय नियन्त्रित रूप से चलाता है और आपद् काल के लिए कुछ बचा भी रखता है।

'दूसरा, वेतन मिलते ही वेश्यागमन, मद्य का सेवन अथवा अन्य व्यर्थ की बातों में धन व्यय कर देता है और महीने की पन्द्रह तारीख को ही अभाव-ग्रस्त हो जाता है। ऐसे व्यक्ति का अभाव-ग्रस्त होना समाज की चिन्ता का विषय नहीं होना चाहिये।

'समाज की चिन्ता का विषय तो तब ही हो सकता है जब वेतन देने में मालिक ने अन्याय किया हो, अथवा किसी चोर ने उसकी जेब कतर उसका वेतन जेब से निकाल लिया हो अथवा कोई ठग उसको ठगकर उसका धन ले गया हो। तब समाज समष्टिगत धर्मों के उल्लंघन के कारण हुए अभाव में सहायक हो सकता है। उस सहायता में भी समाज कहाँ तक सहायक हो और किस प्रकार से सहायक हो, विचारणीय है।'

"असलम से अब मेरे सम्बन्ध और भी घनिष्ट हो गए हैं। अभी तो वह लखनऊ अपनी पत्नी के पास गया है, परन्तु मैंने उसे लाहौर में आने पर अपने घर पर ठहरने का निमन्त्रण दिया है।"

सुदर्शनलाल के इस वक्तव्य को सरस्वती मन्त्र-मुग्ध हो सुन रही थी। वह प्रोफेसर साहब के इतनी कष्ट-प्रद और जोखम की यात्रा पर जाने के लिए उनके प्रति अनुग्रहीत अनुभव कर चुपचाप बैठी सुनती रही थी। जब बात समाप्त हो गयी तो उसने कहा, "आपने यह सब कुछ मेरे लिए किया है। यह जानकर मैं आपका धन्यवाद किन शब्दों में करूँ, समझ नहीं रही।

"एक बात का मुझे सन्तोष है कि आपके मित्र सत्य ही जीवित हैं। इससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं आशान्वित हो रही हूँ। मेरा मन कह रहा है कि वह अपने वर्तमान बन्दी जीवन के अवश्य मुक्त हो जायेंगे।

"एक बात से मुझे जहाँ विस्मय हुआ है, वहाँ अति हर्ष भी। वह इस बन्दी जीवन की यन्त्रणा को अपनी पत्नी के लिए सहन कर रहे हैं। मैं अपने को अति कृतघ्न मानने लगी हूँ। कि इतना त्याग करने वाले पति का मैंने अनादर कर दिया था।"

'छोड़ो, इस बात को सरस्वती बहन! पिछली बात पर पश्चाताप करने से तो लाभ हो नहीं सकता। आगे के विषय में हम एक बात कर सकते हैं।"

"क्या?"

"भगवान् से प्रार्थना करें कि वह उनको शीघ्र मुक्त कराये।"

इस पर महादेव हँस पड़ा और बोला, "भगवान् क्या करेगा, कैसे करेगा और कौन उस पर विश्वास कर सकता है?"

"महादेव जी! बहुत कुछ है जो प्रार्थना से सम्पन्न हो सकता है और जिसके विषय में हम स्वप्न में भी चिन्तन नहीं कर सके। एक कवि ने सत्य ही कहा है–

'Many things are wrought by prayers than this world dreams off?' "

सरस्वती ने महादेव के कुछ कहने से पहले ही कह दिया, "भैया! तुम नहीं जानते, परन्तु तुम्हारा पुनः हमारे साथ सम्पर्क भी प्रार्थना का ही परिणाम है। मैं कई वर्षों से दिनानुदिन भगवान् से यह विनती करती रही हूँ कि पिताजी और आप में मानसिक समन्वय बन जाये।

"यह हो गया है। अब आप जो कुछ भी हैं, वहाँ रहते हुए भी पिताजी के स्नेह के पात्र हो गये हैं।"

"पर सरस्वती, मैं भी तो बदला हूँ और सबसे अधिक रफीका इसमें सहायक हुई है।"

"वह भी तो मैं परमात्मा की कृपा कर फल ही समझती हूँ। उसने ही आपके, भाभी रफीका के और पिताजी के मन में परिवर्तन उत्पन्न किये हैं। मैं और माताजी निरन्तर उसकी शरण में बैठ आपको सुमति मिलने की प्रार्थना करते रहे हैं।

"एक दिन मैं अपने विद्यालय में ध्यानावस्थित बैठी भगवान से यही निवेदन कर रही थी कि माताजी मुझसे मिलने आयीं और मेरे पूजा से उठने तक मेरी प्रतीक्षा करने लगीं। उनको आधा घण्टा से अधिक काल तक प्रतीक्षा करनी पड़ी थी। जब मैंने आँखें खोलीं और माताजी को सामने बैठे देखा तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछने लगी, 'कब से बैठी हो?' वह पूछने लगीं, 'क्या कर रही थी?'

'मैंने कहा, 'सबके लिए बुद्धि की भिक्षा माँग रही थी।''

'किस-किस के लिये?'

'वैसे तो पूर्ण जगत् ही बुद्धि-विहीन हो रहा है, परन्तु हमारे घर तो बुद्धि-विहीनता का विशेष अधिकार है। माँ, मैं निरन्तर यह परमात्मा से माँगती रहती हूँ कि मुझे, पिताजी को 'भैया को और भाभी को सुमति दे जिससे घर में पुनः मधुरता आ सके।'

''माताजी पूछने लगीं कि 'कैसे यह प्रार्थना करती हो? बताओ तो मैं भी तुम्हारी माँग में अपनी आवाज़ मिला दूँ।''

''भैया! तब से हम दोनों नित्य घण्टों ही आप सबके लिए शुभ कामना करते रहते हैं। हम तो समझती हैं कि वह ही हम सबको सुमति दे रहा है। अब सुधीर के पिता के भी छूटने के लिए अपनी आवाज़ उठाने लगूँगी। जब निश्चय हो गया है कि वह अभी इस लोक में हैं तो उनके छूटने के लिए प्रार्थना करनी ही होगी।''

''पर उसने तो नया विवाह कर लिया है और उसके साथ उसका प्रेम इतना प्रबल प्रतीत होता है कि वह उसके लिए अपनी स्वतन्त्रता का बलिदान कर रहा है।''

''यह उनकी उदारता और हृदय के प्रेममय होने के कारण है। इसी कारण तो ऐसे देवता के लिए कुछ अपनी आवाज़ उठाना चाहती हूँ। देखो भैया! उनका मेरे साथ व्यवहार उस हृदय की उदारता और प्रेम का प्रतीक ही है। मेरा और सुधीर का जीवन उस उदारता से ही चल रहा है। मैं उनके अहसान को भूल नहीं सकती। मैं जो कुछ करूँगी वह उनसे किए का एक पासंग-भर भी नहीं होगा।''

: 7 :

महमूद और उसकी पत्नी से परिवार की सुलह इस प्रकार हुई थी—एक दिन महमूद ने अपनी मुसलमान बीवी को अपनी बहन की पूरी कहानी सुना दी। सरस्वती ने उन दिनों निस्बत रोड पर संगीत विद्यालय खोला हुआ था।

महमूद बहन से एक दिन बाज़ार में मिल गया था। सरस्वती किसी काम से बाज़ार में जा रही थी और महमूद अपनी मोटर में अपनी पत्नी के साथ गुज़र रहा था उसने सरस्वती को देखा तो मोटर उसके समीप ले जाकर खड़ी कर दी। सरस्वती एक मोटर को वहाँ आ खड़े होते देख पहले तो घबरायी; तदन्तर महमूद को पहचान खड़ी हो हाथ जोड़ प्रणाम कर बोली, ''भैया हो?''

''हाँ सुनाओ सरस्वती! कैसी हो?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भगवान् की दयादृष्टि प्रतीत नहीं होती; इस पर भी जी रही हूँ।"

"हाँ, जीजाजी के देहान्त की बात सुनी थी। कहाँ रहती हो? कभी मिलने आ जाया करो।"

"मैं अब किसी के भी घर में नहीं जाती।" सरस्वती ने बात बदल दी और पूछा, "यह भाभी हैं क्या? उसने समीप बैठी बुर्कानशीं स्त्री की ओर संकेत कर दिया।"

"हाँ। मैं तुमको कोठी पर आने की दावत देता हूँ।"

"भैया! भाभी से कहो कि मुझे मिलने आया करें। मैं अब कहीं नहीं जाती। चित्त ही नहीं करता।"

"अच्छी बात है। इसे कहूँगा। कहाँ रहती हो?"

सरस्वती ने निस्बत रोड पर अपने संगीत विद्यालय का पता बता दिया। बाज़ार में तो अधिक बात हो नहीं सकी। घर जाकर महमूद ने अपनी पत्नी रफीका को सरस्वती की पूर्ण कहानी सुना दी। रफीका को इससे बहुत दुःख हुआ। उसने कहा, "बेचारी बहुत दुःखी मालूम होती है।"

महमूद ने अपनी बहन का इतिहास बता दिया, "यह अभी बच्ची ही थी कि माँ को एक वीरान जगह पर पड़ी मिल गयी थी। माँ इसे अपने घर ले आयी और इसका पालन-पोषण किया। इस प्रकार यह मेरी बहन हो गयी। यह सुन्दर तो है ही। तुमने देख लिया है। साथ ही इसे नृत्य व संगीत में बहुत रुचि है। यह उसमें अति प्रवीण हो गयी और फिर एक सुन्दर प्रोफेसर से उसका विवाह हो गया। दोनों में बहुत प्रेम था, परन्तु इसके संगीत के साथियों ने इसे पथ-भ्रष्ट कर दिया और इसका पति इसे छोड़कर विलायत चल दिया। वह वहाँ किसी घटनावश मारा गया है और यह अब अपने किये पर पश्चाताप करती हुई जीवन की घड़ियाँ गिन रही है।

"इसने एक संगीत सिखाने का विद्यालय खोल रखा है। और सुना है कि अब किसी सम्बन्धी से भी मेल-जोल नहीं रखती। अब बताओ, क्या तुम इसे मिलने जाओगी?"

"हाँ। अगर आप मना नहीं करेंगे।"

"देखो रफीका! मैं अपने को न तुम्हारा चौकीदार मानता हूँ, न ही मालिक। तुम जहाँ चाहो और जब चाहो जा सकती हो। यह तो मेरी बहन है और मेरा इससे स्नेह भी है।"

रफीका महमूद की दूसरी पत्नी थी। पहली थी एक अंग्रेज़ लड़की। नाम था सोसन। सोसन की माँ का एक मुसलमान से विवाह हुआ तो वह भी मुसलमान मान ली गयी और जब सोसन का महमूद से निकाह पढ़ाया गया तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महमूद भी मुसलमान बना लिया गया। वह महादेव से महमूद बन गया।

पंजाब में हुकूमत मुसलमानों के हाथों में चली गयी थी और एक सम्भ्रान्त हिन्दू-परिवार के पढ़े-लिखे युवक के मुसलमान होने से उसकी सरकार में प्रतिष्ठा बन गयी और वह डायरेक्टर जनरल फॉर हैल्थ की पदवी पर नियुक्त हो गया।

परन्तु उसकी पत्नी सोसन एक अंग्रेज़ की लड़की होने से और एक नये बने धनी-मानी के घर में पलने से आवारा हो गयी थी।

महमूद ने उससे ऊब कर दूसरा विवाह कर लिया। यह एक निर्धन दीनदार मुसलमान की लड़की रफीका थी। जब रफीका महमूद के घर में आयी तो महमूद के घर का नक्शा बदल गया। जहाँ पहले रिश्वत का धन शराब, नाच-रंग में होम होता रहता था, वहाँ घर में नमाज़ पढ़ी जाने लगी और रिश्वत लेने से घृणा और विषय-वासना से बचने की प्रेरणा मिलने लगी।

यूरोप में जर्मनी से इंग्लैण्ड का युद्ध छिड़ गया। हिन्दुस्तान की सरकार स्वाभाविक रूप में इंग्लैण्ड की सहायता करने लगी और देश की आर्थिक स्थिति बदलने लगी। साथ ही राजनीति में भी पंजाब की विशेष स्थिति बनने लगी।

सरकारी अफसर अधिक और अधिक कट्टर मुसलमान बनने लगे और हिन्दू-विरोधी होने लगे। परिणाम यह हुआ कि 'डायरेक्टर फॉर हैल्थ' की पदवी महमूद से छिन गयी और वह एक सामान्य हैल्थ ऑफिसर की उपाधि पर आ गया।

महमूद इस स्थिति से सन्तुष्ट नहीं था, परन्तु रफीका उसे खुदा पर विश्वास रखने और नेकी की राह पर चलने की प्रेरणा देती रहती थी।

इस पर भी कुछ अधिकारी थे जो महमूद की नेक-नीयती और ईमानदारी का जीवन व्यतीत करने पर उससे सहानुभूति रखते थे और इस नाते उसका गवर्नर तथा चीफ सेक्रेटरी से मेल-जोल बना हुआ था।

रफीका से विवाह हुए सात वर्ष हो चुके थे और उसके तीन बच्चे हो चुके थे। पहली पत्नी सोसन से उसकी कोई सन्तान नहीं थी। जब रफीका से महमूद का विवाह हुआ तो सोसन उसे छोड़ इंग्लैण्ड चली गयी थी और इन दिनों एक धनी की मिस्ट्रेस के रूप में रहती थी।

यह स्थिति थी जब सरस्वती और रफीका में मेल-जोल हुआ था। और जिन दिनों प्रोफेसर सुदर्शन रूस की यात्रा से लौटा था, महमूद सरस्वती से मेल-मुलाकात रखने लगा था और सरस्वती के कारण ही उसका तथा रफीका का आना-जाना अपने पिता के घर में होने लगा था। पण्डित नीलकण्ठ सप्रू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने लड़के से तब रूठा था जब वह सोसन से विवाह कर मुसलमान हुआ था। अब सरस्वती और रफीका में मेल-मुलाकात हुई तो सरस्वती के यत्न से महमूद और उसकी पत्नी का आना-जाना वकील सप्रू साहब के घर भी होने लगा।

सरस्वती के सौम्य स्वभाव, उसके सौन्दर्य और संगीता-कला में निपुणता ने रफीका पर विलक्षण ही प्रभाव उत्पन्न किया। वह एक दीनदार मुसलमान से एक उदार विचार की स्त्री बन गयी थी।

अब महमूद साहब रफीका का पर्दा न रखते देख प्रसन्न होते थे और उसे वह अपने साथ दावतों और अफसरों से मिलते समय साथ ले जाया करते थे। इस मेल-मुलाकात में सुदर्शन इत्यादि के मुलाकात बढ़ी और उनकी संगत का भी प्रभाव हुआ।

जब सुदर्शन रूस से लौटा तो सन्तराम ने कहना आरम्भ किया कि "प्रोफेसर साहब से पार्टी यह आशा करती है कि वह अपने रूस के तथा वहाँ के राज्य और समाज-सम्बन्धी अपने विचार लिखकर दें।"

सुदर्शन ने कहा, "सन्तराम भैया! तुम तो जानते ही हो कि मैं वहाँ कम्युनिज़्म के अध्ययन के लिए नहीं गया था। इस कारण मैं कुछ विचार बनाकर नहीं आया।"

इस पर भी सन्तराम के आग्रह को वह टाल नहीं सका। पार्टी ने उस पर कुछ धन व्यय किया था और वह उसका प्रतिकार पार्टी को देना कर्तव्य मान रिपोर्ट लिखने बैठ गया।

वह लिखने बैठा तो लिखता ही गया। डेढ़ सौ पृष्ठ से अधिक की रिपोर्ट तैयार हो गयी। सन्तराम उस रिपोर्ट को पढ़कर बोला, "भैया! यह क्या लिख दिया है?"

"जो कुछ देखा और समझा है, वही तो लिखा है।"

"पर इससे तो मैं बदनाम हो जाऊँगा। मैंने ही आपकी सिफारिश की थी कि आपको रूस का भ्रमण कराया जाए।"

"सन्तराम! या तो रिपोर्ट मत माँगो और यदि माँगते हो तो सत्य-सत्य ही लिख सकता हूँ। यदि तुम इन दल वालों में बदनाम होते हो तो मुझे इससे प्रसन्नता ही होगी। भला मूर्खों में बदनाम होना कोई बुरी बात है क्या?

"देखो सन्तराम! मैंने इस रिपोर्ट में भली-भाँति समझाने का यत्न किया है कि मनुष्य क्या है? समाज मनुष्यों के संगठन होने से मनुष्य पर प्रतिबन्ध नहीं, वरंच उसकी स्वतन्त्रता में सहायक होनी चाहिए। ऐसे समाज को मैं स्वतन्त्र मानता हूँ। स्वतन्त्र समाज के घटक भी स्वतन्त्र होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सत्य पूछते हो तो मुझे तो रूस एक बहुत बड़ा पालतू पशुओं का तबेला ही समझ में आया है। वहाँ की सरकार ने अपने तबेले के पशुओं को सिखा-पढ़ा और खिला-पिला कर बहुत अधिक दूध देने वाले जन्तु बना रखा है। उस दूध से तबेले के मालिकों को भारी सुख आराम मिलता है और अच्छे-से-अच्छा तथा अधिक-से-अधिक दूध उपलब्ध करने के लिए पशुओं को अच्छा दाना, घास-फूस दिया जाता है।

"जो पशु दूध नहीं दे सके अथवा देना नहीं चाहे, उनको बूचड़खाने में भेज दिया जाता है। बस यह चित्र है जो मैं देखकर आया हूँ और यही मैंने इस रिपोर्ट में लिख दिया है।

"भैया! चाहो तो ले जाओ। न चाहो तो इसे यहाँ छोड़ जाओ। यदि खर्च की बात कहते हो तो खर्च का बिल बनवा दो, मैं पाई-पाई दे दूँगा।"

सन्तराम ने अपने मित्र महमूद से भी प्रोफेसर सुदर्शन की रिपोर्ट के विषय में बताया। उस समय सन्तराम महमूद के निमन्त्रण पर खाना खा रहा था। रफीका और उसके बच्चे भी वहाँ बैठे थे। जब सन्तराम ने प्रोफेसर साहब के विषय में शिकायत की तो रफीका ने पूछ लिया, "क्या प्रोफेसर साहब ने कुछ झूठ-मूठ लिख दिया है?"

"यह मैं कैसे कह सकता हूँ? बात सत्य होगी, परन्तु सत्य को लाभ और हित की दृष्टि से देखना चाहिए। हम तो यह समझते हैं कि सत्य वह है तो अधिक-से-अधिक लोगों के हित में हो। जो हितकर नहीं, वह सत्य भी झूठ ही माना जाता है।"

"भाई सन्तराम जी!" रफीका ने मुस्कराते हुए कह दिया, "सत्य और झूठ को फायदेमन्द और नुकसानदेह के साथ गलत-मलत नहीं कर रहे क्या? एक चोर है तो उसे चोर ही मानना पड़ेगा। भले ही वह लोगों को ज़कात खिलाता फिरे। भला कोई चोर अपने चोरी के धन से हस्पताल खोल दे तो उसकी हुई चोरी, चोरी नहीं रहेगी क्या?"

"पर भाभी!" सन्तराम ने निरुत्तर होते हुए कहा, "चोरी की परिभाषा क्या है?"

"जो कुछ भी हो। जो भी उन अर्थों में चोर है जिन अर्थों में आप चोर समझते हैं, उन अर्थों में चोर होते हुए वह कोई सवाब का काम करने लगे तो वह चोरी नहीं रहती क्या?"

"हम तो 'ग्रेटैस्ट गुड ऑफ ग्रेटैस्ट नम्बर' में विश्वास रखते हैं।"

अब महमूद साहब ने इस रुचिकर बहस में भाग लते हुए कहा, "परन्तु सन्तरामजी! 'गुड' शब्द की भी परिभाषा होनी चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"गुड! भला इसकी परिभाषा की क्या आवश्यकता है?"

"तो चोर के ही शब्द की परिभाषा चाहिए? इसका तो यह मतलब हुआ कि तुम्हारे साथी चोर हैं और अपने को दोषमुक्त करने के लिए चोर की परिभाषा ही बदल रहे हैं। 'गुडनैस' से उनका सरोकार नहीं। इस कारण इसके अर्थों की चिन्ता नहीं।"

"बात यह है।" सन्तराम ने दिल कड़ा कर कहा, "डॉक्टर साहब! हम शब्दों के झमेले में नहीं पड़ते। हम तो एक बात जानते हैं कि सरकार समानता पैदा करने के लिए निर्माण होनी चाहिए।"

"समानता रुपये-पैसे में या किसी अन्य बात में भी?"

"सब बातों में।"

"मगर यह तो हो नहीं सकता। सब डॉक्टर नहीं हो सकते। सब मज़दूर नहीं हो सकते। इसी प्रकार सब स्त्रियाँ खूबसूरत नहीं हो सकतीं और न ही सब पुरुष एक समान बदसूरत हो सकते हैं। और भी, सबकी शारीरिक सामर्थ्य एक समान नहीं हो सकती। बताओ, इन सब बातों को बराबर कैसे कर दोगे? जब इन बातों में बराबरी नहीं हो सकती तो धन जो परिश्रम का रूप मात्र है, एक-जैसा किस समान कैसे बाँटोगे?

"देखो, मैं बताता हूँ। नेकी जिसे 'गुड' कहा जाता है, कर्म करने से होती है। कर्म करने में सामर्थ्य और बुद्धि का प्रयोग होता है। यह दोनों बातें सबमें बराबर नहीं। भला इनको शिकंजे में कसकर एक-समान कैसे कर दोगे? और सबसे समान भलाई कैसे करा सकोगे।"

सन्तराम ने इतनी गहराई में कभी विचार ही नहीं किया था। इस पर भी वह अपने को एक बन्द गली में जाकर रुक जाने के समान परेशान अनुभव करता था।

उसने प्रोफेसर सुदर्शन की रिपोर्ट पार्टी में दे दी। इस रिपोर्ट का परिणाम यह हुआ कि उसे इस पार्टी की प्रान्तीय शाखा का मन्त्री नहीं रहने दिया गया।

इसके साथ ही एक घटना और घटी। असलम को पार्टी से निकाल दिया गया।

: 8 :

असलम के विचार तो पहले ही कम्युनिज़्म के अनुकूल नहीं थे, परन्तु छः मास की प्रोफेसर सुदर्शन की संगत ने उसे इस 'इज़्म' का विरोधी बना दिया था।

नौशहरा से रेलगाड़ी में आते हुए दोनों में बहुत बातें हुई थीं और उन्होंने अपने पूर्ण भ्रमण पर विचार-विनिमय किया था। इस विचार-विनिमय का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम ही यह हुआ था कि असलम की भ्रमण सम्बन्धी रिपोर्ट भी लगभग वैसी ही थी, जैसी कि प्रोफेसर सुदर्शन की थी।

असलम की रिपोर्ट पर 'पॉलिटी-ब्यूरो' वाले अभी लाल-पीले हो ही रहे थे। कि प्रोफेसर सुदर्शन की रिपोर्ट आ गयी। दोनों रिपोर्टों को पढ़कर 'पॉलिटी-ब्यूरो' का सर्वसम्मति से यह निर्णय था कि सन्तराम को प्रान्तीय मन्त्री-पद से हटा दिया जाये और असलम से पार्टी-टिकट छीन लिया जाए।

प्रोफेसर सुदर्शन का नाम 'फैलो ट्रेवलरों' की काली सूची में दर्ज कर दिया गया। यह सब बात सन्तराम को विदित नहीं थी। वह तो अपनी ही पदवी के छिन जाने का रोना रो रहा था।

एक दिन प्रोफेसर साहब को असलम का तार आया—"मैं परिवार सहित आ रहा हूँ। स्टेशन पर मिलने का कष्ट करें।"

सुदर्शन स्टेशन पर गया और असलम, उसकी पत्नी रुक्मिणी और उसके बच्चे विनोद को साथ ले अपने घर आ गया।

घर पर साधना उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। असलम ने आशा के अनुसार ही देखा कि उसे एक घर के प्राणी की भाँति घर में रखा जा रहा है। साधना सुन तो चुकी थी कि उसके पति का रूस-भ्रमण का साथी अपनी पत्नी और बच्चे के साथ आ रहा है।

प्रोफेसर सुदर्शन ने पति-पत्नी को नगर और नगर के दर्शनीय स्थान दिखाये। इसमें कई दिन लगे और इन दिनों में रात के भोजन के समय प्राय: देश और समाज की बातें होती रहती थीं। असलम का विशेष परिचय तो सुदर्शन, साधना, सरस्वती, महमूद तथा रफीका से था। अन्य लोग जो इन खाने के समयों पर उपस्थित होते थे, वे केवल यह जानते थे कि असलम प्रोफेसर साहब का एक गहरा मित्र है।

एक दिन महमूद के घर खाना था और वहाँ बाहरी व्यक्तियों में सन्तराम भी आमन्त्रित था। सन्तराम को देख असलम तो कम्युनिज़्म के विषय में नित्य की भाँति मौन था, परन्तु सन्तराम से नहीं रहा गया और उसने अपनी पद में अवनति पर बात चला दी।

उसने कहा, "मैं अब पार्टी का एक सामान्य सदस्य मात्र रह गया हूँ।"

असलम ने बता दिया, "परन्तु मैं तो वह भी नहीं रहा।"

"क्यों? आपने क्या किया है?"

"कुछ विशेष नहीं। केवल सत्य भाषण किया है। मैंने अपनी रूस-भ्रमण की रिपोर्ट में कुछ कटु सत्य बातें लिख दी थीं।"

"तो आपने भी प्रोफेसर सुदर्शनजी की दृष्टि का ही प्रयोग किया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असलम ने मुस्कराते हुए कहा, ''दृष्टि तो अपनी ही थी। हाँ, दृष्टि से देखी बातों पर विवेचन हम दोनों ने किया था। मुझे इनकी विवेचना पसन्द आयी और मैंने वही लिख दी है।''

''उदाहरण के रूप में आपने कौन-सी बात ऐसी लिखी है जो देखी आपने थी, परन्तु विवेचना इनकी थी?''

''मैंने देखा था कि चार मास तक हम रूस के एक कोने से दूसरे कोने तक घुमाये जात रहे; जैसे भेड़-बकरियाँ हाँककर घुमाने के लिए ले जायी जाती हैं। यदि मार्ग चलते हुए कोई भेड़ मार्ग-तट पर किसी खेत की हरियाली देखने लगती है तो मालिक एक लाठी लगा भेड़ को सीधे मार्ग पर ले चलता है। वैसी ही दशा हमारी थी। हम न तो किसी से इच्छानुसार बात कर सकते थे और न ही किसी नगर में भी किसी दुकान पर कुछ देखने के लिए जा सकते थे। एक बार मुझे और प्रोफेसर साहब को एक-एक सूटकेस की आवश्यकता अनुभव हुई तो हमें इस बात के लिए अपने गाइड के पास अर्जी देनी पड़ी। उसके पास दाम के रूप में धन जमा कराना पड़ा। इस पर भी यह जाँच-पड़ताल पन्द्रह दिन तक चलती रही कि हमारे पास वह धन कहाँ से आया और हम सूटकेस लेकर क्या करेंगे? पन्द्रह दिन की जाँच-पड़ताल के उपरान्त सूटकेस मिले और बहुत ही महँगे दाम पर। जो सूटकेस यहाँ आठ-दस रुपये का सुगमता से मिल सकता है, वहाँ चालीस रुपये की लागत पर मिला।

''भाई सन्तराम!'' असलम ने आगे कहा, ''जिस दिन मैं नौशहरा स्टेशन पर रेलगाड़ी मैं बैठा तो मैंने अनुभव किया कि अति कठोर यन्त्रणा सहकर आ रहा हूँ। और जब से मेरा टिकट वापस लिया गया है, मैं समझता हूँ कि मेरा नवीन जन्म हुआ है।''

''तो समाज का हित कैसे होगा?''

''मेरे विचारों में भारी अन्तर आ गया है। मैं उस सबको अहित मानने लगा हूँ जिसे आप लोग हित कहते थे।

''मैं रूस में बसे हुए लोगों को सुखी और प्रसन्न देखकर नहीं आया। कारखानों में मज़दूर मुझे कोल्हू में जुते बैल को भाँति प्रतीत हुए हैं।''

''यह तो यहाँ भी है। कारखानों में काम करने वाले बम्बई और अहमदाबाद में तो बैलों से भी बुरी हालत में दिखायी देते हैं।''

''हाँ, परन्तु एक अन्तर है। यदि यहाँ कोई व्यक्ति उस स्थिति को ठीक नहीं समझता तो वह उसे छोड़कर अपने गाँव में जा सकत है। वहाँ तो यह सम्भव नहीं।''

''परन्तु असलम! गाँव में जाकर तो वह भूखों मर जाएगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अर्थात् कारखाने में आने से पहले वह भूखा मर चुका था। भाई, देहात में रहते हुए वह बहुत कम मेहनत से पेट भरता था। बात यह है कि नगर में रहने की चटक से विवश वह सरल, सादा जीवन छोड़ खारखानों में चला आया है। बम्बई के मज़दूरों में रहने के चाल तो देहात के झोंपड़ों से भी अधिक गन्दे और अस्वास्थ्यप्रद हैं, परन्तु मूर्खतावश लोग भागे जा रहे हैं कारखानों में काम करने के लिए।"

"नहीं असलम! तुम कुछ नहीं समझते। दुनिया का उद्योगीकरण हो रहा है। अतः देहात उजड़ेंगे और शहर पनपेंगे।"

"हाँ, नगरों में भीड़ बढ़ेगी। परन्तु देहात उजड़ेंगे नहीं। वहाँ भी आबादी बढ़ेगी। स्थान खाली नहीं रह सकता।"

"कुछ भी हो, उद्योगीकरण सुख और शान्ति का सूचक नहीं। ज्यों-ज्यों उद्योगीकरण होगा, दुनिया में भुखमरी, बेकारी बेईमानी और अनाचार बढ़ेगा।"

"यह सरमायादार देशों में ही है।"

"मुझे विश्वास हो रहा है कि ये सब बातें रूस में यहाँ से कम नहीं हैं। वहाँ कुछ घिनौना, गन्दा और छिपाने योग्य है जिसे हमें देखने नहीं दिया गया। वह हमारी दृष्टि से ओझल रखा गया है।

"मैं एक बात और विचार करता हूँ कि उद्योगीकरण से वस्तुएँ सस्ती नहीं होंगी। वे आय के अनुपात में महँगी होंगी। यह सम्भव है कि वस्तुएँ साफ-सुथरी और सुन्दर बनने लगें, परन्तु दाम के अनुपात में, उनकी उपयोगिता घटेगी।"

सन्तराम ने केवल यह कहा, "कुछ भी हो। यह होगा और इसको आप रोक नहीं सकते।"

"हाँ।" सुदर्शन ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "काल के प्रवाह को रोकना कठिन है, परन्तु सन्तराम! बुद्धिशील व्यक्ति उस प्रवाह से पृथक् हो अपने को डूबने से तो बचा सकते हैं। आज के मूर्खतापूर्ण काल से बचा जा सकता है।"

"कैसे?"

"जैसे मैं रूस में से बचकर निकल आया हूँ।"

"परन्तु आपका अब विश्वास नहीं होगा। एक बार हो गया था। जिसने आपकी सिफारिश की थी, वह भी धकेल कर मँझधार में छोड़ दिया गया है।"

सब हँसने लगे। सन्तराम का मन्त्री-पद से निकाला जाना एक ऐसी घटना थी, जिसे सन्तराम के अतिरिक्त अन्य सब पसन्द करते थे। बातों का सूत्र असलम ने अपने हाथ में लेते हुए पूछ लिया, "परन्तु भाई सन्तराम! इससे तुम्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत हानि हुई है?''

''बहुत अपमान हुआ है। अपने दल के सब लोग मुझे ऐसा समझते हैं कि मानो मैं किसी ऊँचाई से गिरकर हाथ-पाँव तोड़ अपाहिज हो गया हूँ।''

''ये दल की मूर्ख-मण्डली क्या समझती है, मैं यह नहीं पूछ रहा। तुम भूखे मरते हो तो लखनऊ में चले जाओ। मैं तुम्हारे काम धन्धे का प्रबन्ध कर दूँगा।''

सन्तराम अपने उस अभाव का वर्णन नहीं कर सका जो वह अपने दल के प्रान्तीय सेक्रेटरी-पद से हटाये जाने पर अपने में अनुभव करने लगा था।

असलम ने उसे चुप देख बात बदल दी। उसने कहा, ''आप प्रोफेसर देव के विषय में क्या कर रहे हैं?''

''जो हमसे हो सकता है, कर रहे हैं। हम सब उसके लिए नित्य परमात्मा से प्रार्थना करते हैं?''

''सुन रहे हैं कि हिन्दुस्तान को युद्ध के उपरान्त स्वराज्य मिलेगा। तब कुछ किया जा सकेगा। वह भी तब यदि कोई सावरकर जैसा प्रधानमंत्री बन गया तो। गांधी जी तथा उनके चेलों से तो हम कुछ भी आशा नहीं कर सकते। यदि गांधी प्रधानमंत्री बन गये और उनको पता लग गया कि कोई हिन्दुस्तानी मास्को में कैद किया हुआ। है तो यह आत्म-शुद्धि के लिए तीन दिन का व्रत रख लेंगे।''

इस पर पुनः सब हँसने लगे।

: 9 :

रूस पर जर्मन के आक्रमण की सूचना हिन्दुस्तान में पहुँची तो इससे सुदर्शन पद्मदेव के छूट जाने की आशा करने लगा था। इस पर भी वह जानता नहीं था कि किस प्रकार। महमूद सप्रू की गवर्नर पंजाब और पंजाब सरकार के चीफ सेक्रेटरी से मेल-मुलाकात थी। इससे यह समाचार कि एक हिन्दुस्तानी विद्वान् मास्को में बन्दी कर रखा हुआ है, उच्च अधिकारियों द्वारा इंग्लैण्ड की सरकार तक पहुँचाया गया। परन्तु बात सुनी गयी और सहानुभूति प्रकट कर कुछ न कर सकने की विवशता बता दी गयी।

इस पर भी जब महमूद सरस्वती को चीफ सेक्रेटरी से मिलाकर और वहाँ से मजबूरी का उत्तर ले लौटा तो सरस्वती के पिता नीलकण्ठ दास के घर सुदर्शन और साधना उनके लौटने की प्रतीक्षा कर रहे थे। सेक्रेटरी का उत्तर बता देने पर नीलकण्ठ ने भी सरस्वती को सान्त्वना देने के लिए कह दिया, ''देखो बेटा! अब तुम्हें चित्त को स्थिर कर वस्तुस्थिति का हृदयंगम कर लेना चाहिए। मैं समझता हूँ कि अब तुम्हें सुधीर के पिता के दर्शन की आशा छोड़ अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन की ओर ध्यान लगाना चाहिए। जो यहाँ हैं उनसे तुम क्या सहायता चाहती हो, बताओ?''

''पिताजी!'' सरस्वती ने भर्रायी आवाज़ में कहा, ''मैं कुछ नहीं चाहती। मुझे भारत सरकार से किसी प्रकार की आशा थी भी नहीं। यह तो प्रोफेसर साहब ही आशा बँधाते रहते हैं और इससे मैं यह समझने लगती हूँ कि कदाचित् मेरी ओर से किसी यत्न के अभाव में उनका छूटना न हो सका हो। इससे बिना आशा के ही यह अँधेरे में टटोलने चल पड़ी थी।''

''क्यों प्रोफेसर साहब! क्या आधार था आपकी इस प्रकार की आशायुक्त बातों में?''

''वकील साहब!'' सुदर्शन का कहना था, ''जब तक श्वास तब तक आस। मैं तो यत्न में विश्वास रखता हूँ। फल के लिए मैं अपने को ईश्वराधीन मानता हूँ।''

''बस, तुम-जैसे ईश्वर के पुत्रों ने यहाँ की लुटिया डुबो दी है। एक तुम्हारे महात्मा गांधी, जो मानते हैं कि बिना ईश्वर की इच्छा के एक तिनका भी नहीं हिल सकता, वह अब आगा खाँ पैलेस में बन्दी हैं और वहाँ राम-नाम की माला जप रहे हैं।''

''मैं महात्मा गांधी का चेला नहीं, परन्तु इस बात को तो मानता हूँ कि ईश्वर के ढंग न्यारे हैं। वह जलती आग में से भी किसी को बिन झुलसे बचा सकता है।

''वकील साहब! स्वराज्य मिल रहा है। यह मिल रहा है ईश्वर की कृपा से।''

''और गांधी जी की करनी से नहीं?''

''गांधीजी की करनी से हिन्दुस्तान में 'सिविल वार' होगी। हिन्दू और मुसलमानों में भयंकर युद्ध होगा। उससे भी भयंकर जो कभी मुसलमानों के राज्य में हुआ था। देखना यह है कि युद्ध अंग्रेजों के राज्य-काल में होता है अथवा अंग्रज़ों के जाने के उपरान्त।''

''तुम क्या चाहते हो? अंग्रेज़ी राज्य में यह युद्ध चाहते हो अथवा उनके यहाँ से जाने के उपरान्त?''

''मैं तो चाहता हूँ कि यह गृह-युद्ध अंग्रेजों के जाने के बाद हो, परन्तु गांधी जी इत्यादि अंग्रेजों से झगड़ा कर सरकार से बाहर रहेंगे और मुसलमानों को गृह-युद्ध अंग्रेजों के सामने ही चलाने का निमन्त्रण देंगे।''

''क्या मतलब?'' नीलकण्ठ प्रोफेसर की बात को समझा नहीं।

सुदर्शन ने बात की व्याख्या कर दी। उसने कहा, ''जब सन् 1921 में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौण्टेग्यू चैल्म्स फोर्ड सुधार मिले थे, तब अवसर था कि जो कुछ मिला है। उस पर अधिकार कर अपने पक्ष को सुदृढ़ किया जाता। यह नहीं किया गया।

"फिर सन् 1930 में गोलमेज़ कॉन्फ्रेस में मिले अधिकारों को विस्तार दिलवाने के स्थान यह चुटकी-भर नमक पर अपना ईमान बेचने के लिए तैयार हो गए। सन् 1932 में यह गोलमेज़ कॉन्फ्रेंस में गये भी तो पार्लियामैण्ट के हितैषी सदस्यों से मिलने और उनको स्वराज्य की अगली किस्त ठीक दिशा में देने के लिए कहने के स्थान मुसलमानों से समझौते पर भाग-दौड़ करने लगे।

"एक और अवसर आया था सन् 1942 में। क्रिप्स मिशन से बातचीत करने पर यह अपने हठ पर डटे रहे और बाज़ी मुसलमानों के हाथ में दे दी।

"जब मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान की माँग की थी तो मुसलमानों को हिन्दुस्तान की राजनीति में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं देना चाहिए था। और हिन्दुस्तान में अपनी शक्ति स्थापित करने के लिए अधिकार हाथ में लेना चाहिए था। कुछ गरम दिमाग के लोगों को अंग्रेजों से लड़ने दिया जाता और कांग्रेस द्वारा अंग्रेजों से समझौता कर राज्य पर अधिकार करना चाहिए था।

"अब होगा यह कि मुसलमान राज्यगद्दी पर हैं और वे अपनी शर्त पाकिस्तान को बनवाने के लिये गृह-युद्ध आरम्भ करेंगे और यह अहिंसा के पुजारी हिन्दुओं को अहिंसा का प्रचार करते हुए मुसलमानों की हिंसा में आहुति दे कर उनकी माँग स्वीकार करेंगे।

"गृह-युद्ध होगा अंग्रेज़ों के काल में ही और अंग्रेज़ मुसलमानों की सहायता करेंगे।"

"और हिन्दुओं की क्यों नहीं?"

"दुर्बलों और कायरों की भाँति, आँधी के सामने झुक जाने वालों को लोग पाँवों के नीचे कुचल कर चलते हैं। आँधियों के विरोध में गिर गये पेड़ों को भी लोग सलाम करते हैं।"

"यदि गृह-युद्ध हुआ तो मुसलमान मारे जायेंगे।"

"यह इस बात पर निर्भर करता है कि हिन्दुओं के नेता गांधीजी रहेंगे अथवा कोई अन्य नेता बन सकेगा।"

"इस समय तो गांधीजी हैं।"

"इसी कारण मेरा अनुमान है कि हिन्दू भारी संख्या में मारे जायेंगे। मैं हिन्दुओं को भीरु नहीं समझता। इस कारण वे विरोध तो करेंगे परन्तु उन्होंने अपने नेता गलत लोगों को बना रखा है, इस कारण वे लड़ेंगे बिना संगठित हुए और बिना नेताओं के। जिन नेताओं का ये मान करते हैं उनको लड़ने से रोकेंगे और वे स्वयं निरुत्साह हो भाग खड़े होंगे। परिणाम यह होगा कि हिन्दुओं की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन-दौलत लुटेगी, सम्मत्ति जला डाली जायेगी और हिन्दुओं की स्त्रियाँ अपमानित की जायेंगी। उनका अपहरण होगा और उनका शील भंग होगा।''

''बहुत भयंकर दृश्य की कल्पना करते हैं प्रोफेसर साहब?''

''हाँ, इतिहास यही पाठ हमें पढ़ाता है। दुर्भाग्य यह है कि नेता वे बन गये हैं जो इतिहास को पढ़े नहीं और नवीन इतिहास लिखने का यत्न कर रहे हैं।''

''तो हम सब डूबेंगे?''

''नहीं, बुद्धिशील इस जल-प्लावन में अपनी नौका बना डूबने से बच सकेंगे।''

इस भविष्यवाणी को सुनने वाले थे नीलकण्ड सप्रू, उनके पुत्र महादेव उर्फ महमूद, रफीका, सरस्वती, साधना और स्वरूप रानी।

सब भयभीत प्रतीत होते थे। केवल सरस्वती इस तूफान से बचने की बात विचार कर रही थी। उसने प्रोफेसर साहब से पूछ लिया, ''और इतिहास इस प्रकार के विप्लव से बचने का क्या उपाय बताता है?''

''उपाय तो है। एक जातीय स्तर पर और एक व्यक्तिगत स्तर पर। जातीय स्तर पर तो हमारे यहाँ विचार करने का कोई लाभ नहीं। न यहाँ कोई नेता बैठा है और न इतिहास के पाठ को कोई नेता सुनने के लिए तैयार है।

''हाँ, व्यक्तिगत स्तर पर बात कर सकता हूँ। जब पता चल जाये कि जल-प्लावन आने वाला है तो बुद्धिशील लोगों को उन स्थानों को ढूँढ निकालना चाहिए जो ऊँचे हों और जिनके जल में डूब जाने की सम्भावना न हो। वहाँ चला जाना चाहिए।''

सबसे पहले नीलकण्ठ सप्रू ने बात को समझते हुए कहा, ''तो हमें पंजाब छोड़ देना चाहिए?''

''यह मैं विचारकर बता सकता हूँ कि पंजाब का कोई क्षेत्र इतनी ऊँचाई पर है क्या, जहाँ जल के चढ़ जाने की सम्भावना न हो।''

''यह ठीक है। हम सब अपने को बुद्धिशील कहते हैं। अपनी बुद्धि को सार्थक सिद्ध करने के लिए हमें इस भीर के समय में बचने की कोई योजना बना उस पर कार्य करना चाहिए।''

परिणाम यह हुआ कि सुदर्शन, डॉक्टर सदाशिव, नीलकण्ठ, महमूद और सरस्वती, पाँच परिवारों के पुरखा बार-बार मिलकर विचार-विनिमय करने लगे कि आने वाले तूफान से बचने का क्या उपाय किया जाए, कब किया जाए और उसमें किस-किस को सम्मिलित किया जाये?

सुदर्शन ने अपने शाही मोहल्ले वाला मकान बेच दिया और उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़वाल में श्रीनगर के पास पचास एकड़ मोल ले ली।

एक दिन विचार होने लगा कि उस भूमि में क्या किया जाए तो यह निश्चय हुआ कि वहाँ अभी तो फलों का बाग लगा दिया जाए और फिर वहाँ रहने योग्य कुछ 'कौटेजेस' बनायी जायें। यह विचार हो ही रहा था कि एक दिन वकील साहब के 'स्टडी रूम' में टेलीफोन की घण्टी बजी। प्रोफेसर सुदर्शन भी वहीं बैठा था। उसका विचार था कि टेलीफोन उसके लिये है। वह उठा और 'स्टडी रूम' में जा चोंगा उठा पूछने लगा, "कौन है?"

"सुधीर।"

"क्या बात है?"

"तेहरान से एक 'केबल' आया है।"

"क्या लिखा है?"

"लिखा है कि मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। हिन्दुस्तान आने का यत्न कर रहा हूँ। पद्मदेव।"

सुदर्शन इस सूचना पर प्रसन्नता में उछल पड़ा। उसने पूछा, "तार किस पते पर आया है?"

"शाही मोहल्ले के पते पर।"

"तो उसे लेकर नानाजी की कोठी पर आ जाओ। कितनी देर में आओगे?"

"आधा घण्टा तो लग ही जायेगा। बाईसिकल पर जाऊँगा।"

सुधीर भलीभाँति जानता था कि पद्मदेव कौन है। प्रोफेसर साहब से रूस से लाये समाचार को वह सुन चुका था। वह समझ गया था कि उसके पिता का ही 'केबल' है।

प्रोफेसर सुदर्शन ने टेलीफोन का चोंगा वापस रखा और गोष्ठी में आकर यह सूचना दे दी, "टेलीफोन सुधीर ने किया था। तेहरान से 'केबल' आया है कि पद्मदेव वहाँ आने में सफल हो गये हैं।"

सब हम समाचार से एक-दूसरे का मुख देखने लगे। सब मन से इतने प्रसन्न थे कि वे सब मौन अपने-अपने मन में ही चिन्तन करने लगे थे। इस प्रसन्नता में कोई नहीं जानता था कि क्या कहे?

एकाएक सरस्वती उठी और गुसलखाने में चली गयी। सुदर्शन ने देखा कि उसकी आँखों से अविरल आँसू बह रहे हैं।

कितनी ही देर तक सब एक-दूसरे के शान्ति-भंग करने की प्रतीक्षा करते रहे। अब स्वरूपवती उठी और सरस्वती के पीछे वह भी गुसलखाने में चली गयी। दो मिनट पीछे माँ-बेटी गुसलखाने से निकलीं। सरस्वती के मुख पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसन्नता देदीप्यमान हो रही थी। स्वरूपवती उसकी पीठ पर हाथ रख उसे ले आयी। सरस्वती के बैठते ही स्वरूपवती ने कह दिया, ''आज की गोष्ठी में दूसरी बात तो विचार की हो ही नहीं सकती। पद्मदेवजी को यहाँ लाने की बात पर ही विचार करना होगा।''

महादेव ने कहा, ''मैं अभी गवर्नर महोदय के सेक्रेटरी द्वारा पद्मदेवजी की पूर्ण बात जानने का यत्न करता हूँ।''

डॉक्टर सप्रू ने सेक्रेटरी को टेलीफोन किया और पद्मदेव की वह कथा बात दी जो प्रोफेसर सुदर्शन रूस से लाया था। साथ ही तेहरान से आये 'केबल' का वर्णन कर दिया।

सेक्रेटरी ने सब नोट कर लिया और पता करने का आश्वासन दे दिया। 'केबल' में तेहरान का पता नहीं लिखा था।

अगले दिन सेक्रेटरी ने यह सूचना दी कि तेहरान में स्थित ब्रिटिश राजदूत को सूचित कर दिया गया है और वहाँ से समाचार आते ही किसी प्रकार की कार्यवाही की जा सकती है।

दो दिन पश्चात् समाचार आया कि पद्मदेव ने अपना पूर्ण इतिहास लिखकर तेहरान में ब्रिटिश राजदूत को दे दिया है और वह इतिहास दिल्ली भेजा जा रहा है।

इसके उपरान्त दिल्ली से यह समाचार आया कि पद्मदेव का इतिहास आ गया है और उस पर जाँच की जा रही है। यह जाँच अभी आरम्भ भी नहीं नहीं हुई थी कि 'बम्बई कॉटन एक्सचेंज' के कार्यालय से तार मिला, ''पद्मदेव बम्बई पहुँच गया है।''

इस पर प्रोफेसर इत्यादि सबको विस्मय हुआ कि हिन्दुस्तान की सरकार से भी कौन बलशाली शक्ति है जो इनसे भी द्रुत गति से कार्य करने की सामर्थ्य रखता है?

उसी रात सुदर्शन, साधना, सरस्वती, सुधीर, महादेव और रफीका हवाई जहाज़ से बम्बई को रवाना हो गये और अगले दिन प्रातः ऐक्सचेंज का कार्यालय खुलने से पूर्व उसके द्वार पर जा पहुँचे। तार पर मार्टिन का नाम था।

मार्टिन रहता तो उसी इमारत में ही था, परन्तु सुदर्शन इत्यादि को इस बात का ज्ञान नहीं था। वे सरदार गृह होटल में ठहरे थे और पौने दस बजे काटन ऐक्सचेंज पर पहुँचे थे।

चपरासी ने कार्यालय खोला तो इनको वहाँ खड़े देख पूछने लगा, ''किससे मिलना चाहते हैं?''

''मार्टिन साहब से।'' चपरासी ने उनको बैठाया और फिर कार्यालय से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेलीफोन पर मार्टिन को बताया कि कुछ लोग लाहौर से आपको मिलने आये हुए हैं।''

पाँच मिनट में मार्टिन वहाँ आ पहुँचा। सुदर्शन ने अपना परिचय दिया तो उसने कहा, ''ठीक है। कुछ अन्य लोग भी तेहरान से आये हुए हैं और अपने परिचितों का समाचार पाने के लिये ठहरे हैं। हमने उस सब को 'अपोलो होटल' में ठहराया हुआ है। कल एक हिन्दुस्तानी भी वहाँ से आया है। हमारा एक मार्टोव नाम का रूसी नागरिक इस हिन्दुस्तानी प्रोफेसर में रुचि ले रहा है। वह भी वहीं है।''

सुदर्शन ने समय व्यर्थ न गँवाने के विचार से उससे हुए पूछा, ''क्या मैं आपका परिचय और पद्मदेव से सम्बन्ध के विषय में जान सकता हूँ।''

''हाँ। मैं यहाँ ऐक्सचेंज कार्यालय का मैनेजर हूँ। साथ ही एक विश्व यहूदी संस्थान का भारत में प्रतिनिधि हूँ। यह संस्थान जर्मनी से भागे यहूदियों को भूमण्डल के भिन्न-भिन्न देशों में बसाने का काम कर रहा है।

''कुछ जर्मन यहूदी हिटलर के अत्याचार से बचकर भागकर रूस में चले गये थे और अब रूस से भागकर आ रहे हैं। उन्हीं के साथ ये हिन्दुस्तानी प्रोफेसर आये हैं।'

प्रोफेसर सुदर्शन यह विचार कर चकित हो रहा था कि जो बात हिन्दुस्तान की सरकार अभी विचार भी नहीं कर सकी थी, उसको इस गैर-सरकारी संस्था ने कितनी सुगमता से कर दिया है? वह विचार कर रहा था कि क्या शक्ति है इनके पास जो ये लोग विदेशों में बिखरे होने पर और किसी प्रकार की राज्य-सत्ता न रखने पर भी दुनिया की सरकारों से अधिक सरलता से कार्य कर रहे हैं?

परन्तु अधिक बातों में समय व्यर्थ न गँवाते हुए उसने मार्टिन का धन्यवाद किया और अपोलो होटल पर जा पहुँचा।

पद्मदेव के अपने पास तो एक पैसा भी नहीं था। इस कारण जब पिछले दिन मार्टिन ने पूछा, ''आप कहाँ जाना चाहते हैं?'' तो उसने कह दिया, ''मेरे लिये आप दो बातें करें। एक, तो मेरे सम्बन्धियों को लाहौर तार द्वारा सूचित कर दें कि मैं यहाँ पर पहुँच गया हूँ। दूसरे, दो दिन के लिये कहीं मेरे ठहरने का प्रबन्ध कर दें। मैंने मिस्टर मार्टोव की ज़मानत पर कुछ ऋण यहाँ आने के लिये लिया है। मैं समझता हूँ कि मुझे आपके द्वारा वह ऋण चुकता कर ही कहीं जाना चाहिये। मेरे सम्बन्धियों के यहाँ आने पर मैं वह ऋण दे सकूँगा और तब ही मैं घर जा सकूँगा।''

मार्टिन ने वहीं से ऐक्सचेंज तार लाहौर कर दिया और पद्मदेव के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपोलो होटल में स्थान निश्चय कर उसे वहाँ भेजने का प्रबन्ध कर दिया। उसने पद्मदेव को बता दिया, ''मिस्टर मार्टोव और उसका परिवार भी उसी होटल में ठहरा हुआ है।''

पद्मदेव सुदर्शन इत्यादि के पहुँचने की सम्भावना सायंकाल अथवा अगले दिन तक करता था। वह समझ रहा था कि लाहौर से जो कोई भी आयेगा, रेलगाड़ी में आयेगा परन्तु उस दिन प्रात:काल ही सुदर्शन इत्यादि को अपने होटल के कमरे के बाहर पहुँच दरवाज़ा खटखटाते देख, वह लपक कर सुदर्शन से गले मिलने लगा।

सुदर्शन से मिलने के उपरान्त उसकी दृष्टि चरण-सपर्श करते हुए सरस्वती की ओर गयी, ''ओह! तो श्रीमतीजी भी हैं। और...।'' वह सुधीर के विषय में पूछने वाला था। जब वह गया था तो सुधीर तीन वर्ष का बालक मात्र था। अब वह कुमार हो गया था और पाँच फुट पाँच इंच ऊँचा हो गया था।

सरस्वती के चरण-स्पर्श करने के उपरान्त सुधीर चरण-स्पर्श करने लगा। पद्देव ने समझा तो कुछ अधिक पूछे बिना उसे उठा कर गले लगा लिया और कहा, ''तुम सुधीर ही मालूम होते हो?''

इसके उपरान्त साधना के हाथ जोड़ नमस्ते कर बोला, ''भाभी! तुम्हारे आशीर्वाद से मैं कब्र में से निकल कर आ सका हूँ।''

महादेव को भी आया देख पद्मदेव ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा, ''डाक्टर साहब! आपने भी दर्शन देने का कष्ट किया है। मैं आपका बहुत ही आभारी हूँ।''

जब सब कमरे में जा बैठने लगे तो पद्मदेव की दृष्टि रफीका की ओर चली गयी। उसने सुदर्शनजी से पूछ लिया, ''इन बहनजी को नहीं जानता। इनका परिचय?''

सुदर्शन ने मुस्कराते हुए कहा, ''यह महादेव भाई की द्वितीय श्रीमती राधा ऊर्फ रफीका बेगम हैं। जब उन्हें आपके इतिहास का ज्ञान हुआ तो यह भी हमारे साथ आपके दर्शन के लिये चली आयी हैं।''

''यह भी भाभी हैं। भाभी, बहुत कष्ट किया है। मैं आप सब का आभारी हूँ।''

''पर डॉक्टर साहब!'' पद्मदेव ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, ''महमूद से महादेव भाई में पुनरावर्तन कैसे हो गया? क्या सरकारी नौकरी नहीं रही?''

इस समय तक सब पद्मदेव के चारों ओर सोफा और कुर्सियों पर बैठ गये थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

इस प्रश्न पर सुदर्शन ने कह दिया, ''राधा के परिचय से विस्मय नहीं

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ?''

सब हँसने लगे थे। पद्मदेव ने कह दिया, ''हाथी के पाँव में सब का पाँव वाली बात है। महादेव भाई के पुनरावर्तन में ही राधा का भी परिचय हो जायेगा।''

सुदर्शन ने बात बदल दी। उसने पूछा, ''पद्म भैया! मिस्टर मार्टोव कहाँ हैं? मैं उससे मिलने की भी लालसा रखता हूँ। तुमको विदित है अथवा नहीं कि मैं मास्को गया था और वहाँ इस सज्जन द्वारा तुम्हारे जीवित होने का समाचार ले सका था।''

''मुझे ज्ञात है।'' पद्मदेव ने कमरे की दीवार के साथ लगी घण्टी बजा दी। होटल का बैरा आया।

पद्मदेव ने कहा, ''देखो, सबके लिये अल्पाहार यहाँ ही ले आओ और कमरा नम्बर तीन में मिस्टर मार्टोव से कह दो कि लाहौर से एक प्रोफेसर सुदर्शन उनसे मिलने की इच्छा रखते हैं।''

सुदर्शन का अगला प्रश्न था, ''मिस्टर मार्टिन कह रहे थे कि आपको यहाँ पहुँचने में कुछ ऋण लेना पड़ा है। कितना कुछ चाहिये?''

''मैं जानता नहीं?'' पद्मदेव ने कहा, ''कि मार्टोव ने मेरे लिये कितना कुछ व्यय किया है, परन्तु तेहरान में विश्व यहूदी संस्थान के प्रतिनिधि से मुझे पाँच सौ डालर लेने पड़े थे। उसमें से मेरे पास एक सौ डालर के लगभग बचे हैं।

''वैसे तो मैं बचे धन से लाहौर पहुँच सकता था, परन्तु मैं किसी अन्य की अमेरिका से आने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। उसे मार्टोव ने सूचित कर रखा है कि में यहाँ पहुँच रहा हूँ।''

''वह आपकी रूसी पत्नी है क्या?''

''रूसी नहीं, जर्मन। वह मुझसे पहले अपनी जेल की दीवार को भेद कर मुक्त होने में सफल हो चुकी थी। वह अमेरिका में है।''

यह बात तो सरस्वती को विदित थी कि उसकी एक सौतन बन चुकी है। अत: इस सूचना से उसे विस्मय नहीं हुआ। विस्मय करने की बात यह थी कि ये लोग कैसे लौह-आवरण को भेद कर निकल सके हैं?''

सुदर्शन ने कहा, ''भैया! जो कुछ तुम लोग कर सके हो वह किसी दैवी चमत्कार से कम नहीं है।''

''हाँ, चमत्कार तो है। परन्तु इसमें कारण यह है कि रूस में भी मानव-स्वभाव के लोग रहते हैं, वे भी अपने में मस्तिष्क और संवेदनात्मक हृदय रखते हैं। वहाँ भी मनुष्य में दुर्बलताएँ वैसे ही हैं जैसी कि संसार के अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देशों में है।

"यह ठीक है कि वहाँ की तानाशाही सरकार ने इतना प्रबल आतंक फैला रखा है कि दस सहस्त्र में नौ सहस्त्र, नौ सो निन्यानवे लोग उस आतंक के नीचे मृतप्राय: हो रहे हैं, परन्तु दस सहस्त्र में जो एक जाग्रत मानव है वह भले अथवा बुरे काम करता रहता है। वहाँ का जो भी बन्दी किसी ऐसे मानव के सम्पर्क मे आ जाता है जो जाग्रत और संवेदना अवस्था में होता है, वह लाभान्वित होता है।

"मार्टोव उन्हीं जाग्रत व्यक्तियों में एक था। एक अन्य भी मुझे वहाँ मिले थे। वह मास्को विश्वविद्यालय के चान्सलर निकोविस्की हैं। ऐमालीना भी एक वैसे ही व्यक्ति से मिल गयी थी। ये सब लोग हमारी मुक्ति में साधन हुए हैं।"

इस समय मार्टोव पद्मदेव के कमरे में आ गया। सुदर्शन ने उसे देखा तो लपक कर उठा और आगे बढ़ मार्टोव से हाथ मिलाकर बोला, "हम सब आपके बहुत आभारी हैं। आपके प्रयत्न से ही हमें आज का शुभ दिन देखने को मिला है।"

मार्टोव बैठा तो बैरा अपने एक साथी के साथ सबके सामने तिपाइयाँ और प्लेटें लगाने लगा।

मार्टोव अपने कमरे मे अपनी पत्नी और बच्चों के साथ प्रात:काल का अल्पाहार ले चुका था। अत: उसने अपने आगे से प्लेटों उठवा दीं। वह सुदर्शन के कथन का उत्तर देते हुए बताने लगा–

"प्रोफेसर साहब की बीवी ऐमालीना की सहायता तो मैं उसके एक यहूदी लड़की होने के कारण कर रहा था, परन्तु प्रोफेसर साहब से एक दिन इनका इतिहास सुन, इनका मुरीद बन गया था। यह अपनी पत्नी के विषय में बता रहे थे कि जब एक बार विवाह हो गया तो वह टूट नहीं सकता और टूटना भी नहीं चाहिये। पुरुष अथवा स्त्री यदि वचन और निष्ठा भंग करें तो यह पतित तो हो जाते हैं, परन्तु सम्बन्ध नहीं टूट सकता। मुझे यह एक अति उदार मनोवृत्ति समझ आयी।

"एक पति अपनी पतित पत्नी को भी अपनी पत्नी ही मानता है। यद्यपि वह पतिता है, परन्तु पत्नी अथवा पति का सम्बन्ध तो स्थिर रहेगा। इनके ऐसे उद्‌गार सुन मैं इन प्रोफेसर साहब की भी सहायता करने के लिए उद्यत हो गया। हम लोग यत्न तो कर सकते हैं, परन्तु सब अपने भाग्य से सुख और दु:ख पाते हैं। यत्न और यत्न की सफलता में केवल एक कच्चे सूत्र का ही सम्बन्ध होता है। सफलता के लिये यत्न करते हुए भी सफलता भाग्यशालियों को ही मिलती है। यह तो पद्मदेव और कुछ सीमा तक मेरे भी भाग्य के ही कारण है जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम नरक-कुण्ड से निकल यहाँ खुले वायुमण्डल में सुख की साँस ले रहे हैं।''

: 10 :

''तो आप हैं मिसेज़ देव नम्बर वन?'' ऐमालीना सरस्वती से हाथ मिलाते हुए पूछ रही थी। जिस दिन सरस्वती इत्यादि बम्बई पहुँचे थे, उसी दिन ऐमालीना भी न्यूयॉर्क से मैक्सिको, न्यूज़ीलैण्ड, आस्ट्रेलिया और लंका से होती हुई बम्बई पहुँच गयी। ऐमालीना अपोलो होटल में पहुँची तो पद्‌मदेव सबके साथ सरदार गृह होटल में गया हुआ था। ऐमालीना ने अपना सामान होटल में मार्टोव के पास रखवाया और टैक्सी में अपने पति के पास जा पहुँची। जब औपचारिक परिचय हो चुका तो सरस्वती को सिर से पाँव तक देखती हुई ऐमालीना ने उसके समीप बैठते हुए उक्त प्रश्न पूछ लिया।

सरस्वती ने अंग्रेजी भाषा में ही उत्तर देते हुए कहा, ''मुझे अपनी सिस्टर मिसेज़ नम्बर टू से मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई है।''

''परन्तु तुम बहुत सुन्दर हो।''

''सत्य? मेरी सम्मति अपने विषय में इसके विपरीत है। इस पर भी एक बात तो निश्चय ही है कि मैं अपनी सिस्टर से अधिक भीरु हूँ।''

''वह तो हम सब स्त्रियाँ होती ही हैं। देखिये, मैं बताती हूँ। मैं जब बम्बई के हवाई अड्डे पर उतरी तो पहली बात जो मैंने की थी, वह यह कि वहाँ के 'टायलेट रूम' में जा अपने बाल ठीक किये, होठों पर सुर्खी और गालों पर पाउडर लगाया। यह किसलिये? केवल इसलिये कि मैं सब स्त्रियों की भाँति भीरु हूँ। मैं अपने चिर-वियुक्त पति को अपने पूर्ण अस्त्र-शस्त्रों से सजकर ही मिलना चाहती थी। मुझे भय था कि इन अस्त्र-शस्त्रों के बिना मैं दुर्बल हूँ।''

''पर मिस्टर! क्या अस्त्र-शस्त्र पहनकर युद्ध-भूमि में जाना शौर्यता का लक्षण नहीं? इसे भीरुता किसलिये कहती हो?''

''यही तो भीरुता है। जब हम अपने नैसर्गिक गुणों पर विश्वास खो देते हैं तो भीरुता ही प्रकट करती हैं। यही बात जातियों में भी है। जो जाति अधिक और अधिक शस्त्रास्त्र निर्माण करने में लगी रहती है वह सत्य ही अपने गुणों में विश्वास न रखने के कारण ही ऐसा करती है।''

इन दोनों को घुल-मिलकर और मुस्करात हुए बातें करते देख पद्‌मदेव सुदर्शन के पास से उठा और अपनी दोनों पत्नियों के पास जाकर बैठ गया। उसने बैठते हुए कहा, ''परिचय कराना तो मेरा कर्तव्य है।''

''हाँ, था तो, परन्तु आपने नहीं कराया तो मैंने स्वयं ही यत्न करना आरम्भ कर दिया है।'' सरस्वती मुस्कराते हुए कह रही थी, ''देखिये, यह कह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही हैं कि सब स्त्रियाँ भीरु होती हैं। इसी कारण तो जब अपने पति के पास आती हैं तो सोलहों शृंगार कर आती हैं। इनके विचार से इसका कारण यह होता है कि वे भीरु होती हैं। अपने नैसर्गिक गुणों पर उनको विश्वास नहीं होता।''

इस पर ऐमालीना ने बताया, ''बात यह है कि मैंने इनको देखा और अपने मन की प्रतिक्रिया बता दी। मैंने कहा कि आप बहुत सुन्दर हैं तो इस पर यह कहने लगीं कि यह ऐसा नहीं मानतीं। साथ ही यह बहुत भीरु हैं। मैंने समझा कि सब स्त्रियाँ भीरु होती हैं और इसका प्रमाण यह है कि वे पुरुष पर विजय पाने के लिये शृंगार करती रहती हैं। वे अपने नैसर्गिक गुणों पर विश्वास नहीं रखतीं।

''मैं समझी हूँ कि यह अपने गुणों को नहीं जानतीं। इसी कारण अपने को भीरु मान रही हैं। अन्य स्त्रियों की भाँति यह भयभीत हैं कि मैं अपने अस्त्र-शस्त्रों, अभिप्राय यह कि शृंगार से सुसज्जित हो आयी हूँ और यह पराजित हो रही हैं।''

पद्मदेव इस युक्ति और प्रति-युक्ति को सुन खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसे हँसते देख सब अपनी-अपनी बात छोड़ इन दम्पती की ओर देखने लगे।

''क्या हो रहा प्रोफेसर साहब?'' सुदर्शन ने पूछ लिया।

''मेरी दोनों धर्म-पत्नियों में एक राजनीतिक विषय पर विवाद छिड़ गया है। विषय सैद्धान्तिक है। इस कारण हँसी का विषय बन गया है।''

''तो यह किसी प्रकार से सौतिया डाह के साथ सम्बन्ध नहीं रखता?''

''अभी तक तो डाह की गंध आयी नहीं। आप भी सुनेंगे तो कुछ लाभ ही उठायेंगे।''

''देखिये, विवादास्पद विषय वही है जो गांधी और सरदार भगत सिंह में था। मेरा अभिप्राय है कि शुद्ध अहिंसावादियों और हिंसा वादियों का झगड़ा ही है।

''एक कह रही है कि पति को पराजित करने के लिये स्त्री को अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होकर आक्रमण करना चाहिये। क्योंकि ये स्वभाव से भीरु होती हैं और यह अधिक-से-अधिक अस्त्र-शस्त्रों की सहायता अनुभव करती हैं। स्त्री को अपने नैसर्गिक गुणों पर विश्वास नहीं होता।

''और दूसरा पक्ष यह है कि अस्त्र-शस्त्र धारण करना भीरुता का लक्षण नहीं, वरंच शौर्यता का लक्षण है। मुझे एक ओर महात्मा गांधी दिखायी दिये हैं जो अपने आत्म-बल से ब्रिटिश ऐम्पायर को सूत के गोलों से ध्वंस कर सकने का दावा कर रहे हैं और दूसरी ओर, 'फिलॉसोफी ऑफ दि बम्ब' लिखने वाले हैं, जो बम्ब चलाना शौर्य का काम मानते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक बात में ये गांधी और हिंसावादियों से भिन्नता का व्यवहार रख रही हैं। जो नैसर्गिक गुणों की सामर्थ्य का वर्णन कर रही हैं वह तो अस्त्र-शस्त्र धारण कर युद्ध-भूमि में डटी हैं और जो अस्त्र-शस्त्रों को भीरुता का लक्षण नहीं मानती, वह बिना अस्त्र-शस्त्रों के ही मैदान में आयी हैं।"

इस पूर्ण अलंकार को साधना समझ रही थी। सुदर्शन इसके अर्थ समझने का यत्न कर रहा था। सुधीर, महादेव और रफीका बम्बई की सैर के लिये गये हुए थे।

साधना ने पूछ लिया, "और जिस पर आक्रमण हो रहा है वह भी अस्त्र-शस्त्र लिये हुए है अथवा नहीं?"

"वह सन् 1885 से लेकर 1906 तक के कांग्रेसियों की भाँति भ्रान्त-मन बैठा है। वह समझ रहा है कि आक्रमण करने वाले उस पर अनुकम्पा कर रहे हैं। वे ईश्वरीय देन हैं।"

तो प्रोफेसर साहब सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी हैं, जिन्होंने सन् 1902 में उक्त वाक्य कहे थे?" सुदर्शन ने पूछ लिया।

"कुछ अंशों में।"

"परन्तु उस समय आक्रमण करने वाले केवल अंग्रेज थे और यहाँ तो दो-दो आक्रमण करने वाले हैं।"

"उस समय भी दो थे। एक थे मुसलमान और दूसरे थे अंग्रेज़। मुसलमान अलीगढ़ के दुर्ग में बैठे अस्त्र-शस्त्रों से लैस हो रहे थे और अंग्रेज़ बलपूर्वक आक्रमण कर हिन्दुस्तानियों का ही भोग कर रहे थे। भुक्त ही कह रहा था कि ये दोनों आक्रमण करने वाले ईश्वर की देन हैं।"

"तब तो प्रोफेसर साहब, बहुत ही चिन्ता का विषय है।"

"नहीं, भैया! इसमें चिन्ता की कुछ भी बात नहीं। हिन्दू-समाज के लिये किसी गांधी-जैसे नेता की आवश्कता है जो उसे आत्म-समर्पण करने के लिये तैयार कर दे।"

यह अलंकारिक बात बन्द करनी पड़ी। महादेव, सुधीर और रफीका वहाँ आ गये।

सुदर्शन ने बैंक के द्वारा धन का प्रबन्ध कर दिया। मार्टोव के द्वारा लिया ऋण मार्टिन को देकर तेहरान भेज दिया गया और मार्टोव द्वारा व्यय किया धन उसे दे दिया गया।

इस समय तक मार्टोव ने अपने भावी कार्यक्रम का निश्चय कर लिया था। वह युद्ध समाप्ति तक हिन्दुस्तान में ही रहना चाहता था। उसका विचार था कि जापान पराजित होगा। तब वह अमेरिका जा सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान में वह बम्बई में मार्टिन के सहयोग से रहना चाहता था। उससे मार्टोव की बहुत लम्बी बातचीत हुई थी।

मार्टिन ने यह कहा था, "हमारी विश्व यहूदी पुनर्वास संस्था का विचार है कि जर्मनी में हिटलरशाही समाप्त होगी। यूरोप में मित्रराष्ट्रों की निर्विवाद विजय होगी।

: 11 :

पहली ही रात सरस्वती और ऐमालीना विचार करने लगीं कि वे कहाँ रहेंगी? कौन सरदार गृह होटल में ठहरेगा और कौन अपोलो होटल में पद्मदेव के साथ?

बात ऐमालीना ने ही आरम्भ की थी। उसने कहा था, "मैं प्रोफेसर सुदर्शन जी के साथ सरदार गृह होटल में ठहरूँगी।"

सुदर्शन ने इसका अर्थ न समझते हुए कह दिया, "पर यहाँ तो कोई कमरा खाली नहीं है।"

"है तो।" ऐमालीना का कहना था, "बहन सरस्वती प्रोफेसर साहब के साथ उनके होटल में चली जायेंगी। मैं सुधीर के साथ यहाँ उनके कमरे में रहूँगी।"

सुदर्शन को बात समझ आ गयी। उसने कहा, "हाँ, यदि पद्मदेव जी तथा सरस्वती इस प्रबन्ध को ठीक समझें तो।"

सरस्वती ने कह दिया, "मैं तो सुधीर के साथ यहाँ ही रहूँगी।"

ऐमालीना ने विनीत भाव मे अपने पति की ओर देखा और कहा, "मैं समझती हूँ कि बहन सरस्वती को आपसे बहुत कुछ भविष्य के विषय में विचार करना होगा। इस कारण आप इसे ले जाइये और मैं सुधीर से परिचय बढ़ाना चाहती हूँ।"

"अच्छा तो यह है कि तुम में से कोई भी मेरे साथ न जाये। तुम भी यहाँ सरस्वती के साथ ही रह जाओ। तुम दोनों को जी भर कर प्रातः वाले राजनीतिक विषय पर बात करने का अवसर मिल जायेगा और मैं सुधीर को अपने साथ लिये जाता हूँ। मैं इसके विषय में देखना चाहता हूँ कि यह मेरी अनुपस्थिति में क्या बन सका है।"

"यह तो कुछ न हुआ।" ऐमालीना ने कहा।

"तो ऐसा करो। तुम तीनों चलो। ऐमालीना, सरस्वती और सुधीर। हम तीनों परस्पर परिचय बढ़ायेंगे।"

साधना ने कह दिया, "मैं भी यही प्रबन्ध ठीक समझती हूँ। पत्नियों को पति के साथ रहना चाहिए और पिता को अपने पुत्र को सम्भालना चाहिये।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐमालीना और सरस्वती दोनों असन्तुष्ट थीं, परन्तु पद्मदेव ने कह दिया, "साधना भाभी का विचार ठीक है। हमें अब अपने घर की सुध लेनी चाहिये। सुध लेने वाली तो तुम दोनों हो, अतः मैं अब बच्चों को सम्भालूँगा तो तुम दोनों की सहातया से ही। चलो चलें, इन लोगों को सोने का अवसर देना चाहिये।"

सुधीर के साथ होने से पति की पत्नियों से सम्बन्ध की बात नहीं हो सकी। सरस्वती के घर से भाग जाने की बात अभी तक विचारणीय थी। यह ठीक था कि पद्मदेव ने अपने घर का द्वार सरस्वती के लिए खुला रखा था, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं था कि उसे पत्नी का अधिकार प्राप्त भी होगा। ऐमालीना को सरस्वती के इतिहास का ज्ञान था। इस पर भी वह चाहती थी कि पद्मदेव को अब इसे अपनी पत्नी का स्थान दे देना चाहिए। वह पति का अपने साथ व्यवहार देखकर यह समझी थी कि सरस्वती को अवसर मिले तो वह पद्मदेव के हृदय में उचित स्थान पा सकेगी।

जहाँ तक उसका अपना सम्बन्ध था, अपशोक के जन्म के उपरान्त सुलह-सफाई हो जाने पर भी उसका बेरिया से सम्बन्ध बना रहा था। यद्यपि वह अपने पति को मुक्ति दिलवाने के लिए ही था, परन्तु उसका वृत्तान्त उसने अपने पति को बताया नहीं था। मार्टोव को पूर्ण स्थिति का ज्ञान था और उसने कितनी बात उसके पति को बतायी है, वह जानती नहीं थी। वह अपनी बात पूर्ण एकान्त में जानना और करना चाहती थी। साथ ही क्या पद्मदेव दो पत्नियों के साथ रह सकेगा, यह विचारणीय था।

यह सब विचार-विनिमय सुधीर के सामने नहीं हो सका। उस रात सुधीर की शिक्षा-दीक्षा पर ही बातचीत होती रही।

अगले दिन जब सुदर्शन मार्टिन का ऋण चुकाने में भाग-दौड़ कर रहा था तो सुदर्शन का लड़का मोहन और सुधीर पद्मदेव के साथ होटल में बैठे बातचीत कर रहे थे। ऐमालीना, सरस्वती, साधना इत्यादि महमूद और रफीका के साथ एलिफैंण्टा गुफायें देखने गये थे।

मोहन और सुधीर आये तो मोहन की पढ़ाई पर बातचीत होने लगी। पद्मदेव ने पूछा, "मोहन! मुझे पहचानते हो?"

"कुछ-कुछ स्मरण आता है। आप चाचाजी हैं।"

'हाँ। सुनाओ, किस श्रेणी में पढ़ते हो?"

"मैं इण्टर सैकेण्ड ईयर में पढ़ता हूँ। मैडिकल कॉलेज में प्रवेश पाने का यत्न कर रहा हूँ।"

"संस्कृत पढ़ी है?"

"वह तो आठवीं श्रेणी तक ही पढ़ी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब तुम विज्ञान के तत्त्व को जान नहीं सकोगे।"

"क्यों?"

"कारण यह कि विज्ञान बिना विज्ञानात्मा को जाने कैसे जान सकोगे? और वह शास्त्राध्ययन के बिना नहीं आता।"

"विज्ञानात्मा क्या होता है?"

"तुम सुनते हो, सूँघते हो, चखते हो, देखते हो और स्पर्श अनुभव करते हो। ये सब ज्ञान तुम्हारे शरीर को नहीं, वरंच शरीर के भीतर एक विज्ञानात्मा को होता है। यह जान इन पाँच द्वारों से; मेरा अभिप्राय है कि इन्द्रियों के द्वारा, ग्रहण किया जाता है, परन्तु ग्रहण करने वाला विज्ञानात्मा है। अत: उसको जाने बिना जो भी ज्ञान प्राप्त करोगे, न तो उसमें 'को-ऑर्डिनेशन' (समन्वय) बना सकोगे और न ही उससे लाभ उठा सकोगे।"

"चाचाजी! आपका अभिप्राय जीवात्मा से है?"

"हाँ"

"परन्तु आज दुनिया का कोई भी वैज्ञानिक जीव के अस्तित्व को नहीं मानता और सब संसार के वैज्ञानिक विज्ञान से लाभ उठा रहे हैं।"

"हाँ। सबसे महान् लाभ तो विश्वव्यापी युद्ध में उठाया जा रहा है। जर्मनी संसार के सब देशों से अधिक विज्ञान जानने वाला माना जाता है और उसने आधी शताब्दी में दूसरा भयंकर युद्ध आरम्भ किया है। पहले युद्ध में लगभग पच्चीस लाख युवकों की मृत्यु हुई थी। बारूद, अस्त्र-शस्त्र तथा सम्पत्ति जो उसमें विनष्ट हुई थी, उसका मूल्य दो सौ बिलियन पौण्ड आँका गया है। यह सब मानव परिश्रम ही था जो विनष्ट हुआ है।

"अब यह दूसरा युद्ध आरम्भ हुआ है। इसमें अनुमान है कि लगभग तीस लाख युवक अभी तक मर चुके हैं। और कोई नहीं कह सकता कि युद्ध में मरने वालों की संख्या कितनी हो जायेगी? कितना मानव-परिश्रम विनष्ट हो रहा है, उसका तुम इस सोये हुए हिन्दुस्तान में अनुमान नहीं लगा सकते।

"यदि तुम विज्ञान के इस उपयोग की बात कहते हो तो मोहन! यह दुरुपयोग है। यह इस कारण ही है कि विज्ञान के तत्व को जानने वाले को कोई नहीं जानता। इसी कारण वह तत्व भी जाना नहीं गया।"

"चाचाजी! क्या आत्मा का ज्ञान हो जाने से ये युद्ध नहीं होंगे?"

"यह मैं नहीं कह रहा और न ही कहना चाहता हूँ, परन्तु एक बात होगी। वह यह कि युद्ध न तो इतने व्यापक होंगे और न ही इतने तीव्र। कहीं कोई असुर-प्रवृत्ति का व्यक्ति उत्पन्न होगा तो दैवी प्रवृत्ति वाले संतान होने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे उत्पन्न होते ही विनष्ट कर देंगे।

"वर्तमान युद्ध का इतिहास जानते हो? देखो, मैं बताता हूँ। प्रथम युद्ध के उपरान्त वारसेल्ज़ की सन्धि हुई। उस सन्धि के करने वाले दोनों पक्ष के लोग आत्मा से अनभिज्ञ थे। अत: सन्धि में ही वर्तमान युद्ध का बीजारोपण हो गया था।"

"युद्ध का कारण तो यूरोप में अनात्मवादियों का बाहुल्य था। उसको कम करने के स्थान उसमें वृद्धि करने का ही यत्न किया गया था। यहाँ तक कि रूस का पूर्ण देश अनात्मवादियों के अधिकार में चला गया। वारसेल्ज़ की सन्धि ने रूस में मार्क्सवाद को पनपने का अवसर दिया। इंग्लैण्ड, फ्रांस और इटली में भी राज्य नास्तिकों के हाथ में ही रहा। अत: वर्तमान भयंकर युद्ध अवश्यम्भावी था। इस युद्ध के उपरान्त कदाचित् पहले के परिणामों की पुनरावृत्ति होने वाली है। विश्व में आज समस्या यह है कि अनात्मवादियों का बाहुल्य हो रहा है। जो कुछ आत्मवादी हैं भी, वे असंगठित और अव्यवस्थित रूप में भटक रहे हैं। सुझाव यह है कि संसार में जो थोड़े-से आत्मवादी हैं, वे संगठित हो जायें। तब मानव स्वतन्त्र, स्वच्छन्द और मुक्त-स्वरूप हो अपने कल्याण की ओर बढ़ सकेगा।"

सुधीर अविश्वास की मुद्रा बनाये सामने बैठा था। पद्मदेव समझ रहा था कि पुत्र को बात समझ नहीं आ रही। इस पर भी वह अपने मन का संशय उपस्थित नहीं कर रहा। मोहन कुछ-कुछ ही समझा था।

"बात समझ में नहीं आई न?" पद्मदेव ने पूछ लिया।

"नहीं चाचाजी! आपने एक बात बताई है कि यदि आत्मवादी संगठित हो गए तो मानव-कल्याण हो सकेगा। मैं देख रहा हूँ कि इस देश में आत्मवादियों का बाहुल्य है, परन्तु एक सहस्र वर्ष से हम परतन्त्र, पद-दलित, दीन-हीन और दु:खी हैं।"

"और यह तुमको किसने बताया है कि हिन्दुओं को आत्म-ज्ञान भी था अथवा है?"

"और यह जो गांधीजी प्रार्थनायें करते रहते हैं, यह आत्मवाद का लक्षण नहीं और अहिंसा-व्रत क्या 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' का प्रतीक नहीं?"

"ये और अनेकों अन्य बातें; मठ, मन्दिर, शिवालय और गुरुद्वारे इत्यादि सब आत्मवाद के तो लक्षण हैं, परन्तु ये आत्म-ज्ञान के लक्षण नहीं।

"वाद और ज्ञान में अन्तर समझते हो मोहन, अथवा नहीं?"

"मुझे तो दोनों एक ही बात करने के दो ढंग समझ आते हैं।"

"नहीं। दोनों में भारी अन्तर है। देखो, मैं बताता हूँ। गांधीजी आत्मवादी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, परन्तु वह प्राणी को ही आत्मा मान कर उसकी हिंसा करने से भयभीत हैं। वह यह समझ रहे हैं कि मनुष्य की मृत्यु से आत्मा का हनन होता है। यदि ऐसा न मानते तो दुष्ट और पापियों की हत्या करने में वह संकोच न करते। वह कहने को तो गीता का पाठ नित्य करते हैं, परन्तु यह नहीं जानते कि भगवान् कृष्ण ने गीता में क्या कहा है। भगवान् कृष्ण कहते हैं[1]—

आत्मा न जन्म लेती है, न मरती है। यह होकर फिर होने वाला है। यह अजन्मा, नित्य शाश्वत, पुरातन, न नाश होने योग्य है, न नाश होता है।

"गांधीजी आत्मवादी हैं। अर्थात् वह आत्मा के होने को मानते अवश्य हैं, परन्तु व्यवहार में वह मनुष्य के शरीर को ही आत्मा मान रहे हैं। वह आत्मा को नहीं जानते।

"जो ऐसा मानता है, वह लाखों दुष्टों को भी मार डालने में पाप का भागी नहीं होता। कारण यह कि वह शरीर, जो पापियों में पाप-कर्म करने का यन्त्र मात्र है, को ही नष्ट करता है। वास्तविक पुरुष की वह हत्या न करता है और न कर सकता है।

"किसी दुष्ट को मार डालने का अर्थ केवल मात्र यह है कि किसी चोर-डाकू के हाथ से बन्दूक छीन लेना। बन्दूक छीन कर हम उसे अत्याचार करने से रोक देते हैं।

"देखो सुधीर! दो बातें जानने की हैं—एक है परमात्मा और दूसरे, आत्मा। इन दोनों के ज्ञान के लिए प्रकृति के ज्ञान की आवश्यकता है। इसे ही तुम विज्ञान कहते हो। प्रकृति का ज्ञान तो वास्तविक पदार्थों के ज्ञान में साधन है। देखो, एक वेद-मन्त्र है—

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यामृतमश्नुते।।

"अविद्या अर्थात् इस सांसारिक ज्ञान से तुम इस संसार को पार कर वास्तविक ज्ञान को प्राप्त हो सकते हो।"

"परन्तु चाचाजी! विश्वविद्यालय में तो विज्ञान के साथ संस्कृत पढ़ाते नहीं।"

"तो विश्वविद्यालय की पढ़ाई छोड़ दो अथवा घर पर संस्कृत पृथक् में पढ़नी आरम्भ कर दो।"

तीसरे दिन रात के समय जब मोहन और सुधीर को पृथक् कमरे में ठहरा दिया गया तो पत्नियों और पति में बातचीत हो सकी।

ऐमालीना इस एकान्त की इच्छा नहीं करती थी, जिसमें तीन प्राणी हों।

---

1. न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वाऽभविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह दो तक में ही बात करना चाहती थी। वह चाहती थी कि उसमें और उसके पति में पृथक् बातचीत हो अथवा उसकी सरस्वती से पृथक् में बात हो, परन्तु ऐसा अवसर अभी तक नहीं मिला था। यह अवसर भी साधना की योजना का परिणाम था। मोहन को सुधीर के साथ पृथक् कमरे में इस कारण रख दिया जिससे कि वे अपनी पढ़ाई कर सकें।

रात खाने के उपरान्त जब यह घोषणा की गई कि मोहन और सुधीर पृथक् कमरे में अपनी पढ़ाई करेंगे तो ऐमालीना इत्यादि एक-दूसरे का मुख देखने लगे। तीनों अपने कमरे में गए तो ऐमालीना ने बात समझते हुए कहा, ''मैं आज दिन-भर भ्रमण करने के कारण अत्यन्त थक गई हूँ और एकदम सो रही हूँ।''

वह वस्त्र बदलने 'बाथ रूम' में चली गई।

''और तुम'' पद्मदेव ने सरस्वती से पूछा।

''मुझे नींद नहीं आ रही।''

''तो?''

''मैं तो जो पिछली तीन रात से कर रही हूँ, वह ही आज भी करूँगी।''

''क्या करती रही हो?''

''आपका मुख देख-देख तृप्ति अनुभव करती रही हूँ।''

''यह तो बहुत अच्छी बात है। तो आज भी यही करोगी?''

''इसे मैं कम सौभाग्य की बात नहीं मानती।''

पद्मदेव हँस पड़ा और बोला, ''परन्तु मैं तो सो रहा हूँ। दस वर्ष बन्दी-जीवन से मुक्ति प्राप्त करने पर मैं इतना सुखी अनुभव करता हूँ कि मुझे अनायास ही नींद आ जाती है।''

''तो ठीक है। आप सोइए और मैं आपको देखा करूँगी।''

सरस्वती इसे भी परम सौभाग्य मानती थी।

: 12 :

लाहौर में एक बड़ी-सी कोठी में रहते हुए पद्मदेव का जीवन स्थिर हुआ तो वह पुनः अपनी पुस्तक 'विश्व संस्कृति का इतिहास' लिखने बैठ गया। यह तीसरा प्रयास था। पहले उसने लखनऊ में इसे लिखना आरम्भ किया था। उस समय इस पुस्तक का विषय भारत के सांस्कृतिक इतिहास तक ही सीमित था। जब वह रूस में पहुँचा तो वहाँ संसार के सांस्कृतिक इतिहास पर लिखने लगा था। इसने पुस्तक के विषय को व्यापक कर दिया था। पूर्ण ग्रन्थ जो बारह वर्ष से ऊपर के परिश्रम का फल था; वह 'पॉलिटी ब्यूरो' के पास रह गया था। अब वह लाहौर में आकर तीसरी बार पुस्तक आरम्भ कर रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु जो स्थिति वह लाहौर की देखता था, उसमें वह अपने इस तीसरे प्रयास में भी विघ्न की सम्भावना ही पाता था। सबसे बड़ी बात यह हुई थी कि हिन्दुस्तान में युद्ध की स्थिति के कारण प्रत्येक में रुपया पैदा करने की होड़-सी लग रही थी। मज़दूर अर्थात् एक अशिक्षित कर्मचारी से लेकर योग्य-से-योग्य इन्जीनियर तक और बाजार में सफाई कर्मचारी से लेकर एक धनी-मानी कारखानेदार तक सब-के-सब शीघ्रातिशीघ्र धनी बन जाने की न केवल अभिलाषा रखते थे, वरंच उसके लिये सुध-बुध भूल दौड़ में सम्मिलित हो रहे थे।

यह बात हिन्दुस्तान में ही नहीं, वरंच विश्व के समस्त देशों में प्रचलित प्रतीत होने लगी थी। जहाँ यह प्रवृत्ति पढ़े-लिखे वर्ग में उत्पन्न हुई थी, वहाँ यह राजनीतिक नेताओं में भी आ विराजमान हुई थी।

उसने पण्डित नीलकण्ठ को जो उसकी अनुपस्थिति में उसके लड़के के संरक्षक के रूप में सम्पत्ति के कर्ता रहे थे, प्रोफेसर सुदर्शन जो उसके पुत्र और पत्नी के संरक्षक और सहायक रहे थे, और अपनी दोनों पत्नियों एवं सुधीर को बुलाया और उनको अपनी समस्या समझाने लगा।''

उसने बताया, ''मैंने अपना लेखन-कार्य पुनः आरम्भ कर दिया है, परन्तु इस देश में, विशेष रूप से पंजाब में, हिन्दू-मुसलमान में वैमनस्य बढ़ रहा है। यद्यपि आजकल विवाद और फसाद कम हैं, परन्तु उनमें कारण मनोवृत्तियों में परिवर्तन नहीं। वे तो पहले से अधिक विरोधी हो रही हैं। उसमें कारण है युद्ध की स्थिति में मच रही सरकारी लूट में भागीदार बनने में रुचि। जब तक यह लूट चलती रहेगी, देश के रहने वालों को अन्तर्देशीय विवादों के विषय में विचार करने का अवकाश ही नहीं है।

''मेरे कार्य में दो विघ्न तो पहले उपस्थित हो चुके हैं। एक में हिटलरशाही और दूसरे, रूस में स्टालिनशाही। मुझे भय है कि मेरे वर्तमान तीसरे प्रयास में हिन्दू-मुसलमान फसाद खड़ा न हो जाए। मैं इस समय बयालीस वर्ष की आयु का हो गया हूँ। अधिक-से-अधिक दस-पन्द्रह वर्ष तक और कार्य कर सकूँगा। मैं नहीं चाहता कि अब इसमें किसी प्रकार का विघ्न पड़े।

''आपसे मैं इस विषय पर सम्मति लेना चाहता हूँ। मेरी दोनों श्रीमतियाँ इसमें भिन्न-भिन्न सम्मति देती हैं। ऐमालीना का विचार है कि इस पृथ्वी पर अमेरिका सबसे अधिक सुरक्षित स्थान है। मुझे अपनी पूर्ण सम्पत्ति नकद कर वहाँ किसी काम में लगा देनी चाहिए। वहाँ से इतनी आय हो सकेगी कि मैं शेष जीवन निश्चिन्त होकर व्यतीत कर सकूँगा। और जैसा कैसा भी अन्वेषण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं कर रहा हूँ, वह शान्ति से कर सकूँगा। इसके विपरीत सरस्वती का सुझाव यह है कि मैं भले ही पूँजी किसी विदेश में लगा दूँ परन्तु मुझे कार्य में सुविधा और उसके करने के लिए चित्त की उपयुक्त शान्ति भारत के किसी पहाड़ी स्थान में ही मिल सकेगी। इसका सुझाव है कि सुदर्शनजी ने जो अपना फलों का बगीचा गढ़वाल में लगवाया है; वहाँ मुझे अपना एक छोटा-सा बंगला बनवा लेना चाहिए और उसमें अपनी दोनों पत्नियों की सेवा तथा देख-रेख में रहते हुए अपना कार्य करना चाहिए।

"ऐमालीना को यह सुझाव इस कारण पसन्द नहीं कि मनुष्य समाज की देन है। यदि वह वर्तमान काल की सबसे अधिक उन्नत समाज का बहिष्कार करेगा तो वह उससे प्राप्त होने वाले सम्पूर्ण लाभ से वंचित होकर किसी भी प्रकार से श्रेष्ठ कृति निर्माण नहीं कर सकेगा।

"आपसे मैं अपनी इस जीवन-समस्या में सुझाव और सम्मति चाहता हूँ।"

नीलकण्ठ खिलखिला कर हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "पद्मदेव! तुम बड़ी आयु के कारण यदि मेरी बात को बुरी भावना से न समझो तो मैं कहूँगा कि दो-दो बीवियों के साथ रहने के कारण अपनी उस प्रतिभा से रहित होते जाते हो, जो तुममें यूरोप जाने से पहले विद्यमान थी।

"जो कार्य तुम करना चाहते हो, वह उसके भले-बुरे तथा उपकारी, अनुपकारी का विचार छोड़कर भी एक बहुत बड़ा कार्य तो है ही। वह दो-दो पत्नियों के साथ रहते हुए हो नहीं सकेगा। तुम इन दोनों पत्नियों को अपने से दूर भेज दो। एक को श्रीनगर गढ़वाल में सुदर्शन जी के बगीचे के फल खाने के लिए और दूसरी को अमेरिका ऐम्पायर बिल्डिग की लिफ्टों में ऊपर-नीचे चढ़ने-उतरने के लिए।

"सरस्वती को इतना रुपया दे दो कि वह वहाँ सुगमता से फल खा सके और ऐमालीना को इतना रुपया दे दो कि वह तुमको उस पूँजी की इतनी आय भेज सके कि तुम हिन्दुस्तान के किसी नगर में रहकर अपने इस बृहत-कार्य को मरने से पहले पूर्ण कर सको।

"तुम राजनीति से पृथक् रहकर और इसके गिरगिट की भाँति बदलते रंगों की अवहेलना करते हुए अपने कार्य में डुबकी लगा समाधिस्थ हो जाओ।

"सरस्वती तुम्हारे लिए श्रीनगर से फल भेज दिया करेगी और ऐमालीना तुम्हारी पूँजी से उपलब्ध लाभ में से तुम्हारे निर्वाह के लिए धन।"

ऐमालीना ने मुस्कराते हुए कहा, "पर पापा!" वह नीलकण्ठ को सरस्वती के पिता के नाते पापा ही कहकर पुकारने लगी थी। "मैं तो अभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत कम आयु की हूँ। मैं पति के जीवित रहते विधवा बन कर रहना नहीं चाहती।''

''और सरस्वती! तुम क्या चाहती हो?''

''मुझे पति की इतनी आवश्यकता नहीं जितनी कि सुधीर के संरक्षक की है। ज्यों-ज्यों वह बड़ा होता जाता है, मेरा भी उससे मोह बढ़ता जाता है। साथ ही मैं उसके लिए एक पत्नी कम-से-कम अपने जैसी एक सुन्दर, संगीत व नृत्य में प्रवीण तैयार कर रही हूँ। उसे मैं अपने से पृथक् करना नहीं चाहती, न सुधीर को और न ही उसके लिए निर्वाचित पत्नी को। इसी कारण उनके संरक्षक की भी आवश्यकता है।''

अब सुदर्शन ने अपने विचार व्यक्त कर दिए। उसने कहा, ''मैं न तो इस विचार से सहमत हूँ कि दो पत्नियों के कारण पद्मदेव की प्रतिभा मलिन हो रही है और न ही इस योजना को पसन्द करता हूँ कि दोनों पत्नियों को बारह-तेरह सहस्र मील के अन्तर पर रखा जाए। जहाँ तक मुझे विदित हुआ है कि ये न तो परस्पर और न ही अपने पति के लिए किसी प्रकार का झगड़ा करती हैं।''

पद्मदेव ने कहा, ''मैं यह नहीं चाहता कि मैं अपने देश की अथवा किसी अन्य देश की वर्तमान राजनीति में हस्तक्षेप करूँ। आज के सब-के-सब राजनीतिक मानव को समाज का एक कारण (Instrument) मात्र मानते हैं। उस कारण को वे न केवल अपने उपयोग के अनुकूल बनाने का यत्न कर रहे हैं, वरंच वे उसे अपने अधिकार में रखना चाहते हैं।

'इन राजनीतिज्ञों ने देशों को बड़े-बड़े जेलखाने बना रखा है। किसी भी देश में रहता हुआ मनुष्य एक बन्दी की भाँति अपना शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा को उस देश में कैद हुआ मानता है। वह देश से बाहर नहीं जा सकता। वह अपनी ईमानदारी से अर्जित धन को जहाँ चाहे व्यय नहीं कर सकता। वह इन जेलखानों के विरुद्ध अपनी आवाज़ भी नहीं निकाल सकता। विचार पर भी ताले लगाये जा रहे हैं।

''इस कारण मैं इस पृथ्वी का एक नागरिक बन स्वतन्त्रता और स्वच्छन्दता से विचरना चाहता हूँ। रही बात यह कि उस स्वतन्त्र और स्वच्छन्द जीवन के लिए साधनों की आवश्यकता कैसे पूर्ण हो? उसके लिए अपने पितरों ने मुझे कुछ साधन दिए हैं। वे साधन वेद, शास्त्र एवं साहित्य हैं। इनको मैं सुरक्षित रखना चाहता हूँ।

''इस समय सुरक्षित देशों में स्विटज़रलैण्ड और अमेरिका से अधिक सुरक्षित स्थान कोई दिखायी नहीं देता। इस कारण अपनी पैतृक सम्पत्ति को मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन दो स्थानों पर बाँट कर रख देना चाहता हूँ।

"मैंने स्वेच्छा से और भली-भाँति विचार कर दोनों पत्नियों को अपना जीवन-साथी बनाया है, परन्तु उनको अपना बन्दी नहीं बनाया। इस कारण मैंने यह विचार किया है कि मैं दोनों को अपने पास रखना चाहूँगा, परन्तु यदि कोई मुझे छोड़कर जाना चाहे तो मैं आपत्ति नहीं करूँगा।

"मैं अपना स्थान किसी भी देश, किसी भी कस्बे में सीमित करना नहीं चाहता। मैं सरस्वती और सम्पदा दोनों का भोग करता हुआ स्वेच्छा से रहना चाहता हूँ।

"जब आप बताइये, क्या कहते हैं?" पद्मदेव ने सुदर्शन से पूछ लिया।

सुदर्शन ने कहा, "भैया! ठीक है। संसार में निर्दोष तो केवल परमात्मा है। इस पर भी योजना सुन्दर और सुविधाजनक है, परन्तु यदि यह सम्भव हो सके। समाज ने बहुत कठोर बन्धन मानव पर लगा रखे हैं। उनको तोड़कर निकल सको तो ठीक है, परन्तु वर्तमान स्थिति में यह सम्भव प्रतीत नहीं होता। समस्या यह है कि जैसे सरस्वती अपने पुत्र से पृथक् रहने की इच्छा नहीं करती वैसे ही ऐमालीना भी अपने बच्चों से भी दूर रहना नहीं चाहती। वह उनको यहाँ बुला नहीं सकती। एक तो युद्ध की स्थिति के कारण और दूसरे उनके विचार से उनकी शिक्षा-दीक्षा में विघ्न पड़ने के कारण।

"मेरा सुझाव इसमें यह है कि पद्मदेव को कुछ ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए कि ऐमालीना के एक पुत्र और उत्पन्न कर दे, जिससे वह पुत्रवियोग की भावना को कुछ सीमा तक निवारण कर सके।

"दूसरी बात जो उसे करनी चाहिये; वह यह है कि नाकेश और अपशोक के लिये किसी योग्य संस्कृत के अध्यापक को न्यूयॉर्क भेज दें जो उनके पश्चिमी बन रहे विचारों में भारतीय इन्जेक्शन लगा सके।

"एक दिन युद्ध बन्द होगा। तब असुर और देवता दोनों थक कर सुस्ताने के लिये बैठ जायेंगे। उस समय मानवों को अपना उन्नति का कार्य चलाने का अवसर होगा। मैं चाहता हूँ कि तब तक ऐमालीना के लिये यहाँ आकर्षण निर्माण किया जाये।

"जहाँ तक पद्म जी के अपने रहने का प्रश्न है, मैं पण्डित जी के विचार से सहमत हूँ कि उनको अब अपने कार्य में समाधिस्थ होकर डुबकी लगा देनी चाहिये।"

"और सुधीर क्या चाहता है?" पद्मदेव ने उसकी ओर देखकर पूछ लिया।"

"मैं तो अब पिताजी के साथ रहना चाहता हूँ। मैं इस बात की प्रतीक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर रहा हूँ कि पिताजी मुझे कब इस योग्य घोषित करते हैं, जिससे कि मैं उनके कार्य में सहयोगी बन सकूँ।''

''देखिये, मैंने आपके सामने अपनी योजना रख दी है। उसे सुनकर और विचारकर आप उसमें दोष बताने की कृपा करें जिससे मैं उसमें संशोधन कर सकूँ।''

''मैं यत्न करना चाहता हूँ इन समाजवादियों की जेलों में छुटकारा पाने के लिये और अपनी तड़फती आत्मा को मुक्त कर शान्ति पाने के लिये।

''मैं अपनी सरस्वती और सम्पदा को उनके प्रहार से सुरक्षित रखना चाहता हूँ।''

''पर भैया! सरस्वती के साथ सम्पदा कौन है? सरस्वती भाभी तो यहाँ हैं, परन्तु सम्पदा क्या ऐमालीना भाभी हैं?''

पद्मदेव हँस पड़ा। उसे स्मरण हो आया कि उसने अपने वचन में इन दो शब्दों का प्रयोग किया है। उसने कहा कि मेरा अभिप्राय यह नहीं था। मैंने अपनी संस्कृति के अर्थों में ही सरस्वती और सम्पदा शब्दों का प्रयोग किया था, परन्तु मैं अब विचार करता हूँ कि उनकी प्रतीक मेरी ये दोनों पत्नियाँ तो हैं ही। सरस्वती वास्तव में सरस्वती देवी है और ऐमालीना को यहूदी परिवार की होने के कारण उस समाज का एक अंश सम्पदा के रूप में भी मैं समझ सकता हूँ।''

''और इन दो सरस्वती और लक्ष्मी के पति पद्मदेव! मित्र, बहुत सुन्दर अलंकार बाँधा है। तो भगवान् के बन्धन छुड़ाने में ये दोनों द्विविध सहायक होंगी?''

''हाँ।'' उत्तर सरस्वती ने दे दिया, ''यदि भगवान ने देवियों को समुचित आदर और सम्मान से अपने पास बनाये रखा, तब।''

''तो फिर हम क्षुद्र मानवों के विचारार्थ कुछ रहा ही नहीं।'' नीलकण्ठ ने कह दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त
महर्षि दयानन्द
श्री कृष्ण
जगत की रचना
महाभारत
हिटलर की कहानी
श्री राम
धर्मवीर हकीकत राय
वीर पूजा (चन्द्रशेखर आज़ाद के जीवन पर)
डा0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी अन्तिम यात्रा

शिवकुमार गोयल
डा0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी जीवन यात्रा
स्वामी विवेकानन्द
अमर सेनानी सावरकर
क्रान्तिकारी आन्दोलन-सशस्त्र क्रांति का इतिहास
चुनौतियो से घिरा भारत

शान्ता कुमार
धरती है वलिदान की

सचदेव
पांडवप्रिया पांचाली

सुरेश
क्रान्तिकारी भगत सिंह

परमेश्वर प्रसाद सिंह
झांसी की रानी
महाराणा प्रताप
वीर वन्दा वैरागी

शंकर सुल्तानपुरी
क्रान्तिकारी आज़ाद
क्रान्तिकारी सुभाष

भरतराम भट्ट
क्रान्तिकारी देशभक्त सिख

डा0 ईश्वर प्रसाद वर्मा
क्रान्तिकारी रामप्रसाद विस्मिल

बनारसीसिंह
मदनलालढींगरा और ऊधमसिंह-लंदन में गोली

सीताराम गोयल
शक्तिपुत्र शिवाजी

अरुण सागर
क्रान्तिकारी राजगुरु
क्रान्तिकारी सुखदेव
स्वामी श्रद्धानंद
लौहपुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल
मंगल पाण्डेय
नानासाहिव पेशवा
तात्या टोपे
गुरु तेगवहादुर
गुरु नानक देव

तेजपाल सिंह धामा
पृथ्वीराज चौहान एक पराजित विजेता
गुरु गोविन्द सिंह
महारानी दुर्गावती
रानी अवन्तीवाई एवं 1857 की क्रान्ति
शेरे पंजाव महाराजा रणजीत सिंह
महारानी कर्मदेवी की शौर्यगाथा- अजेय अग्नि
महारानी पदमिनी का वलीदान- अग्नि की लपटें
चन्द्रगुप्त चाणक्य कथा- अखण्ड आर्यवर्त
महर्षि वाल्मिकी कथामृत- पंक से पंकज
भारत का गौरवशाली इतिहास-हमारी विरासत

अशोक कौशिक
हरि सिंह नलवा
वोध कथाएँ
धार्मिक कथाएँ
शिक्षाप्रद कथए
पौराणिक कथाएँ

योगेन्द्र दत्त
देवयानी तथा अन्य कथाएँ
सदाचार की कथाएँ
मानवता की कथाए

रविशेखर श्रीवास्तव
प्रेरणादायक कहानिया

पूनम त्यागी
अनमोल कहानिया

मास्टर मनोज कक्कड़
सैल्फ डिफैन्स "चाईनीज कुँग-फू"

www.hindisahityasadan.com
2 वी डी चैम्बर्स, 10/54 डी वी गुप्ता रोड, करोल बाग पुलीस स्टेशन के पास, नई दिल्ली-05
E-mail : hindisahityasadan@gmail.com Tel : 9213527666, 7065618655
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की वेद, श्रीमद्भगवद्गीता, दर्शन शास्त्रों व उपनिषदों पर रचनाएं

वेद मन्त्रों के देवता
वेद और वैदिक काल
वेदों में सोम
वेदों में इन्द्र
विश्वेदेवा
सायंस और वेद
अद्वैत मीमांसा
विज्ञान और विज्ञान
सृष्टि रचना
वेद प्रवेशिका
यजुर्वेद और गृहस्थ धर्म
हमारी सांस्कृतिक धरोहर
ईश केन् कठ उपनिषद्
तैत्तिरीय उपनिषद्
प्रश्न ऐत्तरेय उपनिषद्
मुण्डक माण्डूक्य उपनिषद्
श्रीमद्भगवद्गीता (भाष्य)
श्रीमद्भगवद्गीता (अध्ययन)
सांख्य दर्शन
न्याय दर्शन
ब्रह्मसूत्र -1 (वेदान्त दर्शन)
ब्रह्मसूत्र -2 (वेदान्त दर्शन)

Central Library
167913
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
081
167913

चिकित्सा, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, धर्म, दर्शन, संगीत, कम्प्यूटर, ओशो
बाल साहित्य तथा हिन्दी साहित्य
www.hindisahityasadan.com
2 बी डी चैम्बर्स, 10/54 डी बी गुप्ता रोड, करोल बाग पुलीस स्टेशन के पास, नई दिल्ली-05
E-mail : hindisahityasadan@gmail.com Tel : 9213527666, 7065618655

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R 089:9143 GUR-D आगत संख्या 167913

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

2 वी डी चैम्बर्स, 10/54 डी बी गुप्ता रोड, करोल बाग पुलीस स्टेशन के पास, नई दिल्ली-05
E-mail : hindisahityasadan@gmail.com Tel : 9213527666, 7065618655

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

GURUKUL KANGRI LIBRARY
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

शिक्षा: एम. एस. सी.

8-12-1894 से 8-4-1989

लेखक की कुछ अन्य रचनाएँ

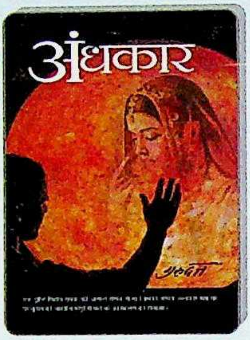

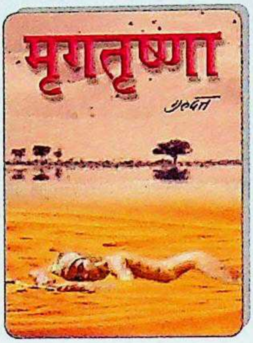

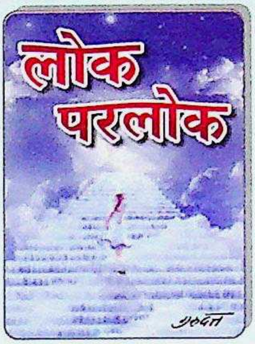

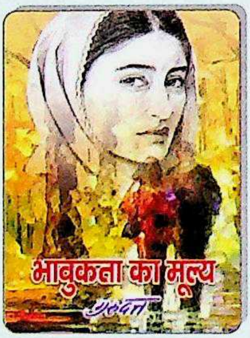

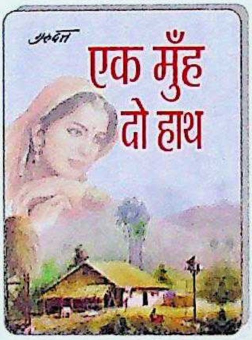

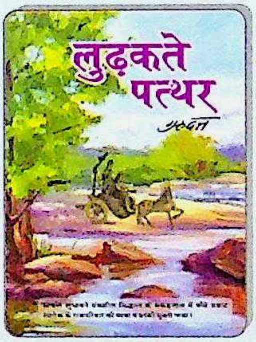

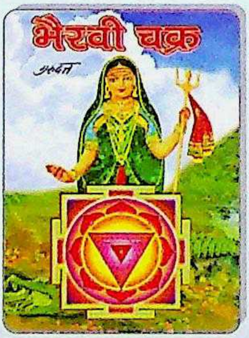

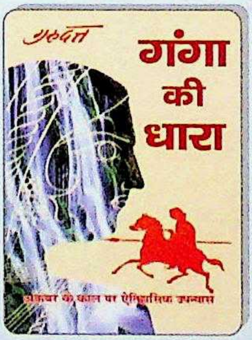

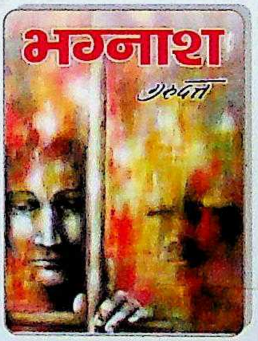

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बंधु गुप्ता रोड,

करोल बाग, नई दिल्ली-110005, फोन- 9213527666, 7065618655

ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com, hindisahityasadan@gmail.com

www.hindisahityasadan.com

9 789386 336866

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar